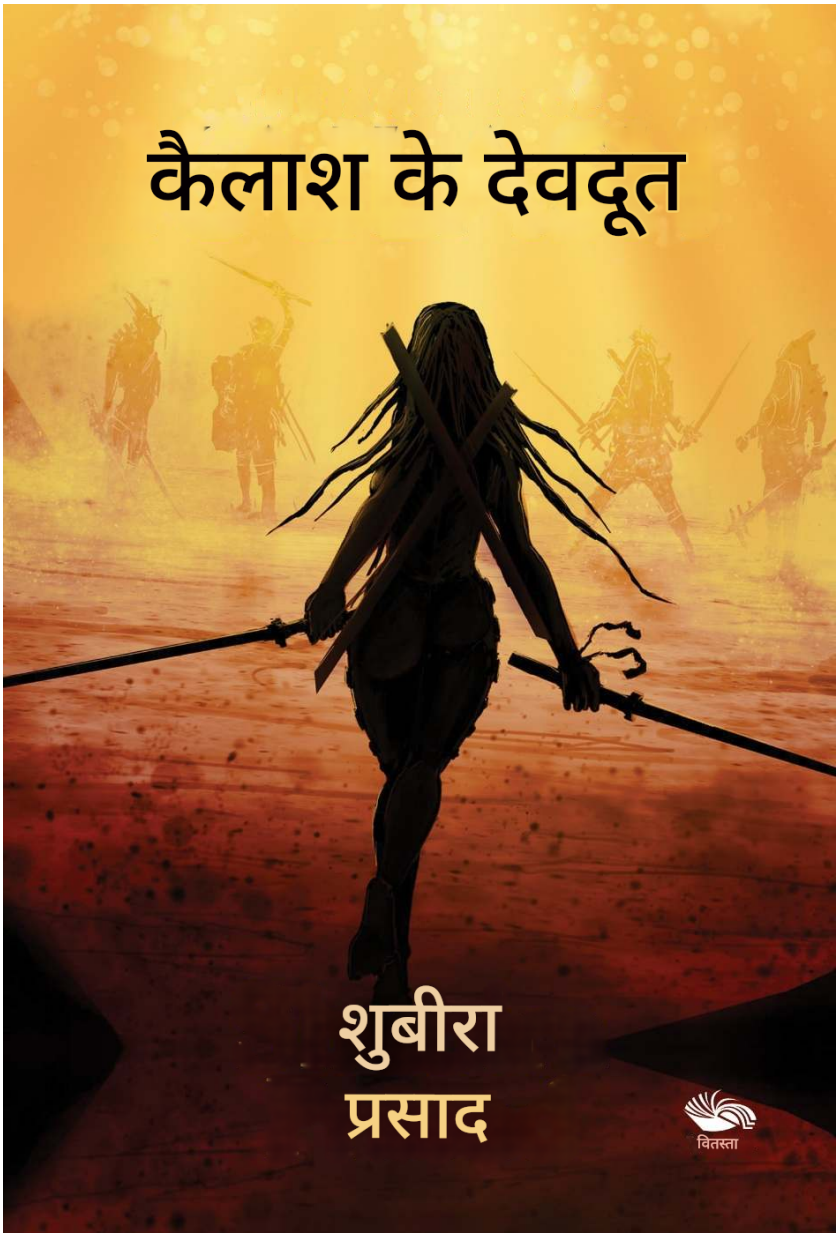

ज्ञान का प्रसार करें www.vitastapublishing.com
द्वारा प्रकाशित
रेनू कौल वर्मा

Vitasta Publishing Pvt Ltd 2/15, Ansari Road, Daryaganj New Delhi - 110 002
info@vitastapublishing.com
ISBN: 978-93-90961-27-6 © Shubira Prasad
पहला संस्करण 2022
एमआरपी ₹395
सर्वाधिकार सुरक्षित।
यह उपन्यास पूर्णतया काल्पनिक है। नाम, पात्र, घटनाएँ और प्रसंग पूरी तरह से काल्पनिक हैं। वास्तविक स्थानों, क्षेत्रों, संस्थानों या सामुदायिक प्रथाओं का उल्लेख भी काल्पनिक रूप से किया गया है। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति या वास्तविक घटना से कोई भी समानता मात्र संयोगवश है।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से - इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा - प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
मंजुला लाल द्वारा संपादित
सोमेश कुमार मिश्रा द्वारा टाइपसेटिंग और कवर डिजाइन। विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।
मेरे पिता स्वर्गीय श्री अनंत स्वरूप को, जिनसे मुझे पढ़ने और लिखने की अदम्य इच्छा विरासत में मिली। आभार व्यक्त करते हुए
इस पुस्तक को तैयार करने में मदद करने वालों को धन्यवाद देने के लिए मैं कहाँ से शुरुआत करूँ?
सबसे पहले, मेरी प्रकाशक रेणु कौल वर्मा, जो एक समर्पित पेशेवर हैं। मेरी संपादक मंजुला लाल, जिन्होंने अपने काम को बहुत गंभीरता से लिया और जिनके सुझावों से मुझे बहुत मदद मिली। वितास्ता की पूरी टीम: अलीशा वर्मा, सोमेश कुमार मिश्रा, अमन उज्ज्वल, फ़ैज़ा यामीन, एस सरस्वती। इनके बिना यह किताब इतनी अच्छी तरह से तैयार नहीं हो पाती।
फिर मेरे साथी समीक्षक हैं। कुछ ने तो किताब की जमकर तारीफ की, हर एक तारीफ ने मुझे कई दिनों तक खुश रखा। कुछ पाठकों ने रचनात्मक आलोचना की, जिसके

लिए मैं उनका आभारी हूं। और कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने सिर्फ आलोचना करने के लिए आलोचना की, उन्हें भी मेरा सलाम। कम से कम आपने पन्ने तो पलटे।

मैं अपने परिवार की सदा आभारी रहूंगी, जिसने हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया। मेरे पति अरुण, जिन्होंने मुझे हर दिन यह पूछकर प्रेरित किया कि मैंने कितने शब्द लिखे हैं। मेरे बच्चे सौरभ और सर्वेश, जिन्होंने तकनीकी समस्याओं के समय टीम व्यूअर पर मेरी मदद की। मैं अपनी बहुओं शुभ्रा और दीपिका, साथ ही आरोह, मायरा और अवित्रया की भी आभारी हूं। आप सब मेरे दिल में बसे हैं।

इस पुस्तक को पाठकों तक पहुंचाने के लिए मुझे व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों तरह से जो भी समर्थन मिला है, उसके लिए मेरी कृतज्ञता की कोई सीमा नहीं है।

धन्यवाद!

प्रस्तावना

यह राक्षसों और मनुष्यों के बीच युद्ध पर आधारित मेरी त्रयी की दूसरी पुस्तक है, पहली पुस्तक 'जैत्रय के राक्षस' है। महाकाव्यों के अनुसार, रामायण के महान युद्ध में कई राक्षस बच निकले थे। वे पृथ्वी के गर्भ में, जल में और अंतरिक्ष में छिप गए और युगों तक निष्क्रिय रहे। 20वीं शताब्दी में, उनमें से कुछ अलग-अलग रूपों में प्रकट हुए और पृथ्वी पर युद्ध और बीमारियों का प्रकोप फैलाया। रावण के साथ युद्ध के अंत में, राम ने हनुमान से ऐसे योद्धाओं की एक टुकड़ी तैयार करने और उन्हें प्रशिक्षित करने का अनुरोध किया, जो राक्षसों को नियंत्रित करने के लिए पृथ्वी पर कई बार जन्म लेंगे। इन योद्धाओं का नेतृत्व देवी दुर्गा द्वारा आशीर्वाद प्राप्त योद्धा ऐशानी ने किया। उनके पास विशेष शक्तियां हैं, और अन्य योद्धाओं के पास भी। वे सब मिलकर पृथ्वी को बेहतर स्थान बनाने के मिशन पर निकल पड़ते हैं।

जैत्रय के दानवों की कहानी में योद्धाओं की यात्रा की शुरुआत, उनकी विशेष शक्तियों और दानवों के संहार में उनके कारनामों का वर्णन है। ये दानव अनेक रूपों और आकारों में पाए जाते हैं, और कुछ तो मनुष्य रूप धारण कर चुके हैं। इसी कारण दानवों और मनुष्यों में अंतर करना कठिन हो जाता है।

इस दूसरी किताब में, नायक और अन्य पात्र परिपक्व हो चुके हैं। वे अब अनुभवी और निर्दयी योद्धा हैं। यह कहानी विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से बताती है कि कैसे ऐशानी, अधीश और उनकी टीम राक्षसों का निर्मम विनाश करती है। बुराई पर अच्छाई की जीत की यह कहानी कालजयी है और इसे कितनी भी बार पढ़ा जा सकता है।

अंतर्वस्तु

कैलाश 1
Reaching The Gurukul 21
पुस्तकालय 48
माइक्रो डेमन्स 60
देवनाथ और घर 74
उदय इन लव 98
दानव मूल्य 115
द हाफ ब्रीड्स 131
दो माताएँ 146
आत्मा विनिमय 164
रेगिस्तान में 179
192
ड्रग डेमन्स 206
शीर्ष 221
ब्राह्मण राक्षस 236
पुनरुत्थान 250
तीन सिक्के 262
लेकिन 283
टाइलें और जरा
मैंटिस
298
316
महेश 332
परिशिष्ट 347

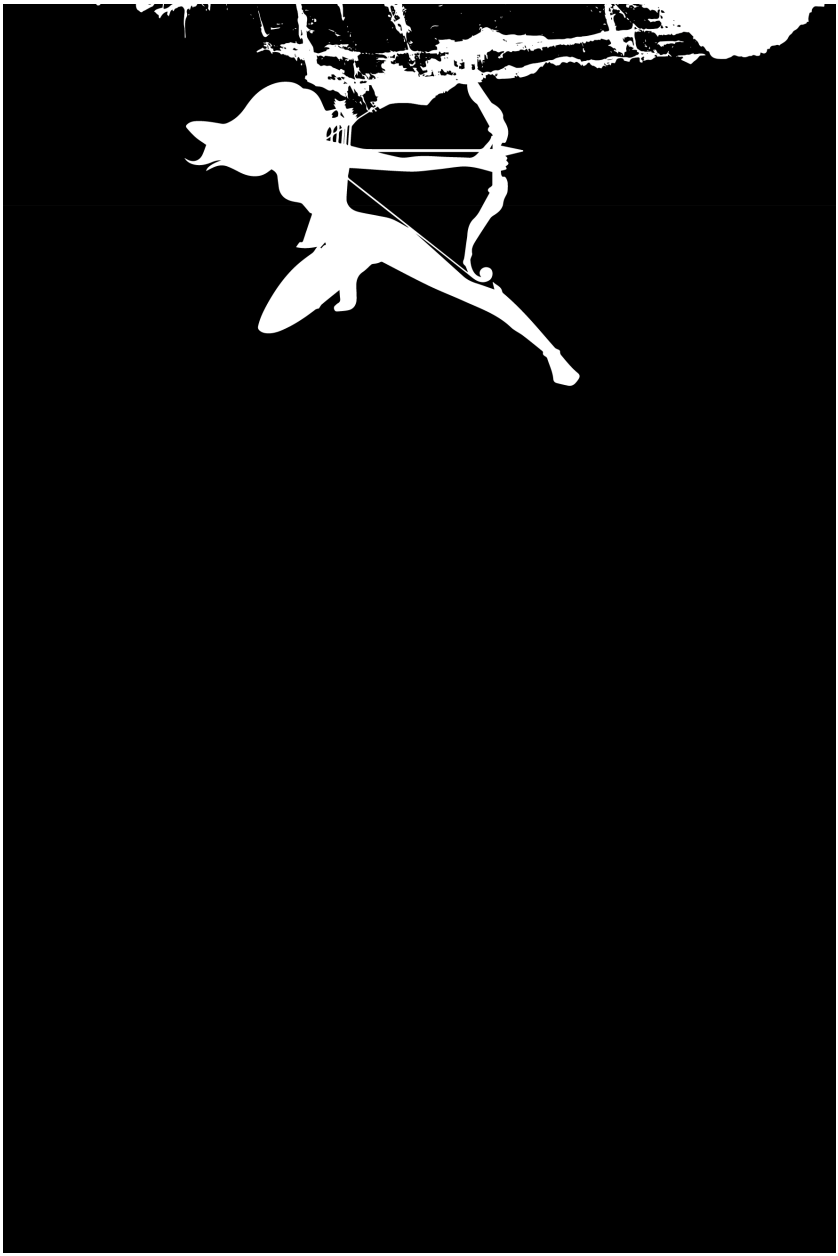

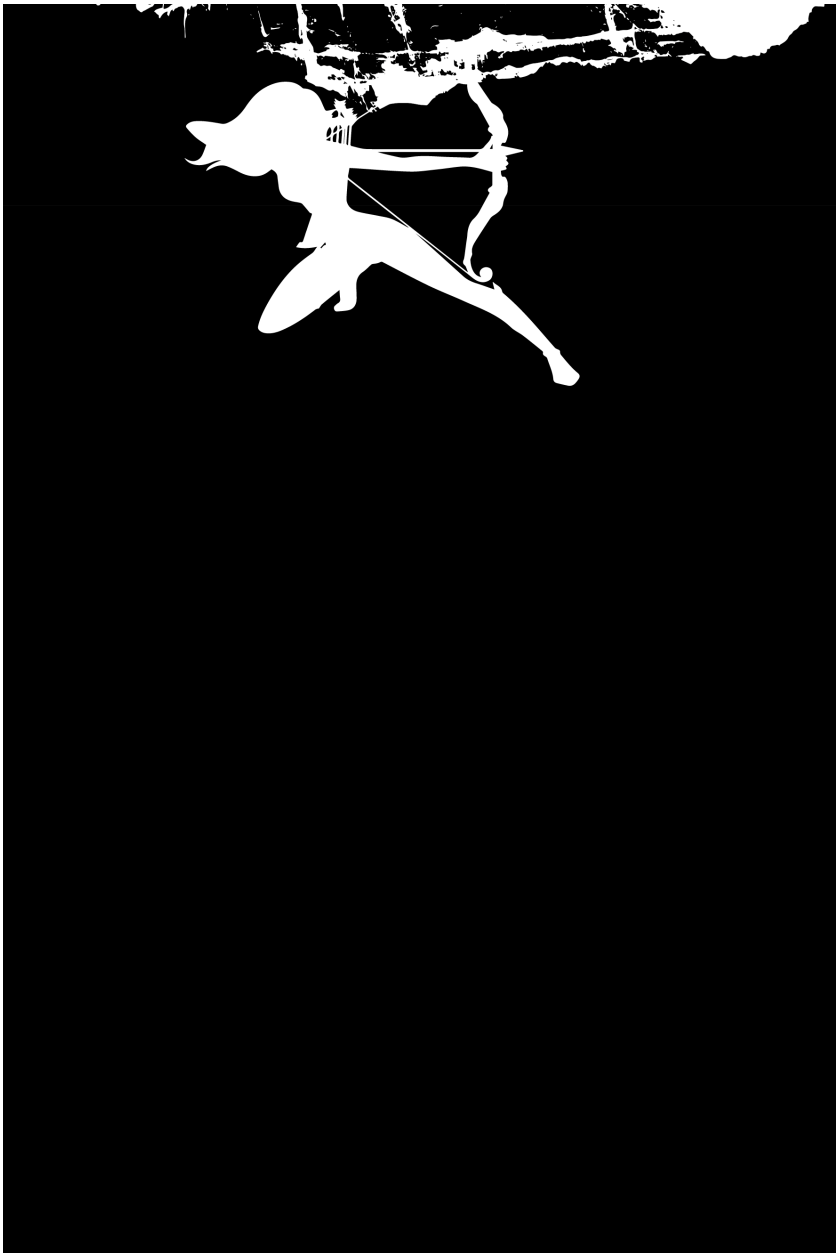

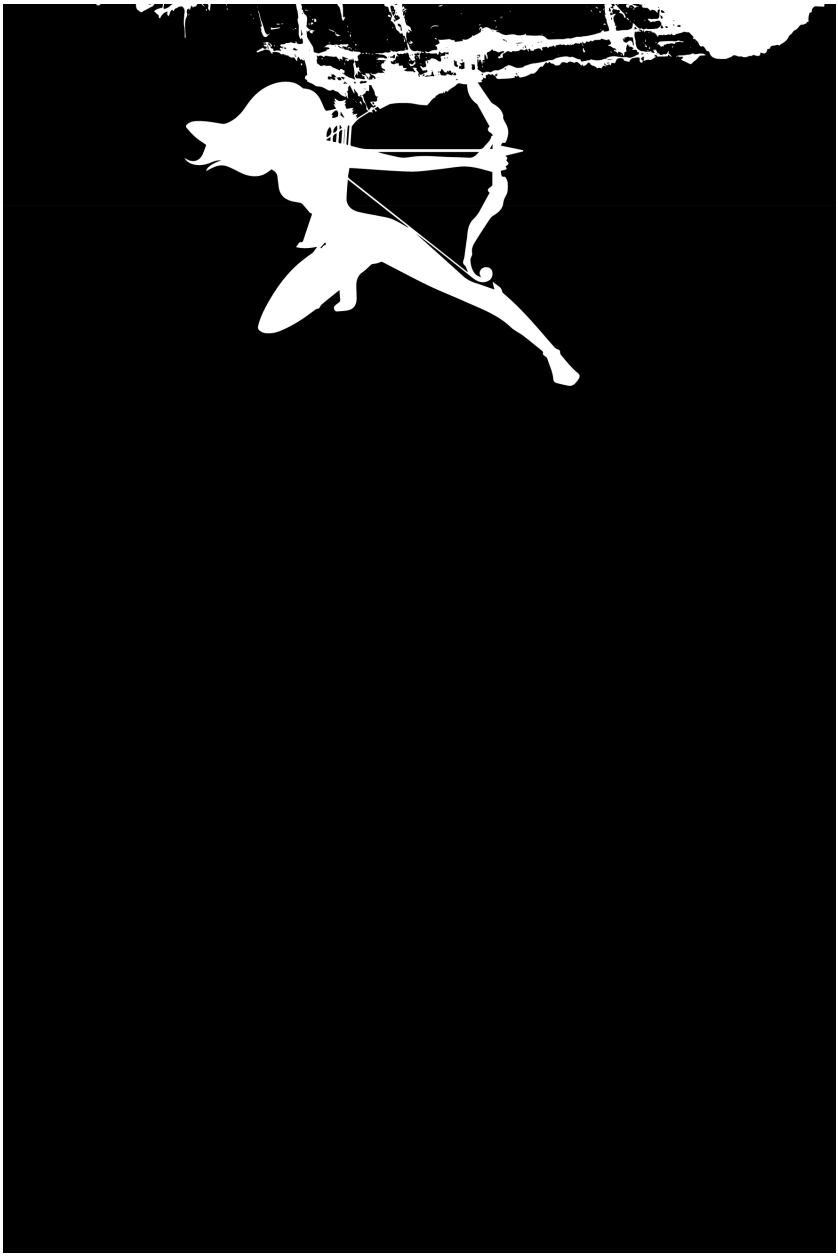

कैलाश

ए

धीश और ऐशानी ने चारों ओर देखा। गरुड़ देवता ने उन्हें यहाँ छोड़ा था, कितने समय पहले, यह वे नहीं जानते थे और न ही उन्हें इसकी परवाह थी। देवनाथ के साथ, वे तीनों ही जीवित बचे थे। बाकी सब बेजान लग रहे थे। केवल देवनाथ ही समझ पा रहे थे कि उनमें जीवन की एक चिंगारी बची है, जो अगर तुरंत चिकित्सा सहायता न मिली तो जल्द ही बुझ जाएगी।

उसने अधीश की ओर देखा, जो अभी भी सदमे से उबरने की कोशिश कर रहा था, लेकिन धीरे-धीरे संभल रहा था। ऐशानी सदमे में बिल्कुल शांत बैठी थी। वे जानते थे कि जड़ी-बूटियों और पौधों के अपने ज्ञान से वह कुछ मरणासन्न आत्माओं की जान बचा सकती है। अधीश उसके पास गया और प्यार से उसे गले लगा लिया। उसने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि उसे अधीश की उपस्थिति का एहसास हुआ हो। 'ऐश,' उसने धीरे से कहा, 'बेबी, तुम्हें कुछ समय के लिए अपने दुख को किनारे रखना होगा। यहाँ लोग मर रहे हैं। उन्हें तुम्हारी तत्काल देखभाल की ज़रूरत है।'

तुम्हारे ज्ञान और देखभाल के बिना वे मर जाएँगे। वैसे भी, वे एक तिनके के सहारे जी रहे हैं, हवा का एक झोंका भी उनकी जान ले सकता है। अपनी तंद्रा से बाहर आओ, प्यारी, हम शोक मनाएँगे लेकिन अभी समय नहीं है,' उसने कोमलता से उसके कंधों को दबाया और उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार किया।

ऐसा लगा मानो ऐशानी ने उसकी बात सुनी ही न हो। काफी देर बाद उसने एक गहरी, कांपती हुई सांस ली और उसकी तरफ देखने के लिए मुड़ी। दूर से देवनाथ ने यह हलचल देखी और राहत की सांस ली।

ऐशानी ने उनके हाथ अपने हाथों में लेकर चारों ओर देखा। अगर वह सही मानसिक स्थिति में होती, तो उसे चारों ओर की शुद्ध, मधुर और निर्मल हवा और ऊंचे पेड़ों की चोटियाँ दिखाई देतीं। पेड़ों की जड़ें काफी नीचे थीं, लेकिन फिर भी वे ऊंचे खड़े थे। अधीश और देवनाथ को कुछ छोटे पेड़ और झाड़ियाँ भी दिखाई दे रही थीं, कई तरह के ऐसे पौधे जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। अगर वे क्षितिज की ओर देखते, तो उन्हें बर्फ से ढकी विशाल पर्वत चोटियाँ दिखाई देतीं। यह इलाका उनके लिए पूरी तरह अपरिचित था।

पास ही में एक विशाल गुफा थी, शंकु के आकार की या त्रिभुजाकार। अधीश के मन में एक विचार कौंधा, जिसे उसने तुरंत ही खारिज कर दिया। क्या वे कैलाश पर्वत पर थे? लेकिन यह कैसे संभव था? जहाँ तक उसे पता था, कोई भी मनुष्य कभी कैलाश

पर्वत पर नहीं गया था। लेकिन उनकी परिस्थितियाँ असामान्य थीं। शायद उन्हें राक्षसों से भगवान की सुरक्षा की आवश्यकता थी, इसीलिए भगवान ने स्वयं गरुड़ देवता को उन्हें यहाँ लाने के लिए भेजा था!

अधीश, ऐशानी को ज़मीन पर लेटे हुए लगभग बीस लोगों के पास ले गया। वे साँस नहीं ले रहे थे। देवनाथ ने कुछ छोटे पत्थर और झाड़ियाँ इकट्ठा करके उनके लिए बिस्तर बनाने की कोशिश की थी, जो दयनीय प्रयास था, लेकिन कुछ न होने से कुछ होना बेहतर था। उन्हें देखकर ऐशानी ने गहरी साँस ली और एक पल के लिए अपने दुख और पीड़ा को भूल गई। उसने अधीश और देवनाथ की ओर देखा, जो बेसब्री से उसके निर्देशों का इंतज़ार कर रहे थे। देवनाथ पास की एक छोटी नदी से पानी ला चुका था और अधीश ने आग जला ली थी। उसने उनमें से कुछ को पहचान लिया। लेकिन अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह जल्दी से काम पर लग गई।

आस-पास देखते हुए, उसने ऊँचे पेड़ों और फूलों वाली झाड़ियों को देखा। लंबी डंडियों पर नीले फूल खिले थे। उसने इन्हें पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन उसे लगा कि इन नीले फूलों का इस्तेमाल दर्द निवारक के रूप में किया जा सकता है। उसे आभास हुआ कि ये नीले या बैंगनी फूल अतिविषा परिवार के हैं, जो एक बारहमासी जड़ी बूटी है और लगभग हर जगह उग जाती है। वह जानती थी कि अतिविषा की जड़ों में कई औषधीय गुण होते हैं, जिनमें दर्द निवारक, सूजनरोधी और कसैले गुण शामिल हैं।

फिर एक झाड़ी थी जिस पर खसखस जैसे पीले फूल खिलते थे, जो देखने में अमरुल नामक पौधे जैसी लगती थी, हालांकि अमरुल वास्तव में एक झाड़ी नहीं बल्कि एक खरपतवार है। इसकी पत्तियों का उपयोग विष के विषनाशक के रूप में किया जाता था और इसके रस को विभिन्न रोगों के उपचार हेतु पूरे शरीर पर लगाया जा सकता था।

ये पौधे शायद उसी प्रजाति के संशोधित रूप हों जिनका अध्ययन ऐशानी ने किया था; संभवतः कैलाश की शुद्ध हवा में सांस लेने के कारण ये यहाँ अधिक शक्तिशाली हो गए थे। उसे यकीन नहीं था कि जड़ी-बूटियाँ मदद करेंगी या नहीं, क्योंकि उसके पास अपने कोमा में पड़े मरीजों की बीमारी का निदान करने का समय नहीं था। लेकिन वह उन्हें बचाने की हर संभव कोशिश करने वाली थी—चाहे इसके लिए उसे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े।

उसने अधीश को नीले फूल और देवनाथ को पीले फूल लाने का इशारा किया। ये झाड़ियाँ या पौधे इतनी दूर थे कि इन्हें तुरंत लाना संभव नहीं था। लेकिन ऐशानी एक

बेचैन अवस्था से दूसरी बेचैन अवस्था में चली गई थी। कुछ समय के लिए उसने अपने शोक को किनारे रख दिया था। उसने अधीश के विरोध पर भी कोई ध्यान नहीं दिया। अधीश के पास कई शक्तियां थीं, जिनमें से एक थी तेज गति से चलना। उसने इस जीवन में कभी इस शक्ति का प्रयोग नहीं किया था। फिर भी, अब उसे इसका प्रयोग करना ही था। आंखें बंद करके उसने गुरुजी की छवि अपने मन में बनाई, लेकिन जो देखा उससे वह भयभीत हो गया: उसने गुरुजी का मृत, क्षत-विक्षत शरीर देखा। उसके मन में तीव्र क्रोध उमड़ आया, जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था। उसने आंखें खोलीं और ऐशानी और चारों ओर बिखरे शवों को देखा। हे भगवान! वह उन दुष्ट राक्षसों को अपने ऊपर हावी नहीं होने दे सकता था। उसने, ऐशानी और उनके लोगों ने राक्षसों का नाश करने के लिए कई जन्म लिए थे। वह किसी को भी मरने नहीं दे सकता था, सिर्फ इसलिए कि उसे समय पर जड़ी-बूटियां नहीं मिल पाईं। उसने देवनाथ को ऐशानी के साथ रुकने का इशारा किया। तेज गति से चलने के बावजूद, देवनाथ अधीश का मुकाबला नहीं कर सकता था। देवनाथ समझ गया और वहां से चला गया, कहीं ऐसा न हो कि ऐशानी उसे पकड़ ले और अधीश के साथ न जाने के लिए डांट दे।

अधीश दौड़ता ही रहा! उसके पैर हिमालय की चट्टानों और पत्थरों को छू ही नहीं रहे थे, मानो वह उन पर से फिसल रहा हो, जैसे उड़ रहा हो! इस अलौकिक शक्ति के पुनरुत्थान पर रुककर आश्चर्य करने का समय ही नहीं था। अचानक उसने खुद को झाड़ियों के ऊपर पाया। झाड़ियाँ इधर-उधर बिखरी हुई थीं। अधीश जानता था कि अगर वह थोड़ा नीचे उतरेगा तो उसे और भी झाड़ियाँ मिलेंगी, लेकिन उसने जो भी झाड़ियाँ मिलीं उन्हें इकट्ठा किया और वापस ऊपर चढ़ गया। उसे अपनी नई शक्ति पर धीरे-धीरे भरोसा बढ़ता जा रहा था। कुछ ही मिनटों में वह पहाड़ी पर वापस आ गया और ऐशानी को फूल दे दिए। देवनाथ के लिए तो दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं था जो उसका अधीश भैया न कर सके।

ऐशानी ने जड़ी-बूटियों को पानी में धोया और देवनाथ को फूलों को हाथों से मसलने को कहा। उसने गाढ़ा पेस्ट अपने मरीज़ों की ज़ख्मी त्वचा पर लगाया। तीनों ने जी-जान से काम किया, जहाँ भी संभव हो सका, पेस्ट लगाते रहे, मानो शरीर में किसी तरह की हलचल हो। किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। ऐशानी ने अपना दुपट्टा फाड़ा, उसे पानी में डुबोया और कुछ बूँदें उनके मुँह पर डालीं। कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। पानी

बस बह गया। फिर भी, वे पेस्ट लगाते रहे और मुँह गीला करते रहे।
मिनट घंटों में बदलते जा रहे थे। पीड़ितों की हालत में कोई बदलाव नहीं आया था। इसी बीच, ऐशानी ने अधीश को दो बार और जड़ी-बूटियाँ लाने के लिए नीचे भेजा। अधीश समझ गया था कि ऐशानी फिर से गहरी निराशा में डूब रही है। इन बेचारे पीड़ितों की देखभाल करने से उसका ध्यान उन पर आई विपत्ति से हट गया था। वह दिल ही दिल में चाहता था कि वह सबकी पीड़ा को कम करने के लिए कुछ कर सके, यहाँ तक कि उनकी अपनी पीड़ा को भी। उसने एक भीगे हुए कुत्ते की तरह अपना सिर हिलाया; वह अभी उस रास्ते पर नहीं जाना चाहता था। वह एक योद्धा था; वह जानता था कि कैसे लड़ना और रक्षा करना है। वह न तो डॉक्टर था और न ही नर्स।
उसके चाचा कल्पेश और उनकी पत्नी पद्मजा की छवि उसकी आँखों के सामने कौंध गई। उसे फिर से अपना सिर हिलाना पड़ा। अपने परिवार के बारे में सोचने से उसकी चिंताएँ और परेशानियाँ ही बढ़तीं। उसने फिर चारों ओर देखा। हवा बहुत ठंडी, साफ़ और स्फूर्तिदायक थी। वहाँ बहुत सारे पेड़-पौधे थे। उसे पूरा विश्वास था कि हर पेड़-पौधे में कोई न कोई औषधीय गुण ज़रूर होंगे। ऐशानी आयुर्वेद के बारे में काफ़ी कुछ जानती थी, लेकिन यहाँ के पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के बारे में नहीं। यह एक अत्यंत गंभीर आपात स्थिति थी और वे बस हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। ऐशानी की ओर मुड़कर उसने कहा, 'मैं जाकर देखता हूँ कि क्या मुझे कुछ और पौधे और जड़ी-बूटियाँ मिल सकती हैं।' ऐशानी ने कोई जवाब नहीं दिया और अपना काम करती रही। अधिश समझ गया कि उसने उसकी बात सुन ली है और उसका सुझाव मान लिया है। उसने देवनाथ की ओर देखा, जिसने सिर हिलाया। उसे ऐशानी के साथ रुककर उसकी मदद करनी थी। देवनाथ इतना समझदार था कि वह समझ गया था कि अगर वह रुकेगा तो उसके स्वामी को ज़्यादा आराम मिलेगा। अघोरी होने के नाते, देवनाथ ने अधीश से जुड़ने से पहले अपना पूरा जीवन श्मशान घाट में बिताया था। उन्हें वाराणसी में उनके गुरु द्वारा अधीश की देखभाल के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया गया था। अधीश देवनाथ के लिए भगवान के समान थे और वे अधीश के लिए अपना प्राण भी दे सकते थे। उनके प्रशिक्षण ने उन्हें मृत और अमृत के सूक्ष्म अंतरों को पहचानने में भी मदद की। इसी कारण अधीश चाहते थे कि वे यहीं रुकें और ऐशानी की सहायता करें।
अधीश औषधीय फूलों की तलाश में आधा मील चला। धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि वे फूल कैलाश पर्वत की तलहटी में, एक पिरामिड जैसी संरचना के अंदर हैं। अब उसे

पछतावा हुआ कि उसने गुरुकुल में सिद्धांत पर अधिक ध्यान क्यों नहीं दिया। उसे अपने गुरु की कही बात याद आई कि कैलाश पर्वत 108 पिरामिडों से मिलकर बना है। स्पष्ट रूप से ये 108 पिरामिड ही विशाल कैलाश पर्वत का निर्माण करते हैं। अब उसे अपनी लापरवाही पर पछतावा हो रहा था। उस समय वह अन्य विषयों में व्यस्त था जिन्हें वह अधिक महत्वपूर्ण समझता था। वह गुरुकुलों के पाठ्यक्रम बनाने वाले गुरुओं की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। कैलाश पर्वत पर कम से कम दस व्याख्यान थे, जिनमें से उसने केवल दो या तीन पर ही ध्यान दिया था। अधिकांश कक्षाएं इस बारे में थीं कि यह स्वर्ग का द्वार है, जिसमें उसकी कोई खास रुचि नहीं थी। वह जानता था कि वह स्वर्ग या निर्वाण का स्वागत तभी करेगा जब उसकी प्रिय पृथ्वी से हर राक्षस, चाहे वह किसी भी आकार, लिंग या क्रूरता का हो, का नाश हो जाएगा। और यह सब जल्दी होने वाला नहीं था। इन राक्षसों को नष्ट करने में उन्हें कई जन्म लग गए थे और राक्षस अब भी शक्तिशाली थे। वह महान युद्ध कला सीखने और कई हथियारों में महारत हासिल करने में इतना मग्न था कि ऐशानी के बारे में सोचते-सोचते उसके पास किसी और चीज़ पर ध्यान देने का समय ही नहीं था। जिस विपत्ति का वे सामना कर रहे थे, उसके बावजूद अधीश की ज्ञान प्राप्ति की प्रवृत्ति और साहसिक भावना जागृत हो रही थी। किसी और समय होता तो वह यहाँ दिनों और महीनों तक बस घूम-घूम कर, चीजों को अपने नजरिए से देख सकता था।

जड़ी-बूटियाँ लाने के लिए धीरे-धीरे नीचे उतरते हुए, उसने उन कक्षाओं को याद करने की पूरी कोशिश की जिनमें वह अब तक बेपरवाही से शामिल होता रहा था। वह अपनी भावनाओं, अपने पिछले जन्मों और भाग्य को समझने की कोशिश कर रहा था। उसे बस ध्यान केंद्रित करना था और कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील के बारे में उन्हें बताई गई बातों की यादों को दोहराना था।

एक अवधारणा जो उन्हें बेहद रोचक लगी, वह यह थी कि इस क्षेत्र में समय देश के निचले मैदानी इलाकों की तुलना में कहीं अधिक तेज़ी से चलता है। क्या गरुड़ देवता ने अतीत में उन्हें यहाँ छोड़ा था, ताकि जब तक सभी ठीक हों, वे अपने वर्तमान समय तक पहुँच सकें? उन्होंने इस संभावना पर विचार किया। धीरे-धीरे, कैलाश मानसरोवर पर उनके पाठों का सार उनके मन में उतरने लगा। उनके गुरुओं ने बताया था कि इस पवित्र शिखर को विश्व का केंद्रीय अक्ष माना जाता है और वैज्ञानिक इसे अक्ष मुंडी कहते हैं, जिसे कभी-कभी विश्व वृक्ष भी कहा जाता है। ऋग्वेद में लिखा है कि उन्होंने

पहाड़ों, वृक्षों और पहाड़ियों को पृथ्वी को स्थिर रखने के लिए खूंटियों के रूप में बनाया है, फिर भी उन्हें इस प्रकार स्थापित किया है कि पृथ्वी अभी भी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। चार महान नदियाँ भी कैलाश पर्वत से ही निकलती हैं: ब्रह्मपुत्र, सिंधु, सतलुज और करनाली। फिर कैलाश पर्वत की तलहटी में स्थित दो महान झीलें हैं, मानसरोवर झील और राक्षसस्थल झील।

अधीश ने यह भी याद किया कि तेरहवीं शताब्दी में एक बौद्ध लामा को छोड़कर आज तक कोई भी मनुष्य कैलाश पर्वत पर नहीं चढ़ पाया था। इसका कारण यह था कि रास्ता अचानक बदल जाता था, या पर्वतारोही अचानक विपरीत दिशा में मुड़ने लगता था, या कोई और बाधा सामने आ जाती थी। कुछ लोग या तो वापस लौट गए या गायब ही हो गए। शायद भगवान के गणों (सेवकों) ने यह सुनिश्चित किया था कि किसी भी परिस्थिति में किसी भी मनुष्य को कैलाश पर्वत तक पहुँचने की अनुमति न दी जाए। आध्यात्मिकता के मामले में मनुष्य निम्न पायदान पर थे।

अधीश का सिर चकरा रहा था, इसलिए उसने अपनी पुरानी यादों को रोक दिया। उसने खुद से वादा किया, बाद में। अभी उसे वे पौधे और झाड़ियाँ लानी थीं जिनका उसने ऐशानी से वादा किया था। शायद, बस शायद, वे उन भटके हुए जीवों को बचा सकें।

लगभग डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद ठंड थोड़ी कम हो गई और कुछ पौधे और झाड़ियाँ दिखाई देने लगीं। उसने हर प्रजाति के कुछ पौधे तोड़कर एक तरह का मिश्रण बना लिया। शायद ऐशानी को इनमें से कुछ काम आ जाएँ।

जब वह लौटा, तो उसे स्थिति में कोई स्पष्ट बदलाव नहीं दिखा। ऐशानी और देवनाथ अभी भी बेजान पीड़ितों पर काम कर रहे थे।

‘Bhaiya,’ Devnath sounded a bit excited, ‘Bhaiya, these people are responding to Bhabhi’s treatment.’

अधीश थोड़ा चौकन्ना हो गया। अघोरी होने के नाते, देवनाथ लाशों के बारे में सब कुछ जानता था - मृत, जीवित और अधमरा। साथ ही, यहाँ उसकी सहज बुद्धि और भी तेज़ हो गई थी। आख़िरकार, कैलाश पर्वत महादेव या भगवान शिव का निवास स्थान था, जिनके अघोरी परम भक्त थे। उसने देवनाथ की ओर देखा, जो लगभग खुश लग रहा था, क्योंकि उसने पीड़ितों की हालत में कुछ सुधार देखा था, लेकिन मुख्य रूप से इसलिए कि वह कैलाश पर्वत की तलहटी में था। शायद निर्वाण के इतने करीब पहुँचने

का यही उसका एकमात्र अवसर था। देवनाथ ने अपने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह अपने पूजनीय देवता महादेव के इतने करीब रह पाएगा। हालात बेहद दुखद थे, लेकिन वह यहाँ था!

'मुझे तो कोई बदलाव नजर नहीं आ रहा, देवनाथ; वे अब भी मुझे बेजान ही लगते हैं।' भैया, हालांकि उनकी हालत अभी भी नाजुक है, लेकिन उनमें जीवन वापस लौट रहा है या उनके शरीर में जीवन बना हुआ है। भैया, यह वातावरण स्वयं ही पूरे ब्रह्मांड में सबसे शुद्ध है। यहां से रोग और रोग स्वाभाविक रूप से दूर हो जाते हैं। हमारे लोग पूरी तरह से कमजोर हो गए थे, लेकिन इस शुद्धतम हवा और भाभी के फूलों, झाड़ियों और उनकी जड़ों के ज्ञान ने उन्हें थोड़ा ठीक होने में मदद की है। भैया, मुझे पता है कि मानसरोवर झील पास ही है, अगर हम किसी तरह झील से पानी ला सकें, तो हमारे दोस्त जरूर ठीक हो जाएंगे।

अधीश को देवनाथ पर इतना विश्वास था कि वह उनकी हर बात पर यकीन करता था। वह मानसरोवर झील के जल के चमत्कारों के बारे में भी जानता था। कहा जाता था कि यह जल न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ करता है, बल्कि पिछले जन्मों के पापों को भी क्षमा कर देता है। 'ठीक है, जैसा आप कहें देवनाथ, मैं जाकर जल ले आता हूँ, आप ऐशानी के साथ रहिए।'

देवनाथ जितना अधीश के साथ जाना चाहता था, उतना ही वह जानता था कि ऐशानी की मदद करना और लगभग मरणासन्न परिवार की देखभाल करना यहाँ उसके लिए ज़्यादा उपयोगी होगा। 'भैया, ये बर्तन अपने साथ ले जाइए, आप इनमें झील का पानी भर सकते हैं,' देवनाथ ने अधीश को दो बर्तन दिए - एक तांबे का बर्तन और एक बोतल। अधीश हैरान रह गया। देवनाथ ने उसे एक थैला भी दिया। 'देवनाथ, आपने ये कब इकट्ठा किए? गुरुकुल में इन चीज़ों के बारे में सोचने का भी समय नहीं था,' अधीश ने कहा। 'जब आप ऐशानी भाभी के साथ गरुड़ मंत्र का जाप कर रहे थे। मैंने जल्दी से जो कुछ भी मिला और जो मुझे उपयोगी लगा, उसे इकट्ठा किया। मैंने उन्हें एक बड़े थैले में भरकर अपने साथ ले आया।' गुरुकुल की त्रासदी के बाद पहली बार अधीश मुस्कुराया, 'भगवान आपका भला करे देवनाथ; आपके बिना पिछले कुछ दिन संभव नहीं होते।'

देवनाथ आनंद से इतरा रहा था। वह अधीश की प्रशंसा के लिए ही जीता था। अधीश ने ऐशानी की ओर देखा। वह उसके लाए फूलों का पेस्ट बना रही थी। वह उसके पास

गया और धीरे से बोला, “ऐश, देवनाथ ने इन लोगों के रंग में कुछ बदलाव देखा है। अगर हम इन्हें मानसरोवर झील के जल से और अभिषेक करें, तो शायद ये जल्दी ठीक हो जाएँ। मानसरोवर झील यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। मैं नीचे जाकर थोड़ा पानी ला रहा हूँ। मैं जल्द से जल्द लौटने की कोशिश करूँगा, शायद एक-दो दिन में।” उसने ऐशानी को प्यार से गले लगाया, उसके बालों को सहलाया और चला गया। ऐशानी ने कोई जवाब नहीं दिया। अधीश ने नीचे की ओर अपनी यात्रा शुरू की। देवनाथ ने उसे ऊपरी हिमालय की कड़ाके की ठंड से बचाने के लिए एक जैकेट और मफलर दिया था। हालाँकि उसके पास कंपास या जीपीएस डिवाइस नहीं था, फिर भी वह जानता था कि उसे लगभग उनतालीस किलोमीटर की दूरी तय करनी होगी। अधीश में अब ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर आश्चर्यजनक रूप से तेज़ चलने की विशेष क्षमता आ गई थी। वह चट्टानों और पत्थरों के ऊपर से सरकते हुए, मानो उड़ते हुए अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहा था। मानसरोवर झील पहुँचते-पहुँचते लगभग रात हो चुकी थी। शाम ढलते ही शांत जल की निर्मल सुंदरता ने उसे मंत्रमुग्ध कर दिया। डूबते सूरज ने आकाश में रंगों की एक झिलमिलाती बौछार कर दी थी, जो झील पर सहजता से बिखर रही थी। अधीश ने दिव्य आतिशबाजी के इस नजारे को भावहीनता से देखा। अगर वह ऐशानी के साथ किसी और परिस्थिति में होता, तो वे दोनों भी मोहित हो जाते। पौराणिक कथाओं के अनुसार, मानसरोवर झील की रचना ब्रह्मा ने की थी, जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पवित्र त्रिमूर्ति में से एक हैं। उन्होंने अपने हृदय और मन में झील की कल्पना की और फिर उसे साकार किया। हिंदू मान्यता के अनुसार, मानसरोवर झील के पवित्र जल में स्नान करने से पिछले जन्मों के पाप धुल जाते हैं। अधीश जानता था कि पश्चिम में एक और झील है जिसे राक्षसताल के नाम से जाना जाता है। मानसरोवर को सबसे पवित्र झील माना जाता है, जबकि राक्षसताल को राक्षसों की झील के रूप में जाना जाता है। ये झीलें गंगा छू नदी द्वारा विभाजित थीं।

उन्होंने झील के सामने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। वे अब इसके जल को अशांत नहीं करना चाहते थे। वे अगली सुबह देवताओं के स्नान के बाद जल एकत्र करेंगे। पौराणिक कथाओं के अनुसार, ब्रह्म मुहूर्त में, यानी सुबह 4 बजे से 6 बजे के बीच, देवता स्वर्ग से उतरकर मानसरोवर झील में स्नान करते हैं। उन्होंने झील के जल में अपने हाथ और चेहरा धोया। जैसे ही उनके हाथ पानी को छूए, उनके शरीर में एक हल्की सी लहर दौड़ गई। वे पूरी तरह तरोताजा होकर अपनी बैठने की स्थिति से उठे।

उठते समय उन्हें कुछ भी सरसराहट महसूस हुई। उन्हें कुछ भी महसूस या सुनाई नहीं दिया, यह सिर्फ एक अनुभूति थी। वे जानते थे कि यह एक छोटा सा तीर था, छोटा लेकिन दाहिने हाथ से चलाने पर अचूक निशाने वाला। अधीश एक योद्धा थे, वे जानते थे कि कौन सा हथियार मारने के लिए भेजा गया है और कौन सा सिर्फ चेतावनी देने या संदेश पहुंचाने के लिए। यह एक चेतावनी थी। तुरंत सतर्क होकर, वे घूम गए, उनके हाथ पहले से ही उनकी खुखरी पर थे। अधिश कभी भी अपने चौड़े चाकू के बिना नहीं रहता था, इतना कि जो लोग उसे जानते थे उन्होंने इसे उसके पहनावे का हिस्सा मान लिया था और अगर वे इसे उसके शरीर पर नहीं देखते तो आश्चर्यचकित हो जाते।

खुकरी एक बड़े चाकू की तरह होती है, जो बीच में मोटी होती है और 85 डिग्री के कोण पर मुड़ी होती है। इसके कई प्रकार होते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में इसके अलग-अलग डिज़ाइन मिलते हैं, लेकिन आम तौर पर यह एक बहुउद्देशीय हथियार है जिसे कमर पर म्यान में लटकाया जाता है। यह विशेष रूप से युद्धक्षेत्र में तैनात सैनिकों के लिए उपयोगी हथियार है क्योंकि इसका उपयोग वनस्पति काटने और सब्जियां काटने के लिए भी किया जा सकता है।

जैसे ही उसने मुड़कर देखा, उसे एक पेड़ के पीछे एक आदमी दिखाई दिया जो सतर्क तो था, लेकिन छिपने की कोशिश भी नहीं कर रहा था। दोनों ने एक-दूसरे को गौर से देखा। वह आदमी पेड़ के पीछे से बाहर आया और अधीश चौंक गया। वह आदमी भारतीय नहीं था। उसका रंग गोरा था, बाल लंबे, लगभग सफेद थे और आँखें तीक्ष्ण भूरी-नीली थीं। वह लंबा और गठीला था, बरमूडा और टी-शर्ट पहने हुए था। अधीश उस आदमी के साधारण पहनावे से धोखा नहीं खाया। उसके हाथों में एक चमकीली, भयंकर दिखने वाली तलवार थी। उसकी पीठ पर तरकश में कुछ तीर और एक धनुष टंगा हुआ था। अधीश समझ गया कि ये सामान्य धनुष-बाण नहीं थे। उसने तलवार को भी पहचान लिया। उसने गुरुकुल में इसके बारे में पढ़ा था। इसे ग्राम तलवार कहा जाता था और यह नॉर्दिक कथाओं में सबसे शक्तिशाली तलवारों में से एक थी, जिसने ड्रैगन को भी मार डाला था। दोनों ने एक-दूसरे को सतर्कता से देखा। जल्द ही दोनों को एहसास हुआ कि वे एक-दूसरे के लिए खतरा नहीं हैं।

'माफ़ कीजिए; मुझे लगा कि आप रक्षस्थल से आए हुए उन राक्षसों में से एक हैं जो मानसरोवर के पानी को दूषित करने आए हैं,' उस व्यक्ति ने शुद्ध हिंदी में कहा। उसकी

आवाज़ भारी और गंभीर थी। इस बार अधीश को काफ़ी आश्चर्य हुआ, हालाँकि वह जानता था कि दुनिया भर के विभिन्न गुरुकुलों के योद्धा छात्र अलग-अलग देशों में जाकर वहाँ की संस्कृति, युद्ध कला और राक्षस-युद्ध के तरीके सीखते हैं। बस उसे हिमालय में किसी के मिलने की उम्मीद नहीं थी। उसे उस व्यक्ति से तुरंत एक आत्मीयता महसूस हुई। उस व्यक्ति ने आगे कहा, 'मैं स्वीडन से ऐनार हूँ। मुझे मानसरोवर झील के पानी की रक्षा करने का काम सौंपा गया है, ताकि पास की झील में छिपे हुए किसी भी राक्षस से उसे बचाया जा सके।' अधीश ने सिर हिलाया। वह जानता था कि कभी-कभी राक्षस मानसरोवर झील के पानी को दूषित करने की कोशिश करते हैं, जो सबसे ऊँची मीठे पानी की झील है, जबकि रक्षस्थल खारे पानी की झील है। दोनों झीलें एक-दूसरे के बहुत करीब थीं, लेकिन समानता यहीं खत्म हो जाती थी। मानसरोवर का जल अत्यंत शांत और स्थिर था, जबकि राक्षसस्थल का जल सदा अशांत और उग्र रहता था। मानसरोवर झील के पवित्र जल में मछलियाँ और जलीय जीव बहुतायत में पाए जाते थे, जबकि राक्षसस्थल में जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था, और यदि था भी तो वह केवल नकारात्मक या राक्षसी प्रकार का था।

अधिश ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, 'अधीश,' उसने बस इतना ही कहा। ऐनार ने सिर हिलाया और बात खत्म हो गई। अभी और भी खुलासे होने बाकी थे। फिलहाल इतना ही काफी था।

'अपना काम बताइए और फिर रात को आराम कीजिए। आप आराम और नींद की जरूरत महसूस कर रहे हैं,' आइनार ने कहा और टिप्पणी की, 'चलिए मैं आपको एक ऐसी जगह दिखाता हूँ जहाँ आप आराम कर सकेंगे।'

अब जब अधीश की सारी सुरक्षा कमजोर हो गई थी, तो उसे नींद आने लगी और वह ऊँघने लगा। 'मैं अपने बीमार साथियों के लिए पानी लेने आया हूँ, जो कहीं ऊपर हैं। इस उपचार करने वाले पानी के बिना वे शायद जीवित न रह पाएँ।' ऐनार ने सिर हिलाया और अधीश को एक सुनसान जगह पर ले गया, 'तुम आराम करो। मैं झील और तुम्हारी भी रखवाली करूँगा।' अधीश ने सिर हिलाया, लेट गया और तुरंत सो गया।

अगले दिन अधीश भोर होते ही उठ गया। ऐनार पहले से ही इधर-उधर घूम रहा था। वह उसके लिए गरमागरम नाश्ता लाया, एक तरह का दलिया जिसे अधीश तुरंत

पहचान नहीं पाया। यह कम नमक वाला दलिया लग रहा था जिसमें बहुत सारी जड़ी-बूटियाँ और सूखे मेवे मिले हुए थे, जो देखने में स्वादिष्ट तो नहीं था, लेकिन उसे ताजगी भरी ऊर्जा देने के लिए काफी था। अब लगभग सुबह के छह बज रहे थे। 'मैं झील से थोड़ा पानी लेकर अपनी यात्रा जारी रखूंगा। मेरे बीमार लोगों को इस पानी की जल्द से जल्द जरूरत है,' उसने कहा, 'हर चीज के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, ऐनार। नाश्ता बहुत अच्छा था। यह मुझे पूरे दिन के लिए काफी होगा,' वह मुस्कुराया। ऐनार उसके साथ झील की ओर चला, 'जब मैं दो साल पहले हिमालय आया था, तो मुझे कुछ भिक्षुओं के साथ रहने की अनुमति मिली थी। उनके साथ प्रशिक्षण के बाद, मुझे मानसरोवर झील को राक्षसी जीवों से बचाने का काम सौंपा गया था।' मैंने यहाँ बहुत कुछ सीखा है, मैंने इन राक्षसों से लड़ना सीखा है जो मेरे अपने देश से बिल्कुल अलग हैं। जैसा कि कहते हैं: नाम या रूप चाहे जो भी हो, राक्षस तो राक्षस ही होता है,' आइनार ने अपने ही कमजोर मजाक पर हंसते हुए कहा।

कैलाश पर्वत पर गंभीर स्थिति के अलावा, अधीश अब मानसरोवर झील के बारे में भी सोच रहा था। 'राक्षसस्थल और अन्य स्थानों से आने वाले राक्षसों को रोकने के लिए अन्य योद्धा भी होंगे। मुझे वे कहीं दिखाई नहीं दे रहे। वैसे भी, आपके अलावा, मुझे यहाँ आसपास कोई नहीं दिख रहा, न मनुष्य और न राक्षस,' अधीश व्याकुल था। 'ऐसा इसलिए है क्योंकि आप अतीत में हैं, आप झील तो देख सकते हैं लेकिन उसके पास मौजूद भीड़ को नहीं,' ऐनार ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे समय यात्रा के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है सिवाय इसके कि मैं भी कभी-कभी बेहद कठिन परिस्थितियों में समय यात्रा कर सकता हूँ,' वह रुक गया मानो उसने कुछ ज्यादा ही कह दिया हो।

अधीश अचंभित रह गया। उसने सोचा कि किसी को नहीं पता कि वह और उसका समूह समय में पीछे यात्रा करके आए हैं, और यहाँ एक अजनबी है जो यह जानता है, उसका इंतज़ार कर रहा है और समय में यात्रा भी कर सकता है। उसने मन ही मन सोचा, हम तो ब्रह्मांड के विशाल ताने-बाने में ज्ञान के छोटे-छोटे कण मात्र हैं। उसने सोचा कि ऐनार को कितना कुछ और पता होगा और उसके समूह की दुर्दशा के बारे में और किसे पता होगा। उसने मन ही मन सोचा, उम्मीद है कि राक्षसों को नहीं पता होगा, वरना खेल शुरू होने से पहले ही खत्म हो जाएगा। लेकिन वह पूछे बिना नहीं रह सका, 'ऐनार, बताओ, यहाँ खासकर पर्यटन के मौसम में बहुत सारे लोग होते हैं। कोई

भी राक्षस मनुष्य का रूप धारण करके इस पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता है। तुम और बाकी योद्धा उन्हें कैसे पहचानते और उनसे कैसे लड़ते हो?' ऐनार मुस्कुराया, 'संकेत होते हैं। अधीश, इतने सारे संकेत होते हैं कि तुम्हें आश्चर्य होगा कि दूसरे उन्हें क्यों नहीं देखते। उदाहरण के लिए, यहाँ आते समय तुमने कुछ चट्टानों और पत्थरों के समूह देखे होंगे जिन पर नक्काशी की गई है। इनमें से कुछ नक्काशी पर रंग भी चढ़ा हुआ है।' अब इनमें से अधिकतर नक्काशी भगवान शिव को प्रणाम हैं। कुछ अन्य नक्काशी के भी अलग अर्थ हैं। हम जैसे लोगों के लिए एक सुराग ये नक्काशी ही हैं। इन नक्काशी में बहुत सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। कभी-कभी नक्काशी के रंगों में मामूली बदलाव होता है, कभी-कभी पत्थर की दिशा सूक्ष्म रूप से बदल जाती है, और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कभी-कभी ये नक्काशी गाती भी हैं। एक वैज्ञानिक दिमाग यह अनुमान लगाएगा कि ध्वनि इन पत्थरों से होकर गुजरने वाली हवा से आती है, और यह अनुमान सही भी है, लेकिन हर नक्काशी में एक अर्थ और एक संदेश छिपा होता है जो हमें सचेत करता है। राक्षसों की उपस्थिति को प्रकट करने वाले कई अन्य संकेत भी हैं। हमें बस उन्हें पहचानने के लिए तेज और संवेदनशील होना होगा। और साथ ही खूब प्रशिक्षण भी,' आइनार ने हंसते हुए कहा।

'अच्छा, ठीक है,' अधीश भी हँसी में शामिल हो गया। 'मैं यह नहीं पूछूँगा कि तुम राक्षसों से कैसे निपटते हो। ज़ाहिर है, तुम और बाकी योद्धा बहुत अच्छा काम कर रहे हो; तुम्हारी वजह से ही झील की शांति बनी हुई है।' ऐनार ने अधीश को ध्यान से देखा। 'मेरे पूज्य गुरुओं ने मुझे बताया था कि कुछ समय बाद मेरा कार्यकाल यहाँ समाप्त हो जाएगा और एक भारतीय योद्धा मुझे कैलाश पर्वत के पिरामिडों तक ले जाने के लिए भेजा जाएगा, जहाँ मैं इस दुनिया को छोड़ने से पहले मोक्ष प्राप्त करूँगा। मैं वहाँ स्वर्ग के द्वार का दर्शन भी करूँगा। मुझे विश्वास है कि वह समय और वह व्यक्ति आ गया है जो मुझे वहाँ ले जाएगा,' ऐनार ने गंभीरता से कहा।

अधिश एक बार फिर चौंक गया। उसके मन में कई विचार उमड़ रहे थे, लेकिन वह उन्हें व्यक्त नहीं कर पाया। गुरुकुल की स्थिति और कैलाश पर्वत पर लगभग मृत समान लोगों को देखते हुए, उन्हें अतिरिक्त सहायता की सख्त जरूरत थी। शायद ईश्वर की यही इच्छा थी कि दोनों एक साथ आ गए। ऐनार ने जब कहा कि वह संसार छोड़कर चला जाएगा, तो उसे समझ नहीं आया। स्पष्टीकरण के लिए बहुत समय था; अभी उसे कैलाश पर्वत पर जितनी जल्दी हो सके पहुंचना था ताकि वहां की आपात

स्थिति से निपट सके। ईश्वर ही जाने ऐशानी और देवनाथ क्या झेल रहे थे। उसके भीतर अनगिनत प्रश्न उठ रहे थे, लेकिन उनके उत्तर खोजने का समय नहीं था। इस समय सबसे बड़ी आवश्यकता गुरुकुल के पीड़ितों को किसी भी तरह बचाना था।

'ठीक है आइनार, तुम मेरे साथ आ सकते हो, लेकिन तुम्हें वहाँ अपना गुजारा खुद करना होगा। साथ ही, वहाँ पहुँचने के लिए तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। मैं काफी तेज चलता हूँ।'

ऐनार हँसा। उसकी हँसी आनंदमय और राहत भरी थी, 'अधीश, तुम्हें मेरे बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। तुम जाओ और पानी ले आओ, मैं यहाँ अपना काम निपटा लेता हूँ। मानसरोवर की निर्मल और निर्मल सुंदरता को बनाए रखना ज़रूरी है।'

'एक और बात, ऐनार, तुम मानसरोवर की रखवाली कर रहे थे और अब तुम इसे छोड़कर जा रहे हो। मुझे यकीन है कि हम हों या न हों, झील सुरक्षित रहेगी। क्या तुम जाने से पहले सुरक्षा का जिम्मा किसी और को नहीं सौंपोगे?' अधीश उत्सुक था।

'बेशक, जो कुछ भी पहले हो चुका है,' एइनर ने अधीश के आश्चर्यचकित चेहरे को देखकर हंसते हुए कहा। फिर धीरे से बोला, 'मानसरोवर की सुरक्षा से कभी समझौता नहीं किया जा सकता। झील के बाहरी किनारों पर पहले से ही योद्धा तैनात हैं जो हमारे जाते ही पास आ जाएंगे।'

'ओह,' अधीश को राहत मिली, लेकिन फिर उसके मन में कई सवाल उठने लगे। तो, संबंधित लोगों को पता था कि वह यहाँ आने वाला है, और ऐनार ने अपनी चौकी पहले ही दूसरे योद्धाओं को सौंप दी थी। यह सब पहले से तय था! जब उसे समय मिलेगा, तो वह गुरुजी के साथ बैठकर उनसे ये सारे सवाल पूछेगा। उसे फिर एक झटका लगा। गुरुजी का निधन हो गया था! वह उन्हें छोड़कर चले गए थे! तो, यह सब किसने योजना बनाई थी और वे किसके निर्देशों का पालन कर रहे थे या करेंगे? मुँह में कड़वाहट लिए अधीश ने सिर हिलाया और झील की ओर चल पड़ा। तेज धूप में, झील का शांत नीला पानी चारों ओर फैले पहाड़ों को पूरी तरह से प्रतिबिंबित कर रहा था। प्रतिबिंब इतना शुद्ध था कि ऐसा लग रहा था मानो दो आयाम हों, एक पानी के ऊपर और एक नीचे। लेकिन वह ऐसी दिव्य सुंदरता को सराहने की स्थिति में नहीं था। उसका हृदय और पूरा शरीर कैलाश पर्वत पहुँचकर बेजान पीड़ितों को बचाने के लिए बेताब था।

ऐनार अपने वचन का पक्का था। वह भी उतनी ही तेज़ी से चल रहा था, बल्कि शायद

उससे भी तेज़। ऊपर जाते समय उन्होंने एक-दूसरे से बात नहीं की, क्योंकि इससे उनकी गति धीमी हो जाती। रास्ते में, अधिश को कुछ और फूल और झाड़ियाँ मिलीं। उसने उन्हें इस उम्मीद में तोड़ लिया कि ऐशानी को शायद ये काम आ जाएँ। वे रिकॉर्ड समय में कैलाश पर्वत पहुँच गए। अधिश ऐशानी से मिलने के लिए बेताब था। वह सो चुका था और आराम कर चुका था, लेकिन ऐशानी, देवनाथ और बाकी लोगों का क्या? ऐशानी और देवनाथ ने न तो उसे नमस्कार किया और न ही ऐनार की तरफ एक नज़र डाली। अधिश के साथ आने वाला हर कोई भरोसेमंद था, हालाँकि देवनाथ चुपके से अधिश और ऐनार के बीच आ गया। बात बस इतनी सी थी। उन्होंने बस उसके हाथों से पानी लिया, उसे एक सुरक्षित जगह पर रखा और फिर जल्दी से उस पानी को उबालने चले गए जो उन्होंने एक नदी से इकट्ठा किया था। ऐनार ने अपने सामने के दृश्य का जायजा लिया। उसके मन में कई सवाल उठे, लेकिन अगर ज़रूरत पड़ी तो बाद में उन सभी सवालों के जवाब मिल जाएँगे। वह एक योद्धा था और उसने दुनिया से कई अवांछित प्राणियों को नष्ट किया था। कभी वह अकेले काम करता था तो कभी समान विचारधारा वाले लोगों की टीम के साथ। वे स्वयं भी उन स्थानों पर बुरी तरह घायल हो चुके थे जहाँ कोई चिकित्सा सहायता उपलब्ध नहीं थी। उसने साधारण औजारों और जड़ी-बूटियों से जीवित रहना सीख लिया था। बीमारी उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन कैलाश पर्वत की निचली पहाड़ियों में इतने सारे बेहोश लोगों की उपस्थिति ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। वह जानता था कि वे तीनों असाधारण रूप से विशेष शक्तियाँ रखने वाले असाधारण इंसान थे। जो कुछ वह देख रहा था उसमें दैवीयता का स्पर्श था और वह एक बार फिर विनम्र हो गया।

वह अधीश के साथ तुरंत काम पर लग गया। उसने बीमार लोगों के घावों से सूखे फूलों और जड़ी-बूटियों का पेस्ट साफ करने में मदद की। उसने देवनाथ द्वारा खोजी गई धारा के पानी से उन्हें धोने में भी मदद की। बाकी दो लोगों की तरह, ऐनार ने भी ऐशानी के निर्देशों का सहजता से पालन किया। यह इतना स्वाभाविक था कि ऐनार को इसका एहसास भी नहीं हुआ। शुरुआत में, वह ऐशानी के व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ। इतनी सरल दिखने वाली लड़की, बीमार और मरणासन्न लोगों के लिए इतनी चिंतित। लेकिन जैसे-जैसे उसने उसे काम करते और उनकी देखरेख करते देखा, ऐशानी का कद उसकी नज़रों और दिल में और भी बढ़ गया। यह कोई साधारण महिला नहीं थी। वास्तव में, वह महज़ एक इंसान नहीं लग रही थी। जिस तरह से वह

व्यवहार कर रही थी, उससे उसे नॉर्डिक संस्कृति की देवियों की याद आ गई। वह यह भी समझ गया कि ऐशानी न केवल उनकी देखभाल में सो रहे लोगों के लिए दुखी थी, बल्कि उसके दिल और आत्मा में गहरे घाव भी थे; बेहोश लोग तो बस एक छोटी सी कहानी का हिस्सा थे। यदि वह उसकी फुर्ती और निर्देशों का पालन करने की तत्परता से आश्चर्यचकित थी, तो उसने इसका कोई संकेत नहीं दिया। वह पीड़ितों को पुनर्जीवित करने के लिए अथक प्रयास कर रही थी। उसने मानसरोवर के पानी से उनके शरीर को पोंछा।

20 कैलाश के देवदूत

मैंने देखा कि वे कितने अटूट विश्वास और निष्ठा के साथ अपना अभियान चला रहे थे, अगर इसे अभियान कहा जा सकता है। आइनार जानता था कि कुछ बड़ा होने वाला है, वरना वे यहाँ होते ही नहीं। उन्हें यहाँ आने की अनुमति मिलना ही इस बात का प्रमाण था कि मनुष्य के रूप में वे अपने साथियों से श्रेष्ठ थे।

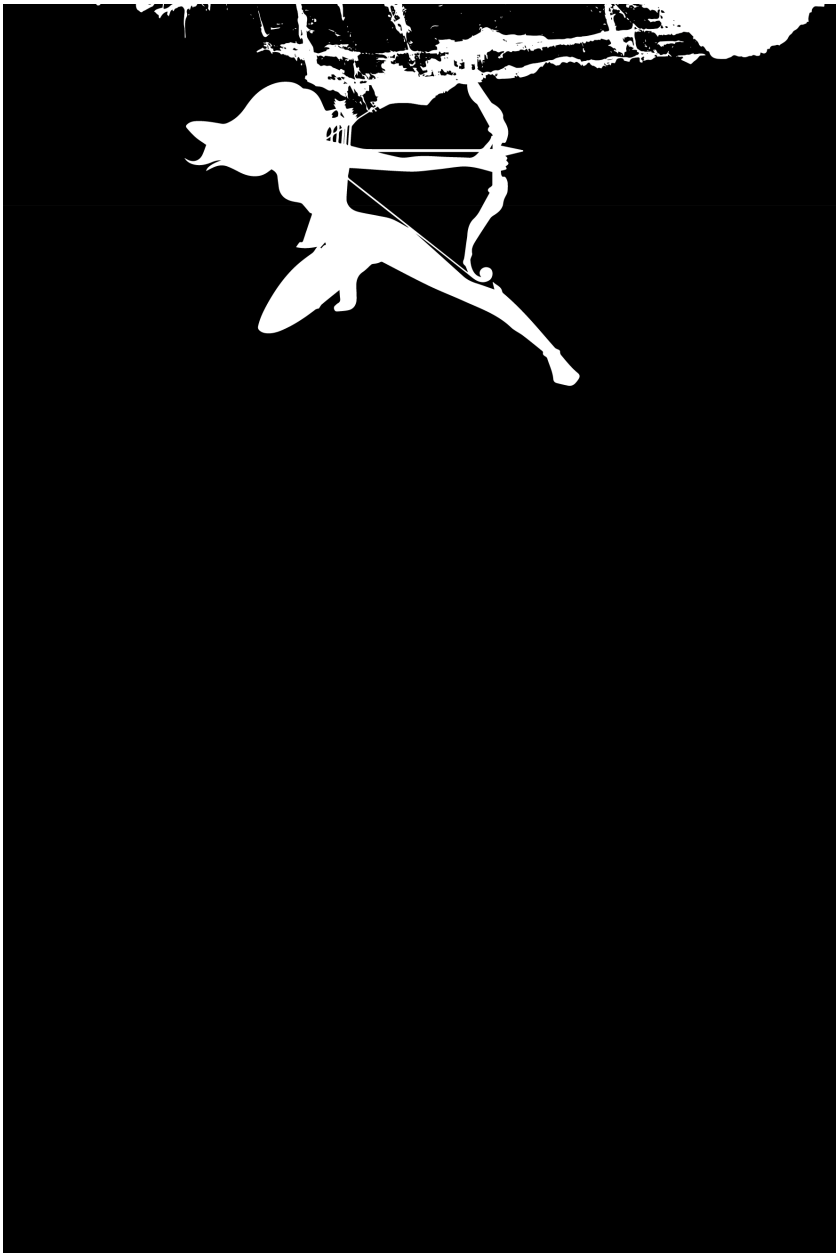

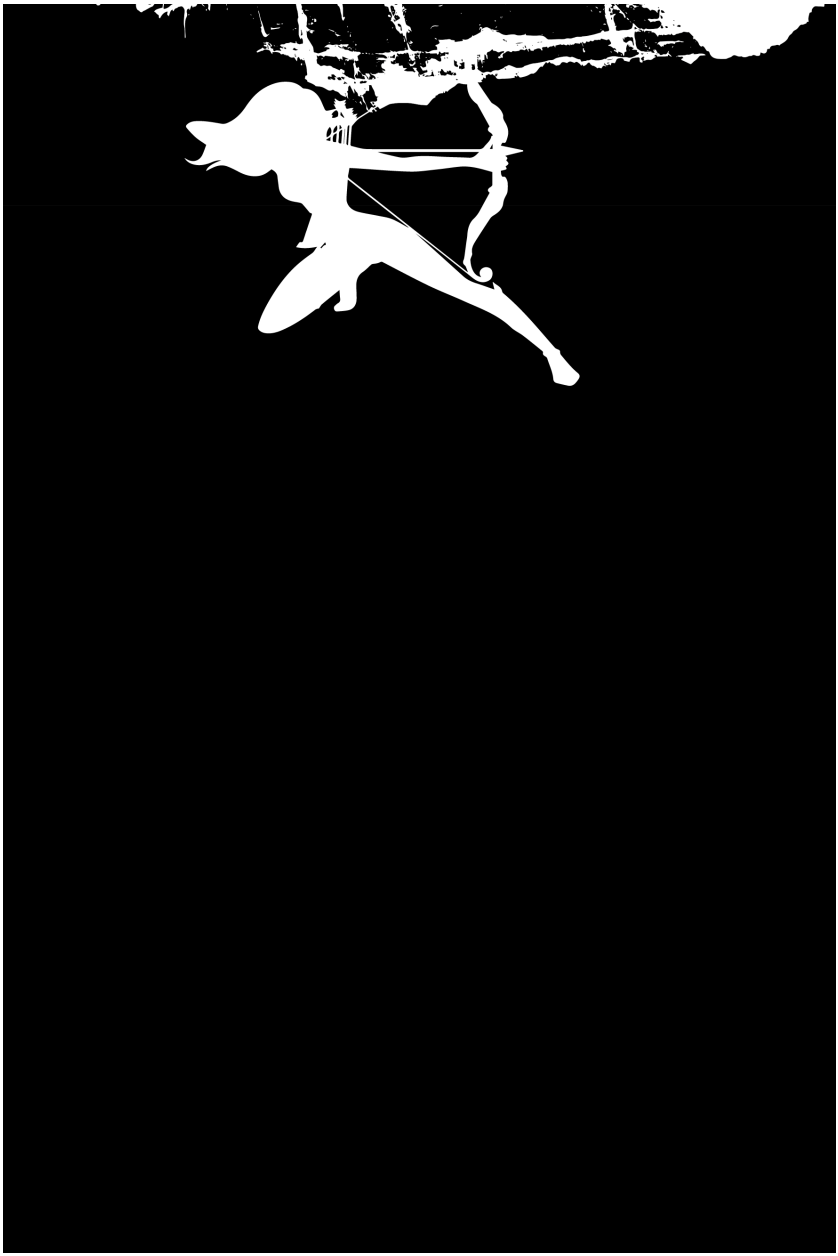

REACHING THE GURUKUL

एन

उनकी तमाम कोशिशों के बावजूद, वे कोमा में पड़े मरीजों को होश में नहीं ला पाए। एक बात निश्चित थी: वे जीवित थे। उनकी त्वचा का रंग बेहतर हो गया था, वह पहले से ज़्यादा ताज़ा दिखने लगी थी। लेकिन वे हिल-डुल नहीं रहे थे और उन्होंने अपनी आँखें भी नहीं खोली थीं। ऐशानी के इलाज का तरीका नहीं बदला। वह उन्हें मानसरोवर झील के पानी से पोंछती और वहाँ उपलब्ध फूलों और जड़ी-बूटियों का पेस्ट लगाती। अब तो यह आपूर्ति भी कम होती जा रही थी। कुछ दिनों बाद, झरने के पानी के अलावा कुछ नहीं बचेगा। ऐनार अपनी तरफ से यथासंभव मदद कर रहा था —जो कि मौजूदा हालात में बहुत कम थी। चार लोगों की टीम कोमा में पड़े मरीजों के चारों ओर बैठी थी, हर कोई अपने-अपने विचारों में डूबा हुआ था। ऐशानी समय-समय पर उठकर देखती रहती थी। देवनाथ थोड़ी दूरी पर बैठा था।

वह अधीश के बगल में कभी नहीं बैठता, चाहे अधीश उसे बैठने के लिए कहे। उसके मन में यह बात स्पष्ट थी कि वह अधीश का सेवक है, बस इतना ही, कोई बहस नहीं। ऐशानी चुपचाप उनके बगल में बैठी थी, लेकिन अधीश जानता था कि अब वह बिना बोले भी उनकी बातचीत में सक्रिय रूप से भाग लेगी। पीड़ितों के ठीक होने के कुछ लक्षण दिखाई देने से थोड़ी राहत मिली।

'ऐनार, तुम यहाँ क्यों हो?' अधीश ने धीमी आवाज़ में पूछा। अगर वह ज़ोर से भी बोलता तो कोई फ़र्क नहीं पड़ता। इस पवित्र वातावरण में लोग फुसफुसाकर ही बात करते थे, फिर उसने लगभग मज़ाक में कहा, 'तुम्हारी संस्कृति में भी राक्षसों की कमी नहीं है।'

ऐनार भी मुस्कुराया, "हाँ, दुनिया में या किसी भी संस्कृति में राक्षसों की कोई कमी नहीं है। मैंने अपने देश में कई राक्षसों का नाश किया है। अपने खाली समय में, मैं दुनिया की विभिन्न संस्कृतियों के बारे में पढ़ा करता था। जब मैंने भारतीय संस्कृति, उसके इतिहास और उसके महाकाव्यों के बारे में पढ़ना शुरू किया, तो मेरे दिल और दिमाग में एक गहरी छाप पड़ी। मैंने जो भी भारतीय पौराणिक कथाएँ पढ़ीं, उनसे मुझे तुरंत सहानुभूति हुई। मैं इसे समझा नहीं सकता, लेकिन मुझे तुरंत पता चल गया कि जो साहित्य मैं पढ़ रहा था वह पौराणिक कथा नहीं थी, बल्कि इतने लंबे समय पहले घटित हुई थी कि लोग इसे पौराणिक कथा का दर्जा देते थे। मुझे पता था कि यह सच है क्योंकि मैंने कई विजय अभियानों में भाग लिया था।"

ऐनार थोड़ा शर्मिंदा होकर रुक गया, 'इसीलिए तो मैं हिमालय आया हूँ। बाकी तो आप

जानते ही हैं।'

अधीश और ऐशानी ने एक-दूसरे की तरफ देखा। वे इस भावना को समझते थे। उनके साथ भी ऐसा ही हो चुका था।

अधीश ने ऐनार की पीठ थपथपाते हुए कहा, 'मुझे पता था कि यहाँ कोई गुप्त भारतीय संबंध है। बिना बुलाए कोई यहाँ नहीं आ सकता। आपको कैलाश पर्वत पर आने की अनुमति मिली है। जाहिर है, आप एक बहुत ही उच्च कोटि के योद्धा और विद्वान हैं। हमारे गुरुकुल में आपका स्वागत है, या जो भी इसका बचा हुआ हिस्सा है,' उन्होंने उदास स्वर में कहा।

ऐनार ने हल्के से सिर हिलाकर स्वागत स्वीकार किया। वह भी यहाँ उनकी उपस्थिति को लेकर उत्सुक था, लेकिन उसे सहज रूप से पता था कि इस समय उनके घाव अभी भी गहरे हैं। सही समय आने पर वे खुद उसे बता देंगे। वे कुछ देर तक वहाँ बैठे रहे और धीरे-धीरे बातें करते रहे। अंत में, अधीश बोला, 'हम यहाँ यूँ ही निष्क्रिय नहीं बैठ सकते, किसी चमत्कार की उम्मीद में। हमारे दोस्तों की हालत बिगड़ नहीं रही है, लेकिन वे अपनी आँखें भी नहीं खोल रहे हैं। मैं नीचे जाकर कल्पेश और पद्मा से कुछ और अच्छी दवाइयाँ लाता हूँ। वे डॉक्टर हैं; शायद उनकी दवाइयाँ इन लोगों को होश में लाने में मदद कर सकें।'

ऐशानी ने अचानक उसकी ओर देखा, लेकिन अधिश ने उसकी आँखों में नहीं देखा। वह उसके अनकहे सवालों को समझ गया था। वह खुद दुविधा में था। क्या उनके परिवार का कोई सदस्य जीवित था? लेकिन वह इन सब बातों के बारे में नहीं सोचना चाहता था, वह उम्मीद की उस छोटी सी किरण को भी नहीं छोड़ना चाहता था जिसे वह थामे हुए था। अंत में, उसने ऐशानी की ओर देखा। उनके बीच कुछ हुआ और वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। 'देवनाथ, तुम्हें ऐशानी के साथ रहना होगा। ऐनार, क्या मैं तुमसे मानसरोवर झील से थोड़ा और पानी लाने का अनुरोध कर सकता हूँ, क्योंकि यहाँ पानी लगभग खत्म हो गया है? मेरी अनुपस्थिति में, पानी लाने वाला केवल तुम ही हो।'

‘ज़रूर, अधीश, तुम्हें मुझसे विनती करने की ज़रूरत नहीं है। मैं यहाँ की स्थिति को सुधारने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा,’ ऐनार ने गंभीरता से कहा। अधीश लगभग तुरंत ही चला गया। कुछ ही सेकंड में वह क्षितिज से ओझल हो गया। वह अपनी तेज़ गति का इस्तेमाल कर रहा था, जो ध्वनि की गति के बराबर थी। उसने अपनी गति

बढ़ाई और अचानक गिर पड़ा। ऐसा लगा जैसे वह किसी विशाल स्पीड ब्रेकर से टकरा गया हो। वहाँ कुछ भी नहीं था, लेकिन वह जानता था कि उसने समय की सीमा पार कर ली है और वर्तमान में आ गया है। थोड़ा धीमा होकर वह चलता रहा। कुछ देर बाद, वह साँस लेने के लिए एक पेड़ की छाया में बैठ गया। उसने ऐशानी द्वारा दिए गए पानी का एक घूँट पिया। वह इतना शुद्ध था कि उसे तुरंत ताज़गी मिल गई। उसने अनुमान लगाया कि अभी सौ मील और चलना है। उसने चारों ओर देखा। पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं में कोई बदलाव नहीं था, लेकिन वर्तमान में होना वाकई बेहतर लग रहा था। उसे अपने प्रिय गुरुकुल पहुँचने में लगभग पैंतालीस मिनट लगेंगे। वह वहाँ पहुँचने के लिए बेताब था, लेकिन उसे इस बात का डर सता रहा था कि वहाँ उसे क्या मिलेगा। इतनी सारी भयानक घटनाएँ घटी थीं, इतने सारे अधूरे काम थे कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करे। बहुत से लोगों को ढूँढ़ना था, बहुत सी यादें ताज़ा हो गई थीं। उसके अपने लोग बहुत दूर थे और इस योजना में सच्चे सहयोगी नहीं थे, इसलिए शायद उन्हें फिलहाल छोड़ दिया गया था। लेकिन ऐशानी और रूबी का परिवार, वे तो राक्षसों और उनके जैसे लोगों के विनाश के लिए पूरी तरह से समर्पित थे। उनका क्या होगा, क्या वे वहाँ होंगे? अगर वे बच गए, तो कहाँ होंगे? निश्चित रूप से, उन्हें गुरुकुल के विनाश के बारे में पता होगा। ये और ऐसे ही अनगिनत सवाल उसे परेशान कर रहे थे। उसने दिल से प्रार्थना की और उम्मीद की कि उसके परिवार वाले सुरक्षित हों ताकि वह अपने मामा कल्पेश और उनकी पत्नी पद्मा से उचित दवाइयाँ ले सके। अधीश ने उसके दिमाग को सबसे अहम सवाल के बारे में न सोचने का आदेश दिया था, लेकिन अब उसे इसका सामना करना ही होगा। उनके मार्गदर्शक, उनके गुरु और उनके संरक्षक अब इस दुनिया में नहीं थे; उनके बिना उन्हें कुछ पता नहीं था। निराशा में उन्होंने अपनी आँखों पर हाथ फेरा और जब उनके हाथ गीले निकले तो वे हैरान रह गए। उन्हें याद नहीं था कि वे आखिरी बार कब रोए थे। वे एक योद्धा थे; उनके पास भावनाओं में डूबने का समय नहीं था। तो क्या वे सच में रोए थे? खैर, उन्होंने तय किया कि वे समय बर्बाद नहीं करेंगे। उन्होंने काफी आराम कर लिया था और अब वे गुरुकुल की ओर चलने लगे। यह उनकी सामान्य चाल नहीं थी। एक सामान्य इंसान उन्हें देख तो दूर, महसूस भी नहीं कर पाता। वे इतनी तेज़ी से चल रहे थे कि उन्हें कोई देख नहीं पा रहा था। जल्द ही वे गुरुकुल के एक प्रवेश द्वार पर पहुँच गए। दूसरी तरफ पहुँचने के लिए किसी मंत्र का जाप करने की ज़रूरत नहीं थी,

वे उस चरण को पार कर चुके थे। दूसरी बात, गुरुकुल अभी भी खंडहर था, अपनी पुरानी शान की धुंधली परछाई मात्र। हरा-भरा जंगल जलकर राख हो चुका था, सब कुछ काला और भूरा, सड़ता हुआ, गंदा और उजाड़। यह गुरुकुल, उनका गुरुकुल, जो कभी जीवन की उमंग से जगमगाता था और सुंदर पुरुषों और महिलाओं से आबाद रहता था, अब बस एक खाली ढांचा बनकर रह गया था, जो अपने पूर्व गौरव के लिए विलाप और शोक मना रहा था।

वह आशा की कोई भी निशानी, चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हो, ढूंढते हुए इधर-उधर घूम रहा था। उसे वह मिल भी गई। जली हुई ज़मीन से कुछ घास और झाड़ियाँ निकलने की कोशिश कर रही थीं। ज़मीन पर जमी कालिख की परतों के बीच से थोड़ी सी हरियाली झलक रही थी। अधीश ने इसे एक अच्छा संकेत माना। यही दुनिया का कभी हार न मानने वाला रवैया था और ऐसा ही होना चाहिए था। क्या वरिष्ठ गुरु के पुस्तकालय जैसे गुप्त कक्ष अभी भी मौजूद थे, या वे भी नष्ट हो गए थे? यह उसके मन में बस एक सवाल था जिसका उसे अब कोई जवाब नहीं था। गुरुकुल आने का उसका मुख्य उद्देश्य कुछ और था, एक ऐसी चीज़ जिससे वह डर रहा था। लेकिन उसने और ऐशानी ने तय कर लिया था कि उसे यह करना ही होगा। वह अकेला आया था क्योंकि ऐशानी बीमार लोगों को वहाँ अकेला छोड़ने का जोखिम नहीं उठा सकती थी। उसे गुरुजी की कुटिया में जाकर उनकी आत्मा की शांति और मुक्ति के लिए हवन और पूजा करनी थी। किस तरह की पूजा, यह उसे नहीं पता था। गुरुजी का क्षत-विक्षत शरीर, सिर कटा हुआ, देखने के बावजूद, अधीश का मन और हृदय यह मानने को तैयार नहीं था कि गुरुजी की मृत्यु हो गई है। यह असंभव था। गुरुजी अमर थे, अपने इष्ट देव, भगवान हनुमान जी की तरह। हनुमान जी ने ही गुरुजी को विश्वभर में गुरुकुल स्थापित करने और राक्षसों का नाश करने के लिए योद्धाओं को प्रशिक्षित करने का आदेश दिया था। ये वही राक्षस थे जो रामायण के महान युद्ध में बच निकले थे और आकाश, पृथ्वी और जल में छिप गए थे। वे शीतनिद्रा में चले गए थे और अब बाहर आ रहे थे। रामायण काल से ही गुरुजी योद्धाओं को प्रशिक्षण दे रहे थे। अधीश के पैर कुटिया की ओर जाने से इनकार कर रहे थे। वह एक ही स्थान पर जड़वत खड़ा रहा, गुरुजी की कुटिया जाने के अपने कर्तव्य को निभाने के बजाय विपरीत दिशा में भाग जाना चाहता था। अंततः, पत्थर की तरह भारी कदमों से वह गुरुजी की कुटिया तक पहुँचा। सामने का दरवाजा अपने कब्ज़ों से उखड़ा हुआ था और ज़मीन पर टूटा

पड़ा था। मनोहरजी द्वारा सावधानीपूर्वक पाले गए पौधे सूखकर झाड़ियों में बदल गए थे। लेकिन अधीश ने यह सब नहीं देखा। दिल थामकर वह अंदर गया। कुटिया खाली थी। वहाँ गुरुजी से जुड़ी एक हल्की सी खुशबू के सिवा कुछ नहीं था। लेकिन गुरुजी कहाँ थे—बल्कि, उनका शरीर कहाँ था? ओह! राक्षसों ने गुरुजी को मार डाला और उनका शरीर भी ले गए! वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसका दिमाग सुन्न हो गया। उनके मिशन का क्या हुआ, उनकी नियति का क्या हुआ, उनके जीवन का अर्थ क्या था? अगर राक्षस इतने शक्तिशाली थे कि वे गुरुजी को मार सकते थे और आश्रम को नष्ट कर सकते थे, तो पृथ्वी का विनाश और मानव जाति का अंधाधुंध संहार अगला तार्किक कदम होगा। नहीं, उसका दिमाग चीख उठा, यह संभव नहीं है। गुरुजी उन्हें यूँ ही नहीं छोड़ सकते थे। कोई न कोई योजना ज़रूर रही होगी। गुरुजी ने अपने जीवन में कई बार ऐसी स्थिति का सामना किया होगा। निश्चित रूप से, देवताओं ने कोई विकल्प सोचा होगा। वह धूल भरी ज़मीन पर काफी देर तक बैठा रहा, उसका तार्किक दिमाग तरह-तरह के समीकरणों पर विचार करता रहा। कुछ भी समझ में नहीं आया। अंततः, घोर निराशा और थकावट में, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और किसी विचार या प्रेरणा के आने का इंतज़ार करने लगा। उसे नहीं पता था कि वह किस चीज़ का इंतज़ार कर रहा है। महान योद्धा की आँखों से दो आँसू बह निकले। उसे कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी। वह क्या करेगा, ऐशानी को क्या बताएगा! वह बहुत देर तक आँखें बंद करके बैठा रहा। शायद उसे झपकी आ गई थी या वह सो गया था, लेकिन वह अचानक उठ बैठा। एक पल के लिए उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। गुरुजी की कुटिया के अंदर एक तेज़ सफ़ेद रोशनी फैली हुई थी। यह इतनी तेज़ थी कि अधीश को अपनी आँखें खोलना मुश्किल हो रहा था। धीरे-धीरे उसकी आँखें रोशनी के अनुकूल हुईं और उसे एहसास हुआ कि यह एक सुखद, शीतल घटना है। उसे अच्छा महसूस हुआ और वह किसी अच्छी घटना के होने की उम्मीद में इंतज़ार करने लगा। कुछ मिनटों बाद, रोशनी कम हुई और एक आकृति प्रकट हुई। अधीश चौंक गया। अब तक उसका जीवन चमत्कारों और जादू से भरा हुआ था। उन्हें इन सब की आदत थी, लेकिन अभी जो उन्होंने देखा, उससे वे दंग रह गए। वे खुद को रोक नहीं पाए। वे दौड़कर गुरुजी के पास गए और उन्हें गले लगा लिया। पहले तो उनमें ऐसा करने की हिम्मत नहीं थी, न ही इच्छा थी। लेकिन यह एक अद्भुत चमत्कार था। वे गुरुजी थे! वह गंध, जिसे वे अनजाने में अपने गुरु से जोड़ते थे, वही थी! उन्होंने वही कपड़े पहने थे जो वे हमेशा

पहनते थे, सफेद धोती के ऊपर सफेद कुर्ता। एक पल के लिए अधीश ने अपनी आँखें बंद कर लीं और गुरुजी को गले लगाने और छूने के आनंद में डूब गए। मन ही मन अधीश को लगा कि वे भ्रम में हैं। कोई बात नहीं, उन्होंने खुशी से सोचा और गुरुजी को और कसकर गले लगा लिया। गुरुजी धीरे से हँसे। 'अदीश, मुझे इतनी कसकर पकड़ने की ज़रूरत नहीं है। मैं यहीं हूँ, और यहीं रहूँगा। मैं कहीं नहीं जा रहा।'

अधिश जानता था कि वह सपना देख रहा है। यह एक ऐसा सपना था जिससे वह कभी जागना नहीं चाहता था।

'गुरुजी,' अधीश सदमे और राहत से लगभग रो पड़ा। 'मैंने आपको यहाँ सिर कटा और शरीर क्षत-विक्षत पड़ा देखा। आश्रम तबाह हो गया है। आप समेत सभी मर चुके हैं। अब आप एक देवदूत बनकर वापस आए हैं। मैं आपको जाने नहीं दूंगा गुरुजी,' अधीश बड़बड़ाया। गुरुजी ने अधीश के सिर पर हाथ रखा, 'संयम रखो बेटा, मैं जानता हूँ कि तुम दोनों ने क्या कष्ट सहा है। मैंने पहले आने की कोशिश की, लेकिन मैं तभी आ सका जब तुम्हारे मन और हृदय में मेरे लिए तीव्र प्रेम उमड़ पड़ा।'

किसी तरह अधीश ने खुद को संभाला। शर्मिंदा होकर उसने गुरुजी को छोड़ दिया, लेकिन फिर भी वह भूख और भय से उन्हें देखता रहा, मानो गुरुजी फिर से गायब हो जाएंगे या यह सब उसका भ्रम हो।

'अधीश, अपने स्वामी की तरह मुझे भी अनंत काल तक या पृथ्वी के अस्तित्व तक पृथ्वी पर रहने का श्राप या आशीर्वाद मिला है। मैं अजन्मा और अमर हूँ। पुत्र, इस कलियुग में मैं राक्षसों के क्रोध, छल और क्रूरता से कैसे बच सकता हूँ? मैंने असंख्य राक्षसों का नाश किया है और कई बार स्वयं भी मारा गया हूँ। मुझे हमेशा सूक्ष्म जगत से पृथ्वी पर आना पड़ता है, क्योंकि यही मेरे स्वामी श्री हनुमान की इच्छा है। हम सब पंचभूतों, अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के विभिन्न संयोजनों से बने हैं। जब भी मैं मारा जाता हूँ, ये पंचभूत सही संयोजन में आकर मेरा पुनर्जन्म होता है।'

'तो फिर आपको क्यों मारें, गुरुजी? आपके हत्यारों को तो पता ही होगा कि आपको मारा नहीं जा सकता!'

'हाँ, लेकिन मेरी मृत्यु के बाद जो तबाही और अराजकता मचती है, वो उन्हें आप सभी और मानवता को सताने का भरपूर समय और अवसर देती है। हालाँकि वे जानते हैं कि मैं मरता नहीं, फिर भी मेरी मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच का समय उन्हें एक भयानक आनंद देता है; भले ही वे लगभग धरती से मिट जाएँ, फिर भी उन्हें लगता है

कि यह सब सार्थक है। और इसी तरह जीवन के ताने-बाने का नाटक और भ्रम चलता रहता है,' गुरुजी ने आह भरी। 'यह सब ईश्वर की इच्छा है।' अधीश के मन में एक क्षणिक समझ कौंधी। तो यही खेल था, एक चक्र जो बार-बार दोहराता रहेगा, केवल राक्षसों को खुश रखने के लिए। लेकिन किसकी कीमत पर और किसलिए? प्रेम और पारिवारिक रिश्ते टूट जाएँगे, फिर कभी ठीक से जुड़ नहीं पाएँगे। इन हत्याओं और विनाश से किसे लाभ होगा, भले ही क्षण भर के लिए ही सही? राक्षसों को! गुरुजी के लोग सही थे और दुखी थे, राक्षस गलत थे लेकिन खुश थे। तो, आखिर क्या चाहा जाए? सुख या दुख? अधीश ने पूरी तरह से उलझन में अपना सिर हिलाया। यह अन्याय था। सही लोगों को खुश होना चाहिए, गलत लोगों को नहीं। उसने और ऐशानी ने सब कुछ खो दिया था, एक-दूसरे को, अपने प्रियजनों को, और अपने पैरों तले की ज़मीन तक, और फिर भी उनका भाग्य खुश लोगों को मारना था। उसने गुरुजी की ओर देखा। 'यह कभी नहीं कहा गया कि अपने भाग्य को पूरा करने से आप खुश होंगे, लगभग कभी नहीं, लेकिन इससे अधिकांश मनुष्य आनंदित और संतुष्ट होंगे। और हम वही हैं। हमारा निर्वाण इस ग्रह पर और कभी-कभी इससे परे भी जीवन की देखभाल और रक्षा करने में निहित है। हम राक्षसों से बहुत अलग हैं और कुछ मायनों में मनुष्य भी। हम इस ग्रह पर सभी जीवित प्राणियों के रक्षक और पालन-पोषणकर्ता हैं, चाहे वह मनुष्य हो, जानवर हो, पेड़-पौधे हों, कीड़े-मकोड़े हों या पक्षी हों। हमारे मूल गुण हैं सहानुभूति, विश्वास, साहस, निडरता, देखभाल और साझा करना, भरोसा, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, आत्म-संयम, मेहनत, दृढ़ता और सबसे बढ़कर प्रेम। राक्षसों में इन सभी गुणों के विपरीत गुण होते हैं।' संक्षेप में कहें तो, किसी भी कीमत पर आत्म-भोग, क्रूरता और स्वार्थ ही राक्षसों का मूल दर्शन है और हमें इसी को रोकना और विफल करना होगा।

अब हकीकत पर लौटते हैं। आश्रम का पुनर्निर्माण दोहरी सुरक्षा से भी अधिक मजबूत तरीके से किया जाना चाहिए। शारीरिक सुरक्षा में कोई चूक नहीं हुई थी; आंतरिक सुरक्षा ही इस नरसंहार का कारण बनी। राक्षस गुरुकुल के कुछ निवासियों, खासकर कथित तौर पर कमजोर लोगों के शरीर में प्रवेश कर गए थे।' अधीश ने सिर हिलाते हुए कहा, 'मुझे भी यही लगा था, गुरुजी।' उसने गंभीर स्वर में कहा, 'लेकिन गुरुकुल के पुनर्निर्माण से पहले हमें अपने लोगों को ढूंढना होगा और उन लोगों का इलाज करना होगा जो मौत से बच तो गए हैं लेकिन बुरी तरह घायल हैं। गुरुजी, हमारे कुछ

लोग कैलाश पर्वत पर हैं। हालांकि उनके शरीर में सड़न के कोई लक्षण नहीं दिख रहे हैं, लेकिन उनमें जीवन के भी कोई लक्षण नहीं दिख रहे हैं।'

जी बेटा, केवल गरुड़ देवता ही ऐसा महान कार्य कर सकते हैं, जो आप सभी को इतनी तेजी से उठाकर कैलाश पर्वत के छोटे पिरामिडों में से एक में शरण दे सके। शुद्ध वायु और उत्तम जड़ी-बूटियों ने उन्हें मृत्यु के समान बेहोशी से कुछ हद तक होश में ला दिया। गरुड़ देवता की समय पर सहायता के बिना, हमारे सभी लोग मर जाते। वे बस मौत के मुंह में थे। और आप तीनों ने जो स्नेहपूर्ण देखभाल प्रदान की, वह भी सराहनीय है।

'गुरुजी, वहाँ एक और व्यक्ति हैं, वे भी हमारी तरह ही योद्धा हैं। बीमार लोगों की देखभाल में उनका अनुभव और सहायता अमूल्य रही है।' गुरुजी ने अधीश की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा और उसके स्पष्टीकरण की प्रतीक्षा की। धीरे-धीरे अधीश ने ऐनार के बारे में सब कुछ बताया। गुरुजी ने धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनी और धीरे-धीरे सिर हिलाया। अधीश को ऐसा क्यों लग रहा था कि गुरुजी आश्चर्यचकित नहीं हुए? उसने दार्शनिक रूप से सोचा, अगर गुरुजी मृत्यु से वापस आ सकते हैं, तो ऐनार भी गुरुजी के लिए कोई रहस्य नहीं होगा। कुछ मिनटों बाद गुरुजी ने कहा, 'ऐनार हमारे जीवन में और आश्रम में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। वह एक महान योद्धा है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उसका स्वागत हो। वह गुरुकुल की सभी गतिविधियों में और तुम्हारे अधिकांश कार्यों में भी भाग लेगा।'

'जी जी,' अधीश ने तुरंत सहमति दे दी। वह खुश था कि गुरुजी ने ऐनार का इतना स्वागत किया। वह खुद भी ऐनार को पसंद करता था और उसकी प्रतिभा, मददगार स्वभाव और मेहनत करने की क्षमता से बेहद प्रभावित था। फिर भी, मन में एक शंका थी। गुरुजी बिना मिले ही ऐनार के इतने पक्ष में क्यों थे? क्या उसे गुरुजी से इसका जवाब मिलेगा? नहीं, बिलकुल नहीं! उसने मन ही मन व्यंग्य भरी मुस्कान दी।

कैलाश पर्वत पर पीड़ित लोगों के बारे में बताते हुए उन्होंने आगे कहा, "गुरुजी, वे उन्हें होश में नहीं ला रहे हैं। हमें समझ नहीं आ रहा कि अब क्या करें।" वे थोड़ी देर रुके। फिर घबराते हुए गुरुजी की ओर मुड़े और बोले, "हमारे लोग कहाँ हैं? जयंत और ऐशानी की माँ, मेरे माता-पिता, मेरे चाचा, गीतिका और पद्मा, रूबी और उसका परिवार। वे कहाँ हैं और कैसे हैं?" उन्हें उत्तर से डर लग रहा था, लेकिन शायद, बस शायद, कोई जीवित हो। गुरुजी ने गंभीरता से कहा, "वे यहाँ नहीं हैं, लेकिन वे मरे भी

नहीं हैं।" अधीश ने खुशी से, लेकिन समझ न पाने की स्थिति में गुरुजी की ओर देखा। वे जीवित थे! लेकिन कहाँ थे?

गुरुजी ने उनके प्रश्न का पूर्वाभास कर लिया था। 'अभी तक हमें नहीं पता कि वे कहाँ हैं, साथ हैं या अलग हो गए हैं। आश्रम की इतनी भारी तबाही हुई है कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि शुरुआत कहाँ से करूँ। हमारे कई शिक्षक, अभियंता, वैज्ञानिक, जासूस और विशेषज्ञ या तो मर चुके हैं, लापता हैं या गंभीर रूप से घायल हैं। कैलाश में बीमार हर व्यक्ति अपने विषय का ज्ञाता है। इस गुरुकुल में कोई भी फालतू नहीं था। गुरुकुल के रखरखाव और संरक्षण के लिए हर व्यक्ति महत्वपूर्ण था। तो, हम पहले क्या करें?' गुरुजी विचार कर रहे थे। 'क्या हम लापता और घायल लोगों की खोज करें, क्या हम गुरुकुल को नए सिरे से स्थापित करें, या क्या हम कैलाश जाकर वहाँ के बीमार लोगों का इलाज करें?'

'गुरुजी, हमें कैलाश जाना चाहिए, वहाँ के बीमारों का इलाज करने के लिए,' अधीश ने आग्रह किया। 'आपकी सहायता से उन्हें पुनर्जीवित करना आसान होगा। आप वहाँ की जड़ी-बूटियों और जीवनरक्षक पौधों के बारे में सब जानते हैं। आपके मात्र स्पर्श से ही वे जीवित हो उठेंगे।'

'इतनी जल्दी नहीं, अधीश, मुझे आश्रम में रहकर इसे किसी तरह से फिर से खड़ा करना होगा। मुझे यहाँ बैठकर ध्यान करना होगा ताकि पता चल सके कि हममें से कितने लोग जीवित हैं और कितने बच निकले हैं। मुझे यह भी पता लगाना होगा कि हमारी पीठ पीछे इतनी बड़ी हत्या की योजना इतनी सफलतापूर्वक कैसे बनाई गई।'

'लेकिन गुरुजी, कैलाश में लोगों का इलाज कैसे करें? हमने अपनी तरफ से हर संभव कोशिश कर ली है।' हालांकि अधीश गुरुजी की योजना से सहमत था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैलाश लौटने से कोमा में पड़े लोगों को कैसे मदद मिलेगी।

'मुझे पता है, बेटा, वे लोग सामान्य दवाओं की पहुंच से बाहर हैं। उन्हें अब अलग तरह की दवाओं की जरूरत है।'

अधिश गुरुजी के सही समाधान और इलाज का इंतज़ार कर रहा था। उसे हल्का-फुल्का आभास था कि गुरुजी एक ही समय में दो या दो से अधिक स्थानों पर हो सकते हैं। यह पंचभूतों के विभिन्न घटकों को गुरुजी के शरीर के समान संयोजन में जोड़ने की बात थी। यह विज्ञान उसकी समझ से परे था और जादू जैसा लग सकता था। यह विचार एक पल के लिए उसके मन में आया, लेकिन उसने इसे नकार दिया।

गुरुजी ही सही राह का सबसे अच्छा निर्णय ले सकते थे। अगर गुरुजी कैलाश जाना चाहते, तो वे जा चुके होते। जाहिर है, यहाँ उनकी उपस्थिति आवश्यक थी। मानो उसकी दुविधा को भांपते हुए गुरुजी ने कहा, 'अधीश, अगर इन राक्षसों का गला घोंटना है तो हमें बहुत तेज़ी से काम करना होगा। हमें अपने बाकी लोगों को जल्दी से अपने पैरों पर खड़ा करना होगा, वरना हम विलुप्त हो जाएंगे। पृथ्वी कलियुग के अंत तक नष्ट नहीं होगी।' इसलिए, यदि ये राक्षस विजयी हो जाते हैं, जैसा कि उन्होंने पिछले कुछ दिनों में बखूबी प्रदर्शित किया है, तो हम उनके हाथों की कठपुतली और गुलाम बनकर उनकी हर इच्छा पूरी करने के लिए मजबूर हो जाएंगे।' गुरुजी ने अपने धोती के ऊपर पहने कुर्ते से एक छड़ी निकाली। यह लगभग बारह इंच लंबी और पेंसिल से थोड़ी मोटी थी। यह स्प्रिंग की कुंडली की तरह चौड़ी कुंडलित थी, जिसका ऊपरी सिरा पतला और निचला सिरा बाकी हिस्से से मोटा था। अधिश ने इस छोटी सी छड़ी के बारे में बहुत कुछ सुना था, जिसे संजीवनी बूटी या जीवनदायिनी छड़ी के नाम से जाना जाता था। किंवदंती के अनुसार, जब राम के भाई लक्ष्मण राक्षसों से लड़ते हुए शहीद हो गए थे, तब हनुमान को संजीवनी बूटी लाने के लिए भेजा गया था, जो लक्ष्मण को बचा सके। हनुमान उस पहाड़ी पर गए जहाँ ये पौधे उगते थे, लेकिन वे उन्हें पहचान नहीं पाए। इसलिए, वे पूरी पहाड़ी को ही चिकित्सकों के पास ले आए। लक्ष्मण के ठीक होने के बाद, हनुमान ने पहाड़ी को उसके सही स्थान पर लौटा दिया।
“जी, अधीश, यह जड़ी-बूटियों के चतुर्भुज समूह का एक भाग है, जिनमें से तीन ऊपरी हिमालय में पहले से ही मौजूद हैं। इनमें से दो बीमार आत्माओं को दी जा चुकी हैं, यह चौथा भाग है, तीसरा भाग थोड़ा मुश्किल से मिलता है। यह एक अत्यंत दुर्लभ पौधा है, जो आमतौर पर ऊपरी हिमालय में नहीं पाया जाता है,” यह कहते हुए गुरुजी ने एक कागज का टुकड़ा निकाला और उसे एक रेखाचित्र दिखाया। अधीश ने उसे देखा। यह पतली पत्तियों और छोटे पीले फूलों वाला एक सुंदर झाड़ीनुमा पौधा था।
‘इसीलिए बीमार लोग होश में आने के बावजूद जाग नहीं रहे हैं। जब इन तीनों जड़ी-बूटियों को इस छड़ी और पानी की मदद से एक साथ पीसा जाता है, तो वे जाग जाएंगे और बिना किसी शक्ति या स्फूर्ति में कमी के सामान्य हो जाएंगे।’
अधीश ने संजीवनी बूटी अपने हाथों में ले ली। देखने में इतनी साधारण सी लगने वाली इस छड़ी में भगवान जैसी शक्ति थी। खैर, बिल्कुल भगवान जैसी तो नहीं, लेकिन लगभग मृत व्यक्ति में जीवनदान देने जैसी। उसने गुरुजी को प्रणाम किया

और जाने की अनुमति ली। वह अब जाने के लिए बेताब था और तुरंत वापस लौटना चाहता था।

'गुरुजी, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि हम कैलाश के किस भाग में हैं? ऐसा प्रतीत होता है मानो कैलाश, हालांकि एक अत्यंत विशाल संरचना है, कई छोटे-छोटे हिस्सों को जोड़कर वह इमारत बनाई गई है जो हमें हमारे सामने दिखाई देती है।'

आपके अवलोकन अनुकरणीय हैं, लेकिन आपसे इससे कम की अपेक्षा भी नहीं की जाती। कैलाश वास्तव में पृथ्वी का केंद्र है। यह 108 छोटे पिरामिडों से बना है। जिस स्थान पर आप उतरे हैं, वह एक छोटा, निचला पिरामिड है। इसीलिए कोई आपको देख नहीं सकता और कोई राक्षस आप तक नहीं पहुँच सकता। साथ ही, कैलाश में आप अतीत में हैं। किसी भी राक्षस में कैलाश पर्वत के किनारे तक पहुँचने का साहस नहीं है। फिर भी गरुड़ देवता ने कोई जोखिम नहीं लिया और आप सभी को समय में पीछे ले गए। राक्षस सोचते हैं कि आप सभी मर चुके हैं। फिलहाल, वे हमारे गुरुकुल को नष्ट करने की खुशी में मग्न हैं।

अब अधीश थोड़ा उलझन में था, "और अब, गुरुजी, हम कहाँ हैं? हम भूतकाल में हैं या वर्तमान में? लगता तो वर्तमान में ही हैं," उसने कहा। "अच्छा देखा, अधीश।" यह दिन अच्छा साबित हो रहा था। एक ही दिन में दो बार गुरुजी से प्रशंसा मिलना वाकई बड़ी बात थी। शायद अब हालात बेहतर होने वाले हैं।

'और मैं यहाँ केवल इसलिए आ सका क्योंकि गरुड़ देवता ने ऐशानी और मुझे समय यात्रा का एक बार का वरदान दिया था, यानी एक बार समय में पीछे जाने और वापस आने का। एक बार मैं पीछे चला गया, तो मुझे नहीं पता कि मैं वर्तमान में कैसे वापस आऊँगा।'

गुरुजी ने चुपचाप उसकी ओर देखा। गुरुजी की इस निगाह से वह थोड़ा हैरान हुआ, फिर उसे बात समझ में आ गई। ज़ाहिर है, कैलाश पर्वत पर सबके ठीक हो जाने के बाद गरुड़ देवता ही उन्हें वर्तमान समय में वापस लाएंगे। उसने इस विश्वास के साथ मुस्कुराया कि ईश्वर—और इसलिए गुरुजी—ने सब कुछ तय कर दिया है। उन्होंने हर बात का ध्यान रखा है, और वह और ऐशानी उन्हीं विचारों के साकार रूप हैं। ठीक है। यह आत्म-दया और 'मेरे साथ ही ऐसा क्यों?' या 'हमारे साथ ही ऐसा क्यों?' सोचने का समय नहीं था। अभी काम करना था, लोगों को ढूंढना और बचाना था, और राक्षसों का वध करना था। उसने गुरुजी के निर्देशों का इंतज़ार किया।

संजीवनी बूटी का चौथा घटक प्राप्त करने के लिए आपको द्रोणागिरी पर्वत पर जाना होगा। स्थानीय भाषा में इसे फेना कमल या कस्तूरी कमल कहते हैं। आपको बहुत सावधान रहना होगा, क्योंकि आदिवासी या ग्रामीण लोग इसके प्रति बहुत श्रद्धा रखते हैं। वे इसकी पूजा भगवान की तरह करते हैं। यह अकेले ही कई बीमारियों को ठीक कर सकता है, जैसे गहरी बेहोशी, मस्तिष्क संबंधी विकार, टूटी हड्डियां, शारीरिक विकार और कई अन्य रोग। हो सकता है कि यह इसके लिए सही मौसम न हो, और आप इसे पहचान न पाएं। इस पौधे को खिलने और पूरी तरह से काम करने के लिए बहुत पानी की आवश्यकता होती है। यही इस अद्भुत पौधे की खूबी है। एक बार इसे पर्याप्त पानी मिल जाने पर यह बिना पानी के भी जीवित रह सकता है, यहां तक कि सूखे जैसी स्थिति में भी। इसके फूल छोटे कमल जैसे दिखते हैं और रुई की पतली परतों से ढके होते हैं। अगर आप भ्रमित हो जाएं, जैसा कि होना स्वाभाविक है, तो ऐसे फूलों की तलाश करें जो रात में प्रकाश उत्सर्जित करते हैं और यदि आप ध्यान से देखें, तो दिन में भी।

“जी गुरुजी,” उसने आज्ञाकारी भाव से कहा, मानो यह गुरु और शिष्य के बीच एक सामान्य संवाद हो। इतनी तबाही के बीच भी वे सामान्य बातचीत कर रहे थे। गुरुजी के प्रकट होने के बाद उसकी निराशा और पीड़ा कुछ कम हुई थी, लेकिन अभी भी बहुत बड़े काम बाकी थे। वह ऐशानी के पास दौड़कर जाना चाहता था और उसे बताना चाहता था कि सब कुछ खत्म नहीं हुआ है, गुरुजी वापस आ गए हैं। वह कल्पना कर सकता था कि यह खबर सुनकर ऐशानी को कितनी राहत और खुशी होगी। लेकिन पहले संजीवनी बूटी।

गुरुजी ने कहा, ‘ऐशानी को इसके बारे में बिल्कुल भी नहीं बताना है। उसके आस-पास के सभी लोगों में से सबसे ज़्यादा दुख उसी ने सहा है। वह सारी अच्छी खबर एक साथ सहन नहीं कर पाएगी। उसे धीरे-धीरे और थोड़ी-थोड़ी मात्रा में बताना होगा, जब तक कि वह अच्छी और बुरी दोनों बातों को सहने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम न हो जाए।’ अधीश ने सिर हिलाया।

‘द्रोणागिरी पहाड़ियाँ और उसकी घाटियाँ यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं हैं—दरअसल, वे पास ही हैं, हमारे आश्रम से लगभग सौ मील दूर।’ गुरुजी ने चारों ओर देखा। ‘या उसका जो भी हिस्सा बचा है,’ उन्होंने उदास होकर कहा। ‘हमारे पास समय नहीं है, इसलिए मैं तुम्हें तुरंत वहाँ भेज रहा हूँ। फूल लाते ही मुझे टेलीपैथी से सूचित करना और सीधे

कैलाश जाना। बीमार लोग सभी कुशल तकनीशियन हैं जिनकी गुरुकुल की मरम्मत के लिए तत्काल आवश्यकता है।'

'जी हां, गुरुजी,' फिर मन में ख्याल आया, 'हमारी बुद्धि इतनी खराब कैसे हो सकती है, गुरुजी?'

कभी वे जीतते हैं, कभी हम जीतते हैं, और यह सिलसिला चलता रहता है। ईश्वर उन्हें लगातार छूट देता रहता है। जब सीमाएँ पार हो जाती हैं, तो हमें उन्हें कुचलना पड़ता है। थोड़ी सी गंदगी बच निकलती है और धीरे-धीरे बढ़ती है, धीरे-धीरे दुनिया से भी बड़ी हो जाती है। यह चक्र चलता रहता है...

'क्या यह कभी खत्म होगा, गुरुजी?'

गुरुजी ने रहस्यमय ढंग से उसकी ओर देखा। अधिश ने आह भरी, गुरुजी के चरणों को छुआ और जाने के लिए मुड़ गया।

कुछ क्षण बाद उसने गुरुजी की ओर मुड़कर देखा और कहा, 'गुरुजी, एक और बात है जो मैं पूरी तरह से भूल गया था। यही वह कारण है जिसके लिए मैं यहाँ आया था। आपको देखने के बाद मैं सब कुछ भूल गया।'

गुरुजी ने उसके मन की बात कहने का इंतजार किया।

'गुरुजी, मैं यहाँ अपने चाचा कल्पेश और उनकी पत्नी पद्मा से मिलने और उनसे कुछ आयुर्वेदिक औषधियाँ लेने आया था। कैलाश पर्वत पर हमारे पास औषधियाँ नहीं हैं, केवल वही जड़ी-बूटियाँ और फूल हैं जो हमें वहाँ मिल सके। क्या मुझे अभी उनके पास जाना चाहिए या मेरे पास अपने साथियों को पुनर्जीवित करने के लिए पर्याप्त सामग्री है?'

गुरुजी ने गंभीर स्वर में कहा, 'अधीश, तुम्हारे पास सब कुछ है। उनसे मिलने का तुम सब पर बुरा असर पड़ेगा और कुछ राक्षसों को भी इसकी भनक लग सकती है।' यह कहते हुए गुरुजी ने अधीश को एक कपड़े का थैला देते हुए कहा, 'इसे अपने पास रखो और ऐशानी को दे दो। ये जीवन शक्ति देने वाली जड़ी-बूटियाँ हैं। जब हमारी खोई हुई आत्माओं में प्राण पूरी तरह लौट आएगा, तब ऐशानी को ये उपयोगी लगेंगी।'

'जी गुरुजी,' अधीश ने बैग उठाया और चला गया।

द्रोणागिरी पहाड़ियों की यात्रा काफी शांतिपूर्ण रही। यह लगभग एक पर्यटन स्थल जैसा था, लेकिन पर्यटकों की भीड़ बहुत कम थी क्योंकि यह पर्यटकों का मौसम नहीं था। अधिश ने गुरुजी की चेतावनी का पालन किया और किसी भी व्यक्ति, चाहे वह

पर्यटक हो या ग्रामीण, से संपर्क से बचता रहा। जंगल में घूमना और रहना उसके खून में था। लेकिन यहाँ उसे एक समस्या का सामना करना पड़ा। उसे संजीवनी बूटी या फूल नहीं मिला। उसने यह सोचकर खुद को तसल्ली दी कि जब हनुमान जी इसे नहीं ढूंढ पाए, तो वह भी एक साधारण मनुष्य है। लेकिन हनुमान जी के विपरीत, उसके पास पूरी पहाड़ी उखाड़कर लक्ष्मण का इलाज कर रहे वैद्यों के पास ले जाने का विकल्प नहीं था। वह संजीवनी बूटी की खोज में ज्यादा आक्रामक नहीं हो सकता था क्योंकि आदिवासी इसे अपनी संपत्ति मानते थे और किसी के साथ साझा नहीं करना चाहते थे। संजीवनी बूटी ले जाने के कारण, इस क्षेत्र के निवासी हनुमान जी की पूजा नहीं करते थे। अधिश हर मिनट के बीतने से चिंतित था। समय नहीं था, उसके लोग कैलाश पर्वतमाला पर मर रहे थे। उसने ऐशानी और देवनाथ के बारे में सोचा और वे कितनी बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहे होंगे। उसने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की कि किसी भी बीमार की हालत और खराब न हो। तीसरी रात को उसे अचानक ही सफलता मिल गई। सूखा मौसम था और ज़्यादातर पौधे सूख चुके थे, हालाँकि वे सूखे जैसी परिस्थितियों में भी आसानी से जीवित रह सकते थे। ज़्यादातर फूल सूती धागों से ढके हुए थे, जिनका रंग हल्का पीला हो गया था, इसलिए वह उन्हें पहचान नहीं पा रहा था। रात अंधेरी थी और वह हर झाड़ी और फूल को छानकर देख रहा था, चाहे वे सूखे हों या नहीं। अचानक, उसकी दाहिनी आँख के कोने से उसे एक छोटी सी टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी। ज़रूर कोई जुगनू होगा, उसने अवचेतन मन से सोचा और फिर एकदम स्थिर खड़ा हो गया। गुरुजी ने उसे बताया था कि फूल रोशनी देते हैं! धीरे-धीरे और घबराते हुए उसने चारों ओर देखा। ज़मीन इन टिमटिमाते फूलों से ढकी हुई थी, हालाँकि वे सूती धागों से ढके होने के कारण धुंधले चमक रहे थे। वह हैरान रह गया। उसने उन्हें पहले क्यों नहीं देखा? ऐशानी खुशी से ताली बजाती। राहत की सांस लेते हुए उसने ध्यान से फूल तोड़े और उन्हें एक कपड़े के थैले में रख दिया। सीधा होकर उसने सोचा, 'अब घर जाना है।' उसके लिए अब घर बस वही था जहाँ ऐशानी थी।

वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और मन ही मन एक विशेष मंत्र का जाप करने लगा, जिससे वह गुरुजी से जुड़ गया।

'गुरुजी, मेरे पास कस्तूरी कमल है। आपके आशीर्वाद से मैं अब कैलाश के लिए प्रस्थान कर रहा हूँ।'

‘शाबाश, अधीश। सर्वशक्तिमान की कृपा से तुम सब बहुत जल्द लौट आओगे और आश्रम का पुनर्निर्माण शीघ्र ही हो जाएगा।’ अधीश ने मन ही मन गुरुजी को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते पर चल पड़ा। यह एक सप्ताह पहले की बात है। गरुड़ देवता के एक बार के वरदान से वह लगभग तुरंत ही कैलाश पर्वत की निचली सीढ़ियों तक पहुँच सकता था। बाकी लोग बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने उन्हें चारों सामग्रियों के उपयोग के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। एक पल भी बर्बाद किए बिना, वे औषधि बनाने में जुट गए—वास्तव में, ऐशानी औषधि बना रही थी क्योंकि गुरुजी उन्हें सामग्री के उपयोग के तरीके समझा रहे थे। अगर उसे संजीवनी बूटी और संजीवनी बूटी के बारे में जिज्ञासा थी भी, तो उसने नहीं पूछा। इन अजीब चीजों के बारे में सोचने का समय ही नहीं था। उनकी भूमिकाएँ उलट गई थीं, अब ऐशानी मुख्य भूमिका में थी और अधीश, ऐनार और देवनाथ उसके सहायक के रूप में काम कर रहे थे।

ऐनार मानसरोवर झील से पानी पहले ही ला चुके थे। हमेशा की तरह उन्होंने थोड़ी देर ध्यान लगाया और संजीवनी बूटी और फूलों की पूजा की। फिर ऐशानी ने संजीवनी बूटी की मदद से फूल पर पानी की पतली, लगातार धार डाली ताकि पानी की एक बूंद भी बर्बाद न हो। उन्हें मानो अपनी आँखों के सामने फूल खिलता हुआ दिखाई दिया। जैसे ही संजीवनी बूटी फूल को छूई, वह अपने आप गोलाकार गति में घूमने लगी। ऐसा लग रहा था मानो दोनों के बीच चुंबकीय आकर्षण हो। जब फूल ने शुद्धतम जल को पूरी तरह सोख लिया, तो उसमें से एक अमृतमय, मीठी सुगंध वाला तरल पदार्थ रिसने लगा। उसने उसे अन्य फूलों में मिला दिया। उन्होंने सावधानी से उस पानी को इकट्ठा किया। फिर कुछ कपड़े के टुकड़ों की मदद से उन्होंने उस तरल पदार्थ से बेहोश पड़े शरीरों की धीरे-धीरे मालिश करना शुरू किया। कुछ देर तक कुछ नहीं हुआ, लेकिन वे अपनी सांसें थामे चमत्कार होने का इंतजार करते रहे। 'अधीश!' ऐशानी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'देखो।'

अधीश ने उस व्यक्ति को देखा जिसे ऐशानी संजीवनी के फूल के जल से पोंछ रही थी। उसके चेहरे और शरीर पर गुलाबी रंगत थी और उसकी पलकें फड़फड़ा रही थीं। थोड़ी देर में ही वे खुलीं और उसने स्तब्ध होकर उन्हें देखा। उसका नाम सतीश था। वह एक जीवविज्ञानी था, जो गुरुकुल के सभी पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की देखभाल करता था। सतीश ऐसे उठा जैसे सामान्य नींद से जागा हो, मानो कुछ हुआ ही न हो। ऐशानी की आँखों में आँसू थे, तीन जोड़ी नम आँखें भी थीं। 'अदीश, तुम

यहाँ क्या कर रहे हो? रुको, मुझे सोचने दो। मैं सुबह के काम कर रहा था कि तभी एक पेड़ से यह चीज़ निकली, मुझ पर हावी हो गई और मुझे धुएँ के घने काले आवरण से ढक दिया। मैं बेहोश हो गया होगा,' उसने चारों ओर देखा। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। वह उलझन में चारों ओर देखने लगा। यह निश्चित रूप से गुरुकुल नहीं था, बल्कि कोई बहुत ही पवित्र स्थान था। लेकिन यह संभव नहीं था। गुरुकुल से अधिक पवित्र और सुंदर कोई स्थान नहीं हो सकता। लेकिन यह... यह! सतीश को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने स्पष्टीकरण के लिए अधीश की ओर देखा, लेकिन अधीश दूर हट गया था। अब उसने देखा कि ऐशानी अधीश के बगल में खड़ी किसी दूसरे व्यक्ति का इलाज कर रही थी। उसने चारों ओर देखा। अधीश का अंगरक्षक-सह-सहायक देवनाथ भी वहाँ था, साथ ही एक यूरोपीय व्यक्ति भी था, जो घास और झाड़ियों से बने बिस्तरों पर लेटे कुछ लोगों को किसी प्रकार का मरहम लगा रहा था। ध्यान से देखने पर सतीश यह देखकर दंग रह गया कि हर एक व्यक्ति उनके अपने गुरुकुल का था। तीन पंक्तियों में लोग अलग-अलग अवस्थाओं में बेहोशी की हालत में थे। उसके जैसे ही एक दंपत्ति होश में आ गए थे और स्तब्ध होकर इधर-उधर देख रहे थे। देवनाथ एक अस्थायी लौकी में पानी लेकर इधर-उधर भाग रहा था। स्पष्ट रूप से, वे उसके संदेह दूर करने के मूड में नहीं थे।

चारों देखभालकर्ता अब उन लोगों पर ध्यान दे रहे थे जो अभी भी दुनिया से बेसुध थे। संजीवनी बूटी से बहते पानी से शरीर को भिगोते ही बाकी लोग तुरंत होश में आ गए। लगभग सभी एक ही समय पर होश में आए। और चमत्कार यह था कि वे पूरी तरह से स्वस्थ और तंदुरुस्त महसूस कर रहे थे। उन्हें बस यह नहीं पता था कि उनके साथ क्या हुआ था और कैसे। उन्हें इस बात की भी जानकारी नहीं थी कि उनका गुरुकुल पूरी तरह से नष्ट हो चुका था। अगर उन्हें ये दोनों बातें पता होतीं, तो शायद वे इतना अच्छा महसूस न करते। वे जानते थे कि वे एक दिव्य स्थान पर हैं और यह जानने के लिए उत्सुक थे कि ऐसा क्यों है। केवल ऐशानी और अधिश ही उनके सवालों का जवाब दे सकते थे। फिलहाल वे व्यस्त थे। देवनाथ, वैसे भी, उन्हें कुछ नहीं बताते, न ही वे उनसे पूछते। वे सभी देवनाथ को एक क्रूर, खतरनाक अंगरक्षक मानते थे जो अधिश के शामिल होने पर जरा सी बात पर भड़क उठता था।

अंततः, अधीश और ऐशानी को उनसे मिलने का समय मिल गया। अधीश सीधे मुद्दे पर आए: 'हम कैलाश पर्वत की तलहटी में हैं। यह हमारे गुरुकुल की तरह ही एक

ऐसी जगह है जो आम लोगों की नज़रों से छिपी हुई है। हमें यहाँ आना पड़ा क्योंकि हमारे गुरुकुल पर राक्षसों ने हमला कर दिया था। गुरुकुल के बहुत से लोग जहाँ भी संभव हुआ भाग गए, कई मारे गए और हम जैसे कुछ लोगों को यहाँ भेज दिया गया,' उन्होंने थके हुए स्वर में कहा। वहाँ पूरी तरह सन्नाटा छा गया। वे सब कुछ देर तक एक-दूसरे को देखते रहे, फिर अंत में उनमें से एक बोला। वह दिनेश था, जो एक प्लंबर और किसान था। 'अदीश, हमारे बाकी लोग कहाँ हैं? आश्रम का कितना हिस्सा नष्ट हो गया है?' ऐशानी समझ गई कि वह गुरुकुल को फिर से बसाने के अपने काम के बारे में सोच रहा था और यह सोच रहा था कि उसकी बाकी टीम कहाँ है, क्या वे बच गए हैं या नहीं। 'हम यहाँ कैसे आए? ज़ाहिर है, हम अकेले यहाँ आने की स्थिति में नहीं थे।' अधीश के चेहरे के भाव देखकर वह रुक गया। 'कृपया ज़्यादा सवाल मत पूछिए।' मैं भी आप ही की तरह हूँ। मैं आपके अधिकतर प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाऊँगा क्योंकि मुझे स्वयं उनके उत्तर नहीं पता। हम सौभाग्यशाली हैं कि बच निकले और जीवित हैं। बस इतना ही कहकर ईश्वर की कृपा और दया के लिए उनका धन्यवाद करते हैं। हम यहाँ कुछ घंटे आराम करेंगे और फिर गुरुकुल के लिए रवाना होंगे।

"हां, अधिश, मुझे पता है कि हम सुखदायक वातावरण में हैं। मुझे यकीन है कि हमने इतनी जल्दी कैलाश पर्वत देखने की कल्पना भी नहीं की थी, हालांकि मैं बहुत लंबे समय से ऐसा करना चाहता था, लेकिन मैं जल्द से जल्द अपने गुरुकुल पहुंचना चाहता हूं। भगवान जाने उन राक्षसों ने वहां कितना विनाश किया होगा।"

"यही तो जज़्बा है, दिनेश। हम कब रवाना होंगे, यह हमारी अस्थायी वैद्य ऐशानी तय करेंगी। तब तक आप कैलाश पर्वत की शुद्ध वायु में घूमने-फिरने का भरपूर आनंद लें। बस ज्यादा दूर मत जाना।"

उन्होंने सिर हिलाया और धीरे-धीरे अलग-अलग दिशाओं में चले गए। अब केवल अधीश और ऐशानी ही बचे थे, देवनाथ उनसे कुछ दूरी पर बैठे थे। ऐनार भी जा चुका था। बाकी लोगों की तरह, वह भी जानता था कि ऐसे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्थान पर रहने का अवसर मिलना जीवन भर का सुनहरा मौका है। अब जब बाकी लोग ठीक थे, तो वह इस अवसर का लाभ उठाकर जितना संभव हो उतना अन्वेषण करना चाहता था।

अधीश ने ऐशानी की ओर मुड़कर देखा। ऐशानी ने उसे देखकर फीकी सी मुस्कान दी।

अधीश ने उसके कंधों पर हाथ रखकर उसे अपने से लगा लिया। ऐशानी ने आह भरी और बोली, 'ऐश।'

'हम्म।'

‘ऐश, मुझे तुम्हें कुछ बताना है।’

'हां अधी, मुझे पता है, बस अभी मेरी ज्यादा जिज्ञासा नहीं है। शायद कुछ समय बाद ऐसा लगे कि हम चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, बुरी आत्माओं से छुटकारा पाने के बावजूद हम अपने प्रियजनों को खोते ही रहेंगे।'

‘ऐश बेबी, मुझे नहीं लगता कि हमारी निजी खुशी धरती पर सुख और शांति से ज़्यादा मायने रखती है। यह भी हमारी निजी खुशी है। हमें इस धरती पर इन राक्षसों का नाश करके शांति बहाल करने के लिए भेजा गया है। वे अपना काम कर रहे हैं, और हम अपना। हमारे पास जीतने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इस बीच, अगर हम एक-दूसरे के साथ और अपने प्रियजनों के साथ खुशी के कुछ पल निकाल लेते हैं, तो वे बोनस हैं, और हमें उनके लिए आभारी होना चाहिए। फिर भी, कुछ ऐसा है जो आपका मूड अच्छा कर देगा और आपके होंठों पर मुस्कान ज़रूर लाएगा।’

ऐशानी नीचे देखती रही। वह मुस्कुराना और खुश होना छोड़ चुकी थी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और इंतजार करने लगी।

‘मैं गुरुजी से मिला,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।

उसकी ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। उसके जादुई शब्द उसके मन में समा नहीं पाए। अधिश समझ गया और उसने अपने शब्द दोहराए। इस बार उसने उसकी बात सुनी। उसने अपनी आँखें खोलीं। अधिश न तो उसकी भावनाओं से खिलवाड़ करने वाला था और न ही उसे खुश करने के लिए मनगढ़ंत बातें करने वाला। उसे आश्चर्य हुआ कि वह उसका मनोबल बढ़ाने के लिए इस बचकाने तरीके का इस्तेमाल क्यों कर रहा है। उसने उसके हाथ दबाकर उसे बताया कि अपनी हताशा में उसे उसका दुख कम करने के लिए इतनी हद तक जाने की ज़रूरत नहीं है।

“ऐश, गुरुजी मृत्यु के मुंह से वापस आ गए हैं। वे हनुमान जी के अवतार हैं और उन्हीं की तरह हमारे गुरुजी भी मर नहीं सकते। बेशक, उनका शरीर नष्ट हो गया था, लेकिन पंचभूतों, यानी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के सटीक संयोजन से उनका पुन: निर्माण हुआ है। उनसे आने वाली केसर और चंदन की हल्की सुगंध भी वैसी ही है,” ये शब्द उनके मुंह से तेज़ी से निकल रहे थे। एक पल की भी हिचकिचाहट ऐश

को सदमे में डाल सकती थी, इसलिए शायद वे शब्द दोबारा न बोल पाते। वे उसे और पीड़ा नहीं देना चाहते थे, चाहे उसकी खुशी के लिए ही क्यों न हो।

ऐशानी एकदम शांत हो गई। फिर, मानो धीमी गति से, उसने उसका हाथ छोड़ दिया और सीधे उसकी ओर देखने लगी। उसके चेहरे पर हैरानी के भाव थे और फिर हल्की सी मुस्कान, जिसमें इतने सारे भाव समाए थे कि उसे भी मुस्कुराना पड़ा। राहत की सांस लेते हुए उसने उसे चूमा और फिर जानकारी को समझने के लिए बैठ गई। उसके मन में कई सवाल थे। इस खबर के बाद उसके दिल का एक बड़ा हिस्सा ठीक होने लगा।

'अधी, हमारे अपने लोगों का क्या हुआ? क्या वे जीवित हैं? गुरुजी ने तुम्हें क्या बताया?'

'वे बच निकले। राक्षसों ने शुरू में उन्हें निशाना नहीं बनाया क्योंकि गुरुकुल उनका प्राथमिक लक्ष्य था। इससे हमारे लोगों को भागने के लिए पर्याप्त समय मिल गया।'

ऐशानी अब पूरी तरह से जाग चुकी थी और ध्यान से सुन रही थी। 'तो वे अब कहाँ हैं?'

फिलहाल, गुरुजी को बस इतना पता है कि वे सुरक्षित स्थान पर हैं। उन्हें अभी भी यह पता लगाना है कि वे कहाँ हैं और उनकी क्या हालत है। गुरुजी आश्रम की मरम्मत और रखरखाव के लिए गुरुकुल में ही रुके हुए हैं, जितना वे अकेले कर सकते हैं।

ऐशानी एक चट्टान पर बैठी और अधीश द्वारा साझा की गई सारी जानकारी को समझने की कोशिश कर रही थी। बीते कुछ दिन बेहद दर्दनाक थे। ईश्वर ने लिया और ईश्वर ही वापस दे रहा था, यहाँ ऊपरी हिमालय में कैलाश पर्वतमाला के एक शिखर पर, जहाँ आज तक कोई मनुष्य नहीं गया था, कम से कम कलियुग में तो नहीं। यहाँ की शुद्धतम वायु इतनी स्फूर्तिदायक थी कि समय मिलने पर आश्रम के कोमा में पड़े मरीज़ संजीवनी बूटी के बिना भी होश में आ जाते और स्वस्थ हो जाते। यह देवताओं का निवास स्थान था। ईश्वर की इच्छा थी कि वे यहाँ स्वास्थ्य लाभ के लिए आए।

'ऐश, हम यहाँ अपने लोगों को यह सारी जानकारी नहीं दे सकते और न ही हम उन्हें गुरुजी के बारे में या गुरुकुल के विनाश की वास्तविक स्थिति के बारे में सब कुछ बता सकते हैं। जब तक हम वापस जाएँगे, गुरुजी गुरुकुल का कुछ हद तक पुनर्निर्माण कर चुके होंगे और फिर ये लोग आश्रम के जीर्णोद्धार का काम कर सकेंगे।'

उसने सिर हिलाया, अब उसे थोड़ी ताजगी महसूस हो रही थी, और उसने सारी

जानकारी को आत्मसात करने की कोशिश की।
“जी, अधी, हम उन्हें यह नहीं बता सकते कि हम कुछ साल पहले की बात कर रहे हैं। हम सब अपने पापों को धोने के लिए मानसरोवर झील जाएंगे और फिर गुरुकुल लौट आएंगे। अरे, अधी, हम उन्हें गरुड़ देवता के बारे में कैसे समझाएंगे?”
‘जब हम दिव्य हथियारों का प्रयोग करते हैं, तो अभ्यास के बाद हम सब कुछ भूल जाते हैं। उसी प्रकार, इन घटनाओं की उनकी स्मृति भी मिट जाएगी। उन्हें बस एक जर्जर गुरुकुल दिखाई देगा जिसकी मरम्मत के लिए वे तुरंत दौड़ पड़ेंगे। उनके पास अपने तात्कालिक अतीत के बारे में सोचने का समय ही नहीं होगा।’
‘अधी, हमारा क्या होगा? क्या हम भी जो हुआ उसे भूल जाएंगे? हम शुरुआत कहाँ से करें?’
‘नहीं ऐश, हमें इस त्रासदी को भूलने के लिए नहीं बनाया गया है। इस बार हमें उन राक्षसों का पूर्णतः नाश करना होगा जिन्होंने हमें नष्ट किया है। हमें उस कठिन परीक्षा के हर पल को याद रखना होगा जिससे हम गुज़रे हैं। यह स्मृति हमें उन्हें मिटाने के लिए आवश्यक प्रेरणा और दृढ़ संकल्प प्रदान करेगी।’
‘ऐश, हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता गुरुकुल का पुनरुद्धार और पुनर्वास करने के साथ-साथ अपने लोगों की तलाश करना है। मुझे पूरा विश्वास है कि वे भी अपने दुश्मनों का सामना करने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास कर रहे हैं, हालांकि हमें यह पता लगाना होगा कि कौन बचा है और कौन मारा गया है,’ उन्होंने दुख से कहा।
उसकी आँखों में आंसू आ गए। उसने गुस्से से उन्हें पोंछा। 'अधीश, हम सब योद्धा हैं, हमारी टीम इतनी कमजोर नहीं है कि एक छोटे से हमले से बिखर जाए,' उसने कहा।
अधिश ने अनजाने में मुस्कुराते हुए कहा, 'यही तो मेरी बच्ची है,' उसने उसके कंधों पर थपथपाते हुए कहा। 'चलो चलते हैं।'

पुस्तकालय

'टी
ये सुई की नोक के समान हैं, सूक्ष्म कोशिकीय स्तर पर। ये इतने छोटे हैं कि नंगी आंखों से दिखाई नहीं देते। हम इन्हें देख तो सकते थे, लेकिन हम इन्हें इस रूप में नहीं खोज रहे थे। जब हम किसी राक्षस या दानव की कल्पना करते हैं, तो हम उन्हें

विशाल, भयंकर प्राणी समझते हैं। कभी-कभी हम उन्हें छोटे प्राणी के रूप में भी देखते हैं। लेकिन यहां हमने गलती की, यह न समझकर कि ये इतने सूक्ष्म रूप से छोटे हो जाएंगे, इसलिए अदृश्य हो जाएंगे, और फिर हमारी पीठ पीछे विशाल प्राणियों में विलीन हो जाएंगे। हम लापरवाह थे और हमें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी,' वे गुरुजी की कुटिया में पालथी मारकर बैठे थे। अत्यंत गंभीर गुरुजी उन्हें चिंतनशील दृष्टि से देख रहे थे।

शुरुआत में ऐशानी को गुरुजी से मिलकर बहुत हैरानी हुई। मानो बहुत समय बीत चुका था।

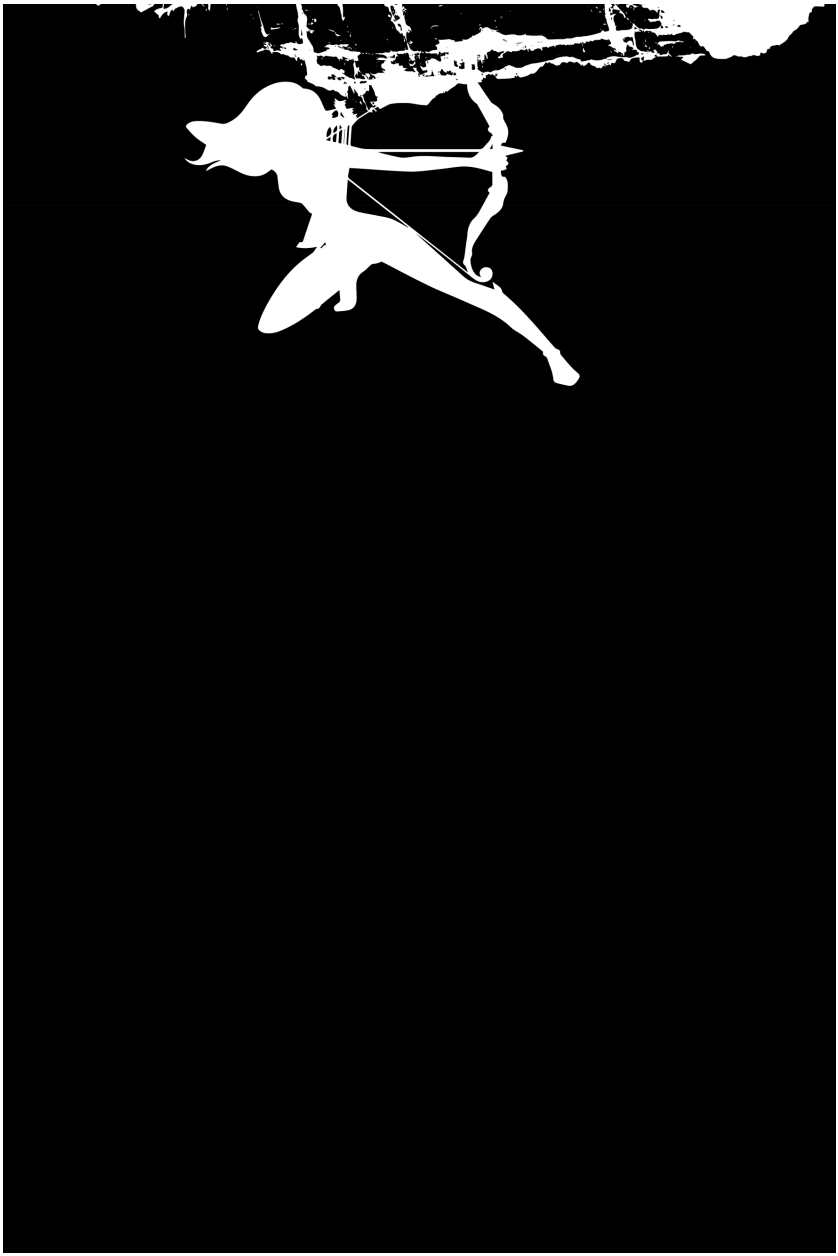

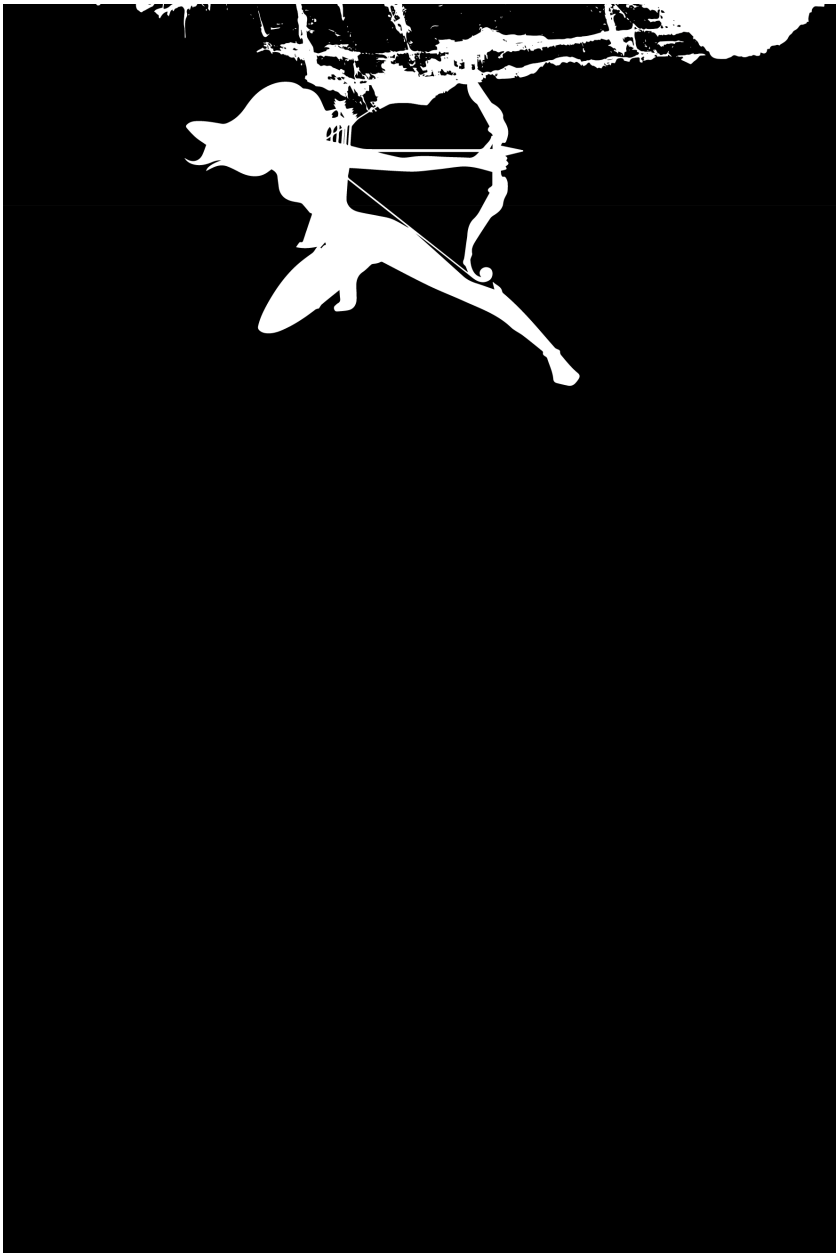

और यहाँ गुरुजी बिल्कुल स्वस्थ और तंदुरुस्त थे, मानो कुछ हुआ ही न हो। उनकी आँखों से आँसू चुपचाप बह रहे थे। जब उनके पिता पंडित राम शरण की इतनी

भयानक मृत्यु हुई थी, तो ऐशानी ने खुद को इसके लिए जिम्मेदार माना था। उनका जीवन नरक बन गया था। समय थम सा गया था। स्थिति को समझते हुए, गुरुजी ने उन्हें अधीश के साथ अतीत में भेज दिया था, ताकि वे अपने पिता से मिल सकें और अपनी शेष शिक्षा भी पूरी कर सकें। अतीत में गुरुजी ने ही उनका विवाह करवाया था। गुरुजी उनके पिता और भगवान बन गए थे। उन्होंने यह मान लिया था कि गुरुजी चिरंजीवी हैं, यानी अमर हैं। लेकिन जब उन्होंने गुरुजी को मृत पाया, उनकी गर्दन साफ-साफ कटी हुई थी, तो उनकी दुनिया बिखर गई। गुरुजी की मृत्यु और गुरुकुल के पूर्ण विनाश ने उन्हें पूरी तरह से तोड़ दिया था। पिछले एक महीने में उन्होंने इतना दुख और निराशा झेली थी कि अब उनके दबे हुए भाव बाहर आ गए थे। ऐशानी गुरुजी को उसी तरह अपनी बाहों में लेना चाहती थी जैसे वह अपने पिता को लेती थी, लेकिन उसे केवल उन्हें निहारने से ही संतोष करना पड़ा। अधीश और गुरुजी दोनों ही उसके दर्द को समझते थे। उन्होंने उसे कुछ पल दिए ताकि वह अपनी भावनाओं पर काबू पा सके।

आश्रम की हालत उतनी खराब नहीं थी जितनी उन्होंने छोड़ी थी, हालांकि कुछ बड़ी खामियां साफ दिख रही थीं। उनमें से एक यह थी कि मनोहरजी कुटिया की रखवाली करने के लिए वहां मौजूद नहीं थे। देवनाथ को अस्थायी रूप से वहां तैनात किया गया था। फिलहाल कई महत्वपूर्ण मामलों का सामना करना और उन्हें सुलझाना बाकी था। ऐनार उनके साथ लौट आया था और गुरुजी से मिलने गया। गुरुजी और ऐनार का व्यवहार ऐसा था मानो वे एक-दूसरे को बहुत समय से जानते हों और कई पीढ़ियों बाद मिल रहे हों। ऐनार ने एक बुजुर्ग व्यक्ति को अभिवादन करने की पारंपरिक भारतीय शैली में उनके पैर छुए। गुरुजी ने उनका हार्दिक स्वागत किया, लेकिन थोड़ा उदास भी थे। अधीश और ऐशानी दोनों गुरुजी की प्रतिक्रिया से आश्चर्यचकित थे। उनकी प्रतिक्रिया में उदासी क्यों थी? ऐनार भी कुछ ऐसा ही महसूस कर रहे थे। गुरुजी ने ऐनार से कहा, 'अब तुम हमारे गुरुकुल के एक सच्चे सदस्य हो। हालांकि, दूसरों द्वारा तुम्हें स्वीकार किए जाने के लिए, तुम्हें अपने समूह में शामिल करने के लिए, तुम्हें उनके साथ घुलना-मिलना होगा, उनके साथ काम करना होगा और हँसना होगा। तुम दूसरों से कहीं अधिक सक्षम हो और तुम्हारी क्षमताएँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ हर कोई कठिन परिश्रम से ऊपर उठा है और मुझे डर है कि तुम्हें भी ऐसा ही करना पड़ेगा, हालांकि मुझे पूरा विश्वास है कि तुम सभी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करोगे। फिलहाल, मेरा

सुझाव है कि तुम बाहर जाओ और गुरुकुल में अपना योगदान दो।'

'जी गुरुजी,' आइनार ने हाथ जोड़कर नमस्ते किया। 'आप पृथ्वी के महानतम योद्धाओं में से एक हैं, लेकिन जब तक आप अपनी परीक्षाएँ पूरी नहीं कर लेते, तब तक आपको किसी भी राक्षस का सामना करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इस समूह के प्रत्येक सदस्य के लिए यही नियम रहा है।'

'मैं समझ गया, गुरुजी,' उसने झुककर प्रणाम किया और बाहर चला गया। अधीश असमंजस में था। ऐसा लग रहा था मानो गुरुजी ऐनार को जानबूझकर रोक रहे हों। किसलिए? क्या गुरुजी ऐनार को किसी बड़े काम के लिए बचा रहे थे? अधीश को लगा कि ऐनार भी गुरुकुल में अपने लिए एक बड़ी भूमिका के बारे में जानता है। अधीश ने मन ही मन कंधे उचका दिए। सब सही समय पर होगा। ऐशानी ने इस बातचीत पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। वह अपने प्रिय गुरुजी के सामने बैठने में इतनी मग्न थी कि बाकी सब कुछ फीका पड़ गया। ऐनार के जाने के बाद उसने बातचीत जारी रखी।

'क्या वे अभी भी यहीं हैं, गुरुजी?' उसने संकोच से पूछा। 'हाँ, वे हर जगह हैं। लाखों-करोड़ों की संख्या में हैं, आश्रम में रेंग रहे हैं। अरे, अभी भी उनमें से कुछ आपके शरीर पर चिपके हो सकते हैं और आपको पता भी नहीं चलेगा, वे इतने छोटे और भारहीन हैं।' ऐशानी ने घृणा से अपनी बाहों को छुपाया। उसकी बाहों पर कुछ भी नहीं था, लेकिन यह विचार ही उसे घृणित लग रहा था।

कुछ क्षण बाद अधीश बोला, 'गुरुजी, हम उन्हें कैसे नष्ट करेंगे? इसके लिए हमें पहले उन्हें देखना, सुनना और महसूस करना होगा।'

हमारे विशेषज्ञ दिन-रात इस पर काम कर रहे हैं। इस बीच आप दोनों वरिष्ठ पुस्तकालय में जाकर इस तरह के राक्षसों के बारे में जितना हो सके उतनी जानकारी जुटा लें।

वे दोनों अचरज से गुरुजी की ओर देखने लगे। पुस्तकालय! क्या गुरुकुल के विनाश के समय वह नष्ट नहीं हो गया था? मानो उनके मन की बात जान लेने वाले गुरुजी ने उत्तर दिया, "गुरुकुल में कई ऐसे स्थान हैं जिनकी इतनी कड़ी सुरक्षा की जाती है और जो इतने अदृश्य हैं कि ये राक्षस वहाँ तक नहीं पहुँच सके। फिर भी, किसी भी राक्षस द्वारा किसी गुरुकुल और उसके निवासियों को पहुँचाया गया यह अब तक का सबसे बड़ा विनाश था। पुस्तकालय नष्ट नहीं हो सकता था। अतीत में इस पर इतने हमले हुए

थे कि इसकी और इसकी बहुमूल्य पुस्तकों की सुरक्षा के लिए दोहरी और तिहरी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। इन राक्षसों के पास पुस्तकालय को नष्ट करने की बुद्धि या जानकारी नहीं थी।"

इसी प्रकार, गुरुकुल में कुछ ऐसे स्थान भी हैं जहाँ राक्षस नहीं पहुँच सके क्योंकि उनकी सुरक्षा के लिए अतिरिक्त सावधानी बरती गई थी। ये स्थान सामान्य दृष्टि और मन से अदृश्य हैं। उच्च शिक्षा और ध्यान प्राप्त करने के बाद ही इन स्थानों को देखा जा सकता है। बच्चों, अब पुस्तकालय जाओ, हमारे प्राचीन ग्रंथों में इन राक्षसों के बारे में क्या लिखा है और हम उन्हें कैसे नष्ट कर सकते हैं, यह पता लगाओ।

"जी गुरुजी," उन्होंने एक साथ कहा, आश्वस्त और राहत महसूस करते हुए। उन्होंने गुरुजी के पैर छुए और जाने के लिए मुड़ गए।

'ऐशानी बेटा।' वह मुड़ी और चुपचाप गुरुजी को देखने लगी। वह जानती थी कि गुरुजी अब उससे अकेले में बात करेंगे। अधीश कुटिया से बाहर निकला और बाहर उसका इंतज़ार करने लगा, ताकि उन्हें अकेले में भावनात्मक बातचीत करने का समय मिल सके। 'बेटी, अभी तुमसे लंबी बातचीत करने का समय नहीं है, लेकिन तुम्हारे ज़्यादातर लोग सुरक्षित हैं और लड़ाई जीत रहे हैं। मुझे उनके सही ठिकाने का पता लगाने में थोड़ा और समय लगेगा। कुछ समय बाद तुम उनसे मिल जाओगी। अभी उन्हें ज़बरदस्ती यहाँ लाना सुरक्षित नहीं है।'

'जी गुरुजी,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'क्या सब लोग साथ हैं?'

ऐसा लगता है कि फिलहाल तो ऐसा ही है।

'गुरुजी,' वह खुद को रोक नहीं पाई: 'क्या मैं निकट भविष्य में उनसे मिल पाऊंगी?'

'हां, जब चाहें बीटा संस्करण उपलब्ध करा सकते हैं, इस ऑपरेशन के बाद अब उन्हें ढूंढना व्यावहारिक नहीं होगा।'

उसने राहत भरी सांस लेते हुए सिर हिलाया, फिर अचानक ही गुरुजी को गले लगा लिया। गुरुजी आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने उसके कंधों पर हाथ रखकर स्नेहपूर्वक उसके सिर पर थपथपाया।

'हे गुरुजी,' वह अब खुलकर रो रही थी, 'मैं भी आपके साथ मर गई थी। मैं एक चलती-फिरती लाश थी। मेरे साथ ऐसा दोबारा मत कीजिए, गुरुजी।'

'बेटा, मैं अमर नहीं हूँ, जैसा कि तुममें से अधिकतर लोग सोचते हो। मैं कई बार मर चुका हूँ, लेकिन तुम जैसे लोगों, तुम्हारे प्रेम और प्रभु की माया के कारण ही मुझे

वापस आना पड़ता है। इसके अलावा, इस संसार में मेरा काम कभी खत्म नहीं होता। राक्षस भी अनंत हैं, और वे बार-बार लौटते रहते हैं।'

अपनी प्रतिक्रिया से शर्मिंदा होकर ऐशानी गुरुजी से दूर हट गई, सिर झुकाकर वहीं खड़ी रही। जब उसकी नज़रें गुरुजी से मिलीं, तो दोनों की आँखें नम थीं। ऐशानी अपनी पीड़ा और राहत दोनों व्यक्त कर रही थी, और गुरुजी यह आश्वासन दे रहे थे कि सब ठीक हो जाएगा। फिर वह मुड़ी और अधीश के पीछे चल पड़ी, जो वरिष्ठ पुस्तकालय की ओर जा रहा था। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और ऐशानी ने हल्की सी मुस्कान दी। अधीश ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया, इस बात से राहत महसूस करते हुए कि उसकी निराशा का कोहरा आखिरकार छंट रहा है।

पुस्तकालय एकदम शांत लग रहा था, और वहाँ उनका एक सुखद आश्चर्य इंतज़ार कर रहा था। वरिष्ठ लाइब्रेरियन वशिष्ठ उनका स्वागत करने के लिए मौजूद थे। ऐशानी ने राहत की साँस ली। वशिष्ठ भी उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने मिली-जुली भावनाओं के साथ उनका स्वागत किया और उनकी आँखों में आँसू थे। 'मैं आप दोनों का बहुत लंबे समय से इंतज़ार कर रहा था। किताबें भी आप दोनों का इंतज़ार कर रही हैं। आइए, आइए,' वशिष्ठ ने उनका स्वागत करने की उत्सुकता में लगभग लड़खड़ाते हुए कहा।

उन्होंने उनके पैर छुए और अंदर चले गए। उस जगह की जानी-पहचानी सी अनुभूति उन्हें तुरंत महसूस हुई। पिछले कुछ हफ्तों में उन्होंने इतनी उथल-पुथल और तबाही झेली थी कि अब यह जानी-पहचानी सी अनुभूति भी उन्हें अजीब लग रही थी। जब उनकी पूरी दुनिया उलट-पुलट हो गई थी, तब चीजें वैसी ही कैसे रह सकती थीं! लेकिन पुस्तकालय वही था, वही फर्नीचर, वही अलमारियां जिन पर जटिल और रंगीन नक्काशी की गई थी और वही पूजनीय और प्रिय पुस्तकें और पांडुलिपियां। कुछ अलमारियों और किताबों से एक तरह की फड़फड़ाहट और आह सुनाई दे रही थी, लेकिन जब उन्होंने उनकी तरफ देखा तो कोई आवाज नहीं थी। पुस्तकालय मानो जंगल के किसी ऐसे हिस्से में था जिसकी कोई दीवार नहीं थी। अलमारियां पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के बीच रखी थीं। पहले ऐसा नहीं था। आश्चर्यचकित होकर वे वशिष्ठ जी की ओर मुड़े।

'इतने हंगामे के बाद, पुस्तकालय उनका अगला निशाना होता। भले ही वह दिखाई न देता हो, ईंट-पत्थर से बनी इमारत को वे आसानी से पहचान लेते। इसलिए गुरुजी ने

हमें पुस्तकालय को जंगल के इस हिस्से में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया। यह बाहरी लोगों को बिल्कुल दिखाई नहीं देता और आसपास का वातावरण भी सुखदायक है। जरूरत पड़ने पर इसे स्थानांतरित करना भी आसान होगा।' वे सब एक साथ सिर हिलाकर पांडुलिपियों की ओर मुड़े। कितनी दयनीय स्थिति थी! पिछले दिनों के विपरीत, जब ऐशानी किताबों के पास पहुंची तो उसके दिल में कोई खुशी नहीं थी। किताबों का भी उनके द्वारा खोले जाने की इच्छा न दिखाना उसके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। वे शोक में डूबी हुई थीं। उनके कुछ आगंतुक उस नरसंहार में मारे गए थे। अब उन्हें प्यार और सम्मान देने वाला कोई नहीं था। हां, वशिष्ठ वहां था, लेकिन वह लिखित शब्दों को उतना महत्व नहीं देता था जितना वरिष्ठ प्रशिक्षु देते थे। वे ही थे जिन्होंने इन ग्रंथों को आत्मसात करने के बाद दुनिया में जाकर उनमें लिखी बातों का पालन किया था। पांडुलिपियाँ और पुस्तकें इतनी गहरी उदासी में डूबी हुई थीं कि उन्हें यह एहसास ही नहीं हुआ कि ऐशानी और अधीश उनके बीच मौजूद हैं। जब ऐशानी और अधीश ने हाथ जोड़कर पांडुलिपियों को आशीर्वाद दिया, तब जाकर पुस्तकें जीवंत हुईं। ऐशानी के स्पर्श से ही हलचल मच गई। केवल ऐशानी और अधीश ही समझ पा रहे थे कि क्या हो रहा है। सब कुछ पहले जैसा ही था, पुस्तकें कैसे हिल सकती थीं या कैसे बोल सकती थीं? लेकिन वे यह समझ सकते थे कि वातावरण में एक अलग ही उत्साह था, क्योंकि पांडुलिपियाँ बाहर निकाले जाने का इंतजार कर रही थीं। बहुत धीरे-धीरे, अधीश और ऐशानी ने पुस्तकों को कोमल स्पर्श देना शुरू किया। अपने प्रिय पाठकों के स्पर्श को पहचानते ही पुस्तकों ने राहत की एक गहरी साँस ली। अब सब कुछ ठीक होने वाला था।

ऐशानी और अधीश ने बड़ी सावधानी से एक-एक किताब निकाली। उन्होंने यह काम बहुत ही नाजुकता से किया, क्योंकि उत्साह में किताबें फट भी सकती थीं। ये प्राचीन ग्रंथ इतने लंबे समय तक बहुत अच्छी तरह से संरक्षित थे, फिर भी इतने पुराने हो चुके थे कि उन्हें छूते समय हमेशा अतिरिक्त सावधानी बरती जाती थी। कुछ खोजबीन के बाद, उन्हें अंततः एक प्राचीन प्रति मिली जिसमें सूक्ष्म अदृश्य राक्षसों के बारे में कुछ लिखा था। उसमें लिखा था कि ये राक्षस अदृश्य इसलिए थे क्योंकि वे बहुत छोटे थे। अपने अत्यंत छोटे आकार के कारण, उनमें एक पूर्ण आकार के राक्षस जितनी शक्ति नहीं थी। इसलिए लाखों छोटे राक्षस एक साथ मिलकर एक विशाल राक्षस बन गए और मानव जाति और पृथ्वी को नष्ट करने के लिए निकल पड़े। धीरे-धीरे उन्हें इन

राक्षसों पर कुछ और किताबें मिलीं। फिलहाल अधीश और ऐशानी दोनों ही इन राक्षसों के इतिहास और विकास की बजाय उन्हें नष्ट करने के तरीके खोजने में अधिक रुचि रखते थे। 'अधी, इसे देखो,' ऐशानी ने अधीश को पुकारा। अधीश उसके पास गया जहाँ वह एक पांडुलिपि पर झुकी हुई प्राचीन लिपि को समझने की कोशिश कर रही थी। अधिश रामायण काल में प्रचलित इस भाषा से अधिक परिचित थे। उन्होंने इसे पढ़ने और फिर ऐशानी भाषा में अनुवाद करने में कुछ समय लिया।

'ऐश, ये अरबों-खरबों की संख्या में हैं। इन्हें एक बार में या एक दिन में भी नष्ट नहीं किया जा सकता। इनसे छुटकारा पाने में कम से कम एक पक्ष (पखवाड़ा) लगेगा।'

'यह बहुत लंबा समय है, अधी; इस अवधि में वे आधी से ज्यादा दुनिया को नष्ट कर देंगे।'

'हां, ऐश, इससे निपटने का कोई न कोई तरीका तो जरूर होगा। इसमें बहुत समय लग रहा है। जब तक हम सही इलाज ढूंढ पाएंगे, तब तक ये नन्हे-मुन्ने राक्षस बहुत तबाही मचा चुके होंगे।'

'अधी, अगर हमारे प्राचीन ग्रंथों में इन राक्षसों का वर्णन है, तो इसका मतलब है कि वे प्राचीन काल में भी सक्रिय रहे होंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि उन्हें नष्ट करने का तरीका इन्हीं पन्नों में कहीं न कहीं मौजूद है। सावधान रहो, अधी, ये पन्ने बहुत नाजुक हैं।'

'मुझे पता है, ऐश। उत्सुकता में पन्ने मानो अपने आप पलट रहे हैं। जैसे ही मैं किसी विचार की ओर देखती हूँ, पन्ने पलट जाते हैं और मैं उस विषय पर पहुँच जाती हूँ जो मेरे मन में था।' उन्होंने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराए। यही उनकी दुनिया थी, किताबें, उनका जंगल और यहाँ आसपास की हर चीज़। 'अगर इन राक्षसों को नष्ट करने के कोई बेहतर तरीके होते तो गुरुजी हमें यहाँ नहीं भेजते,' वह फिर से पढ़ने लगी। 'अधीश, देखो, आकर इसे देखो,' उसने उत्साहित स्वर में फुसफुसाया। वे दबी आवाज़ में बोले ताकि किताबें ज़्यादा उत्तेजित न हों। अधीश उसकी मेज़ पर गया। कुछ पंक्तियाँ और चित्र पढ़ने के बाद उसने कहा, 'ऐश, मुझे लगता है कि हमें आखिरकार सफलता मिल गई है।'

'क्या, अधी?' उसने थोड़ी ऊंची आवाज में कहा, फिर जब उसे कुछ किताबों में अकड़न महसूस हुई तो उसने अपनी आवाज धीमी कर ली।

लिखा है कि उनके शरीर का कोई भी हिस्सा नष्ट होने पर उनकी शक्तियां काफी कम हो जाती हैं। हम जानते हैं कि लाखों छोटे-छोटे राक्षस मिलकर एक या कुछ विशाल

राक्षस बन जाते हैं। इन विशाल राक्षसों का कोई केंद्रीय मस्तिष्क नहीं होता। मान लीजिए, अगर उनका एक हाथ नष्ट हो जाए, तो वह वैसे ही रहता है। राक्षसों को मारने की हमारी खोज में यह एक अभूतपूर्व उपलब्धि है। उनके शरीर के अंगों को नष्ट करने से उनकी शक्तियां धीरे-धीरे कम होती जाती हैं, जब तक कि हम उन्हें पूरी तरह से खत्म नहीं कर देते।

'तो इन्हें नष्ट कैसे करें? चलिए पता लगाते हैं।' वे फिर से अपनी पढ़ाई और शोध में जुट गए।

"अच्छा, हम उन्हें डुबो सकते हैं, है ना? या हम उन्हें शराब में डुबोकर मार सकते हैं। हम उन्हें अंतरिक्ष में भेज सकते हैं— नहीं, हमने अभी-अभी अंतरिक्ष में राक्षसों का सफाया किया है, हम अंतरिक्ष में फिर से कोई राक्षस नहीं चाहते। या हम उन्हें जला सकते हैं। हाँ, मुझे लगता है कि यह एक आदर्श उपाय होगा। हम उन्हें जला देते हैं। देखो ऐश, ये तरीके यहाँ लिखे हुए हैं।"

'अधीश, ये तो लाखों की संख्या में हैं, हम इन्हें पकड़कर जला कैसे दें?'

'ऐसा लगता है कि ऐश, अन्य सामान्य राक्षसों की तरह, खून के प्रति बेहद आकर्षित होता है। प्यास और भूख लगने पर किसी भी जीवित प्राणी का खून चलेगा, लेकिन मानव मांस और खून किसी भी समय बेहतर होता है।'

'और हमें इतना खून कैसे मिलता है, अधी?'

'रुको; मुझे थोड़ा और पढ़ने दो, धैर्य रखो। यहाँ लिखा है कि पहले इन राक्षसों को ताज़े मानव रक्त की गंध से लुभाना होगा। उससे पहले, सूखी लकड़ी, टहनियों आदि जैसी ज्वलनशील सामग्री और बड़ी मात्रा में कपूर से एक बड़ा गड्ढा बनाना होगा। राक्षस ताज़े रक्त और मांस की गंध का पीछा करेंगे, ठोकर खाकर गड्ढे में गिर जाएँगे, जिसे उसी क्षण जला दिया जाएगा। क्योंकि वे बहुत छोटे हैं, वे तुरंत जलकर मर जाएँगे।'

ऐशानी ने इस जानकारी को समझने के लिए कुछ क्षण लिए। 'चलो गुरुजी के पास चलते हैं, अधीश, और उन्हें अपनी योजनाओं के बारे में बताते हैं।' अधीश ने सिर हिलाया।

झोपड़ी के अंदर जाकर उन्होंने गुरुजी के चरण छुए और बैठ गए। उन्होंने गुरुजी को पुस्तकालय में मिली जानकारी के बारे में बताया। गुरुजी ने सहमति में सिर हिलाया और इधर-उधर कुछ प्रश्न पूछे।

‘गुरुजी, क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकती हूँ?’ ऐशानी ने आदरपूर्वक पूछा। गुरुजी उसकी ओर मुड़े और उसके प्रश्न का उत्तर देने लगे। ‘हमें पुस्तकालय में इन सूक्ष्म राक्षसों के बारे में पता चला, जिसका अर्थ है कि वे सदियों पहले से अस्तित्व में रहे होंगे। ऐसा लगता है कि मारने और नष्ट करने के अलावा उनमें कोई चेतना नहीं है। लेकिन कोई न कोई तो उन्हें नियंत्रित कर रहा होगा, मेरा मतलब है कि बिना चेतना के वे योजना कैसे बना सकते हैं और हमारे स्थान जैसी चीजों का पता कैसे लगा सकते हैं?’

‘तुम सही कह रही हो, ऐशानी, यह कहानी बहुत पुरानी है, रामायण काल से भी पहले की। युगों पहले अरुणासुर नामक एक असुर ने सदियों तक ब्रह्माजी की आराधना की। ब्रह्माजी उसकी पूजा और भक्ति से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने उसे अनेक वरदान दिए। अरुणासुर ने ब्रह्माजी से इतने वरदान प्राप्त कर लिए थे कि वह लगभग अविनाशी और देवताओं से भी अधिक शक्तिशाली हो गया। राक्षसों की प्रवृत्ति के अनुसार, उसने देवताओं सहित पूरे विश्व को सताना शुरू कर दिया। तभी माँ दुर्गा ने लाखों मधुमक्खियों, बर्रों और ततैयों का रूप धारण किया, उसके शरीर को घेर लिया, उसे जगह-जगह से काट डाला और मार डाला। तब से, माँ दुर्गा के अवतारों में से एक की पूजा की जाती है और उन्हें भ्रमरी देवी कहा जाता है।’

अरुणासुर एक अत्यंत बुद्धिमान, शक्तिशाली और धूर्त राक्षस था। अपने वध के समय भी उसने उन शक्तिशाली भ्रमरियों (भ्रमरी) की प्रतिकृति बनाने का प्रयास किया जो उसे मार रही थीं। उसकी मधुमक्खियाँ माँ दुर्गा की मधुमक्खियों का मुकाबला कर सकती थीं, लेकिन वह अपनी पूरी कोशिश करने से पहले ही मर गया। इसका परिणाम यह हुआ कि अरुणासुर की मृत्यु तो हो गई, लेकिन उसकी कुछ राक्षसी मधुमक्खियाँ जीवित हो उठीं। ये मधुमक्खियाँ किसी भी दिव्य स्पर्श वाले व्यक्ति या वस्तु को नष्ट करने की लालसा के साथ उत्पन्न हुई थीं। साथ ही, इनमें अनेक गुना बढ़ने की क्षमता भी थी। प्राचीन काल में देवताओं ने इनका नाश किया था। ये फिर से उत्पन्न होतीं और फिर से नष्ट हो जातीं। ये उन तिलचट्टों की तरह हैं जो सदियों से जीवित हैं। जाहिर है, इनमें से कुछ सूक्ष्म मधुमक्खियाँ या राक्षस पीछे छूट गए थे। इनकी संख्या बढ़ती गई। इन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया, क्योंकि कोई इन्हें देख नहीं सकता था, और ये लोगों को कभी-कभार ही नुकसान पहुँचाते थे। लेकिन ये हमारी नाक के नीचे ही बढ़ रहे थे। इस सदी में हम पहले थे जिन पर हमला हुआ। हम पूरी तरह से अचंभित थे। हमारी सुरक्षा व्यवस्था मजबूत थी, लेकिन ये अदृश्य सूक्ष्म

राक्षस थे। इनका अगला निशाना सभी धार्मिक स्थल या यहां तक कि वे गुरुकुल भी हो सकते हैं जहां दिव्य उपस्थिति प्रबल होती है। इसलिए, आप देख सकते हैं कि हमें इन्हें नष्ट करने के लिए शीघ्रता से कार्य करना होगा।

सूक्ष्म दानव

टी

वह गड्ढा बेहद बदबूदार था। वह सड़ी हुई लकड़ी और पत्तों से भरा हुआ था। उन्होंने उसे यथासंभव सूखा रखने की कोशिश की थी, जो आसान नहीं था क्योंकि मृत चीजों को सड़ने के लिए नमी की आवश्यकता होती है। इस गंदगी के ऊपर मरे हुए जानवरों के शव थे और सबसे ऊपरी परत जानवरों की हड्डियों के साथ सड़ती हुई घास की थी। ये सब राक्षसों को आकर्षित करने के लिए एक साथ रखे गए थे। गड्ढा भरा हुआ नहीं था और जो भी उसे देखता, उसे केवल घास और झाड़ियों का एक हिस्सा दिखाई देता। गुरुजी ने यह भ्रम इसलिए पैदा किया था ताकि राक्षसों को भोजन की गंध आए, वे गड्ढे के ऊपर से गुजरें और उसमें गिर जाएं। यह उनकी वैकल्पिक योजना थी, अगर उनकी मुख्य योजना विफल हो जाती।

जब भी ऐशानी इन राक्षसों को गड्ढे में लुभाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मुख्य प्रलोभन के बारे में सोचती, तो उसका दिल मुंह में आ जाता था।

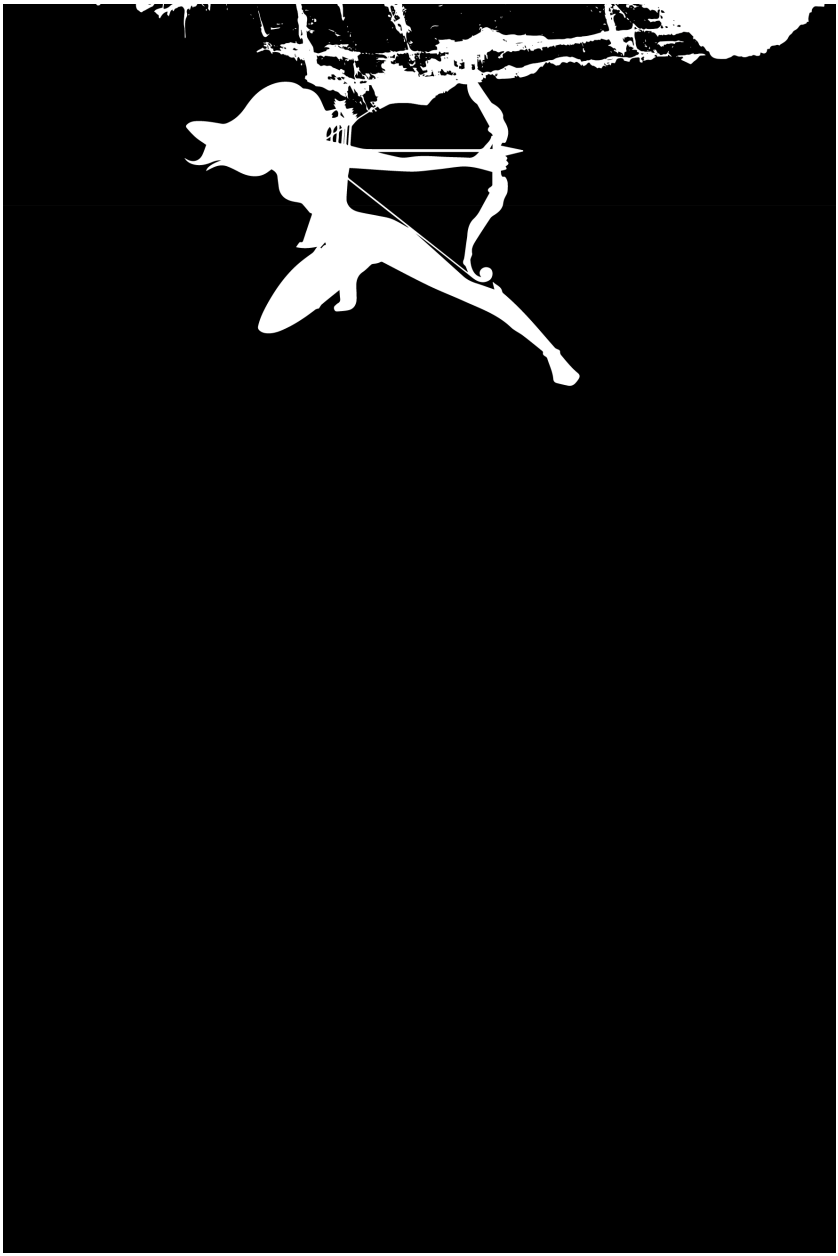

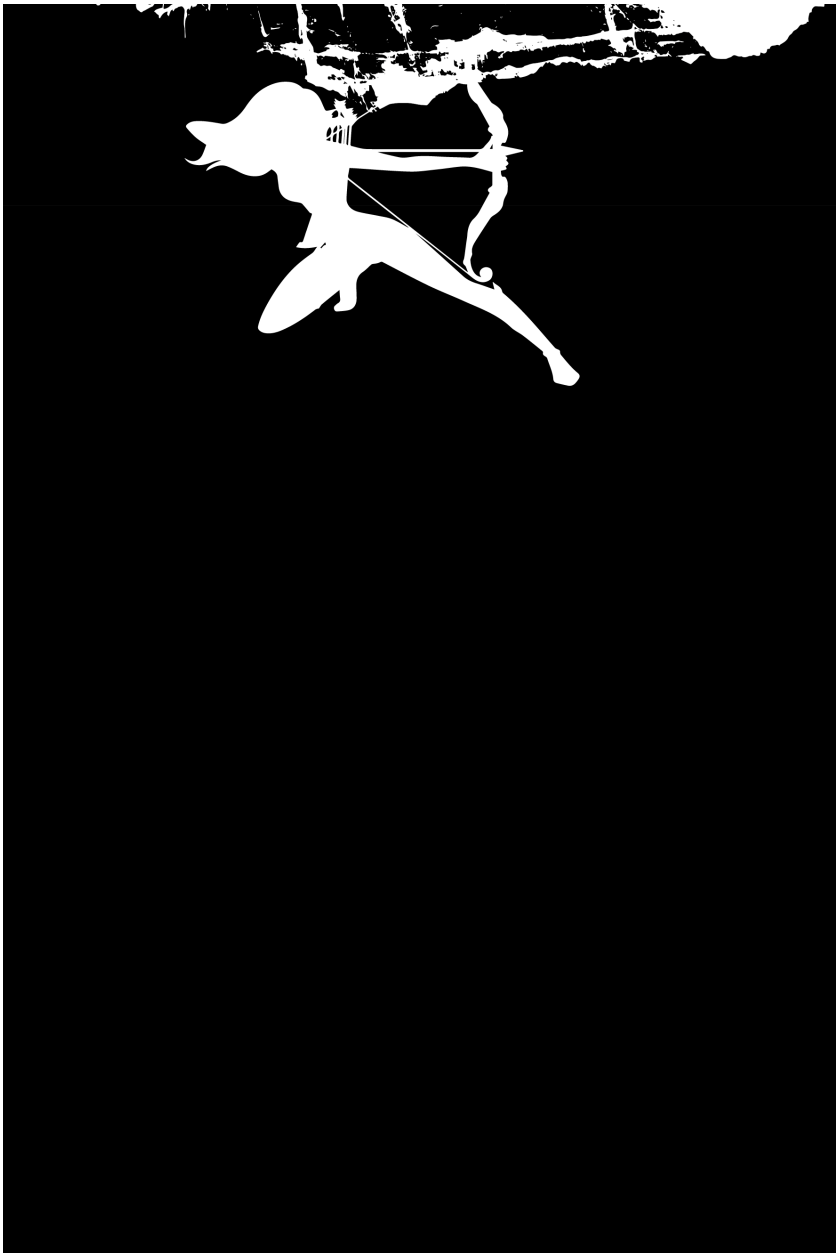

यह ताजा मानव रक्त और मांस की गंध थी। गुरुकुल के बचे हुए लोगों में से किसी को भी स्वयंसेवक के रूप में बुलाने का कोई सवाल ही नहीं था, और न ही अधिश

ऐशानी को बलि का बकरा बनने देने वाला था। ऐनार को कुछ आभास हुआ था और उसने मदद करने की पेशकश की थी, लेकिन गुरुजी और अधिश ने भी यह कहकर उसकी पेशकश ठुकरा दी थी कि उसे पहले सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना है और गुरुकुल की मरम्मत और जीर्णोद्धार में मदद करनी है। अधिश को लगा कि इन राक्षसों को मारना उनका निजी मामला है, लेकिन गुरुजी की प्रतिक्रिया से वह थोड़ा असमंजस में था। उसे लगा कि गुरुजी ऐनार को किसी अन्य महत्वपूर्ण और मूल्यवान कार्य के लिए बचा रहे हैं। अब उसे ऐशानी की चिंता सता रही थी। अधिश द्वारा बलि का बकरा चुने जाने और गुरुजी की सहमति से वह बहुत दुखी और परेशान थी। वह इन राक्षसों को नष्ट करने का कोई और तरीका ढूंढना चाहती थी, लेकिन अधिश उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था।

'ऐसा बिल्कुल भी तय नहीं है कि तुम्हारा वार ही अंतिम निर्णायक वार होगा। तुम्हें राक्षसों को यहाँ बुलाने की ज़रूरत नहीं है। तुम्हें बस इतना करना है कि उनके ढेर में गिरने के बाद, तुम और बाकी लोग तुरंत आग के गोले जलाकर उन्हें गड्ढे में फेंक दो ताकि वे तुरंत जलकर राख हो जाएँ।' ऐशानी के व्याकुल और परेशान चेहरे को देखकर उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया। 'मुझे कुछ नहीं होगा, प्यारी। भला मुझे कुछ हो कैसे सकता है जब तुम, गुरुजी और देवनाथ मेरी रक्षा के लिए यहाँ हो?'

उसने देवनाथ को दरवाजे के ठीक बाहर मंडराते हुए देखा और कुछ हद तक आश्वस्त हुई। लेकिन यह अधीश था। पिछले जन्मों में वह उसे कितनी बार खो चुकी थी। क्या वह इस जन्म में भी उसे फिर से खो देगी? पहले बाबा, अब यह! गुरुजी भी उन्हें तब छोड़कर चले गए थे जब नन्हे राक्षसों ने गुरुकुल को नष्ट कर दिया था और गुरुजी को मार डाला था। लेकिन गुरुजी हनुमान जी के अवतार होने के कारण वापस आ गए थे, फिर भी किसी अन्य मनुष्य को मृत्यु के बाद उसी रूप में इस दुनिया में लौटने की अनुमति नहीं दी जाएगी। वापस आने का एकमात्र तरीका नया जन्म लेना और पूरी प्रक्रिया को फिर से शुरू करना था। इसमें बहुत सारी संभावनाएं थीं। यही सबसे अच्छा था कि वे वर्तमान में जितना हो सके साथ रहें और एक-दूसरे के साथ का आनंद लें। अधीश ने उसके बालों को धीरे से सहलाया और चुप रहा, उसे स्थिति को समझने का समय दिया।

उसे नहीं पता था कि उसका परिवार कहाँ है। अम्मा, जयंत, रूबी, उदय, तेजस, अधीश का परिवार। अगर गुरुजी ने कहा था कि वे सुरक्षित हैं तो ठीक है, लेकिन अब

उसके पास अपनी चिंता और फिक्र बाँटने के लिए कोई नहीं था। इतने खतरनाक और विश्वासघाती मिशन में वह अधीश को कैसे छोड़ सकती थी? वह काँप उठी, उसकी आँखों में आँसू आ गए और वह अधीश से लिपट गई। वे गुरुकुल की नदी के किनारे बैठे थे। गुरुकुल पर हुए हमले के दौरान नदी पूरी तरह से सूख गई थी, अब वह मुश्किल से ही नदी जैसी लग रही थी। अधीश, ऐशानी और गुरुकुल के कुछ अन्य निवासियों की मौजूदगी से उसे थोड़ी-थोड़ी राहत मिली और वह धीरे-धीरे बहने लगी। आसपास के पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के बिना वह अकेली और असुरक्षित महसूस कर रही थी। वे जानते थे कि एक दिन नदी पूरी ताकत से बह निकलेगी। उसका सारा जमा हुआ पानी आसपास के किनारों को भी निगल जाएगा। लेकिन अभी वह डरी हुई थी, और उसका पानी बस कभी-कभार ही निकल रहा था।

प्राचीन ग्रंथों में लिखा है कि इन नन्हे राक्षसों की विशाल संख्या को देखते हुए इन्हें एक बार में मारना संभव नहीं था। इन जीवों का नाश करने में एक सप्ताह से अधिक समय लग जाता था। एक सप्ताह में एक ही मुहूर्त होता था, इसलिए इन राक्षसों को अभिजीत मुहूर्त में जलाकर मारना पड़ता था, जो लगभग दोपहर के समय होता था - 12 बजे से आधा घंटा पहले और 12 बजे के आधा घंटा बाद। निःसंदेह, प्रत्येक दिन का अभिजीत मुहूर्त निश्चित रूप से निर्धारित होता था और लगभग इसी समय होता था। इस समय कार्य करने से उन्हें राक्षसों का नाश करने के लिए अधिक ऊर्जा, शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त होती थी।

ऐशानी कुछ देर और उसकी बाहों में रही। फिर उसने अपना सिर ऊपर उठाकर खुद को उसकी बाहों से छुड़ा लिया। अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। इस बार कोई भी उसके अधीश को उससे छीन नहीं सकता था। बिलकुल नहीं! वे राक्षसों का नाश करने वाले थे, बस यही बात थी। उन्होंने पहले ही उन लोगों में से चार टीम सदस्यों को चुन लिया था जो राक्षसों के हमले से बच गए थे। ये चारों भी उतने ही दृढ़ थे जितने वे खुद। उन्होंने गुरुकुल और अपने प्रियजनों का विनाश देखा था। राक्षसों को नष्ट करने की प्रबल इच्छा के अलावा उन्हें किसी और प्रेरणा की आवश्यकता नहीं थी। उनके पास ज्वलनशील पदार्थों से भरी बोरियाँ थीं। यह सामान्य ज्वलनशील सामग्री नहीं थी; यह वैदिक और तांत्रिक सामग्रियों से बनी थी, जिनका उपयोग प्राचीन काल से ही राक्षसों को भगाने में किया जाता रहा है। इस मामले में कपूर जैसी अधिक ज्वलनशील सामग्री भी थी, जो अपने आप में राक्षसों को जलाने के लिए पर्याप्त नहीं

थी, लेकिन अन्य सामग्रियों को जलाने में एक उत्कृष्ट सहायक थी।
गुरुजी ने उन्हें बताया, "हमारे गुरुकुल में आज भी लाखों ऐसे राक्षस व्याप्त हैं। ये अदृश्य दीमकों के समान हैं। ये इकट्ठा होते हैं और बड़ी छुपकर, योजनाबद्ध तरीके से हमला करते हैं। इनके नियम में ढील आने का एक ही कारण है, जब इन्हें ताजा खून और मांस की गंध आती है। इन्हें किसी भी जीवित प्राणी का मांस और खून पसंद होता है, लेकिन मनुष्य का खून, विशेषकर यदि ताजा कटा हुआ और टपक रहा हो, तो ये बेहद आकर्षक हो जाते हैं। तब ये वासना और लोभ से पागल हो जाते हैं और इनका सुनियोजित हमला हवा में ही उड़ जाता है।"
इस उद्देश्य से तीन गड्ढे बनाए गए थे, जिनमें लगातार तीन दिनों तक राक्षसों को जलाया जाना था। ये गड्ढे अंडाकार थे और गुरुकुल के जंगल की झाड़ियों में छिपे हुए थे। ये एक-दूसरे से पाँच सौ मीटर की दूरी पर थे। गुरुजी के निर्देश पर, देवनाथ और कुछ अन्य कार्यकर्ताओं ने अधीश और अपने लिए एक अस्थायी झोपड़ी बनाई थी। अधीश की झोपड़ी में गुरुकुल की वैद्यशाला से प्राप्त सभी चिकित्सा सामग्री मौजूद थी। उनके पास पर्याप्त तौलिए, पट्टियाँ और गर्म पानी की व्यवस्था थी। वैद्यों द्वारा रखी गई दवाओं के अलावा, गुरुजी ने उन्हें कुछ और जड़ी-बूटियाँ भी दी थीं। वैद्य इन जड़ी-बूटियों से पूरी तरह परिचित नहीं थे, लेकिन वे इतना जानते थे कि ये जड़ी-बूटियाँ बहुत कम समय में रक्त प्रवाह को काफी बढ़ा देती हैं। गुरुकुल के दो चिकित्सकों को अधीश की आवश्यकताओं का कुछ अनुमान था। इसलिए, उन्होंने दवाओं और सामग्री की योजना बनाई थी। इस कार्य के लिए चुने गए चार लोग गड्ढे के चारों कोनों में छिपकर राक्षस के उसमें गिरने का इंतजार करेंगे। गड्ढे से आधा मील दूर एक पेड़ के नीचे की जगह राक्षसों के साथ चारा के मिलन का स्थान होगी।
'गुरुजी, मैं कल सुबह 11:20 बजे वहाँ पहुँच जाऊँगा। अभिजीत मुहूर्त 11:45 बजे शुरू होगा। मेरे पास अपने शरीर के दो हिस्सों, मांसपेशियों और एक नस को खोलने के लिए दस मिनट का समय होगा, ताकि राक्षसों को खून और मांस दोनों की गंध मिल सके। जैसे ही वे इकट्ठा होकर एक बड़ा रूप लेने लगेंगे, मैं गड्ढे की ओर दौड़ना शुरू कर दूँगा।'
'ठीक है अधिश,' गुरुजी ने सहमति जताते हुए कहा, फिर ऐशानी की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, 'मैं गड्ढे के दक्षिणी छोर पर बगलामुखी मंत्र का जाप करूंगा और तुम पश्चिमी छोर पर भ्रमरी मंत्र का जाप करोगी, जिसका जाप हम आज रात भर करते

रहेंगे।'

'जी गुरुजी,' उसकी आवाज़ अटल और दृढ़ थी। अधीश ने उसकी ओर देखा। अगर इस समय उसे किसी की चिंता थी, तो वह उसी की थी। वह जानता था कि उसने अपने दिल के एक कोने में उसके लिए अपने अपार भय और चिंता को छिपाकर रखा था। वह यह भी जानता था कि जब तक राक्षसों का नाश नहीं हो जाता, तब तक यह भय बाहर नहीं आएगा। ये सब बातें एक पल के लिए उसके मन में कौंध गईं। वह भी एक योद्धा था और उसे अपने जीवन की सबसे बड़ी लड़ाइयों में से एक के लिए तैयार होना था, जो कल होने वाली थी। वह खुद को बलि का बकरा बनाने वाला था। उसकी जगह कोई नहीं ले सकता था, क्योंकि एक तो कोई बचा ही नहीं था, दूसरा उसे नेतृत्व करना था और एक उदाहरण पेश करना था, और तीसरा गुरुकुल में उसकी फुर्ती और दौड़ने की गति सबसे तेज़ थी।

ऐशानी और गुरुजी ने पूरी रात बगलामुखी यंत्र और भ्रमरी यंत्र के सामने बैठकर सुबह 11 बजे तक मंत्रों का जाप किया, जिसके बाद वे गड्ढे के दक्षिण और पश्चिम की ओर गए और जाप जारी रखा। बगलामुखी मंत्र का जाप किया गया और शत्रुओं और राक्षसों के नाश के लिए माँ बगलामुखी का आह्वान किया गया। सूक्ष्म राक्षसों को कमजोर करने के लिए भ्रमरी मंत्र का जाप किया जा रहा था। गुरुजी इन राक्षसों के नाश में किसी को भी नहीं बख्शने वाले थे, जिनका एकमात्र उद्देश्य मनुष्य और उनके निवास स्थान, धरती माता का नाश करना था।

अधिश सुबह 11:20 बजे पीपल के पेड़ के नीचे था। उसने चारों ओर देखा, लेकिन उसे अपने आस-पास कोई बुरी शक्ति न तो दिखाई दी, न सुनाई दी और न ही महसूस हुई। लेकिन वह जानता था कि वे मौजूद हैं। गुरुजी ने कहा था कि इन राक्षसों को किसी तरह पता चल गया है कि यहाँ श्रेष्ठ रक्त है। इसीलिए वे किसी आम जगह पर नहीं, बल्कि यहीं एकत्रित हो रहे हैं। किसी चीज़ के प्रति उनका तीव्र आकर्षण ही उन्हें यहाँ इकट्ठा होने और एक विशाल शक्ति बनने के लिए प्रेरित कर रहा होगा। गहरी साँस लेकर उसने एक तेज़ चाकू निकाला और अपने ऊपरी वस्त्र उतार दिए। अब वह कमर से ऊपर नंगा था। उसने बड़े सजगता से, लेकिन निश्चित रूप से, अपनी ऊपरी बांह की मांसपेशियों पर एक चीरा लगाया और अपनी एक धमनी पर भी कट लगाया। उसे यह बहुत सावधानी से करना पड़ा क्योंकि उसे यही प्रक्रिया कई बार दोहराना था। उसकी नस से तुरंत खून बहने लगा। उसने एक मोटी मांसपेशी भी काट दी थी। उसे

यकीन था कि राक्षसों ने उसके मांस और रक्त की गंध और अनुभूति जरूर की होगी। लगभग पाँच मिनट के इंतज़ार के बाद, उसने अपने सामने एक धुएँ के समान काला रूप उठते हुए देखा। बहुत जल्द ही वह एक विशाल काले रूप में बदल गया जो उसकी ओर दौड़ता या सरकता हुआ प्रतीत हो रहा था। राक्षस के पूर्ण रूप धारण करने का इंतजार किए बिना ही अधीश दौड़ने लगा। मनुष्य के इस व्यवहार से आश्चर्यचकित होकर राक्षस भी मुड़ा और उसका पीछा करने लगा। राक्षस किसी भी कीमत पर ताजा मांस और खून के इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। अधीश अब बिजली की गति से दौड़ रहा था। फिर भी, उसके मन में एक विचार आया कि इस विशाल राक्षस का अपना कोई दिमाग नहीं है। ऐसा लग रहा था मानो प्रत्येक छोटे राक्षस को केवल एक ही बात सिखाई गई हो: मनुष्यों को मारना, लूटना, उनका खून पीना और उनका मांस खाना। वे हजारों या लाखों की संख्या में मानव शरीर से चिपक जाते और मिनटों में उसे खा-पी लेते। कुछ समय बाद, उस जीवित प्राणी का कुछ भी नहीं बचता, कंकाल भी नहीं। इस विचार को और गहराने का इंतजार किए बिना ही उसने अपनी गति बढ़ा दी। वह राक्षस का ध्यान भटकाने और उसे भ्रमित करने के लिए रणनीतिक रूप से रखे गए विशाल जले हुए पेड़ों और पत्थरों के बीच से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से भागा। राक्षस भी अब दहाड़ रहा था और उसके पीछे दौड़ रहा था। इस दौड़ में कभी उसका हाथ या सिर का एक हिस्सा पीछे छूट जाता था। राक्षस को खुद को पूरी तरह बांधने का समय नहीं मिलता था। लेकिन वह जानता था कि उसकी प्राथमिकता मानव मांस को मारना और खाना है। यह उनके डेटा में दर्ज था। वह लगभग अधीश के पास पहुँच ही गया था, लेकिन केवल इसलिए कि अधीश ने अपनी गति थोड़ी धीमी कर दी थी ताकि राक्षस उसके पास आ सके। वे अब गड्ढे के पास पहुँच चुके थे जब अधीश अचानक बैठ गया। एक दहाड़ के साथ राक्षस अधीश के ऊपर से कूद गया, लेकिन अधीश वहाँ नहीं था, वह राक्षस के नीचे से फिसल गया और राक्षस गड्ढे में सिर के बल गिर गया। सभी इसका इंतजार कर रहे थे। चारों आदमियों ने अपने बोरे खोल रखे थे और तैयार थे। उन्होंने तुरंत गड्ढे में मौजूद राक्षस पर तांत्रिक राख के फावड़े फेंकने शुरू कर दिए। आग और धुएँ का एक भयंकर गुबार हवा में उठ उठा। पूरा गड्ढा लाल, पीले और नारंगी रंग की आग से जल रहा था, सूक्ष्म राक्षसों की चीखें टूटे हुए वायलिन के तारों की तरह गूंज रही थीं, कभी एक साथ, कभी अलग-अलग, यह इस बात पर निर्भर करता था कि शरीर का कौन सा अंग टूटा

या जला था। जैसे ही नैनो दानव आग में झुलसकर फटने लगे, लगातार पुटपुट की आवाज़ आती रही। तीखे धुएं के गुबार बेताब होकर आसमान की ओर उठते रहे, मानो जलते हुए नरक से बचने की कोशिश कर रहे हों, और चीखते हुए दानव भी उनके साथ भागने का प्रयास कर रहे हों। धुएं के गुबार अधीश की आंखों और गले में घुस गए, जिससे उसे खांसी आने लगी। उसकी आंखों में पानी भर आया, जिससे वह अपने सामने के भयावह दृश्य को देख नहीं पा रहा था, लेकिन फिर भी वह उस दृश्य को देखकर प्रसन्न हुआ। 'तुमने मेरे और मेरे प्रियजनों के अंदरूनी अंगों को निकाल लिया, तुमने मेरी और उनकी आत्मा चुरा ली, हम तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं थे। मैं आशा करता हूं कि तुम अनंत काल तक नरक में सड़ते रहो। हम दोनों अब पीड़ा में हैं, बस अलग-अलग तरह की पीड़ा, तुम्हारी पीड़ा मृत्यु की पीड़ा है, मेरी पीड़ा आशा की पीड़ा है।' अधीश ने ये सब बातें उस पल में सोचीं जब वह जलते हुए गड्ढे के सामने एक दर्शक बनकर खड़ा था। राक्षस चीखते-चिल्लाते जलती हुई खाई पर चढ़ने की कोशिश करते रहे, लेकिन जैसे ही वे किसी चीज़ को पकड़ने की कोशिश करते, उनका हाथ या पैर जलते हुए गड्ढे में गिर जाता, जिससे उनके लिए धधकती नरक की आग से बाहर निकलना और भी मुश्किल और दर्दनाक हो जाता। अधीश जानता था कि एक बार आग भड़क उठी तो उसमें न दया होगी, न विवेक, न शिष्टाचार। वह बिना किसी परिणाम की परवाह किए, अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को खुशी-खुशी और बेरहमी से भस्म कर राख या किसी पिघले हुए तरल पदार्थ में बदल देगी।

धीरे-धीरे असुर (सूक्ष्म राक्षस) कमजोर होता चला गया। उसकी तेज गर्जना चीखों और कराहों में बदल गई। जितना वह ऊपर चढ़ने की कोशिश करता, उतना ही फिसल जाता, जिससे गड्ढे के चारों ओर खड़े चार लोगों को उस पर तांत्रिक राख डालने का और समय मिल जाता। फिर गुरुजी और ऐशानी का तेज मंत्रोच्चार शुरू हुआ। ये सब मिलकर उस प्राणी की मृत्यु की घंटी बजा रहे थे। अधीश उस भयानक दृश्य को देखने के लिए वहाँ नहीं रुका। उसका हाथ कट गया था और उसकी धमनी से अभी भी खून बह रहा था। राक्षस हताशा में गड्ढे से बाहर कूदकर उस पर हमला कर सकता था। देवनाथ गड्ढे के किनारे पर उसका इंतजार कर रहा था। अधीश ने देवनाथ को खुद को पूरी तरह से ढके रहने का आदेश दिया था, कहीं ऐसा न हो कि सूक्ष्म राक्षस उसे देख लें और उसकी ओर बढ़ जाएं। अगर कोई ऐशानी से भी ज्यादा अधीश के लिए चिंतित था, तो वह देवनाथ था। इस समय शायद वह ऐशानी से भी ज्यादा चिंतित था। उसने

झटपट अधीश की बांह पर पट्टी बांधी, फिर उसे एक बड़े, नरम और गर्म कंबल में लपेटकर अपने कंधों पर लादा और भाग गया। वह राक्षसों और अधीश के बीच यथासंभव दूरी बनाना चाहता था। इसके अलावा, अधीश को तत्काल चिकित्सा सहायता की आवश्यकता थी।

वे कल भी यही करेंगे और शायद उसके बाद भी। आश्रम को पूरी तरह से शुद्ध करने और राक्षसों से मुक्त करने के लिए यह करना आवश्यक था। सौभाग्य से, बचे हुए लोगों में कुछ डॉक्टर थे, हालांकि चिकित्सा सामग्री बहुत कम थी। लेकिन अधिश एक अत्यंत स्वस्थ व्यक्ति थे, जिनमें बैल जैसी ताकत थी। उन्हें बस कुछ एंटीबायोटिक दवाएं, क्रीम और ढेर सारा साफ रुई व पट्टी चाहिए थी और वे तुरंत ठीक हो जाते। वैद्य उनका इंतजार कर रहे थे। उन्होंने तुरंत अपना काम शुरू कर दिया।

उस शाम और रात को अधीश और ऐशानी की मुलाकात नहीं हुई। अधीश गुरुजी से मिलने भी नहीं गए। उन्हें अपनी सारी शक्ति बचाकर रखनी थी। देवनाथ उनकी देखभाल कर रहे थे, उन्हें प्रोटीन और हर्बल जूस पिला रहे थे और यह सुनिश्चित कर रहे थे कि उन्हें भरपूर आराम मिले, लेकिन आराम करने का समय नहीं था। गुरुकुल के वैद्य भी उनके साथ थे और उनकी सेहत में सुधार की निगरानी कर रहे थे। देवनाथ ने गुरुजी और गुरुकुल के डॉक्टरों द्वारा दी गई आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ और लोशन लगाए और उन्हें इस्तेमाल करने का तरीका बताया। अधीश को देवनाथ से बेहतर और समर्पित नर्स और देखभाल करने वाला कोई नहीं मिल सकता था। अधीश के प्रति उनकी वफादारी और देखभाल का भाव अतुलनीय था।

अधिश चाहकर भी ऐशानी और गुरुजी से नहीं मिल सकता था। वे पूरी तरह से माँ बगलामुखी और भ्रमरी देवी की प्रार्थना में लीन थे, विशेषकर रात के समय जब उनकी शक्ति सबसे अधिक होती थी। एक पल भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था। यह सब पहले से ही सोच-विचार करके तय किया गया था। गुरुजी और ऐशानी उन गड्ढों के पास तैनात थे जहाँ अधिश राक्षसों को लुभा रहा था। ये गड्ढे गुरुकुल के भीतरी जंगलों में बनाए गए थे, जहाँ लोगों के गलती से पहुँचने और जान गंवाने की संभावना कम थी। वैसे भी नरसंहार के बाद गुरुकुल में ज़्यादा लोग नहीं बचे थे। गुरुकुल में भी, नन्हे राक्षसों ने केवल सबसे गुप्त स्थान ही छोड़े थे। फिर भी, गुरुजी ने पूरे क्षेत्र को एक अदृश्य आवरण से ढक रखा था। यहाँ अदृश्य राक्षस थे और दो देवियों का आह्वान किया जा रहा था। वे किसी भी शक्ति को विचलित होने का जोखिम नहीं उठा सकते

थे। जंगल के इस हिस्से में मौजूद लोग अच्छी तरह जानते थे कि इस पूरे अभियान को गुप्त रखने के लिए उन्हें क्या करना है। उनका दुख इतना बड़ा था कि वे उन राक्षसों को नष्ट करने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे जिन्होंने उनके गुरुकुल को ध्वस्त कर दिया था और उनके प्रियजनों को मार डाला था।

गुरुकुल के लगभग बाहरी इलाके में दो और गड्ढे खोदे गए थे। उन्होंने प्राचीन ग्रंथों में पढ़ा था कि पृथ्वी से इन सूक्ष्म राक्षसों को खत्म करने के लिए उन पर तीन ज्वलनशील हमले करने होंगे। पहला हमला ही उनमें से अधिकांश को नष्ट कर देगा और दूसरा बाकी बचे हुए को। तीसरा हमला केवल एहतियात के तौर पर होगा, ताकि अगर कुछ बचे रह जाएं तो उन्हें भी नष्ट किया जा सके। आश्रम में कोई भी जोखिम नहीं लेना चाहता था और न ही एक भी सूक्ष्म राक्षस को जीवित छोड़ना चाहता था, इसीलिए तीसरा गड्ढा खोदा गया था। अधीश यह भी जानता था कि बाद में गुरुकुल के कुछ निवासी अपने शरीर के अंगों को काटकर खून बहाएंगे और फिर हाथों में जलती हुई मशाल लेकर घूमेंगे। उसने आह भरी। वे सब डरपोक हो गए थे।

अगले दिन, वही प्रक्रिया दोहराई गई और परिणाम भी वही रहे। अधिश ने एक हाथ और दूसरे हाथ की एक धमनी काट ली थी। घाव और धमनी से खून बह रहा था। आज राक्षसों को इकट्ठा होने में थोड़ा अधिक समय लगा, वे एक छोटा राक्षस बना रहे थे, जो पहले वाले से काफी छोटा था, लेकिन फिर भी काफी बड़ा था। यह इस बात का पक्का संकेत था कि अधिकांश राक्षस पहले दिन की आग में नष्ट हो चुके थे। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा वरिष्ठ पुस्तकालय की किताबों में लिखा था। इसका मतलब था कि कल ऐसे कोई राक्षस नहीं होंगे, लेकिन कोई भी यह जोखिम उठाने को तैयार नहीं था। देवनाथ चिंता से व्याकुल था। अधिश को दो गहरे घाव लगे थे और उसका बहुत खून बह चुका था क्योंकि नस कटने के बाद उसे लगभग पंद्रह मिनट तक खून से लथपथ होकर गड्ढे की ओर दौड़ना पड़ा था। इस जर्जर और तबाह गुरुकुल में उसे रक्त चढ़ाने का कोई रास्ता नहीं था। उसे खून देने वाला कोई था ही नहीं, सही उपकरण तो दूर की बात है। देवनाथ की दिली तमन्ना थी कि वह अधीश को उसके पिता के अस्पताल ले जाए, जहाँ उसकी उतनी ही अच्छी देखभाल हो, जितनी ऐशानी की हुई थी जब उसने राक्षस रक्तबीज का खून पी लिया था। लेकिन किसी को नहीं पता था कि वे कहाँ हैं, ज़िंदा हैं या मर गए। तब भी अधीश अपने पिता के अस्पताल जाकर नहीं रह सकता था। इतनी दूर से लगातार तीन अभ्यास करना मुमकिन ही नहीं था।

देवनाथ ने सिर हिलाया; उसे और भी ज़रूरी बातों पर सोचना था।

दूसरे प्रकरण के अगले दिन अधीश को हल्का बुखार हो गया। यह सच था कि वह सबसे शक्तिशाली योद्धाओं में से एक था, लेकिन उसे अपना खून भरपूर मात्रा में बहाना पड़ा ताकि राक्षस आसानी से उसकी गंध सूंघ सकें। दो दिनों में ही वह बहुत कमजोर हो गया था और तीसरा दिन अभी बाकी था। अधीश को रोकना नामुमकिन था, प्राचीन ग्रंथ में तीन बार लिखा था कि राक्षसी कण के जरा से भी अंश को मिटा देना है। कोई भी उसे रोक नहीं पाता, चाहे वे रोकना ही क्यों न चाहते। इसके परिणाम बेहद भयानक और दिल दहला देने वाले थे। सभी संबंधित लोग अधीश को लेकर चिंतित थे और उससे बचने की हर संभव कोशिश कर रहे थे, ताकि वे सिर्फ राक्षसों से छुटकारा पाने पर ध्यान केंद्रित कर सकें। वे जानते थे कि जरा सा भी भटकता विचार उनकी एकाग्रता भंग कर देगा और उनके कार्य में बाधा डालेगा।

देवनाथ को सबसे ज्यादा दुख हुआ। अपने स्वामी को ऐसी हालत में देखकर और कुछ भी न कर पाने से वह अंदर से टूट रहा था।

उनके भगवान की मृत्यु हो भी सकती है और नहीं भी। यह बहुत बड़ी कीमत थी। अंततः, तीसरे दिन जब आशीष ने अभिजीत मुहूर्त में खुद को घायल किया, तो कोई परछाई नहीं बनी। आशीष ने राहत की सांस ली, लेकिन फिर भी एहतियात के तौर पर सामान्य से अधिक देर तक इंतजार किया। फिर वह लगभग लड़खड़ाते हुए उस गड्ढे की ओर दौड़ा जहाँ गुरुजी और ऐशानी बगलामुखी मंत्र का जाप कर रहे थे और चार आदमी गड्ढे के चारों कोनों पर ज्वलनशील पदार्थों से भरी बोरियाँ लिए इंतजार कर रहे थे। आशीष ने गुरुजी की ओर देखा। उन्होंने कुछ देर तक अपना मंत्र जपते रहे, फिर रुक गए और उन चार आदमियों को इशारा किया। उन्होंने तुरंत बोरियों का मिश्रण गड्ढे में डाल दिया। आग तुरंत गर्जना के साथ उठी, मानो अपने शिकार को भस्म करना चाहती हो, लेकिन अब कोई शिकार नहीं था। आग को तब तक जलने दिया जाएगा जब तक वह अपने आप शांत होकर बुझ न जाए।

राहत की सांस लेते हुए गुरुजी ने देवनाथ को इशारा किया, जो गुरुजी के आदेश की प्रतीक्षा में वहीं आसपास मंडरा रहा था। बिना कुछ कहे, फुर्ती से उसने अधीश को उठाया और प्यार से अपने कंधों पर लाद लिया। फिर वह उस कुटिया की ओर भागा जहाँ डॉक्टर इंतज़ार कर रहे थे। अधीश बेहोश हो गया था।

ऐशानी बहुत बाद में आई। वह और गुरुजी मंत्र का जाप करते हुए वहीं रुक गए थे,

ताकि किसी भी अदृश्य सूक्ष्म राक्षस को शांत किया जा सके। इसके बाद वे मां बगलामुखी और भ्रमरी देवी के प्रति आभार व्यक्त करने और उनसे स्वर्ग में अपने धाम लौटने का अनुरोध करने के लिए वापस चले गए। इसमें ही लगभग पूरा दिन लग गया। सब कुछ बहुत सावधानी से करना पड़ा। यदि इन देवियों को जरा सी भी असंतुष्टि होती, तो वे या तो उन पर प्रतिशोध लेतीं या फिर दोबारा आह्वान करने पर नहीं आतीं। यह एक ऐसा जोखिम था जिसे न तो गुरुजी और न ही ऐशानी उठा सकते थे। ऐशानी ने स्वयं को अधीश के बारे में बिल्कुल भी न सोचने के लिए दृढ़ संकल्पित किया था, कहीं उसकी एकाग्रता भंग न हो जाए।

जब वह आखिरकार अस्थायी झोपड़ी में अधीश के पास पहुँची, जहाँ देवनाथ और दोनों वैद्य उसकी देखभाल कर रहे थे, तो अधीश सो रहा था। खून की कमी से उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसे ऐसा लग रहा था मानो पिछले तीन दिनों में वह दुबला-पतला हो गया हो। चार दिन पहले जिस इंसान से वह विदा हुई थी, अब वह उसका खोखला रूप था। उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसे उस पर बहुत गर्व था—उसका साथी, उसकी दुनिया और उसका पति। उसने अपना बलिदान दिया ताकि बाकी लोग सुरक्षित रह सकें, लेकिन इस बारे में उन कुछ लोगों के अलावा कोई नहीं जानेगा जिन्होंने इस काम में हिस्सा लिया था। वह उसके पास बैठ गई और धीरे से उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। वह हिला तक नहीं, लेकिन वह जानती थी कि वह समझ गया है। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और माँ दुर्गा से प्रार्थना करने लगी।

देवनाथ और घर

मैं

जब ऐशानी जड़ी-बूटियों और दवाइयों से भरे थैले लेकर कुटिया के अंदर दौड़ी, तो देवनाथ को सबसे बड़ी राहत मिली। लेकिन यह सिर्फ जड़ी-बूटियों और दवाइयों की बात नहीं थी। देवनाथ ने अपने गुरु और स्वामिनी के बीच का प्यार और गहरा रिश्ता देखा था। यद्यपि अधिश के शरीर पर चोटें मुख्य रूप से शारीरिक थीं, लेकिन वह जानता था कि ऐशानी की सावधानीपूर्वक और सलीके से की गई पट्टियों और भरपूर प्यार भरी देखभाल से उसके गुरु के ठीक होने में तेजी आएगी। वहाँ उसके पास बाहर बैठकर कुटिया की रखवाली करने के अलावा और कोई काम नहीं था। उसे इससे कोई आपत्ति नहीं थी, बिलकुल भी नहीं। वह कुटिया-सह-अस्पताल के आसपास ऐसे ही

घूमता रहा, जैसे मनोहर जी पहले गुरुजी की कुटिया के सामने किया करते थे। उसने अपने आसपास का जायजा लिया और उसे केवल उजाड़ जमीन ही दिखाई दी। उसने यह भी देखा कि गुरुकुल का जीर्णोद्धार बहुत तेजी से हो रहा था।

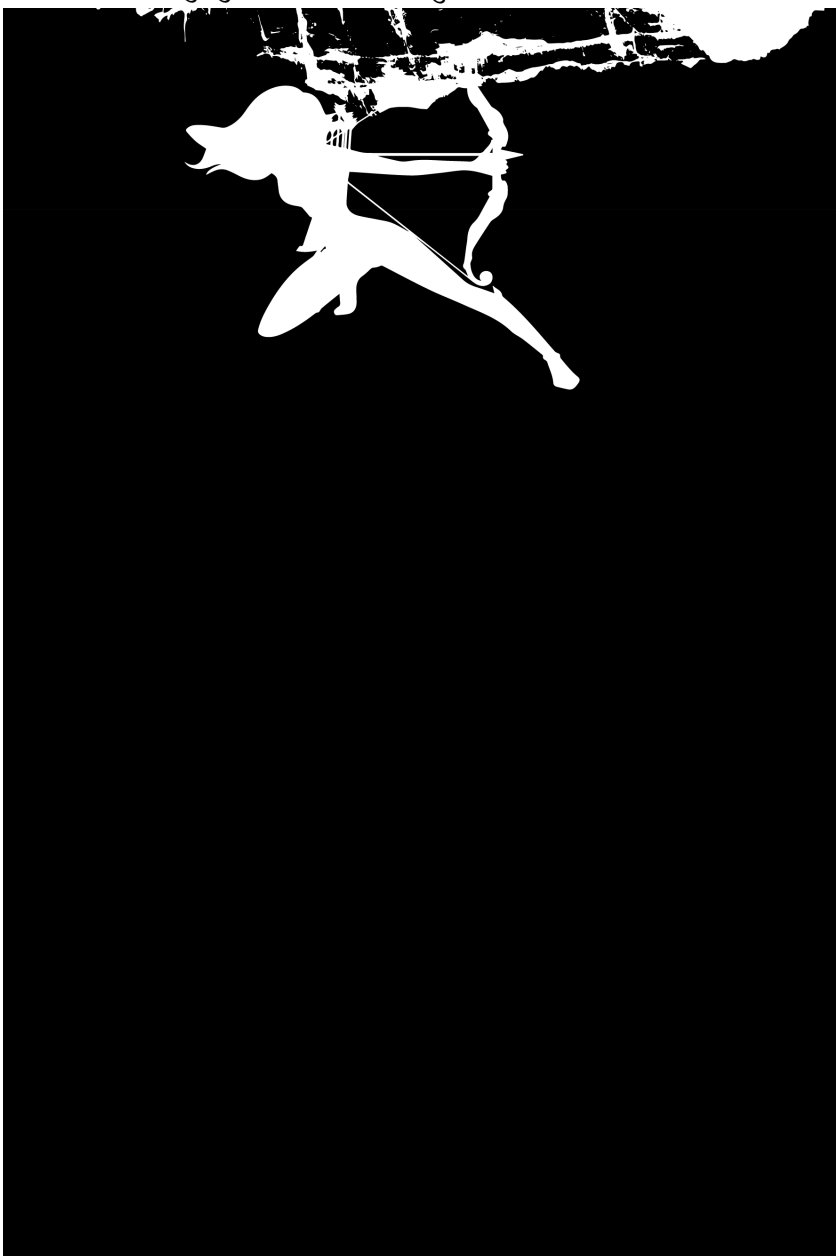

ऐनार गुरुकुल को उसकी पुरानी शान वापस दिलाने के लिए जो अथक परिश्रम कर रहा था, उसे देखकर देवनाथ दंग रह गया। देवनाथ यह भी जानता था कि गुरुकुल में कई ऐसे स्थान थे जहाँ राक्षस नहीं पहुँच पाए थे। वे केवल अपने सामने आने वाली भौतिक वस्तुओं को ही कुचल देते थे। कई ऐसे क्षेत्र थे जो सामान्य मनुष्य की आँखों के साथ-साथ राक्षसी दृष्टि से भी छिपे हुए थे। वह स्वयं इनमें से कई स्थानों पर नहीं गया था, लेकिन उसने अधीश और कुछ अन्य लोगों को उनमें प्रवेश करते देखा था।

कुछ दिन इसी तरह बीत गए, अधीश धीरे-धीरे ठीक हो रहा था। आश्रम के बाकी सदस्य गुरुजी के कुशल मार्गदर्शन में आश्रम की मरम्मत और जीर्णोद्धार के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहे थे। हालांकि वह उनके साथ शामिल होना चाहता था, लेकिन अधीश को अकेला छोड़ने की उसकी इच्छा नहीं थी, खासकर जब वह इतना बीमार था।

कुछ दिनों बाद अधीश ने देवनाथ को अपने पास बुलाया और कहा, 'देवनाथ, मैं ठीक हो रहा हूँ, लेकिन पूरी तरह स्वस्थ होने में अभी कुछ और समय लगेगा। आश्रम का पुनर्निर्माण भी बहुत संतोषजनक गति से चल रहा है। लेकिन कुछ और बहुत महत्वपूर्ण काम हैं जो मुझे और ऐशानी को करने हैं। ऐशानी अपनी मनमानी करती है। अगर मैं उससे विनती भी करूँ तो भी वह मुझे नहीं छोड़ेगी। वह मेरी बात बिल्कुल नहीं सुनेगी। आप ही एकमात्र व्यक्ति हैं जो मेरी बात की गहराई को समझ सकते हैं, आप मेरे और ऐशानी के बारे में इतना कुछ जानते हैं कि मुझे आपको अगला कदम बताने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।'

'जी भैया, बताइए, आप जानते हैं कि मैं आपके लिए अपनी जान भी दे सकता हूं,' देवनाथ ने तुरंत जवाब दिया।

अधीश ने एक मिनट सोचा और फिर बोला, 'आप जानते हैं कि हम दोनों अपने लोगों को लेकर बहुत चिंतित हैं, इतना चिंतित कि उनके बारे में सोचते ही हमारी तबीयत खराब हो जाती है। मेरे लोगों पर राक्षसों का हमला शायद उतना बुरा नहीं हुआ होगा क्योंकि उनमें से कोई भी जन्मजात राक्षस संहारक नहीं है, हालांकि अब उन्हें हमारे कामों का कुछ अंदाजा हो गया है। बेशक मेरे माता-पिता सब जानते हैं। लेकिन मुझे सबसे ज्यादा चिंता ऐशानी के लोगों की है। उसकी मां और भाई दोनों राक्षस योद्धा हैं, हालांकि निष्क्रिय रूप से। रूबी और उसके भाई सक्रिय राक्षस योद्धा हैं। क्या वे

जीवित हैं, अगर हां तो कहां हैं? आपको जाकर पता लगाना होगा देवनाथ,' अधीश ने जोर देकर कहा। देवनाथ ने सिर हिलाया। वह भी अपने परिवारों के बारे में सोच रहा था। पिछले कुछ महीने इतने तनावपूर्ण और दिल दहला देने वाले थे कि वे केवल तात्कालिक कारणों पर ही ध्यान दे पाए थे। अब जब स्थिति नियंत्रण में थी, तो उन्हें अपने परिवारों को ढूंढना था। ऐशानी और अधीश गुरुकुल नहीं छोड़ सकते थे, इसलिए उनके परिवारों का पता लगाना अधीश की जिम्मेदारी थी। वह थोड़ा अनिच्छुक था, लेकिन यह उसके स्वामी की इच्छा थी जो उसके लिए एक आदेश के समान थी।

'देवनाथ, पहले ऐशानी के घर जाओ,' देवनाथ ने कहा। 'हो सकता है तुम्हें वहाँ कुछ न मिले, शायद घर भी न मिले या सिर्फ़ घर का ढाँचा ही मिले,' अधीश खाँसते हुए दर्द से कराह उठा, 'वहीं रुको और ध्यान करो। तुम ध्यान करने और प्रतीक्षा करने में माहिर हो। तुम्हें कुछ आवाज़ें और अलौकिक ऊर्जा का अजीब प्रवाह सुनाई देने लगेगा, घबराओ मत और हमला मत करो। यह घर खुद तुमसे संवाद करने की कोशिश कर रहा होगा, अगर वह तुम्हें पहचानता है तो। वह तुमसे तभी संवाद करेगा जब वह तुम पर भरोसा करने लगेगा। इसलिए शांत और सौम्य रहो; घर अपने आप में एक सत्ता है और वह तुम्हें बहुत कुछ बता सकता है।'

एक मिनट तक देवनाथ अधीश को देखता रहा, फिर उसने सिर हिलाया। उन्होंने कितनी ही मुश्किलों और रोमांच का सामना किया था, फिर भी उनके गुरु ने उन्हें आश्चर्यचकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। खैर, कोई बात नहीं। उसने अधीश के पैर छुए और बाहर चला गया। अब वह भी अधीश की तरह जब चाहे आसानी से गुरुकुल में आ-जा सकता था।

ऐशानी का घर ज़्यादा दूर नहीं था। जब वह कस्बे में दाखिल हुआ, तो सब कुछ पहले जैसा ही था। कस्बे के लोगों को पास के जंगल में हुई किसी अप्रिय घटना की जानकारी नहीं थी। वैसे भी, वे गुरुकुल को न तो देख सकते थे और न ही उसके बारे में जानते थे। जैसे-जैसे वह ऐशानी के घर के पास पहुँचा, उसे धीरे-धीरे तबाही के निशान नज़र आने लगे। वह चलता रहा और आखिरकार घर के सामने आकर खड़ा हो गया। उसने कमर पर हाथ रखकर घर को घूरकर देखा। घर का सिर्फ़ ढाँचा ही दिखाई दे रहा था। वह एक ढहता हुआ खंडहर था, जलकर काला पड़ चुका था। हवा उसके टूटे दरवाजों और खिड़कियों से उदास होकर गुज़र रही थी, मानो आहें भर रही हो और

विलाप कर रही हो। देवनाथ समझ गया कि सिर्फ़ हवा ही नहीं, बल्कि घर भी विलाप कर रहा है। धीरे-धीरे वह टूटी हुई सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा। घर को अपने अंदर किसी घुसपैठिए का एहसास होते ही अपने दरवाजे और खिड़कियाँ बंद होने लगीं, पर वहाँ कोई दरवाजे और खिड़कियाँ थीं ही नहीं। थोड़ी देर बाद, वह पूरी तरह से बंद हो गया। देवनाथ, जो आत्माओं से संवाद कर सकता था, हॉल के बीच में बैठ गया, अपनी आँखें बंद कर लीं और घर की आत्मा से जुड़ने का प्रयास करने लगा। जैसा कि उम्मीद थी, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। ऐसा लग रहा था मानो घर उसका मज़ाक उड़ा रहा हो और पूछ रहा हो कि क्या ईंट-पत्थर से बनी किसी इमारत में भावनाएँ हो सकती हैं। फिर भी, देवनाथ ने हार नहीं मानी और घर से जुड़ने की कोशिश में अपना ध्यान केंद्रित करता रहा। कुछ समय बाद, आक्रामक आवाज़ें धीरे-धीरे शांत हो गईं और चारों ओर सन्नाटा छा गया। यहाँ तक कि हवा भी धीमी हो गई, मानो वह बातचीत सुन रही हो।

धीरे-धीरे, मानो सपने में, देवनाथ को लगा जैसे उसने कोई सवाल सुना हो। अब उसे पता चल गया था कि यह सिर्फ़ उसका वहम नहीं था, बल्कि सचमुच घर से एक सवाल की आवाज़ आ रही थी। उस उदास आवाज़ में हाल ही में हुए किसी अपने को खोने का दर्द और हैरानी साफ झलक रही थी। अपने कठोर और क्रूर अनुभवों के बावजूद, देवनाथ का दिल नरम पड़ गया। घर उस दुखी पालतू जानवर की तरह था जिसे उसके मालिक ने छोड़ दिया हो और जो सांत्वना देने को बेताब हो।

'मैं देवनाथ हूँ, अधीश भैया का सहायक,' उसने गर्व से कहा। काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। घर इन शब्दों का अर्थ समझने की कोशिश कर रहा था। आखिरकार उसे याद आया और समझ में आ गया। वह बड़बड़ाने लगा—या कम से कम देवनाथ को ऐसा ही लगा। वह एक इमारत थी, कोई भाषा बोलने वाला इंसान नहीं। इस घर में जादू होने के कारण उसमें बुद्धि और भावनाएँ आ गई थीं। देवनाथ ने धीरे से उसे अपने सवालों की ओर मोड़ा। 'सब लोग कहाँ हैं, बड़े भाई?' उसने मन ही मन पूछा। घर ने इस संबोधन को आत्मसात किया और उसे पसंद आया। वह फिर से बड़बड़ाने लगा। देवनाथ ने आह भरी। उसे इन उलटी-सीधी बातों में से जानकारी छाननी थी। इन कठिन परिस्थितियों में कौन सामान्य रूप से बोल सकता है, खासकर एक घर? वह अपने ही मज़ाक पर मुस्कुराया। ज़ोरदार आहों और टूटे दरवाजों और खिड़कियों के खटखटाने से उसने अनुमान लगाया कि ऐशानी और रूबी के परिवार पहाड़ पार करके

गंगा नदी के पास शरण ले चुके हैं। अस्पष्ट दिशा देखकर वह समझ गया कि वे उत्तर-पूर्व दिशा में गए थे।

'क्या हुआ बड़े भाई? क्या आप बता सकते हैं?' देवनाथ को घर की अजीबोगरीब भाषा समझ आने लगी थी, जिसमें आहें भरना, दरवाज़े पटकना, एकदम चुप हो जाना और फिर हवा को अपनी मर्ज़ी से अंदर-बाहर आने-जाने देना शामिल था। घर उसे क्या बताने की कोशिश कर रहा है, यह समझने के लिए देवनाथ को अपनी पूरी इच्छाशक्ति और एकाग्रता लगानी पड़ी। घर की सारी अस्पष्ट आवाज़ों को छानकर पूरी बात समझनी पड़ी। घर ने जो बताया, उससे उसके रोंगटे खड़े हो गए।

ऐसा लग रहा था कि जयंत, तेजस और उदय पिछवाड़े में मधु के लिए पहियों वाला एक सीढ़ीनुमा ढांचा बना रहे थे, ताकि मधु अपने गमलों में लगे जड़ी-बूटियों के पौधों को उस पर रख सके और उन्हें चारों तरफ से धूप मिल सके। वहां उल्लास और सौहार्द का माहौल था। जयंत कुछ और लकड़ी के तख्ते लेने के लिए आंगन के किनारे गया। उसने यूं ही आंगन के बाहर बने छोटे से जंगल पर नजर डाली। यह वही जंगल था जहां वे सब बचपन में खेला करते थे। उसे वहां कुछ असामान्य लगा।

वह बेपरवाही से कुछ पल वहीं खड़ा रहा, यह देखने के लिए कि सब कुछ सामान्य है या नहीं। जयंत के पास फ्लोरोस्कोपिक एक्स-रे दृष्टि थी। यह दीक्षा उसे उसके पिता ने उसके जन्मदिन पर दी थी। उसने अभी जो देखा, उससे वह एकदम स्तब्ध रह गया। अरे नहीं! ऐसा नहीं हो सकता, लेकिन ऐसा हो रहा था। वह चीखते हुए अपने दोस्तों के पास भागा। 'वे आ रहे हैं, वे आ रहे हैं, वे बहुत छोटे हैं लेकिन संख्या में बहुत ज़्यादा हैं, लगभग उड़ने वाले कीड़ों की तरह!'

किसी को और किसी तरह के प्रोत्साहन की ज़रूरत नहीं थी। वे इन सब बातों के इतने आदी हो चुके थे कि सोते समय भी उनकी इंद्रियाँ हर समय सतर्क रहती थीं। रूबी, जो मधु के साथ घर के अंदर थी, वह भी दौड़कर बाहर आ गई। उदय ने तुरंत कमान संभाल ली।

'तेजस घर जाओ और माँ-बाप को यहाँ बुला लाओ,' उसने आदेश दिया। तेजस दुनिया के किसी भी प्राणी से तेज़ था, लेकिन वह रुक गया और उदय को हैरानी से देखने लगा, मानो पूछ रहा हो: 'जब उन्हें भाग जाना चाहिए, तब आप उन्हें खतरे में क्यों बुला रहे हैं?'

'जाओ,' उदय ने फिर आदेश दिया, उसकी आँखें काली पड़ रही थीं। तेजस तेज़ी से

मुड़ा और अपने घर की ओर भागा। उदय और जयंत ने एक पल के लिए एक-दूसरे को देखा और समझ गए कि क्या हो रहा है, 'जयंत, जितना हो सके उतना केरोसिन तेल और ज्वलनशील चीज़ें ले आओ; रूबी, घर में जितनी भी ज़रूरी चीज़ें मिलें, उन्हें इकट्ठा कर लो, आंटी को साथ ले जाओ और माँ-बाप का इंतज़ार घर के बाहर करो। जयंत और मैं थोड़ी देर में तुम्हारे साथ आ जाएँगे,' उसके शब्द गोलियों की तरह तेज़ी से निकले। वे अंदर भागे।

जयंत मिट्टी के तेल के डिब्बे लेकर दौड़ पड़ा। उसे खुद नहीं पता था कि उसके घर में इतने सारे मिट्टी के तेल के डिब्बे कहाँ से आ गए, और न ही उसने इस बारे में सोचा। जल्दी से उन्होंने घर के चारों ओर एक बड़े घेरे में ढेर सारा मिट्टी का तेल डाल दिया, बस उत्तर दिशा की तरफ थोड़ी सी जगह खाली छोड़ दी ताकि कोई एक व्यक्ति अंदर या बाहर निकल सके। कीड़े-मकोड़े जैसे राक्षस दक्षिण दिशा से आ रहे थे। जयंत कुछ देर क्षितिज को देखता रहा, फिर धीरे से फुसफुसाया, 'उदय, एक से अधिक प्रकार के जीव हैं। इन छोटे कीड़े-मकोड़ों जैसे राक्षसों के पीछे बड़े-बड़े राक्षस भी हैं।'

उदय रुका, 'किस तरह के राक्षस, जयंत? और कितने?' उसकी आँखें एकदम काली हो चुकी थीं। क्या उसके चेहरे पर हल्की सी भी मुस्कान थी? जयंत अपने दोस्त को अच्छी तरह जानता था। अगर उदय के चेहरे पर मुस्कान थी, तो वो शिकार की उम्मीद में थी। जानवरों और राक्षसों का निर्दयी व बेरहम हत्यारा बनना ही उसकी खासियत थी। जयंत जानता था कि उनके बीच ऐसे क्रूर, निर्मम योद्धा की ज़रूरत थी। लेकिन अभी इन बातों के बारे में सोचने या उदय के वहाँ होने के लिए शुक्रगुजार होने का समय नहीं था। अभी राक्षसों का सामना करने का समय था।

'उदय, मुझे नहीं पता, ये तो संकरित खूंखार जानवर लगते हैं, हर प्राणी कई जानवरों का मिश्रण है और उतना ही क्रूर और हिंसक है। ये इतने बड़े हैं कि हमारे आग के घेरे को पार कर सकते हैं। यहाँ से तो ये अनगिनत लगते हैं, लेकिन इनकी संख्या पचास से अस्सी के बीच हो सकती है,' जयंत अब थोड़ा चिंतित था।

'कोई बात नहीं जयंत, तुम कीड़े-मकोड़ों वाले राक्षसों का ध्यान रखो, ध्यान रखना कि वे अग्नि-मंडल पार न करें, बाकी मैं संभाल लूंगा,' यह कहते हुए उसने एक भारी कुल्हाड़ी जैसा हथियार निकाला, लेकिन वह कुल्हाड़ी नहीं थी। उदय उसे प्यार से अपना 'पशु' कहता था। उसने इसका नाम भगवान विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम की दिव्य कुल्हाड़ी के नाम पर रखा था। यह लकड़ी और लोहे से बनी एक

लंबी और भारी छड़ी थी। इसके ऊपरी सिरे पर एक बड़ी, गोल कुल्हाड़ी थी, लगभग दरांती जैसी, जिसका बाहरी भाग तेज धार वाला था और भीतरी भाग दांतेदार था। यह दिखने में जितनी घातक थी, उतनी ही घातक थी भी। उदय कभी इसे एक हाथ से तो कभी दोनों हाथों से, स्थिति के अनुसार इस्तेमाल करता था। इस समय तक रूबी और मधु ने वे सभी चीजें इकट्ठा कर ली थीं जो उन्हें इस स्थिति में उपयोगी लग रही थीं। यह कोई बड़ी चुनौती नहीं थी क्योंकि मधु हमेशा ऐसी किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार रहती थी। उनके पास हमेशा दो थैले होते थे जिनमें सभी आवश्यक सामान भरे होते थे, ताकि अगर उन्हें अस्थायी रूप से कहीं और बसना पड़े तो वे उनका इस्तेमाल कर सकें। वह रूबी के साथ अपने घर के उत्तरी हिस्से में गई, जहां आग के घेरे का एक हिस्सा उनके लिए छोड़ा गया था ताकि वे उसे पार करके दूसरी तरफ जा सकें।

'रूबी बेटा, तुम यहीं रुको और अपने माता-पिता और तेजस का इंतजार करो। मैं अंदर जाकर देखता हूं कि मैं उनकी कैसे मदद कर सकता हूं।'

'आंटी, कृपया यहीं रुकिए,' रूबी ने उनसे विनती की। वह हैरान थी। आंटी घर के अंदर जाने के बारे में सोच भी कैसे सकती थीं? बल्कि, उनकी मौजूदगी से जयंत और उदय का ध्यान भटक ही जाता। रूबी को मधु के योद्धा होने के बारे में पता नहीं था। रूबी की घबराहट भरी पुकार पर मधु ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह बस अंदर चली गईं। समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था। रसोई के भंडारगृह में तेल और शराब से भरे कई बर्तन रखे थे, जो इसी तरह की आपात स्थिति के लिए थे। मधु जानती थीं कि छोटे-छोटे राक्षसों को या तो जलाकर या शराब में डुबोकर या पानी में शराब मिलाकर नष्ट किया जा सकता है। इन तरल पदार्थों से भरा एक बड़ा भंडारगृह था। जयंत और उदय उन बड़े बर्तनों को उठाने में मदद करने के लिए बहुत व्यस्त थे, लेकिन मधु एक योद्धा थीं और सदियों से योद्धा रही थीं। उन्होंने गहरी सांस ली और बर्तनों को पिछवाड़े में धकेलना शुरू कर दिया, जहाँ जयंत उनका इस्तेमाल कर सकता था। उन्होंने पिछवाड़े के दृश्य पर तिरछी नज़र डाली, जहाँ एक भयंकर युद्ध और अफरा-तफरी मची हुई थी।

इसी बीच, तेजस अपने माता-पिता के साथ वापस आ गया था। उन्हें रूबी के हवाले करके, वह घर के अंदर भागा जहाँ मधु तेल और शराब के बड़े-बड़े बैरलों को संभालने में लगी हुई थी।

अब राक्षस उनके सिर पर चढ़ गए थे। कीड़े-मकोड़े जैसे राक्षस आग पार नहीं कर पा रहे थे। वे सीधे आग में कूद गए, जलकर राख हो गए और मर गए। जयंत यह सुनिश्चित कर रहा था कि आग कहीं बुझे नहीं। वह लगातार आग जलाता रहा और घेरे में तेल डालता रहा। कुछ देर बाद तेजस भी उसके साथ शामिल हो गया। लेकिन सबसे कठिन लड़ाई उदय लड़ रहा था। बड़े संकर राक्षस या जानवर, हालांकि बहुत बड़े नहीं थे, फिर भी आग के ऊपर से कूदने के लिए काफी मजबूत थे। उदय अपने पूरे जोश में था। दोनों हाथों में पाश पकड़े हुए वह एक दरवेश की तरह घूम रहा था और विकृत संकरों को टुकड़ों में काट रहा था। पिछवाड़े और घर के किनारे खून, कुचली हुई हड्डियाँ, जानवरों के अंग बिखरे पड़े थे। उदय इतनी तेजी से घूम रहा था कि अब जयंत और तेजस को शरीर के अंगों के खूनी मंजर और अजीबोगरीब अमानवीय चीख-पुकार के बीच उसे ढूंढना मुश्किल हो रहा था। उदय ने लगभग सौ राक्षसों को मार गिराया होगा, लेकिन वे फिर भी आते रहे। जयंत जानता था कि वे हारने वाली लड़ाई लड़ रहे हैं। अब उन्हें किसी भी तरह भागना ही था।

और फिर वो हो गया। उदय की कुल्हाड़ी या पाश से बचकर कोई भी जीवित नहीं रह सकता था, लेकिन यहाँ अब कुछ अलग ही था। उदय के पास आने वाला कोई भी राक्षस बेरहमी से मार डाला जाता था, लेकिन वे बहुत सारे थे और उदय अकेला था। जयंत और तेजस आग को जलता हुआ रखने में व्यस्त थे, तभी कुछ संकर राक्षसों को मौका मिला और वे घर में घुस गए। तेजस और मधु जी उनके पीछे दौड़े। उनके पास कोई हथियार नहीं था, राक्षस उन्हें चीर-फाड़ कर मार डालने वाले थे, लेकिन उन्होंने इस बारे में सोचा भी नहीं। उनकी रक्षा करने की प्रवृत्ति इतनी प्रबल थी कि वे इन पशु राक्षसों का सामना करने के लिए सीधे अंदर चले गए। तेजस के हाथ में अभी भी जलती हुई मशाल थी और मधु के हाथों में शराब का घड़ा था। जैसे ही संकर राक्षसों ने उन्हें देखा, वे गुर्राते और दहाड़ते हुए उनकी ओर दौड़े और उन दोनों पर हमला कर दिया। वे गिर पड़े, शराब जमीन पर फैल गई और मशाल उस पर गिर पड़ी। शराब में तुरंत आग लग गई और घर का एक हिस्सा भी जल गया। आग तेज़ी से फैलती जा रही थी और वे बेबसी से देखते रहे। लेकिन इस अफरा-तफरी में भी मधु ने गौर किया कि राक्षस अपनी शरारतें बंद करके एक जगह खड़े होकर गुर्रा रहे थे। जयंत भी उनके पीछे आया और उसने भी यही देखा। उसके दिमाग में कई तरह के विचार उमड़ रहे थे, लेकिन उसने सोचा कि अगर वे ज़िंदा रहे तो इस अस्थायी शांति के कारणों पर बाद में

विचार कर सकते हैं। वह जल्दी से बाहर भागा और किसी तरह उदय का ध्यान अपनी ओर खींचने में कामयाब रहा। खून, मांस और देह से लथपथ उदय अब भी पूरी ताकत से खड़ा था, हालांकि अब संकर राक्षसों की संख्या काफी कम हो गई थी। जयंत ने उसे घर के अंदर की स्थिति के बारे में तुरंत बताया। पूरे घर में आग लग गई थी और आग भयंकर रूप लेकर पूरे घर को भस्म करने वाली थी।

'हमें अभी भागना होगा,' जयंत ने हताशा से कहा, 'वे किसी भी समय अपनी निष्क्रियता से बाहर आ सकते हैं।'

उदय ने सिर हिलाया। वह समझ गया था कि शायद इन राक्षसों का मकसद इसी घर में घुसना था, जो अब उनके हाथ में था—अब उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। इस अस्थायी शांति का फायदा उठाते हुए उसने बाकी लोगों को इशारा किया और सब उत्तर दिशा की ओर भागे, जहाँ रूबी और उसके माता-पिता बेसब्री से उनका इंतज़ार कर रहे थे। रूबी गाड़ी लेकर निकली थी और वह पहले से ही चालू थी। सब उसमें बैठ गए, लेकिन इससे पहले जयंत ने उस तरफ आग का घेरा बंद कर दिया। रूबी ने गाड़ी तेज़ चलाई। रात हो चुकी थी और उन्हें जल्द से जल्द बहुत दूर जाना था। मधु ने पीछे मुड़कर देखा। उसका प्यारा घर आग की लपटों में जल रहा था और वे कुछ नहीं कर सकते थे। जयंत ने उसकी भावनाओं को समझा और प्यार से अपनी माँ को गले लगा लिया। इस पूरे समय देवनाथ ने घर की आवाज़ को बड़ी एकाग्रता और सहानुभूति से सुना था। उसने चारों ओर देखा। घर अब बस एक खोखला ढाँचा रह गया था; कभी शानदार और गौरवशाली इमारत का बस एक काला चित्र। लेकिन उसकी आत्मा अभी भी बरकरार थी और वह अपने निवासियों के लिए तड़प रही थी।

उसने घर को नमस्कार करते हुए हाथ जोड़े और कहा, 'आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं वादा करता हूँ कि मैं सबको सुरक्षित वापस ले आऊँगा।' घर खुशी से काँप उठा। जैसे ही वह हॉल से निकलकर बरामदे में पहुँचा, घर हिल गया और टूटी हुई छत के कुछ टुकड़े उसके सामने गिर पड़े। देवनाथ ने गिरते हुए टुकड़े से बचने की कोशिश की, लेकिन एक और टुकड़ा उसके सामने गिर गया। ऐसा लगा मानो घर उसे जाने नहीं देना चाहता था या शायद उसे कुछ और बताना चाहता था। वह अब और बैठकर बातें नहीं कर सकता था। उसने घर की ओर देखा और कहा, 'मैं अब और नहीं रुक सकता। बहुत देर हो रही है। आप जानते हैं कि मैं उन्हें लेकर आ रहा हूँ।' जवाब में घर और ज़्यादा हिल गया और एक मुड़ा हुआ कागज़ का टुकड़ा उसके सामने गिर पड़ा।

कागज़ के ऊपर एक छोटी सी सुनहरी चाबी भी गिरी। देवनाथ ने दोनों उठा लिए। कागज़ किसी तरह का मोटा-मोटा नक्शा लग रहा था। वह समझ नहीं पाया।

'मैं इसका क्या करूँ? क्या मुझे इसे किसी को देना पड़ेगा?' घर ने खिड़की पर ज़ोर से दस्तक दी। बहुत ज़ोर से दस्तक और कंपन के बीच धीरे-धीरे देवनाथ को समझ आया कि कागज़ पर एक नक्शा बना हुआ है, जिसमें ऐशानी और रूबी के लोगों द्वारा राक्षसों से बचने के लिए अपनाए गए रास्ते का विवरण है। समय की कितनी बचत हुई! उसे यह भी समझ आया कि घर उससे चाबी भी लेना चाहता है। उसे अभी तक यह नहीं पता था कि किस उद्देश्य से।

'ओह, बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मैं उनके साथ जल्दी आ जाऊँगा।' घर ने राहत की साँस ली और देवनाथ को जाने दिया। घर से बाहर आते ही ठंडी, काली हवा का एक झोंका उसे घेर लिया। उसने चारों ओर देखा। क्या घर उसे फिर से रोक रहा था? ऐसा नहीं लग रहा था। हवा फिर से उसके चारों ओर बह रही थी, काली और भयावह। वह समझ गया। ये नकारात्मक अलौकिक शक्तियाँ थीं जो घर और उसके आसपास अपना भयानक नृत्य कर रही थीं। देवनाथ मुस्कुराया। यह उसके लिए बिल्कुल अनुकूल था। वह ऐसी ही शक्तियों के बीच पला-बढ़ा था। उनके साथ या तो मारो या मरो वाली स्थिति थी। उसने अपना कपड़े का थैला खोला और उसमें से कुछ चीजें निकालीं।

ये दो बड़ी मानव हड्डियाँ, एक खोपड़ी और एक छोटा दो मुँह वाला डमरू था। वह घर के सामने बैठ गया, आँखें बंद कर लीं और एक अजीब भाषा में कुछ मंत्रों का जाप किया। फिर उसने खोपड़ी में कोई तरल पदार्थ डाला, अपने बाएँ हाथ की हथेली को एक तेज़ चाकू से हल्का सा काटा और उस खून को खोपड़ी में बहने दिया। खोपड़ी से घना काला धुआँ निकला। देवनाथ ने हड्डियों को अपने हाथों में लिया और खुद को धुएँ में लपेट लिया और फिर हड्डियों और डमरू के साथ नाचने लगा। यह एक भयानक नृत्य था जिसमें देवनाथ हड्डियों को खड़का रहा था और डमरू को हिला रहा था, लगातार मंत्रोच्चार कर रहा था, घूम रहा था और उन्माद में घर के चारों ओर चक्कर लगा रहा था। खोपड़ी में तरल पदार्थ उबल रहा था और लगभग छलक रहा था। घर के चारों ओर और अंदर भी भयानक चीख-पुकार मची हुई थी। देवनाथ और उसकी सेना तथा घर को घेरने वाली अंधकारमय शक्तियों के बीच एक लड़ाई चल रही थी, जो एक-दूसरे से बहुत अलग नहीं थीं। फर्क सिर्फ इतना था कि एक हड्डी देवनाथ के वश

में थी और दूसरी अनियंत्रित नकारात्मक ऊर्जाओं से भरी हुई थी। देवनाथ ने हार नहीं मानी; वह जानता था कि इनसे कैसे छुटकारा पाना है। वह नाचता रहा, खोपड़ी में तरल पदार्थ से भीगी हड्डी को डुबोकर आपस में टकराता रहा। हर बार टकराने से खून कंपा देने वाली चीखें निकलती रहीं। धीरे-धीरे चीखें शांत हो गईं, तरल पदार्थ उबलना बंद हो गया और अपने हल्के लाल रंग में लौट आया। देवनाथ ने तब नाचना बंद किया जब उसे पूरा यकीन हो गया कि बुरी आत्माओं का पूरी तरह से निष्कासन हो गया है। उसने अपना सामान साफ किया, पैक किया और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। उसने घर की ओर पीछे मुड़कर देखा। उसे किसी धन्यवाद की उम्मीद नहीं थी, लेकिन शायद किसी तरह की स्वीकृति की उम्मीद थी। लेकिन घर एकदम शांत था, कोई आवाज नहीं, कोई आहट नहीं। कुछ समय पहले इतना चहल-पहल भरा होने के कारण देवनाथ को यह थोड़ा अजीब लगा। फिर उसे समझ आया। बिल्कुल! पिछले कुछ हफ्तों में बुरी आत्माओं ने घर को इतना परेशान किया था कि अब बुरी आत्माओं को भगाने के बाद वह बच्चे की तरह सो रहा था। ठीक है। देवनाथ ने घर को प्रणाम किया और अपनी यात्रा शुरू की।

देवनाथ नक्शे के पीछे-पीछे चल पड़ा। यह नक्शा जल्दबाजी में बनाया गया था और पैमाने के अनुसार नहीं था, हालांकि इससे ज्यादा फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि देवनाथ उस जगह से परिचित था जहां परिवार भागे थे। यह नक्शा जयंत या उदय में से किसी एक ने जल्दबाजी में बनाया था और हॉल के एक छज्जे में छिपा दिया था, इस उम्मीद में कि उनमें से कोई इसे ढूंढ लेगा। वे गंगोत्री में कहीं गए थे और शायद अभी भी वहीं थे। देवनाथ ने हरिद्वार के लिए बस ली और वहां से उत्तर काशी के गंगोत्री के लिए दूसरी बस पकड़ी। गंगोत्री पवित्र गंगा नदी का उद्गम स्थल है, जो सबसे पवित्र स्थानों में से एक है जहां राक्षस भी जाने से डरते हैं। यह सब बहुत ही सुंदर और बहुत ठंडा भी था। देवनाथ इन सब बातों से बेखबर था। वह बस इन लोगों का पुनर्वास करना चाहता था और अपने स्वामी अधीश के पास वापस लौटना चाहता था।

गंगोत्री पहुँचते ही नक्शा थोड़ा धुंधला हो गया और उसके बाद उनका कोई सुराग नहीं मिला। शायद परिवार को खुद ही नहीं पता था कि वे कहाँ जा रहे हैं। उसने गंगोत्री मंदिर के पास डेरा डाला और पूरा दिन उनकी तलाश में बिताया। वह उनके चेहरों से ज़्यादा परिचित नहीं था। उसे यकीन नहीं था कि अगर वे भेस बदलकर घूम रहे होते तो वह उन्हें पहचान पाता। उनके बीच कोई गुप्त संकेत या गुप्त शब्द नहीं थे। देवनाथ

ने अपनी अंतरात्मा के बल पर उन्हें पहचाना और वर्गीकृत किया। इस समूह में वह जानता था कि उदय सबसे खतरनाक था। वह अपने दुश्मनों पर ज़रा भी दया नहीं दिखाता था। अगर कोई लापरवाही से उसके पास से गुज़रता और उदय को पसंद नहीं आता, तो अगले ही पल उस व्यक्ति का हाथ या पैर टूट सकता था। देवनाथ को यकीन था कि उदय से पंगा लेने से पहले राक्षस भी दो बार सोचते होंगे। लेकिन देवनाथ को उदय पर थोड़ा सा शक था। उसे पूरा यकीन था कि उदय के व्यक्तित्व का एक नरम पहलू भी था, जिसे उदय ने बड़ी कुशलता से छिपा रखा था। इस समूह में खतरनाक योद्धाओं की अगली कड़ी ऐशानी भाभी की मां मधु थीं। देवनाथ अपने इस अवलोकन से हैरान, बल्कि स्तब्ध रह गए। ऐशानी की मां तो बस एक गृहिणी थीं, जो घर-परिवार की देखभाल में ही संतुष्ट थीं। उन्हें कभी किसी और चीज की चाहत नहीं हुई। मधु को देखकर देवनाथ को लगा कि वह एक बेहद अनुभवी योद्धा हैं, जो जरूरत पड़ने पर किसी को भी मारने में एक पल भी नहीं हिचकिचाएंगी। देवनाथ ने मन ही मन सोचा, यह कितना बेतुका आकलन है! उन्होंने मधु के बारे में अपने विचार एक कोने में रख दिए और बाद में उन पर विचार करने का फैसला किया। रूबी, जयंत और तेजस के बारे में भी उनकी अपनी राय थी, लेकिन उन पर वे बाद में सोचेंगे।

देवनाथ गंगोत्री की गलियों और जंगलों में उन्हें ढूंढने की उम्मीद में भटकता रहा। हताशा में उसने अपने हाथ जेब में डाले और सोचने लगा कि क्या करे। उसकी जेब में कुछ था। उत्सुकतावश उसने उसे बाहर निकाला। यह वही चाबी थी जो घर ने उसे दी थी। वह उसे घूरता रहा और सोचने लगा। हाँ, यही है! यही है उन्हें ढूंढने की चाबी! वह एक थोड़ी भीड़भाड़ वाली गली में गया और चाबी को सड़क पर लगे एक पेड़ की छाल पर बाँध दिया, जो सड़क से थोड़ा हटकर था। और इंतज़ार करने लगा। कुछ नहीं हुआ। कुछ राहगीर चाबी को देखे बिना पेड़ के पास से गुज़र गए। निराश, लेकिन फिर भी उम्मीद से भरा हुआ, उसने चाबी उतार ली और उसे दूसरी गली में एक दूसरे पेड़ पर बाँध दिया। ऐसा दो बार और हुआ। अंधेरा होने लगा था। उसने चाबी उतार ली और रात बिताने के लिए जगह खोजने लगा। शायद कोई ढाबा मालिक उसे अपनी रसोई के पास सोने दे। वह रास्ते में दिखे कुछ ढाबों की तरफ चलने लगा। कल फिर कोशिश करेगा। अंधेरा होने लगा था और चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था। देवनाथ का ध्यान इस ओर बिल्कुल नहीं गया, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय विचित्र और अस्वाभाविक सन्नाटे में बिताया था। लेकिन उस सन्नाटे के बीच

एक और आवाज़ सुनाई दी, एक सतर्क और दबी हुई आवाज़, मानो कोई पेड़ों की आड़ में चुपके से उनका पीछा कर रहा हो। तुरंत सतर्क होकर देवनाथ बेफिक्र होकर चलते रहे, मानो उन्हें पता ही न हो कि कोई उनका पीछा कर रहा है। देवनाथ बहुत सहज बुद्धि के धनी थे। वे जानते थे कि उनका पीछा कोई राक्षस नहीं कर रहा है। इस क्षेत्र में राक्षस बहुत कम पाए जाते थे। इस क्षेत्र में पवित्रता और धार्मिकता का माहौल था, राक्षसों के लिए यह वातावरण बिलकुल भी अनुकूल नहीं था। वे कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। गंगोत्री देवताओं का निवास स्थान था। कोई राक्षस इतनी पवित्र जगह में प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकता था। गंगा नदी का जल ही किसी राक्षस को जलाने के लिए काफी था। लेकिन वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि उनका पीछा करने वाला व्यक्ति मित्र है या शत्रु। उनके पीछे से क्रूरता की आभा निकल रही थी। देवनाथ के रोंगटे खड़े हो गए। लेकिन यह कोई अशुभ आभा नहीं थी। देवनाथ असमंजस में थे। उनके पीछे खड़े व्यक्ति ने उनकी इस असमंजस को भांप लिया और पलक झपकते ही देवनाथ का सिर पीछे से पकड़ लिया। देवनाथ भी पीछे नहीं रहे और इससे पहले कि वह व्यक्ति पूरी तरह से उनका गला जकड़ पाता, देवनाथ ने अपनी खुखरी निकाल ली। दोनों कुछ मिनटों तक आपस में जूझते रहे, इस दौरान देवनाथ को उस व्यक्ति का चेहरा बस एक झलक ही दिखाई दी। गले पर पकड़ और कसती जा रही थी, तभी उन्होंने दबी हुई आवाज में कहा, 'उदय, मैं देवनाथ हूं।' पकड़ ढीली नहीं हुई, हालांकि दबाव भी नहीं बढ़ा। ताकत के मामले में देवनाथ को अपने जैसा प्रतिद्वंद्वी मिल गया था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि अगर उदय को देवनाथ के जासूस या राक्षस होने का जरा सा भी शक हुआ, तो वह पल भर में उनकी गर्दन तोड़ देगा। आखिरकार, जो घंटों जैसा लग रहा था, लेकिन वास्तव में कुछ ही सेकंड थे, उदय ने अपनी पकड़ थोड़ी ढीली की, बस इतनी कि वह देवनाथ का चेहरा देख सके। उसने कुछ देर तक देवनाथ को घूरा और जब उसे यकीन हो गया कि यह सचमुच देवनाथ ही हैं, तब उसने अपनी पकड़ ढीली की।

'तुम इस चाबी से क्या कर रहे हो?' वे जाकर सड़क के पास एक टीले पर बैठ गए। अब पूरी तरह अंधेरा हो चुका था। एकमात्र रोशनी ढाबों में से एक के पेट्रोमैक्स लैंप से आ रही थी।

'आधीश भैया ने मुझे आप सबको ढूंढने के लिए भेजा था। मैं भाभी के घर गया, जहाँ से मुझे चाबी और नक्शा मिला,' देवनाथ ने सीधे-सादे शब्दों में जवाब दिया। भाभी से

उसका मतलब ऐशानी से था।

‘वे कहाँ हैं?’ उदय ने पूछा, ‘क्या वे……’ वह वाक्य पूरा नहीं कर पाया।

‘वे ठीक हैं और आश्रम में आप सबका इंतज़ार कर रहे हैं।’ देवनाथ उन्हें इससे ज़्यादा कुछ भी बताने वाले नहीं थे। उनकी ज़िंदगी ऐसी थी कि किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता था और दूसरी बात, उनकी पूरी कहानी बताना उनका काम नहीं था। अधीश और ऐशानी का काम था कि वे उन्हें जो भी उचित समझें, बताएँ।

'सब लोग कहाँ है?'

‘चलो, उनके पास चलते हैं,’ उदय उठ खड़ा हुआ।

वे गंगोत्री मंदिर के पीछे गए। मंदिर से आधा किलोमीटर दूर विशाल वृक्ष थे। देवनाथ उदय के पीछे-पीछे वृक्षों के पीछे-पीछे तब तक चलते रहे जब तक वे एक कुटिया के पास नहीं पहुँच गए। वहाँ सभी मौजूद थे - ऐशानी की माँ, जयंत, रूबी, उसके माता-पिता और तेजस। यह एक तरह का पुनर्मिलन था, सिवाय इसके कि वे देवनाथ के साथ बहुत दोस्ताना नहीं थे। वे जानते थे कि देवनाथ, अधीश का सबसे भरोसेमंद सहायक था और अगर घर के सभी लोग भी उस पर भरोसा करते थे, तो वह भरोसेमंद था। हर कोई अधीश और ऐशानी के बारे में जानना चाहता था। देवनाथ ने उन्हें केवल अधूरी जानकारी दी। उन्हें कुछ भी बताना उसका काम नहीं था। उन्होंने गुरुजी के बारे में नहीं पूछा क्योंकि उन्हें आश्रम में हुई पूरी घटना का पता नहीं था। जब अंत में उन्होंने और प्रश्न नहीं पूछे तो देवनाथ को राहत मिली। उन्होंने सही अनुमान लगाया था कि वह उनके सभी प्रश्नों का उत्तर देने में असहज महसूस कर रहा था क्योंकि या तो उसे पता नहीं था या वह उत्तर देना नहीं चाहता था।

‘मैं तुम्हें वापस ले जाने आया हूँ। राक्षसों का नाश हो चुका है; अब वहाँ कोई खतरा नहीं है।’

‘हाँ, हम सुबह निकलेंगे। काफी देर हो चुकी है, अभी निकलना सुरक्षित नहीं होगा,’ मधु ने सरलता से कहा। सबने उसकी बात मान ली, पहला तो इसलिए कि सब उसका सम्मान करते थे और दूसरा इसलिए कि वह हमेशा सही होती थी। उसने सबको सादा खाना परोसा, मोटी चपातियाँ जिन पर घर का बना मक्खन लगा था, साथ में फूलगोभी और आलू की सबी। सबने बड़े चाव से खाया, खासकर देवनाथ को, जिसके लिए यह स्वर्ग से आया अमृत जैसा था। उसे घर का बना खाना खाने की आदत नहीं थी, जिसमें भरपूर प्यार डाला जाता है और जो उसे किसी और खाने से

अतुलनीय बना देता है। 'उदय भैया ने उनमें से दो को मार डाला था,' तेजस हँसते हुए बोला, 'लेकिन वे इतने ज्यादा थे कि हमें यहाँ आना पड़ा,' उसने सीधे-सादे अंदाज में कहा जैसे कि इससे सब कुछ स्पष्ट हो गया हो।

देवनाथ चुपचाप और असहज भाव से उन्हें देखता रहा। हर कोई राक्षसों से ग्रस्त था, लेकिन साथ ही आगे बढ़ने के लिए भी बेताब था। मधु जी ने चुपचाप देवनाथ को एक कोने में बुलाया।

'ऐशानी कहाँ है?' उसने धीमी आवाज़ में पूछा।

देवनाथ ने भी उतने ही शांत स्वर में उत्तर दिया, 'भाभी ठीक हैं, वह अधीश भैया के साथ हैं।'

मधु ने देवनाथ के भावहीन चेहरे को गौर से देखा और उसके भावों को पढ़ लिया। कुछ देर बाद वह संतुष्ट हो गई। वह दूसरों के पास गई और घर जाने की तैयारी करने लगी। उन्हें घर पहुँचने में पूरा एक दिन लग गया। मधु जी ने अपने घर की जर्जर हालत देखकर गहरी साँस ली। बाकी लोग भी दंग रह गए। कुछ देर बरामदे में बैठने के बाद देवनाथ ने उनसे विदा ली। अब उसे अधीश भैया के परिवार को ढूँढना था। अधीश का घर ऐशानी के घर से लगभग एक मील दूर था। देवनाथ को वहाँ जाने से डर लग रहा था। पता नहीं वहाँ क्या मिलेगा। कुछ देर बाद उसके पैर भारी हो गए। वे आगे नहीं जा पा रहे थे। सूती थैले पर उसके हाथ कस गए, हड्डियों को सहलाते हुए। शायद यहाँ भी उसकी ज़रूरत पड़ सकती है। अगर यहाँ हालात ठीक नहीं हुए तो वह अधीश का सामना कैसे करेगा?

किसी तरह खुद को घसीटते हुए वह उस मोड़ तक पहुँचा जो अधीश के घर की ओर जाता था। सड़क वैसी ही थी। थोड़ा हैरान होकर वह कुछ और चला। फिर वही जाना-पहचाना नज़ारा। थोड़ा हौसला पाकर वह कुछ और चला, जब तक कि वह विद्याधर जी के घर के सामने नहीं पहुँच गया। वह दंग रह गया। यह घर और इसके आसपास का इलाका बिलकुल वैसा ही था जैसा पहले था। देवनाथ अब असमंजस में था। क्या राक्षसों ने इस जगह पर हमला नहीं किया था? नहीं, ऐसा मुमकिन नहीं था। उन्होंने सब कुछ और अपने सभी प्रियजनों को नष्ट कर दिया था। राक्षस इस जगह को कैसे छोड़ सकते थे! हालाँकि उसे अगले कदम से डर लग रहा था, उसने अंदर जाने का फैसला किया। वह जानता था कि अंदर लाशें मिलेंगी, लेकिन यह एक ऐसा काम था जो उसे करना ही था, चाहे वह कितना भी घिनौना क्यों न हो। वह धीरे-धीरे खुद को

घसीटते हुए अंदर गया और स्तब्ध रह गया। वह वहाँ साँस रोककर खड़ा रहा। किसी भी पल दृश्य बदल सकता था। लेकिन कुछ नहीं बदला। चारों ओर हल्की-फुल्की चहल-पहल थी। लोग अपने-अपने काम में लगे हुए थे और किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। वह इस घर का एक कर्मचारी था जिसे कुछ अतिरिक्त सुविधाएँ मिली हुई थीं। बस इतना ही।

‘ओह देवनाथ!’ वह चौंककर मुड़ा। वह अधीश के पिता विद्याधर जी थे। वह गए और उनके पैर छुए।

‘ठीक है, अब जब आप यहाँ हैं, तो अधिश भी वापस आ गया होगा, है ना?’ विद्याधर जी ने उनसे हँसते हुए पूछा।

अपने सदमे और अचंभा में देवनाथ कुछ बोल नहीं सका। वह बस वहीं जड़वत खड़ा रहा, शब्दों को ठीक से व्यक्त करने में असमर्थ। विद्याधर जी अब थोड़े असमंजस में थे। उन्होंने देवनाथ को गौर से देखा और एक गहरी सांस ली, मानो उन्हें समझ आ गया हो कि अधीश और ऐशानी के साथ कुछ गड़बड़ है। चुपचाप उन्होंने देवनाथ को बगल के कमरे में जाने का इशारा किया और दरवाजा बंद कर दिया। देवनाथ वहाँ चुपचाप खड़ा रहा। यहाँ भी उसने एक-एक शब्द में ही जवाब दिया। विद्याधर जी जानते थे कि उससे जवाब निकलवाना ठीक नहीं है। उन्होंने गला साफ किया और अपनी शब्दावली का सबसे डरावना सवाल पूछा, 'क्या अधीश जीवित है?' देवनाथ ने विद्याधर जी को एक पल के लिए हैरानी भरी नजर से देखा, मानो यह सोचना ही बेतुका हो कि उनके साथ रहते हुए कुछ हो सकता है। उसने सिर हिलाया। विद्याधर जी ने धीरे से सांस छोड़ी, 'और ऐशानी?' देवनाथ ने फिर सिर हिलाया।

विद्याधर जी ने किसी तरह अपनी राहत को संभाला। वे जानते थे कि इसमें और भी बहुत गंभीर और विनाशकारी बातें शामिल हैं, लेकिन बाद में। एक समय में एक ही काम, सबसे महत्वपूर्ण काम पहले निपटाया जाएगा।

‘वे घायल हैं, क्या उन्हें यहां लाया जा सकता है?’ देवनाथ ने हां में सिर हिलाया।

‘बहुत खूब,’ विद्याधर जी अब पूरी तरह से काम में जुट गए। ‘हम उन्हें यहाँ कैसे लाएँगे? ज़ाहिर सी बात है कि मैं वहाँ एम्बुलेंस नहीं भेज सकता। न ही हम किसी को वहाँ ले जा सकते हैं। मैं कार से जाऊँगा। सिर्फ़ तुम और मैं ही वहाँ जाएँगे। एक बार वे यहाँ आ जाएँगे तो सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। या नहीं?’ उन्होंने देवनाथ की ओर ध्यान से देखा। लेकिन देवनाथ इतने पेचीदा सवालों के जवाब देने के काबिल नहीं

थे। उन्होंने बस फिर से सिर हिला दिया। विद्याधर जी ने अपने छोटे भाई केदार को फ़ोन किया और उन्हें कुछ निर्देश दिए। केदार समझ गए और तुरंत हरकत में आ गए। इसके बाद विद्याधर जी अपनी पत्नी अनुजा के पास गए जो एक माली को निर्देश दे रही थीं। जब उनके पति ने उनसे कुछ कहा तो अनुजा सीधी खड़ी हो गईं। उन्होंने खुद को सहारा देने के लिए अपने सामने वाली कुर्सी पर हाथ रख लिया। उन्हें देखने वाला कोई भी व्यक्ति एक ऐसी महिला को देख सकता था जो अपने सुंदर बगीचे को शांत भाव से निहार रही हो। एक घंटे के भीतर अधीश और ऐशानी विद्याधर जी के अस्पताल में थे। केदार पूरी तरह से स्थिति को संभाले हुए थे। अधीश को पिछले दरवाजे से लाया गया। जितना कम लोगों को इसके बारे में पता चले उतना ही अच्छा था। डॉक्टरों की एक टीम ने अधीश का इलाज शुरू किया। जब हालात थोड़े शांत हुए, तो केदार अपनी भाभी ऐशानी के पास जाकर बैठ गया। वह बहुत चिंतित थीं। अधीश का इतना खून बह चुका था कि वह लगभग कोमा जैसी स्थिति में था। उसके शरीर में खून चढ़ाया जा रहा था और उसके घावों का इलाज किया जा रहा था। केदार ने उनकी तरफ देखते हुए कहा, 'मुझे पता है कि मुझे इतने सवाल नहीं पूछने चाहिए, लेकिन बस जिज्ञासावश पूछ रहा हूँ कि किस तरह का राक्षस उसे इतनी रणनीतिक जगहों पर काटेगा या नोचेगा। जंगली जानवर की तरह राक्षस तो बस हमला कर देते हैं और अपने शिकार के शरीर के किसी भी हिस्से से मांस नोच लेते हैं। लेकिन ये घाव तो बहुत सोच-समझकर किए गए हैं। क्या राक्षस खुद को इतना समय देते हैं?'

ऐशानी सिसकते हुए कांप उठी और एक पल के लिए असमंजस में पड़ गई। लेकिन ये केदार थे, अधीश के चाचा और अब उनके डॉक्टर भी। उन्हें जानने का पूरा हक था, अगर सब कुछ नहीं तो कम से कम कुछ तो जानना ही था। 'चाचा, किसी राक्षस ने उन पर हमला नहीं किया। उन्होंने खुद को ये घाव दिए हैं।' केदार एक पल के लिए स्तब्ध रह गए। उनके मन में कई सवाल उठ रहे थे और उन्होंने कुछ सवाल पूछने के लिए मुंह खोला। ऐशानी के उदास चेहरे को देखकर वो चुप हो गए। उन्हें और उनके छोटे भाई को अधीश और ऐशानी के भाग्य का अच्छा-खासा अंदाजा था। ज्यादा सवाल न पूछना ही बेहतर था। कम से कम अब उन्हें पता था कि ये घाव किसी जानवर या राक्षस ने नहीं, बल्कि खुद अधीश ने बनाए हैं, जिससे संक्रमण का खतरा कम हो गया था। फिर भी, वो कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। आईसीयू से बाहर आने के बाद, उनके छोटे भाई कल्पेश, जो एक आयुर्वेदिक डॉक्टर थे, उनकी देखभाल

करेंगे और उनकी एलोपैथिक दवाएं भी जारी रहेंगी। इस समय अधीश ज़्यादातर समय सोता रहता था। उसे दी गई नींद की दवाइयों का असर था। एक हफ़्ते तक ऐशानी और देवनाथ ने अधीश को किसी के साथ अकेला नहीं छोड़ा। ऐशानी उसके बगल में सोफे पर बैठी रहती, जबकि देवनाथ या तो उसके कमरे के सामने बैठा रहता या बेचैनी से इधर-उधर घूमता रहता। अब तक अधीश काफी हद तक ठीक हो चुका था। उसने ऐशानी को घर जाकर आराम करने के लिए मनाया। बहुत मनाने के बाद वह अनिच्छा से चली गई, लेकिन जाने से पहले उसने देवनाथ को कुछ निर्देश दिए, जो उसकी इच्छा को पूरी तरह समझ गया था। अगर अधीश ऐशानी से इतना प्यार न करता, तो वह झुंझलाहट में अपनी आँखें घुमा लेता।

ऐशानी के जाने के बाद, अधीश ने देवनाथ को अपने कमरे में बुलाया। 'आओ देवनाथ, आओ और यहाँ बैठो,' उसने अपने बिस्तर के पास रखी एक कुर्सी की ओर इशारा किया। लेकिन देवनाथ कभी अधीश के सामने नहीं बैठता था।

‘अब मुझे सब कुछ बताओ, देवनाथ। ऐशानी के लोग कहाँ और कैसे हैं? क्या वे यहाँ के लोगों की तरह ही आराम से हैं? ऐसा लगता है कि राक्षसों ने केवल गुरुकुलों पर ही हमला किया है।’

‘नहीं भैया, वे ठीक नहीं हैं या ठीक नहीं थे,’ वह रुका और अपने शब्दों को जोड़ने की कोशिश करने लगा। देवनाथ काम करने वाला था, बोलने वाला नहीं। एक साधारण बातचीत भी उसे असहज कर देती थी।

अधीश को कुछ ऐसा ही सुनने की उम्मीद थी। जब उसने अपने लोगों को सामान्य हालत में देखा, तो उसे उम्मीद होने लगी कि ऐशानी के परिवार को भी कोई नुकसान नहीं हुआ होगा। अब ऐसा लग रहा था कि यह उम्मीद करना बहुत मुश्किल है। देवनाथ द्वारा अपने अस्थि नृत्य के बारे में बताने पर उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। उसने पहले भी देवनाथ को यह नृत्य करते देखा था और वह चिल्लाते, मंत्रोच्चार करते और इधर-उधर घूमते हुए, हड्डियों को दो बुनाई की सुइयों की तरह चटकने की आवाज़ के साथ नाचते हुए बिल्कुल हास्यास्पद लग रहा था। 'फिर?' वह फिर से गंभीर हो गया।

मैंने मंत्रों से घर को सुरक्षित कर लिया है। अब कोई राक्षस वहां नहीं रह पाएगा। भैया, घर मुझसे बातें कर रहा था। ये कैसे संभव है? घर कैसे बात कर सकता है?

अधीश देवनाथ के भोलेपन पर फिर हँस पड़ा। उसने अपना पूरा जीवन भूतों और

राक्षसों के बीच बिताया था, लेकिन फिर भी एक बात करने वाले घर की बात उसके दिमाग से नहीं निकल रही थी। उसने धीरे से देवनाथ का ध्यान फिर से ऐशानी और रूबी के परिवारों और उनकी दुर्दशा की ओर मोड़ दिया। देवनाथ द्वारा सब कुछ बताने के बाद, उसने अधीश से पूछा, 'भैया, यह बहुत अच्छी बात है कि इस घर और आपके परिवार पर राक्षसों ने हमला नहीं किया, लेकिन ऐसा क्यों हुआ, जबकि आप और भाभी तो उनके सबसे बड़े दुश्मन हैं?'

'मैं इस बारे में सोच रहा था, देवनाथ। मुझे लगता है कि इसकी वजह यह है कि मेरे लोग सामान्य, साधारण इंसान हैं। ऐशानी और मैं वहाँ नहीं थे। गुरुकुल को नष्ट करने के बाद वे यहाँ आए होंगे, लेकिन हम वहाँ नहीं थे। उनका मुख्य उद्देश्य गुरुकुल, हमें और गुरुजी को नष्ट करना था, जिसमें वे सफल रहे। गुरुकुल में वे हमें बाल-बाल चूक गए और जब वे हमें यहाँ नहीं पाए, तो वे ऐशानी के घर गए होंगे। यह सोचकर कि हम वहाँ हैं, उन्होंने उस घर को नष्ट कर दिया। उदय और जयंत ने उन्हें कड़ी टक्कर दी होगी, लेकिन फिर भी उन्हें भागना पड़ा,' अधीश ने बेजान आवाज़ में कहा, 'या कम से कम मुझे तो यही लगता है।'

देवनाथ ने सिर हिलाया, वह पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था, और बात वहीं खत्म हो गई।

उदय प्यार में

यू

वह दुविधा में था। वह उस लड़की को अपने मन से निकाल नहीं पा रहा था। उसका नाम प्रिशा था। इस नाम का अर्थ था 'ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्रतिभा' या ईश्वर का उपहार। एक सुबह तड़के गंगोत्री नदी के किनारे टहलते हुए उसकी मुलाकात प्रिशा से हुई थी। हवा ठंडी और निर्मल थी। नदी के किनारे और नदी के अंदर भी, जहाँ पानी उथला था, बड़े-बड़े पत्थर थे। इतनी कड़ाके की ठंड थी कि आसपास कोई इंसान नहीं था। पानी में, पत्थरों पर और आसपास के पहाड़ों पर बर्फ के क्रिस्टल जम गए थे।

वहाँ इतनी शांति और सुंदरता थी कि उदय, जो प्रकृति की सुंदरता पर कभी ज्यादा ध्यान नहीं देता था, मंत्रमुग्ध हो गया। वह एक चट्टान पर बैठ गया और अपने चारों ओर फैली शांति का आनंद लेने लगा। एक घंटे के भीतर स्थानीय लोग और पर्यटक अपने घरों और होटलों से बाहर निकलने लगेंगे और हर जगह शोरगुल मच जाएगा।

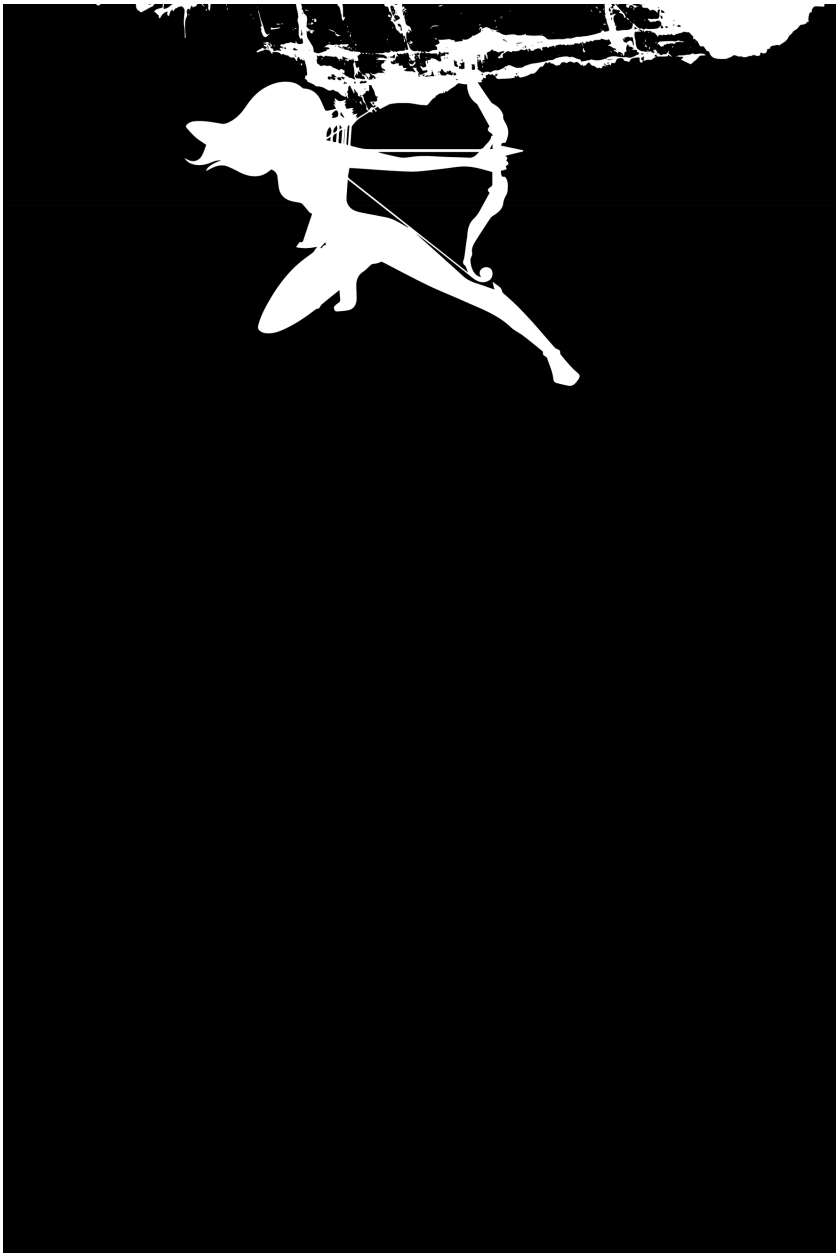

ये मानवीय आवाज़ें इस जादू को तोड़ देंगी। इससे पहले कि ऐसा हो, उदय इस मनमोहक सुंदरता को जितना हो सके अपने अंदर समाने की कोशिश करेगा। इस

समय, पवित्र गंगा नदी अपने आप में एक अलग ही शक्ति लिए हुए थी। यह आत्मविश्वास से बह रही थी, इसकी अरबों बूँदें आपस में मिल रही थीं और एक साथ गति कर रही थीं। इसके जल में ऊँचे पेड़ों और उससे भी ऊँचे पहाड़ों का प्रतिबिंब इतना परिपूर्ण था कि मानो यह शुद्ध रंगीन काँच हो।

उदय का चिंतन ध्यानमग्नता जैसा था। जिस सुविधाजनक स्थान पर बैठकर वह सामने के मनोरम दृश्य का निहारता था, वहाँ से उसे नदी के किनारे सुंदर पक्षी चहचहाते और चहकते दिखाई देते थे। हर दिन, नए सुरों के साथ, पक्षियों का मधुर समूह उसका स्वागत करता था। पेड़ों से गिरते गीत ऐसे लगते थे मानो पानी रत्नों की तरह झरना बनकर बह रहा हो। ऐसा लगता था मानो दो नदियाँ मिलकर आँखों और कानों को शांति प्रदान कर रही हों।

अपनी एक यात्रा के दौरान ही उसने उसे देखा। पहले तो उसे लगा कि वह नदी पर नाचती हुई कोई अप्सरा है, लेकिन जैसे ही वह पास आई, उसे एहसास हुआ कि वह एक लड़की है, दुबली-पतली और बेहद खूबसूरत लड़की। वह वहीं जम गया, उसकी नसें तन गई थीं। चारों ओर खतरा मंडरा रहा था। उसे बचाने की तीव्र इच्छा उसके मन में उठी। उसने चारों ओर ध्यान से देखा, लेकिन उसे कोई ऐसा खतरा नहीं दिखा जिससे वह उसकी रक्षा कर सके। उदय इतना अनुभवी था कि वह जानता था कि बुराई हर जगह छिपी होती है, चाहे उसे महसूस किया जाए या नहीं। लड़की अपने आसपास की स्थिति से बेखबर थी और नदी के ऊपर एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदती जा रही थी। उसकी चाल इतनी मनमोहक और आकर्षक थी कि उदय दंग रह गया। उसने उदय पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया, शायद इसलिए कि वह इतना शांत था कि मानो पेड़-पौधों का हिस्सा बन गया हो। अचानक, वह गायब हो गई। उदय हैरान रह गया। उसने चारों ओर देखा, लेकिन वह कहीं नहीं दिखी। लोग भी बाहर निकलने लगे थे, हालांकि सूरज अभी भी लाल था। उसने अनुमान लगाया कि वह बहुत शर्मीली होगी, शायद इसीलिए वह इतनी अचानक चली गई।

अगली सुबह, भोर होते ही उदय अपने हमेशा वाले स्थान पर लौट आया। वह थोड़ा चला, पर उसका मन नहीं लग रहा था। वह बेचैन था और उसका इंतज़ार कर रहा था। बहुत जल्द भीड़ आने लगेगी। वह जानता था कि तब तक वह वहाँ नहीं होगी। उसके पास इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। अचानक उसके हाथों के बाल खड़े हो गए, मानो आसपास कोई बड़ा खतरा मंडरा रहा हो। उदय ने इस पर ध्यान नहीं

दिया। वह आनंदित था। वह बहते पानी पर नाचती-नाचती हुई आई थी। वह किसी परी जैसी लग रही थी। छोटी सी लड़की नदी के किनारे पेड़ों और पत्थरों के बीच नाच रही थी, अपने नृत्य से ऐसे रिबन बना रही थी जो उस सफ़ेद, निर्मल क्षेत्र में रंग बिखेर रहे थे। उदय एकदम शांत खड़ा रहा और फिर धीरे से बैठ गया ताकि उसे परेशान न करे। वह थोड़ी देर ही नाची और उदय बस उसे देखता रहा। वह इतनी सुंदर थी, एक लहर से दूसरी लहर और एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर अपने पंजों के बल नाच रही थी। उसने कभी किसी इंसान को ऐसा सुंदर, अलौकिक नृत्य करते नहीं देखा था और न ही कल्पना की थी। और वह यहाँ थी, अपनी मनमोहक, लचीली चाल से उसे मंत्रमुग्ध कर रही थी।

यह सिलसिला एक हफ्ते तक चलता रहा और फिर एक दिन उदय थोड़ा हिला और उसने उसे देख लिया। वह एक छोटी सी चट्टान पर एकदम सीधी खड़ी हो गई, समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे। धीरे-धीरे उसने उदय की ओर ऐसे देखा जैसे चोरी करते हुए पकड़ी गई हो, फिर खुद को संभालते हुए वह बेफिक्री से चट्टान पर कूद गई और उदय के कुछ करने से पहले ही गायब हो गई। बेहद निराश होकर उदय वापस गया और बेचैनी से अगली सुबह का इंतजार करने लगा।

वह अगले दिन आई तो सही, पर नाची नहीं; वह छोटे-छोटे पत्थरों और लहरों पर धीरे-धीरे चलती रही और चुपके से उदय को अपनी आँखों के कोने से देखती रही। जब उनकी नज़रें मिलीं तो वह कांपती हुई सी मुस्कुराई और फिर तुरंत नज़रें हटा लीं। तीसरे दिन, वह उसके पास आई और उन्होंने बातें कीं। उदय को नहीं पता था कि उन्होंने क्या बातें कीं, और न ही उसे बाद में याद आया। लेकिन नतीजा यह हुआ कि वे तुरंत दोस्त बन गए। और प्रेमी भी। वे अपने नए प्यार में डूबे हुए पूरे दिन और कभी-कभी रातें भी बिताते थे। एक बार जब वे पेड़ों के नीचे एक-दूसरे की बाहों में लिपटे बैठे थे, तो उन्हें खरोंचने की आवाज़ सुनाई दी, मानो कोई जानवर पेड़ से रगड़ रहा हो या खरोंच रहा हो। उदय ने उस आवाज़ को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की, लेकिन वह जारी रही। प्रिशा जाने के लिए उठी, वह हर चीज़ से डरी हुई लग रही थी, जिससे उदय की सुरक्षात्मक भावनाएँ जागृत हो गईं। वह डर से लगभग कांप रही थी।

'मुझे अब जाना होगा, मैं यहाँ और नहीं रुक सकती,' उसने फुसफुसाते हुए कहा, उन आवाज़ों से परेशान होकर।

'नहीं, रुको,' उदय ने बेताब होकर कहा, 'तुम अभी नहीं जा सकतीं, अभी थोड़ा समय

बचा है। बस पाँच मिनट यहीं रुको, मैं इस भयानक आवाज़ को निकालने वाले को भगा दूँगा। तुम यहीं रुकोगी ना?' उसने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा। उसकी आँखों का रंग भूरे से गहरा काला होने लगा था। 'ठीक है,' उसने अनिच्छा से कहा। उदय ने उसे फिर चूमा और चला गया। थोड़ी देर में चीख-पुकार और रोंगटे खड़े कर देने वाली आवाज़ें सुनाई दीं, जो किसी भी इंसान का खून डर से जमा देने के लिए काफी थीं। हालाँकि, लड़की को कुछ नहीं हुआ—बल्कि उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान थी जिसे उसने बड़ी सावधानी से छिपा लिया, कहीं उदय समय से पहले वापस न आ जाए। थोड़ी देर में उदय वापस आ गया। उसने पास के पेड़ों से कुछ पत्ते लिए और खुद को पोंछा। उसके चेहरे और शरीर पर खून के छींटे थे। पत्ते नमी से भरे थे इसलिए उसे खून पोंछने के लिए पानी की ज़रूरत नहीं पड़ी।

'उदय,' प्रिशा लगभग चीख पड़ी, अगर उसके लिए ऐसा करना संभव होता, 'तुम्हारे ऊपर खून लगा है, क्या जानवर ने तुम्हें पकड़ लिया? क्या तुम्हें चोट लगी है? क्या हुआ?' वह लगभग रो पड़ी।

'कुछ नहीं, मेरी जान, बस एक भालू था,' उसने उसे फिर से अपनी बाहों में लेने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे पीछे धकेल दिया। 'भालू?' वह चीखी, 'तुमने भालू से लड़ाई की? क्या उसने तुम्हें चोट पहुँचाई या तुमने उसे भगा दिया?' उसकी आवाज़ में थोड़ी निराशा थी, लेकिन उदय ने इसे चिंता समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया। उसके लिए, पहाड़ी भालू को मारना एक आम बात थी। कोई भी उसके रास्ते में नहीं आ सकता था; वह शक्तिशाली, अजेय उदय था जो अपने शक्तिशाली हाथ के एक इशारे से किसी भी जानवर या राक्षस को मार सकता था। जब वह अपने जीवन में एकमात्र प्रिय स्त्री के साथ होता था, तो उसे परेशान करने की किसी को अनुमति नहीं थी। प्रिशा के साथ उसका प्रेम, प्रेम का सबसे पवित्र रूप था।

'हम कहाँ थे?' वह फिर से उसके करीब आने लगा, लेकिन उसने धीरे से उसे दूर धकेल दिया। 'उदय, अब सुबह हो गई है, मुझे जाना होगा।'

'थोड़ी देर और रुक जाओ,' उसने विनती की, लेकिन वह जाने की जल्दी में लग रही थी, मानो उसे तुरंत जाना हो। उदय उस पर ज़बरदस्ती नहीं करना चाहता था। अनिच्छा से ही सही, वह मान गया और वह जल्दी से चली गई। उदय भी अपने अस्थायी घर के लिए निकल पड़ा। जैसे ही वह कच्ची सड़क पर मुड़ा और दिखाई देना बंद हो गया, प्रिशा अपने छिपने की जगह से निकली और उस जगह की ओर दौड़ी

जहाँ उदय ने पहाड़ी भालू को मारा था। वार एकदम सटीक था, उदय एक कुशल योद्धा था और खून बहुत कम बहा था। प्रिशा बहुत खुश थी; वह बैठ गई और एक चिड़िया जैसी मधुर आवाज़ निकाली। फिर वह भालू के पास बैठ गई, बिना किसी मेहनत के उसका पेट फाड़ दिया और उसे खाने लगी। जल्द ही उसके पास ज़मीन पर दूसरे पक्षी भी आ गिरे। ज़मीन पर पहुँचते ही वे उसी की तरह पतले जीवों में बदल गए, उसके पास भालू के शव पर बैठ गए और कच्चे ताज़े भालू के मांस का आनंद लेने लगे। उदय के लोग उसके गायब होने और उसके उदास स्वभाव के आदी हो चुके थे, इसलिए जब वह किसी से बात नहीं करता था या कई रातों और कभी-कभी कई दिनों तक बाहर रहता था, तो किसी को कोई हैरानी नहीं हुई। लेकिन रूबी ने गौर किया। जब भी उदय उनके साथ छोटी सी कुटिया में बैठता, तो उसकी उदासी पहले जैसी गहरी नहीं लगती थी, बल्कि एक बार तो उसने उसे मुस्कुराते हुए भी देखा। रूबी चौंक गई। उदय का मुस्कुराना वाकई एक रहस्य था। उसे केवल दो ही चीजों से खुशी मिलती थी: एक तो प्रेम में पड़ना और दूसरा राक्षसों और जानवरों को मारना। राक्षसों का तो सवाल ही नहीं उठता था, क्योंकि यह गंगोत्री थी जहाँ कोई राक्षस घुसने की हिम्मत नहीं करता था। वह बिना किसी उकसावे के जानवरों को भी नहीं मारता था। वैसे भी, यहाँ लगभग हर जानवर और पक्षी लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची में था और उदय उनमें से किसी को भी नहीं मारता था। तो फिर आखिर बात क्या थी? रूबी सोचने लगी। उदय का प्रेम में पड़ना तो बेतुका था! इसके अलावा, यहाँ कोई लड़की भी नहीं थी, सिवाय कुछ पर्यटकों के जो एक-दो दिन में आते-जाते थे।

अब रूबी पूरी तरह सतर्क हो गई थी। उदय का इतना खुशमिजाज होना सामान्य नहीं था; इसलिए इस पर गौर करना ज़रूरी था। उसने उदय का पीछा करने के बारे में सोचा, लेकिन यह ठीक नहीं था। कोई और विकल्प न होने के कारण, उसे तेजस पर भरोसा करना पड़ा, जो ज़रूरत पड़ने पर सबसे तेज़ और चुपचाप काम करता था। इसके अलावा, अगर उदय ने तेजस को छुपकर देखते हुए पकड़ लिया, तो वह उसके सिर पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मार देगा और बात खत्म। 'मुझे पता है उदय भैया कहाँ जाते हैं,' तेजस ने अकड़कर कहा।

‘कहाँ?’ रूबी बहुत उत्सुक थी। उदय खुश तो था, पर रूबी को आभास हो रहा था कि कुछ गड़बड़ होने वाली है। ऐसा नहीं था कि उनके जीवन में हमेशा सब कुछ ठीक ही रहता था, पर इस बार कुछ अलग ही लग रहा था। पहले तो हर परिस्थिति में वे सब

मिलकर एक ही लक्ष्य की ओर काम करते थे, लेकिन इस बार उदय बेहद गुप्त तरीके से व्यवहार कर रहा था और इस बात से खुश भी था। 'वह गंगोत्री के ऊपरी हिस्से में जाता है, बैठता है और घंटों इधर-उधर देखता रहता है।'

'और क्या करता है? क्या तुमने उसे कभी किसी से बात करते देखा है?' तेजस ने असहमति में सिर हिलाया और फिर अपनी आँखें घुमाईं।

'तेजस, अब मेरी बात ध्यान से सुनो, यह जानना बहुत जरूरी है कि उदय वहां क्या करता है।'

'क्या आपको लगता है कि उसने राक्षसों से दोस्ती कर ली है?'

'तेजू, ये कैसे मुमकिन है? लेकिन कोई राक्षस उसे फँसा सकता है! तुम्हें ये करना है,' रूबी ने उसे अगली सुबह के लिए कुछ बातें याद करवा दीं। तेजस इतना चंचल लड़का था कि एक जगह पर ज़्यादा देर तक नहीं बैठ सकता था। लेकिन अब वो जिज्ञासा से भी भरा हुआ था। ये जगह उसे तंग कर रही थी क्योंकि यहाँ करने को कुछ नहीं था। तेजस एक रोमांचक ज़िंदगी का आदी था, जिसमें इधर-उधर भागना, शरीर को खींचकर दिखावा करना, शरारत करना और शायद एक-दो छोटे राक्षसों को मारना शामिल था। इतने दिनों की बोरियत के बाद, रूबी ने उसे ऐसा काम दिया था जिसमें कुछ रोमांच था और ज़ाहिर है रहस्य और जोखिम भी था—जोखिम ये था कि अगर उदय ने उसे पकड़ लिया तो उसकी खूब पिटाई होगी और रहस्य ये था कि अब तक किसी को नहीं पता था कि उदय क्या करता है या कहाँ जाता है।

अगली सुबह रूबी ने उसे बहुत जल्दी जगा दिया। दरअसल, अभी रात ही थी, लेकिन रूबी के हल्के से धक्के से ही तेजस उठ गया। उन्होंने उदय को थोड़ी देर पहले चलने दिया और फिर तेजस उनके पीछे-पीछे गया। रूबी ने उसे दो चॉकलेट बार दिए थे, क्योंकि किसी को नहीं पता होता कि उदय कब तक बाहर रहेगा। तेजस पैदल उदय के पीछे नहीं गया। ऐसा करने पर उसके पकड़े जाने का पूरा खतरा था। उदय की इंद्रियां हमेशा चौकस रहती थीं। तेजस उस इलाके में फैले ऊंचे पेड़ों की शाखाओं के ऊपर से उदय का पीछा करता था। अगर एक पेड़ दूसरे से दूर होता, तो वह अपने शरीर को रस्सी की तरह फैलाकर दूसरे पेड़ की ऊंची शाखाओं को पकड़ लेता था। तेजस अपने शरीर को फैलाने और सिकोड़ने में माहिर हो गया था। वह हमेशा अपने साथ पानी की बोतल रखता था क्योंकि पानी उसके शरीर को तरोताजा होने और अपने मूल आकार में वापस आने में मदद करता था। पेड़ों की चोटियों से उदय पर आसानी से नज़र रखने

के अलावा, तेजस को पूरे इलाके का 360 डिग्री का नज़ारा भी मिलता था। लेकिन आज का दिन अलग था। नदी किनारे एक बड़े पत्थर पर कोई पहले से ही उदय का इंतज़ार कर रहा था। उदय उसकी ओर तेज़ी से बढ़ रहा था। तेजस आखिरी पेड़ पर बैठ गया और उसकी पत्तियों के बीच से झाँकने लगा। उसने जो देखा, वह उसे हैरान और परेशान दोनों कर गया। उसका इंतज़ार कर रही लड़की साफ़ तौर पर एक लड़की थी। दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया और प्यार से चूमा और इतनी देर तक उसी स्थिति में रहे कि तेजस को ऐंठन होने लगी। लेकिन वह बहुत उत्सुक भी था। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसका गंभीर, भावहीन बड़ा भाई इतना रोमांटिक हो सकता है।

अचानक, वे पेड़ों के झुरमुट के पीछे चले गए और तेजस उन्हें देख नहीं पाया। अगर वह नीचे उतरता, तो वह पकड़ा जाता, और वह उदय के साथ यह जोखिम नहीं लेना चाहता था। यह बहुत उबाऊ और असहज था। तेजस लगभग डेढ़ घंटे तक उसी असहज स्थिति में बैठा रहा, लगातार आसपास देखता रहा। तेजस को इस तरह की सुंदरता को पहचानने की उतनी समझ नहीं थी, लेकिन उसकी याददाश्त बहुत अच्छी थी। वह इतना ऊब गया था कि उसके आसपास कुछ भी नहीं हो रहा था। उसे बस एक बहती नदी, कुछ जानवर चरते हुए और कुछ खास तरह के पक्षी उड़ते या इधर-उधर घूमते हुए दिखाई दे रहे थे। आखिरकार, उदय पेड़ों के झुरमुट से बाहर आया। लड़की उसके साथ नहीं थी। उदय की आँखें हमेशा की तरह काली हो गई थीं, जैसे वह शिकार पर निकला हो। तेजस घबरा गया। क्या उदय भैया ने उसे जासूसी करते हुए देख लिया था? नहीं, कुछ और ही बात थी। उदय ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। वह सीधे एक भालू की ओर चला गया जो एक पेड़ के तने से खुद को खुजला रहा था। उस विशाल भालू का उदय के सामने कोई चांस नहीं था। अपने पाश के एक जोरदार प्रहार से भालू की जान निकल गई और वह वहीं मृत पड़ा रहा। उदय ने शांति से अपना पाश साफ किया और पेड़ों के झुरमुट की ओर वापस चला गया। तेजस की धड़कनें धीरे-धीरे सामान्य होने लगीं। उसने अपनी जगह बदली और जासूसी जारी रखी। थोड़ी देर में उदय लड़की के साथ बाहर आया, उन्होंने फिर से चुंबन किया, फिर दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए, उदय अपने अस्थायी घर की ओर और लड़की जहाँ भी उसे जाना था। तेजस उदय के पीछे जाने से पहले कुछ समय के लिए पेड़ पर ही रुका रहा। तेजस को नहीं पता था कि उदय ने उस क्षेत्र में दूसरा भालू मारा था। तभी

उसने एक अजीब बात देखी। लड़की एक पेड़ के पीछे छिपकर उदय के एक कोने से मुड़ने का इंतजार कर रही थी, फिर वह सीधे भालू के शव की ओर दौड़ी। वह भालू के पास बैठ गई और एक चीख निकाली, एक हिमालयी पक्षी की मीठी लेकिन गहरी, मर्मस्पर्शी चीख। यह इतनी स्वाभाविक चीख थी कि किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया होगा। लेकिन बहुत जल्द लड़की जैसी कुछ और लड़कियां भी उसके साथ आ गईं। स्पष्ट था कि वे सब बहुत उत्साहित थे। एक पल भी बर्बाद किए बिना, वे भालू पर टूट पड़े, उसकी खाल और बालों को ऐसे फाड़ डाला जैसे वे कागज हों और मांस खाने और हड्डियों को चबाने लगे। तेजस उदय के बारे में भूल गया। वह एकदम स्थिर बैठा रहा और अपने सामने के खौफनाक दृश्य को देखता रहा। ये खूबसूरत लोग भालू को खा रहे थे! यह कैसे संभव था? गंगोत्री में तो कोई राक्षस नहीं थे। तेजस कुछ देर रुका, फिर तेजी से उसी रास्ते से वापस चला गया जिससे वह आया था।

घर पहुँचते ही वह सीधे रूबी के पास गया, जो मधु जी के साथ बैठी थी। तेजस चुपचाप मधु के जाने का इंतज़ार करता रहा, साफ़ तौर पर परेशान था। दोनों महिलाओं ने यह देखा। आख़िरकार रूबी ने कहा, 'तेजस, मधु जी सब जानती हैं, तुमने जो देखा है, हम दोनों को बता दो।' तेजस एक मिनट के लिए ही हिचकिचाया क्योंकि उसे मधु जी पर पूरा भरोसा था। उसके मुँह से शब्द तेज़ी से निकलते गए और उसने जल्दी से जो देखा था, वह सब बता दिया, साथ ही कुछ चुटीले कमेंट्स भी जोड़ दिए। महिलाओं ने उसे ध्यान से सुना। उसकी तरह वे भी जानती थीं कि गंगोत्री धरती पर सबसे सुरक्षित जगहों में से एक है। रूबी सोच रही थी: उदय एक सुंदर लड़की से मिलता है, दोनों को प्यार हो जाता है, उदय उन्हें परेशान करने वाले भालू को मार देता है, फिर लड़की और उसके साथी उदय की पीठ पीछे भालू को खा जाते हैं। उन्होंने जानवर को खुद क्यों नहीं मारा? उदय को फँसाकर उससे जानवर को क्यों मरवाया? वे राक्षस थे, इसमें कोई शक नहीं था, लेकिन किस तरह के राक्षस? हत्या करने का वास्तविक कार्य उन्होंने स्वयं नहीं किया, बल्कि उन्होंने किसी और से बड़ी चतुराई से यह कार्य करवाया।

रूबी के पास मामला अपने हाथ में लेने के अलावा कोई चारा नहीं था। दो दिन तक उसने उस लड़की का पीछा किया, लेकिन उदय की वजह से उसे पकड़ने का मौका नहीं मिला। हताश होकर उसने अपनी परेशानी मधु से साझा की। मधु उदय से लगभग कुछ भी करवा सकती थी, क्योंकि ऐशानी और अधीश के न होने पर उदय हमेशा रूबी

की ज़िम्मेदारी महसूस करता था। 'उदय बेटा, क्या तुम मुझे कल मंदिर ले जा सकते हो? मैं अकेले नहीं जा सकती। मेरे घुटने इन पथरीली और ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर चलने की इजाज़त नहीं देते।'

उदय स्वाभाविक रूप से जाना नहीं चाहता था; वह प्रिशा के साथ अपनी मुलाकात को मिस कर देता। 'जी आंटी, जब आप कहें,' उसने जवाब दिया।

'धन्यवाद बीटा, हम सुबह जल्दी जाएंगे क्योंकि तब भीड़ कम होगी। बाद में हमें लंबी लाइन में खड़ा होना पड़ सकता है।'

अगली सुबह जब वे चले गए, तो रूबी तुरंत विपरीत दिशा में चल पड़ी। उसे पता था कि उसे कहाँ जाना है। तेजस ने उसे पूरी जानकारी दे दी थी। वह जल्द ही उस जगह पहुँच गई, लेकिन अब वह धीरे-धीरे चल रही थी क्योंकि उसे नहीं पता था कि यह किस तरह का दानव है, क्या यह रूप बदलने वाला है या सचमुच कोई छोटी मादा दानव है। वह झाड़ियों के एक झुंड के पीछे छिप गई। रूबी अपनी खोज में इतनी मग्न थी कि वह अपने चारों ओर की सुंदरता पर ध्यान नहीं दे पा रही थी। उसने खुद को पहाड़ियों, पानी और पत्थरों के रंगों में छिपा लिया और एकदम शांत बैठी रही। उसे अपने परिवेश से अलग करना बहुत मुश्किल होता। जल्द ही वह लड़की नज़र आई और रूबी ने अपनी साँस रोक ली। अब वह समझ सकती थी कि उदय उस पर इतना मोहित क्यों था। वह अलौकिक थी, एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर बड़ी सहजता से नाच रही थी। उसने छोटी पायल पहनी हुई थी जिसमें छल्ले लगे थे। उसकी पायल की आवाज़ बहते पानी की कलकल के साथ मिलकर मदहोश कर देने वाला संगीत बना रही थी। कुछ चट्टानों पर अब भी चांदनी पड़ रही थी, जबकि दूसरी चट्टानों पर सफेद और चांदी की किरणें एक-दूसरे को काट रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो कोई परी बेफिक्री से नाच रही हो और खूब आनंद ले रही हो। यहां तक कि अप्सरा रूबी भी उसे निहारती रही।

वह अपने सम्मोहन से बाहर निकली। वह यहाँ इसके लिए नहीं आई थी। यह एक राक्षसी स्त्री थी जो उसके भोले-भाले भाई को बहकाने आई थी। हाँ, वह जानती थी कि उदय जब चाहे या जब ज़रूरत हो तो बहुत क्रूर हो सकता है, लेकिन दिल से वह एक सीधा-सादा, भोला-भाला इंसान था। उदय का फायदा कोई भी उठा सकता था, बशर्ते वह पहले उसकी परीक्षा ले ले। हालाँकि रूबी एक अप्सरा थी, लेकिन वह इतनी कुशल योद्धा थी कि छोटे राक्षसों का सामना कर सके। इस राक्षसी स्त्री का सामना

कर पाएगी या नहीं, यह अभी देखना बाकी था। वह हमेशा अपने कपड़ों की तहों में एक तेज़ धार वाला घुमावदार चाकू छिपाकर रखती थी। अब तक वह राक्षसी स्त्री नदी के किनारे की ओर नखरे करते हुए आने लगी थी, शायद उदय से मिलने के लिए। एक झटके में उसने लड़की को पीछे से गले से पकड़ लिया और अपना घुमावदार चाकू उसकी गर्दन पर रख दिया। लड़की चीखी, डर से काँप उठी और फिर दहशत से जम गई। 'तुम कौन हो और उदय से दोस्ती क्यों की है?' रूबी ने कर्कश स्वर में कहा, हालांकि उसकी आवाज़ में वो धमकी भरी झलक नहीं थी जो वो चाहती थी, फिर भी लड़की डर गई। कुछ देर तक वो डर के मारे बोल नहीं पाई। जब उसकी सांस वापस आई, तो उसे एहसास हुआ कि रूबी शायद उसकी जान बख्श दे। वो हांफते हुए बोली, 'प्लीज़, मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगी।' उसकी आवाज़ में कुछ ऐसा था जिससे रूबी को उस पर भरोसा हो गया। धीरे-धीरे उसने अपना हाथ नीचे किया, और चाकू को सावधानी से तैयार रखा। लड़की ने अपना हाथ अपनी गर्दन पर रखा और खांसने लगी।

धीरे-धीरे उसने बोलना शुरू किया, 'हम प्राचीन काल में पूजनीय पक्षी जरिता की संतान हैं। हम तब से विद्वान और शिक्षक रहे हैं। हमारे पिता महान संत मंडपाला थे, जिनकी कोई संतान नहीं थी, इसलिए उन्होंने एक विशाल पक्षी का रूप धारण किया और हमारी माता से विवाह किया। उनके कई बच्चे हुए। लेकिन बाद में उन्होंने हमारी माता को त्याग दिया। जरिता खंडवा वनों में छिपकर अपने बच्चों का पालन-पोषण करने लगीं। उनके कुछ बच्चे पथभ्रष्ट हो गए और राक्षसों से विवाह कर लिया। भूख लगने पर वे अपने रास्ते में आने वाले किसी भी जीव को मारकर खा जाते थे। लेकिन वे मूलतः अच्छे लोग थे। जल्द ही वे अपने दुराचारों से ऊब गए और शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते थे। उन्होंने दीर्घ तपस्या की और अंततः अपने लिए क्षमा प्राप्त की। लेकिन रक्त का स्वाद उनके मन में रह गया। उन्होंने फिर से वरदान मांगा कि वे रक्तपात की अपनी लालसा से दूर रहें और एक ऐसे पवित्र स्थान पर रहें जहाँ रक्तपात न हो और न ही वे अपनी भूख मिटाने के लिए किसी को मार सकें। हमें गंगोत्री के पास रहने की अनुमति दी गई ताकि हमारी संतानें फिर से पवित्र हो सकें।' अपनी परम पवित्रता के साथ, गंगोत्री हमें हमारे सभी पापों से मुक्त करने के लिए आश्वस्त थी। लेकिन जैसा कि कई वरदानों के साथ होता है, इसके साथ लगभग हमेशा कोई न कोई शर्त जुड़ी होती है। हम रक्त और कच्चे मांस की अपनी लालसा

पर काबू नहीं पा सके हैं। हम किसी को या किसी चीज को नहीं मारते, लेकिन कभी-कभी हम किसी और को अपने लिए हत्या करने के लिए उकसाते हैं ताकि हम ताजे रक्त और मांस के अपने लोभ को पूरा कर सकें। यहाँ शर्त यह है कि पुनः पवित्र होने के लिए, हमें इस प्रकार मारा जाना चाहिए कि हमारे रक्त की प्रत्येक बूंद बह जाए। इसके साथ ही, हमें एक ऐसे योद्धा द्वारा मारा जाना चाहिए जो भगवान राम की सेना में रहा हो।

'इसलिए उदय,' रूबी ने सोचा।

'हाँ,' प्रिशा ने दुखी स्वर में कहा। 'पर मैं उससे सचमुच प्यार करती हूँ, बस जब मैं उसे छूती हूँ, तो मुझे उसके शरीर और खून की याद आ जाती है और मैं खुद को रोक नहीं पाती। मैं यह भी जानती हूँ कि जब कोई मुझे उसी तरह मार डालेगा, तभी मुझे निर्वाण प्राप्त होगा। तब मैं इस भयानक अभिशाप से मुक्त हो जाऊँगी।' उसने हाथ जोड़कर विनती की, 'कृपया मेरी और हम सबकी मोक्ष प्राप्ति में सहायता करें।'

रूबी धीरे-धीरे उस लड़की की कहानी पर यकीन करने लगी थी। उसे गुरुकुल में इतिहास की कक्षाओं में से एक में जरिता नाम के एक महान पक्षी के बारे में कुछ धुंधला सा याद था।

'देखते हैं मैं लोगों को आपकी मोक्ष प्राप्ति में मदद करने के लिए मना पाता हूँ या नहीं। आप जानते हैं कि इसके लिए काफी इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है?'

लड़की मान गई और उसने अपना सिर नीचे झुका लिया। रूबी ने आह भरी, 'कल सुबह जल्दी अपने लोगों के साथ यहाँ आ जाना। हम देखेंगे कि तुम्हारी मदद करना संभव है या नहीं।'

रूबी घर चली गई। मधु बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रही थी। रूबी उसके पास बैठ गई और उसे सब कुछ बता दिया। उसने मधु की तरफ चिंता से देखा। 'उदय का दिल टूट जाएगा, उसे कौन बताएगा?'

मधु भी चिंतित लग रही थी। रूबी ने अपने माता-पिता को इसमें शामिल नहीं किया था क्योंकि मधु एक अभिभावक की भूमिका निभा रही थी। किसी को तो उदय को बताना ही था। वह उन्हें मारने के लिए सहमत होगा या नहीं, यह प्रिशा के प्रति उसकी भावनाओं पर निर्भर करता था। मधु ने मन बना लिया था।

उदय शाम को मुस्कुराते हुए लौटा। उसने मधु का अभिवादन किया और मधु ने भी सिर हिलाकर जवाब दिया। रूबी ने पहले ही सुनिश्चित कर लिया था कि आसपास

कोई न हो और उन्हें पूरी निजता मिले। मधु सीधे मुद्दे पर आई। उसने कोई लाग-लपेट नहीं की। उदय ध्यान से सिर झुकाए सुनता रहा। उसने एक बार भी अपना सिर या आँखें उठाकर मधु की ओर अविश्वास भरी नजरों से नहीं देखा।

'बेटा, किसी दूसरे जीव को मोक्ष दिलाने में मदद करना मानव जाति की सबसे बड़ी सेवा है। भगवान कई तरह से हमारी परीक्षा लेते हैं, उनके कुछ तरीके इतने क्रूर और हृदयविदारक होते हैं कि उन्हें निभाना असंभव लगता है। तुम भगवान राम की सेना के योद्धा हो। तुम मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक खेलों के बारे में सब जानते हो। तुम जानते हो कि तुम्हारा भाग्य सीधा है। राक्षसों का वध करो। अगर इस प्रक्रिया में कुछ राक्षस मोक्ष प्राप्त कर लें, तो यह और भी अच्छा होगा।' मधु की कहानी खत्म होने के काफी देर बाद तक उदय उसी स्थिति में बैठा रहा। मधु उसके साथ बैठी, उसकी पीड़ा और मौन में भागीदार हुई। अंत में उदय उठा, अपना पाश उठाया और बाहर जाने लगा। वह मधु के पैर छूने के लिए झुका। सीधा होते ही उनकी आँखें मिलीं। वे बिल्कुल काली पड़ गई थीं। मधु जानती थी कि क्या होने वाला है। वह दुखी भी थी और गर्व भी; यही वह कहानी थी जिससे किंवदंतियाँ बनती थीं। वह अपने प्रेम का बलिदान देने जा रहा था। उदय अगली सुबह लौटा, उसके व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया था। वह हमेशा की तरह कम बोलने वाला था, फर्क सिर्फ इतना था कि अब उसके चेहरे पर मुस्कान नहीं थी और अगर कोई उसे जानता होता तो उसने गौर किया होता कि वह बार-बार अपना पाश धो रहा था। सबको पता था कि जो किया गया वह सही था, तो फिर उन्हें ऐसा पछतावा क्यों हो रहा था मानो उन्होंने कोई गुनाह कर दिया हो? उदय ने उन्हें बताया कि वह कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा है। वे समझ गए और तुरंत मान गए, हालांकि उन्हें अब भी उसके पाश ले जाने को लेकर थोड़ी हिचक थी।

उदय गंगोत्री में इधर-उधर भटक रहा था। उसका दिमाग बिल्कुल खाली था। सबसे दुखद बात यह थी कि उसने उसकी कही बात पर यकीन कर लिया था कि वह उससे प्यार करती है। उसने उदय से विनती की थी कि वह उसे इस तरह मारे कि उसका सारा खून बह जाए। उसने अपने साथियों को भी उसी तरह मारने की गुहार लगाई थी। जब भी यह दृश्य उसकी आँखों के सामने आता, उसके रोंगटे खड़े हो जाते। तभी उदय की मुलाकात देवनाथ से हुई, जो उनकी तलाश में आया था। अपनी निराशा में उसने ध्यान नहीं दिया कि देवनाथ छोटी चाबियों को अलग-अलग जगहों पर लगाने की

कोशिश कर रहा था। जब उसने देवनाथ को यह अजीब हरकत करते देखा, तो उसे लगा कि यह कोई दूसरा राक्षस है।

अगले दिन वे बस से ऋषिकेश के लिए रवाना हुए। वहाँ से उन्होंने हरिद्वार के लिए दूसरी बस ली और अंत में टैक्सी से घर पहुँचे। मधु का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसने अपना सिर जयंत के कंधों पर रख दिया। जयंत ने अपना दाहिना हाथ उसके चारों ओर लपेटकर उसके कंधों को धीरे से दबाया। वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी माँ ने क्या खोया है और वह क्या सोच रही है।

घर को पता चल गया था कि वे लौट आए हैं। अगर कोई कुत्ता होता, तो वह दौड़कर उनके पास आता और खूब उछल-कूद करता। लेकिन वह ज़मीन से बंधा हुआ था; वह बस अपनी दीवारों को पीट सकता था और दर्द भरी आवाज़ें निकाल सकता था। मधु दौड़कर उसके पास गई और बरामदे की दीवार को गले लगा लिया—जो भी उसका बचा हुआ हिस्सा था। घर कुछ देर तक दर्द भरी आवाज़ में रोता रहा, मधु भी उसके साथ रोती रही। रूबी और उसके माता-पिता चुपचाप इंतज़ार करते रहे। वे जानते थे कि वह किस दर्द से गुज़र रही है। लड़के घर का जायज़ा लेने के लिए चारों ओर घूमे। कुछ मिनट बाद, देवनाथ ने मधु से जाने की इजाज़त मांगी। उसने मधु के पैर छुए और चला गया।

बद्रीनाथ ने धीरे से कहा, 'भाभी, कृपया एक-दो दिन हमारे साथ रहिए। हम कल सुबह से मरम्मत का काम शुरू कर देंगे।'

‘भैया, अब जब हम घर लौट आए हैं, तो मैं इसे छोड़कर नहीं जा सकती,’ मधु चुपचाप रो रही थी। रूबी की मां अजिता ने मधु को गले लगाया और कहा, ‘हम समझते हैं भाभी, यह सिर्फ एक-दो दिन की बात है। जैसे ही हालात थोड़े बहुत सुधरेंगे, हम खुद आपको यहां ले आएंगे,’ उन्होंने मधु को दिलासा दिया।

उन्हें यकीन नहीं था कि उनका अपना घर रहने लायक स्थिति में है या राक्षसों ने उस पर हमला कर दिया है। अनिच्छा से,

मधु मान गई। शुक्र है, रूबी के घर पर राक्षसों का हमला नहीं हुआ था।

अगले दिन से मधु के घर में हलचल मच गई। गुरुजी ने गुरुकुल से दो इंजीनियर भेजे, जिन्होंने बहुत मदद की। मधु नहीं चाहती थी कि उनकी बदकिस्मती की चर्चा पूरे शहर में हो। इससे कई असहज सवाल उठ सकते थे। गुरुकुल के इंजीनियरों का काम

जादुई था। एक हफ्ते में ही घर बिल्कुल नया जैसा हो गया।

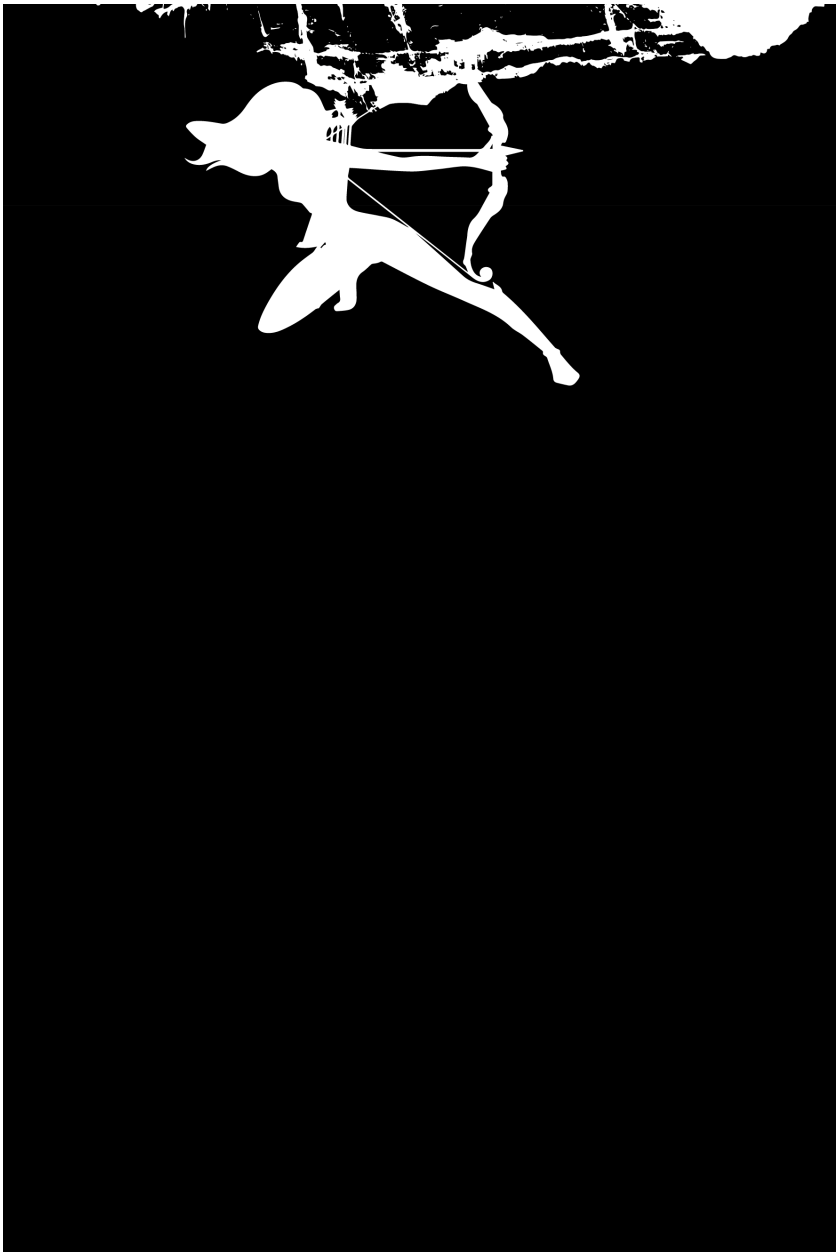

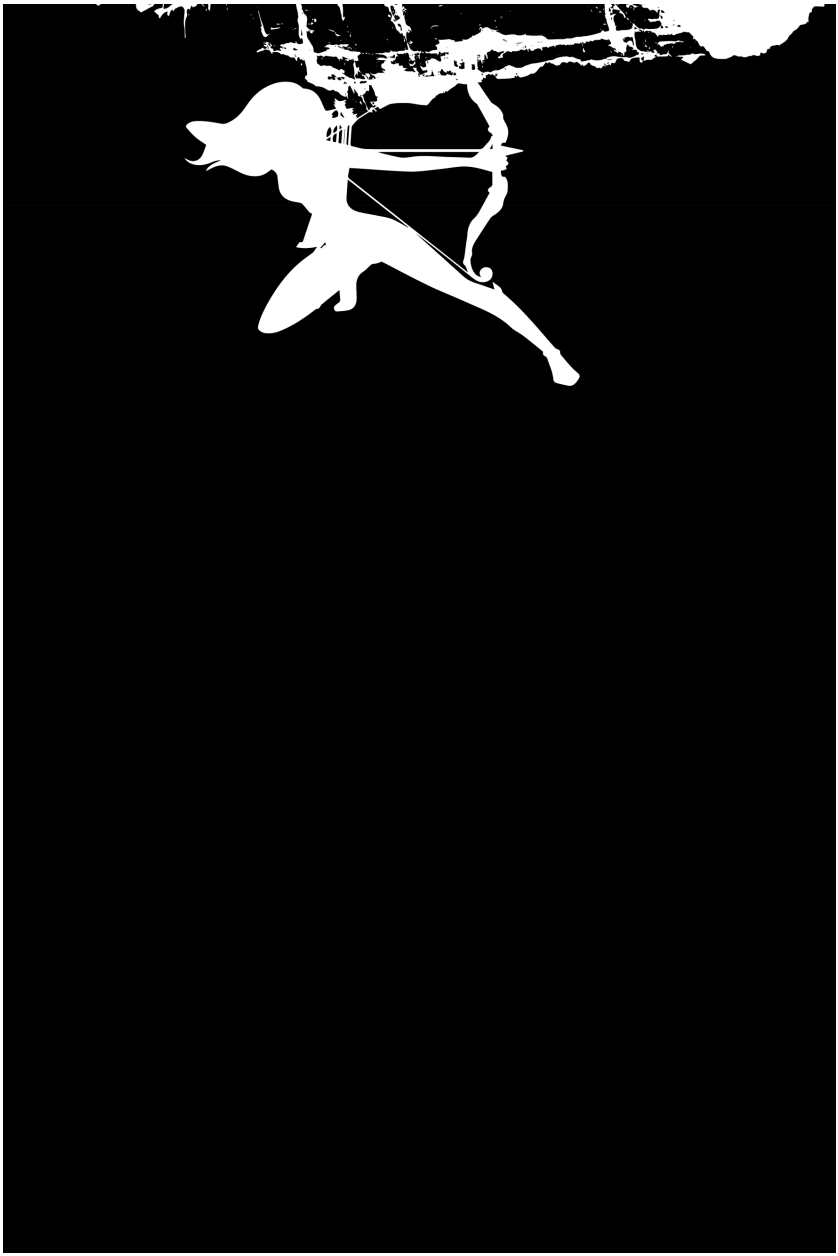

राक्षसी मूल्य

मैं

महज दो महीनों में, ऐनार गुरुकुल का अभिन्न अंग बन गए थे। उन्होंने अकेले ही दस से अधिक लोगों का काम संभाला और गुरुकुल का पुनर्निर्माण और पुनरुद्धार किया, जबकि वे एक ही समय में दो से अधिक स्थानों पर मौजूद थे। गुरुकुल में बचे हुए कुछ लोग इसे इसकी पुरानी शान वापस दिलाने के लिए दिन-रात काम कर रहे थे। उन्हें इस बात को स्वीकार करना पड़ा कि एक इतने अलग, लेकिन बेहद आकर्षक व्यक्ति का उनके साथ इतना सहजता से घुलना-मिलना और गुरुकुल को अपना मानना कितना अद्भुत था। वे उनकी भाषा हिंदी भी धाराप्रवाह बोलते थे, और बीच-बीच में कुछ शुद्ध संस्कृत शब्द भी बोल देते थे। ऐसा तब होता है जब आप जीवन में देर से कोई नई भाषा सीखते हैं और बातचीत करने के लिए आसपास ज्यादा लोग नहीं होते। गुरुजी को पता था कि ऐनार कौन है, वह कहाँ है और वह उनके पास कैसे आएगा। ऐनार एक योद्धा होने के अलावा,

गुरुजी को अपनी कुछ व्यक्तिगत विशेषताओं या अतिरिक्त शक्तियों के बारे में भी जानकारी थी। इनमें से एक विशेषता यह थी कि वे किसी भी रूप में छिपे हुए राक्षस को पहचान सकते थे, चाहे वह मनुष्य हो, जानवर हो या निर्जीव वस्तु। यह गुरुकुल और उसके निवासियों के लिए एक बहुत बड़ा लाभ था, भले ही उन्हें इसका कोई अंदाजा न हो।

स्पष्ट कारणों से गुरुकुल के जीर्णोद्धार के दौरान केवल कुछ वरिष्ठ छात्रों को ही अंदर आने की अनुमति थी। हालांकि तेजस वरिष्ठ छात्र नहीं था, फिर भी वह किसी तरह अंदर आ गया, शायद इसलिए कि वह अंदर से ज़्यादा बाहर परेशानी पैदा करता। अधिश और ऐशानी, ऐनार के अच्छे दोस्त बन गए थे। कैलाश से ही उनकी दोस्ती शुरू हो गई थी और अब उनकी दोस्ती दिन-ब-दिन गहरी होती जा रही थी। उदय अब भी ऐनार से थोड़ा सावधान रहता था, लेकिन यह उदय का स्वभाव था। वह एक-दो सच्चे दोस्तों के अलावा किसी पर भरोसा नहीं करता था। ऐनार और रूबी के बीच ज़्यादा मेलजोल नहीं था। ऐनार बलवान और आकर्षक था; रूबी बुद्धिमान और बेहद खूबसूरत थी। दोनों युवा थे और एक खूबसूरत जोड़ी बन सकते थे। रूबी किसी निजी समस्या में मग्न सी लग रही थी। ऐशानी ने यह देखा और किसी उपयुक्त अवसर पर उससे पूछने का सोचा, लेकिन आजकल उसे रूबी के साथ अकेले रहने का मौका ही नहीं मिलता था। गुरुकुल का पुनर्निर्माण आश्चर्यजनक रूप से तेज़ी से चल रहा था, और हर कोई अपनी क्षमता के अनुसार अपना योगदान दे रहा था। तेजस के साथ दोस्ती करने के

लिए आइनार को कोई विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं पड़ी, क्योंकि अपने हंसमुख स्वभाव के कारण वह तुरंत ही सभी से दोस्ती कर लेता था।

शहर में एक सामुदायिक केंद्र था जहाँ सभी लोग जाना पसंद करते थे। वहाँ दुकानें, दो सिनेमा हॉल और एक थिएटर था जहाँ नियमित अंतराल पर नाटक दिखाए जाते थे। बच्चों के खेलने का एक खेल का मैदान भी था। कुल मिलाकर, लोगों के लिए अपना खाली समय बिताने के लिए एक अच्छी जगह थी। और राक्षसों के लिए भी एक उपजाऊ जगह, जो लगातार यहाँ आने की कोशिश करते रहते थे। उन्हें शिकार करने, चिढ़ाने, मारने और खाने के लिए इतने विविध प्रकार के इंसान कहाँ से मिलते?

गुरुकुल के विद्यार्थी भी वहाँ जाते थे क्योंकि वहाँ लगभग सभी प्रतिभाओं के लिए शिक्षा उपलब्ध थी। इसके अलावा, यह एक सुरक्षित स्थान भी माना जाता था। अगर यहाँ राक्षस भी होते, तो वे मनुष्यों के साथ इतने अच्छे से घुलमिल गए थे कि उन्होंने करुणा, दया, देखभाल और साझा करने जैसे गुण आत्मसात कर लिए थे। इन सबने उन्हें लगभग हानिरहित बना दिया था। यहीं पर वे अपने पड़ोसियों और अन्य नागरिकों से मिलते और शिष्टाचार का आदान-प्रदान करते थे। पहले उनके माता-पिता इन सामाजिक शिष्टाचारों में भाग लेते थे, लेकिन अब युवा भी उनका अनुसरण करने लगे थे। इससे वे ज़मीन से जुड़े रहते थे, ऐसा कह सकते हैं।

बाकी सब लोगों की तरह, अधीश और उसके साथी भी जब भी समय मिलता, सामुदायिक केंद्र जाया करते थे। इस बार ऐनार भी उनके साथ था। वे किसी बात पर हंस रहे थे कि अचानक ऐनार अकड़ गया। यह बात सिर्फ अधीश ने ही देखी। कैलाश में बिताए दिनों से ही अधीश और ऐनार के बीच एक खास रिश्ता बन गया था। उसने ऐनार की बेचैनी को भांप लिया और तुरंत समझ गया कि इसका संबंध किसी राक्षस की मौजूदगी से है। लेकिन यहाँ राक्षस कैसे हो सकता है? यह तो एक पवित्र स्थान था और उनके पर्यवेक्षक नियमित रूप से राक्षसों की जांच करते थे। इसलिए जैसे ही उसे मौका मिला, उसने ऐनार से बात की।

‘एइनर, चिंता करना छोड़ दो, यहाँ कोई भूत-प्रेत नहीं हैं। यह उन कुछ चुनिंदा जगहों में से एक है जहाँ हम अपनी मर्जी से आ-जा सकते हैं क्योंकि यह जगह साफ-सुथरी है।’

‘अधीश, मैं राक्षसों को किसी भी रूप में देख सकता हूँ, चाहे वे किसी भी भेष में हों। मुझे क्षमा करें, लेकिन आप थोड़े उदासीन हो गए हैं, इसलिए स्पष्ट बात को भी नहीं देख पा रहे हैं।’

अगर कोई और होता तो अधीश को बुरा लगता, लेकिन ये तो ऐनार था, जो इतने कम समय में उसका इतना अच्छा दोस्त बन गया था। शायद किस्मत का कोई खेल था, उसे पता नहीं था। वैसे भी, ऐनार कभी भी सिर्फ बोलने के लिए नहीं बोलता था और उसकी बातें कभी भी हल्के में नहीं होती थीं। शायद उससे थोड़ी सी गलती हो गई हो, अधीश ने मन ही मन सोचा। खैर, वो अब तुरंत अपनी गलती सुधार लेगा।

ऐनार ने आगे कहा, 'वह प्रतिष्ठित दिखने वाला बूढ़ा आदमी और उसकी पत्नी सदियों से राक्षस रहे हैं।'

अधीश धीरे से मुड़ा। नहीं, यह मुमकिन नहीं था! वे मेहता अंकल और उनकी पत्नी मृणालिनी आंटी थे। अंकल बहुत पहले सिविल सेवा से सेवानिवृत्त हो चुके थे और आंटी एक बेहद कुशल और सभ्य गृहिणी थीं। वे अपने समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, हमेशा आगे बढ़कर नेतृत्व करते थे और अपने कस्बे की हर गतिविधि में, चाहे अच्छी हो या बुरी, हिस्सा लेते थे। वे इस शांत कस्बे में सदियों से रह रहे थे। उनके बड़े बच्चे और पोते-पोतियां समय-समय पर उनसे मिलने आते थे। वे पल मेहता परिवार के लिए वाकई खुशी के पल होते थे। पारिवारिक सैर-सपाटे, पिकनिक और पार्टियां होती थीं जिनमें लगभग आधे कस्बे के लोग आमंत्रित होते थे। एक पल के लिए अधीश संदेह से कांप उठा। यह मुमकिन नहीं था। शायद ऐनार को गलत संकेत मिले हों या उसने उन्हें गलत समझा हो। लेकिन ऐनार कभी गलती नहीं करता, उसने उदास मन से सोचा। वह इतना दुखी लग रहा था कि स्थिति की गंभीरता के बावजूद, ऐनार ने पल भर के लिए मुस्कुरा दिया। लेकिन वह तुरंत गंभीर हो गया।

‘खतरा मेहता परिवार के वरिष्ठ सदस्यों से नहीं, बल्कि उनके पोते-पोतियों से है। शायद इसीलिए आप लोगों को उन पर शक नहीं हुआ।’

‘तुम सही कह रहे हो, ऐनार। मैंने देखा था कि उनके पोतों में से एक मेरी तरफ देखने से बच रहा था। मुझे लगा कि यह बस यूं ही हो गया होगा और मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। हमें इसकी तुरंत जांच करनी होगी।’ वे कुछ और समय सामुदायिक केंद्र में रुके रहे। अधीश अब खेलों और मौज-मस्ती का आनंद नहीं ले पा रहा था। उन्होंने देखा कि ऐशानी, रूबी और तेजस कई निरर्थक गतिविधियों में भाग ले रहे थे और खूब मजे कर रहे थे, जबकि उदय एक कोने में अकेला उदास बैठा था। कुछ देर बाद, वे सब वापस चले गए, बाकी लोग गुरुकुल और अधीश और ऐशानी अधीश के घर। रास्ते में, अधीश ने ऐशानी से कहा, ‘ऐश, गुरुजी ने मुझे उनसे मिलने के लिए

कहा था। मैं अंदर नहीं जाऊंगा; कहीं मैं वहां फंस न जाऊं। तुम जाओ; मैं एक घंटे में वापस आ जाऊंगा।'

'क्या बात है, अधीश? तुम कम्युनिटी सेंटर में भी अपने सामान्य स्वभाव से अलग लग रहे थे। क्या तुमने किसी को या किसी चीज़ को देखा?' ऐशानी ने उसके हाथ अपने हाथों में लिए और चिंता से उसकी ओर देखा।

उसने आह भरी। उसने ऐशानी से कभी कुछ नहीं छिपाया था, और न ही अब छिपाने वाला था। लेकिन वह अंदाजे से कोई बात नहीं कहना चाहता था। 'नहीं प्यारी, सच में नहीं, लेकिन तुम्हें कुछ बताने से पहले मुझे गुरुजी से इस बारे में बात करनी होगी,' उसने उसके बालों पर हाथ फेरा। 'चिंता मत करो, शायद कुछ गंभीर न हो।'

'ठीक है,' ऐशानी ने संशय भरे स्वर में कहा, 'अपना ख्याल रखना और जल्दी आना।'

'मैं जाऊंगा,' उसने मुस्कुराते हुए कहा और गुरुकुल के लिए रवाना हो गया।

ऐशानी काफी देर तक उसे देखती रही।

'भाभी, जल्दी आइए, देर हो रही है, भैया ठीक हो जाएंगे,' देवनाथ ने धीरे से कहा। कैलाश के बाद, अधिश ने देवनाथ को ऐशानी के साथ ज़्यादातर समय बिताने का ज़िम्मा सौंपा था। शुरुआत में देवनाथ को यह विचार ज़्यादा पसंद नहीं आया, लेकिन ऐशानी के साथ रहने और उसके साथ काम करने से उसे उसकी अपार शक्तियों का आभास हुआ और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उसकी हर कीमत पर रक्षा करनी होगी।

जब अधीश गुरुजी की कुटिया पर पहुँचा, तब गुरुजी ध्यान में लीन थे। वह जानता था कि गुरुजी शाम के ध्यान से कब उठेंगे, इसलिए वह बस इंतज़ार करता रहा। वह मनोहर की तरह ही गुरुजी की कुटिया में धीरे-धीरे टहलने लगा। उसने मनोहर के बारे में सोचना बंद कर दिया। वह मामला अभी भी इतना संवेदनशील था कि उस पर गहराई से विचार करना उचित नहीं था। राक्षसों से हुए उनके अंतिम संघर्ष में कई करीबी दोस्त और सहकर्मी मारे गए थे; उन्हें अभी भी इस सदमे से उबरना बाकी था। मनोहर गुरुकुल के एक सम्मानित और प्रतिष्ठित सदस्य थे। किसी को नहीं पता था कि उनके साथ क्या हुआ या वे कहाँ हैं, लेकिन सभी का अनुमान था कि उन्हें सूक्ष्म राक्षसों ने मार डाला होगा। गुरुजी की कुटिया के बाहर पेड़-पौधों की देखभाल कोई कर रहा था, यह बात साफ-सफाई और करीने से सजी क्यारियों से ज़ाहिर थी जिनमें स्वस्थ पौधे उग रहे थे। लेकिन मनोहर की कलात्मकता गायब थी। शायद गुरुजी ने

खुद ही अपने हाथों के इशारे से ऐसा किया हो; उसने मन ही मन मुस्कुराते हुए सोचा, अगर गुरुजी ने ऐसा सोचा हो। आखिरकार, आधे घंटे बाद गुरुजी अपनी कुटिया से बाहर आए। उन्होंने अधीश को बिना किसी हैरानी के देखा। अधीश यह भी जानता था कि गुरुजी को पता है कि वह वहाँ क्यों आया है। गुरुजी ने उसे कुटिया के अंदर आने का इशारा किया। वह अंदर गया और ज़मीन पर बिछी सूती चटाई पर बैठ गया। गुरुजी अधीश के बोलने का इंतज़ार करने लगे। "ऐनार ने बताया है कि मेहता चाचा और उनका परिवार राक्षस हैं, हालाँकि वे सौम्य प्रकार के हैं। वर्षों तक मनुष्यों के साथ रहने से वे लगभग मनुष्य जैसे ही हो गए हैं, हालाँकि राक्षसी अंश कभी दूर नहीं हो सकता। मेहता परिवार समाज के प्रमुख स्तंभ रहे हैं और कस्बे की सभी गतिविधियों में भाग लेते रहे हैं। अब हम क्या करें, गुरुजी?" उसने उदास स्वर में पूछा।

'कुछ नहीं अधीश, हम कुछ नहीं करते, कम से कम यहाँ तो नहीं,' अधीश ने तेज़ी से ऊपर देखा। तो गुरुजी के पास इन राक्षसों का सफाया करने की योजना थी। वे राक्षस थे, इसलिए वे हानिरहित नहीं हो सकते, उसने मन ही मन सोचा। वह मेहता के दो पोतों अतुल और करण से मित्रवत था, जो लगभग उसकी ही उम्र के थे। वह उनके साथ एक हाइकिंग ट्रिप पर गया था और उसे बहुत मज़ा भी आया था। उसने अपना सिर हिलाया। अतुल और करण राक्षस थे? अधीश ने गुरुजी की ओर विनती भरी नज़रों से देखा, जिन्होंने उसे भावहीनता से देखा। 'मृणालिनी मेहता चाहती हैं कि उनके पोते जानें कि वे कौन हैं। वह चाहती हैं कि वे मनुष्य के रूप में रहें, लेकिन अपनी जड़ों से भी अवगत रहें। राक्षस महान विद्वान रहे हैं और उनमें महान शक्ति और वीरता होती है। श्रीमती मेहता चाहती हैं कि वे इन्हीं गुणों से अवगत हों। वह जो भूल जाती हैं या याद नहीं रखना चाहतीं, वह यह है कि इन अच्छे गुणों के साथ-साथ राक्षसों का सबसे प्रमुख गुण भी होता है, वह है कामवासना: हर उस चीज़ की कामवासना जो बुरी और हानिकारक है।' अच्छे गुणों को जगाने से बुरे गुण भी जागृत हो जाते हैं। मेहता परिवार ने इन दोनों लड़कों की दीक्षा शुरू कर दी है। शुरुआत में वे असमंजस में थे, लेकिन अब उन्हें उन शक्तियों का आनंद आने लगा है जो उन्हें कुछ और दीक्षा सत्रों के बाद प्राप्त होंगी। गुरुजी ने सरल शब्दों में कहा, 'तभी हम हस्तक्षेप करेंगे और बुराई को जड़ से खत्म कर देंगे।'

अधीश ने थोड़ा उदास होकर सिर हिलाया। उसके मन में एक योजना बन ही रही थी कि गुरुजी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'एक और बात, अधीश...'

‘जी जी, गुरुजी?’

'आप पूरी कार्रवाई की योजना बनाएंगे, लेकिन वास्तविक क्रियान्वयन आइनार द्वारा किया जाएगा।'

'जी गुरुजी,' अधीश ने तुरंत सहमति दे दी, हालांकि वह थोड़ा असमंजस में था। व्यक्तिगत रूप से, वह हमेशा आइनार के साथ काम करने में प्रसन्न रहता था, लेकिन यह निर्णय थोड़ा रहस्यमय था।

‘ऐनार हमारे गुरुकुल में एक तरह से अतिथि तो हैं ही, साथ ही हमारे शिष्य और आपके मित्र भी हैं। उनकी हर परीक्षा ली गई है और वे हर परीक्षा में सफल रहे हैं। ऐनार जैसे लोग शांत नहीं बैठ सकते, उन्हें हर समय सक्रिय रहना पड़ता है, यही उनका विश्राम है। इसी कारण वे हिमालय आए और उन्होंने बहुत कुछ सीखा। हम उनके बहुत ऋणी हैं। उन्होंने हमारे लिए जो किया है और जो करेंगे, वह मानव इतिहास में अभूतपूर्व होगा। वे मृत्यु के बाद भी देते रहेंगे। हम उन्हें केवल उनकी पसंद की चीजें देकर ही उनका आभार व्यक्त कर सकते हैं। सबसे खतरनाक और विषैले राक्षसों का वध केवल ऐशानी या आप और ऐशानी मिलकर ही कर सकते हैं। ऐनार के पास ज्यादा समय नहीं है। उन्हें इस थोड़े समय में यथासंभव अधिक से अधिक राक्षसों का नाश करना होगा। यही उनका भाग्य है, और हमें इसे पूरा करना है।’

‘जी हां, बिल्कुल गुरुजी,’ अधीश ने तुरंत सहमति जताई, हालांकि अब वह और भी ज्यादा उलझन में था, ‘गुरुजी, मुझे समझ नहीं आया। क्या ऐनार के पास हमारे साथ कम समय बचा है, या पृथ्वी पर उसका समय कम हो रहा है?’

‘सब कुछ भगवान के हाथ में है, अधीश। चाहे कुछ भी हो जाए, वह हमें छोड़कर चले जाएंगे,’ गुरुजी का लहजा अस्पष्ट और रहस्यमय था। अधीश जानता था कि उसे गुरुजी से अब और कोई रहस्योद्घाटन नहीं मिलेगा, लेकिन उसके मन और हृदय में खतरे की घंटी बजने लगी थी।

‘अधीश,’ गुरुजी किसी बात पर विचार करते हुए प्रतीत हुए। ‘जी गुरुजी?’ उसने पीछे मुड़कर पूछा।

कभी-कभी इन संकर राक्षसों में मानवीय गुण इतने प्रबल हो जाते हैं कि उनका डीएनए ही बदल जाता है। ऐसे में हम उन राक्षसों को नष्ट नहीं करते, बल्कि उन्हें अपने संरक्षण में लेकर उच्चतर ध्यान के लिए भेज देते हैं। उनके लिए एक अलग इकाई है जहाँ वे विशेष कक्षाओं में भाग लेते हैं ताकि वे मनुष्यों के साथ सहजता से

घुलमिल सकें।' अधीश चौंक गया। उसके मन में हमेशा यही विचार रहता था कि राक्षस कभी नहीं बदलते, चाहे कुछ भी हो जाए। वे अपना रूप बदल सकते हैं, लेकिन कभी नहीं बदलते। और यहाँ गुरुजी उन्हें आश्रय देने की बात कर रहे थे! अधीश के चौंके हुए चेहरे को देखकर गुरुजी मुस्कुराए, 'वह असीम दयालु हैं,' गुरुजी ने आकाश की ओर देखा। 'वह हमें बनाते हैं, हमें स्वतंत्र इच्छाशक्ति देते हैं और फिर हमें सही मार्ग और सत्य का अनुसरण करने का अवसर देते हैं।' अधीश ने सिर हिलाया, गुरुजी के चरण छुए और घर के लिए निकल गया। अगले दिन, अधीश और ऐनार अपनी रणनीति बनाने के लिए साथ बैठे। वे फिर से सामुदायिक केंद्र गए। छुट्टियों का मौसम था, और विभिन्न समूहों द्वारा बच्चों और बड़ों दोनों के लिए बाहरी यात्राओं की योजना बनाई गई थी। वे चुपके से इस बात पर नज़र रखते थे कि अतुल और करण किन गतिविधियों में हिस्सा लेंगे। उम्मीद के मुताबिक, मेहता परिवार के दोनों पोते अपने गाँव और कस्बे के आसपास की पहाड़ियों और जंगलों में ट्रेकिंग के लिए तैयार हो गए। अधीश और ऐनार ने भी ऐसा ही किया। कुल मिलाकर बारह लड़के और लड़के ट्रेकिंग के लिए जा रहे थे। अधीश ने सोचा कि मेहता परिवार के बड़े सदस्य भी ट्रेक में शामिल होने वाले थे, शायद उन्हें अपने असली स्वरूप को पहचानने और अपनी नियति को खोजने में मार्गदर्शन करने के लिए।

उन्हें अगली सुबह जल्दी निकलना था। अधीश और ऐनार दोनों ही कुशल पर्वतारोही थे; उनके पेशे ने उन्हें काफी कुछ सिखा दिया था। दोनों जानते थे कि इस यात्रा में कुछ न कुछ घटित होगा, इसलिए उन्हें हर समय सतर्क रहना होगा।

दोनों लड़के स्पष्ट रूप से अनुभवहीन और चिंतित थे। एक ओर तो वे हत्या नहीं करना चाहते थे, दूसरी ओर वे हत्या का अनुभव करना चाहते थे क्योंकि वे राक्षस थे। कैसी दुविधा थी!

'हम यहाँ से शुरू करेंगे, लगभग 700 गज सीधे जाएँगे; वहाँ तीन रास्ते होंगे, दो दाहिनी ओर और एक बाईं ओर। समूह 'अ' दाहिनी ओर का दूसरा रास्ता लेगा और समूह 'ब' बाएँ ओर का रास्ता लेगा। समूह 'अ' मेरे पीछे चलेगा और समूह 'ब' उदय के पीछे चलेगा।' ये निर्देश गाइड सुब्रमण्यम दे रहे थे। उन्हें सब लोग सुब्बू कहते थे। वे एक कुशल पर्वतारोही थे और अब इस समुदाय में सेवानिवृत्त जीवन बिता रहे थे। जब भी कोई समूह बनता था, वे स्वेच्छा से गाइड की सेवा करते थे। अधीश और ऐनार अलग-अलग समूहों में थे, लेकिन सौभाग्य से दोनों लड़के अधीश के समूह में थे।

मेहता परिवार के वरिष्ठ सदस्य ऐनार के समूह में थे। 'चोटी से ठीक पहले, जो हमारा गंतव्य है, दो छोटी झोपड़ियाँ हैं जहाँ हम तीन घंटे में इकट्ठा होंगे। रास्ता अपेक्षाकृत सुरक्षित है, लेकिन ऊबड़-खाबड़ और पथरीला है। जैसे-जैसे आप ऊपर जाते हैं, झाड़ियों और पेड़ों की संख्या बढ़ती जाती है। ध्यान रखें कि टूटी हुई शाखाओं और नुकीले पत्थरों पर ठोकर न लगे,' सुब्बू ने उन्हें चेतावनी दी। समूह के सभी सदस्यों ने गंभीरता से सिर हिलाया, जैसे कोई लड़का स्काउट हो। ऐनार और अधीश ने एक-दूसरे को सिर हिलाकर सहमति दी। उन्होंने पहले ही तय कर लिया था कि किसी अप्रिय घटना की स्थिति में वे कहाँ मिलेंगे। उनके पास उनके मुख्य हथियार नहीं थे, जो अधीश की तलवार और ऐनार का ग्राम थे— क्योंकि इससे बहुत अधिक ध्यान आकर्षित हो सकता था, लेकिन वे योद्धा थे और कभी निहत्थे नहीं रहते थे। दोनों के पास छोटे हथियार थे जिन्हें उन्होंने कुशलता से छिपा रखा था।

दोनों समूह सौहार्द, पीठ थपथपाते और गपशप करते हुए अपने-अपने रास्ते चले गए। धीरे-धीरे रास्ता ऊबड़-खाबड़ और पथरीला हो गया। गपशप थम सी गई थी। बड़े-बुजुर्गों में थोड़ी सी हांफने की आवाज आ रही थी, लेकिन युवा काफी उत्साहित थे और आशीष के पीछे-पीछे जोश से चल रहे थे। आशीष अतुल और करण पर पैनी नजर रखे हुए था। कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। हर मोड़ पर आशीष को किसी न किसी तरह की हिंसा की आशंका थी, लेकिन कुछ नहीं हुआ। क्या ऐनार ने उसके अनुमान को गलत समझा था, उसने थोड़ा उलझन में सोचा। नहीं, वह ऐनार पर शक नहीं कर सकता था, वह खुद ही नरम पड़ गया था, उसने मन ही मन सोचा। जल्द ही वे अपने निर्धारित स्थान पर पहुँच गए। दूसरा समूह पंद्रह मिनट बाद पहुँचा। आशीष ने ऐनार की ओर देखा, जिसने कंधे उचका दिए। कुल मिलाकर, रास्ता अभी भी चौड़ा और चिकना था, जिसका मतलब था कि ग्रामीण अक्सर इसका इस्तेमाल करते थे। कुछ भले लोगों ने रास्ते में कूड़ेदान भी रख दिए थे। आशीष मुस्कुराया, फिर अपनी गर्दन पोंछी। गर्मी बहुत थी और सूरज अभी भी तेज़ चमक रहा था। अधीश को अपने अनुभव से पता था कि गर्मी से राहत पाने के लिए उन्हें रात में पगडंडियों पर चढ़ना पड़ेगा। लगभग आधे घंटे में ही सूरज डूबने लगा और जंगल फिर से अपना असली रूप दिखाने लगा। विशाल पेड़ों के बीच से गुजरते हुए रास्ते संकरे और पथरीले होते गए। इन पेड़ों की जड़ें टेढ़ी-मेढ़ी और एक-दूसरे को काटती हुई थीं। रास्ता ऊबड़-खाबड़ और ढलान वाला हो गया, जिसमें नुकीले पत्थर उभरे हुए थे। शाम ढलते ही इलाका

डरावना लगने लगा। अधीश को अपने चाचा केदार और कल्पेश के साथ की गई पैदल यात्राएँ याद आ गईं।

वे चलते रहे और मेहता परिवार और उनके बच्चों पर नज़र रखते रहे। कुछ देर बाद वे एक खुले मैदान में पहुँचे। सुब्बू ने उन्हें आवाज़ दी। अगर किसी को सबसे ज़्यादा आनंद आ रहा था तो वह सुब्बू ही था। प्रबंधन, नियंत्रण और मार्गदर्शन के ऐसे अवसर उसे साल में एक या दो बार ही मिलते थे और वह उनका पूरा फ़ायदा उठाना चाहता था। 'हम रात यहीं डेरा डालेंगे। आपमें से ज़्यादातर लोग ज़रूरी सामान साथ लाए हैं। इन दोनों झोपड़ियों में भी राशन है। आप अंदर जाकर देख सकते हैं कि आपको झोपड़ियों से कुछ चाहिए या नहीं। हम कुछ जलपान करेंगे और फिर अपने तंबू लगाकर सो जाएँगे।' जलपान चाय और रात के खाने जैसा था। लंबी पैदल यात्रा के बाद स्वाभाविक रूप से सभी को भूख लगी थी और सबने बड़े चाव से खाया। तभी अधीश और ऐनार ने एक अजीब बात देखी। इतनी कठिन यात्रा के बाद सभी लोग खाना खा रहे थे, सिवाय मेहता परिवार, माता-पिता और अतुल और करण नाम के दो किशोरों के। दोनों लड़कों के आसपास ज़बरदस्त उत्साह का माहौल था, हालाँकि बड़े मेहता बेपरवाह लग रहे थे। दोनों के मन में खतरे की घंटी बजने लगी। वे अपने-अपने समूहों के साथ बैठे, खाना खाया और खुशमिजाज़ तरीके से व्यवहार करते रहे, साथ ही मेहता परिवार पर पैनी नज़र रखे रहे। कुछ देर बाद, उन्होंने देखा कि बुजुर्ग दंपति आराम से जंगल की ओर जा रहे हैं। जुड़वाँ बच्चे उनके पीछे जाने के लिए उठे, लेकिन मृणालिनी ने उन्हें रुकने का इशारा किया, जिसे उन्होंने अनिच्छा से ही सही, मान लिया। ऐनार भी आराम से जंगल की ओर चल पड़ा। ऐनार बस खड़ा रहा, मानो जंगल की सुंदरता और डूबते सूरज का आनंद ले रहा हो। उसकी एक खास देन थी उसकी सुनने की शक्ति। जहाँ वह खड़ा था, वहाँ से वह मेहता परिवार को आपस में फुसफुसाते हुए सुन सकता था।

'अभी नहीं,' मेहता ने फुसफुसाते हुए कहा।

मृणालिनी ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया, 'बच्चे बहुत भूखे हैं। उनका दिन बहुत थका देने वाला रहा है और इस समय उन्हें बस अच्छा खाना ही चाहिए।'

'क्या तुम्हें नहीं दिखता,' उसने गुस्से से बुदबुदाते हुए कहा, 'अगर वे अभी खा लेंगे तो उनका पेट भर जाएगा और असली भोजन की ओर बढ़ने की इच्छा उतनी ही कम हो जाएगी। दरअसल, अतुल शायद खाना भी न खाए।' मेहता ने चारों ओर देखा कि कहीं

कोई उनकी बात सुन तो नहीं रहा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था सिवाय विदेशी ऐनार के, जो उनकी भाषा नहीं समझता था और दूर पेड़ों पर लगे फलों को देख रहा था। मेहता दंपति ने थोड़ी देर और बात की और फिर वापस चले गए।

ऐनार कुछ देर और वहीं रुका रहा, फिर वापस आकर अधीश के पास खड़ा हो गया। ऐनार ने अधीश की ओर देखकर सिर हिलाया। शिविर में कुछ और मौज-मस्ती हुई, जिसके बाद सुब्बू ने दिन का काम समाप्त किया। सबने अपने-अपने तंबू लगा लिए थे। कुछ और बातचीत और हंसी-मजाक के बाद, सब लोग रात के लिए सोने चले गए। सुब्बू का तंबू बाकी तंबुओं से थोड़ा दूर था। सुब्बू के खर्राटों से परेशान लोगों को काफी राहत मिली, क्योंकि उसके खर्राटे इतने तेज़ थे कि उनके तंबुओं की छतें उड़ जाती थीं। जल्द ही सब शांत हो गया और सब सो रहे थे। या ऐसा ही लग रहा था। अधीश और ऐनार पूरी तरह से सतर्क और जागे हुए थे। वे अपने तंबुओं में गए थे, लेकिन लगभग दस मिनट बाद बाहर आ गए। कुछ तंबुओं में थोड़ी हलचल हुई, लेकिन वह भी थम गई। सुब्बू के असहनीय खर्राटे एक लयबद्ध पैटर्न में ढल गए थे, जैसे कोई स्टीम इंजन पहाड़ की ढलान पर चढ़ता है और फिर तरह-तरह की सीटियों के साथ नीचे उतरता है। अधीश और ऐनार खुले मैदान के विपरीत किनारों पर बैठे थे। उनकी आँखों में नींद का कोई निशान नहीं था। बल्कि, उनकी इंद्रियाँ सांप की तरह स्प्रिंग की तरह तल्लीन थीं, ज़रा सी भी हलचल पर उछलने को तैयार। अभी तक कुछ नहीं हुआ था। वे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे, यह जानते हुए कि आज रात कुछ होने वाला है—ठीक क्या और कहाँ, यह उन्हें नहीं पता था। हवा तेज़ होने लगी थी। यह आसपास के विशाल पेड़ों के बीच से सीटी बजाती और गरजती हुई बह रही थी। जल्द ही, सुब्बू के खर्राटे भी हवा के गरजते और कान फाड़ देने वाले शोर के आगे फीके पड़ गए। अधीश और ऐनार और भी सतर्क हो गए। धीरे-धीरे हवा शांत हो गई और शिविर में एक भयावह सन्नाटा छा गया। अधीश ने बिना कुछ असामान्य देखे पूरे शिविर का चक्कर लगाया। उसने ऐनार को इशारा किया कि सब ठीक है। लेकिन किसी तरह ऐनार आश्वस्त नहीं हुआ। उसकी छठी इंद्री उसे ठीक इसके विपरीत बता रही थी। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और चौंक गए। शिविर इतना शांत इसलिए था क्योंकि सुब्बू के खर्राटे बंद हो गए थे। उन्होंने सुब्बू के तंबू की ओर देखा। वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था। तभी ऐनार ने सुब्बू की झोपड़ी के सामने ज़मीन की ओर इशारा किया। अधीश ने नीचे देखा और सदमे से लगभग उसका दम घुट गया। तंबू से खून की एक पतली धार

निकल रही थी, जहाँ वे खड़े थे वहाँ से शुरू होकर झोपड़ी के दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते वह मोटी होती जा रही थी।

वे चुपचाप सुब्बू के तंबू की ओर दौड़े, पर्दा खोला, अंदर गए और स्तब्ध रह गए। सुब्बू का शरीर बुरी तरह से क्षत-विक्षत था और कुछ लोग उसका मांस नोच रहे थे और हड्डियाँ चबा रहे थे। वहीं, एक व्यक्ति उनसे कुछ दूरी पर चुपचाप उन्हें देख रहा था। वह लंबा, पतला और पूर्णिमा के चाँद की तरह पीला था, धँसी हुई आँखों के नीचे गहरे काले घेरे थे, सामने के भयानक दृश्य को घूर रहा था, उसका मुँह एक खामोश चीख के लिए खुला हुआ था। अधीश और ऐनार को देखकर समूह ने अपनी गतिविधियाँ रोक दीं। वे इंसान थे, लेकिन उनके चेहरे और शरीर पर बाल होने के कारण वे गोरिल्ला जैसे दिख रहे थे। परेशान किए जाने से क्रोधित होकर, उनमें से दो ने ऐनार और अधीश पर हमला कर दिया। ऐनार उनका इंतज़ार कर रहा था, उसके दोनों हाथों में दो धारदार चाकू थे। उसने अपने हथियार गोरिल्ला जैसे दिखने वाले इन इंसानों के पेट में गहरे तक घुसा दिए और ज़ोर से चाकू उनके पेट में घुमा दिए। इस जवाबी हमले से उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। अधीश ने भी अपने चाकू निकाल लिए थे, लेकिन आखिरी क्षण में उसने खुद को रोक लिया। गुरुजी के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे कि ऐनार पहला कदम उठाएगा, फिर जरूरत पड़ने पर अधीश अपना कदम उठाएगा। ऐनार के भयंकर हमले के आगे दोनों इंसान-गोरिल्ला ढेर हो गए। सुब्बू के शरीर को खा रही मादा गोरिल्ला की ओर से एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी। चौथा व्यक्ति अभी भी कोने में खड़ा था, सदमे और डर से कांप रहा था। अधीश और ऐनार एक मिनट तक वहीं खड़े रहे, तभी गोरिल्लाओं का रूप परिवर्तन शुरू हुआ। जैसा कि उम्मीद थी, वे अपने पुराने रूप, मेहता परिवार में बदल गए। करण कोने में खड़ा कांपता हुआ लड़का था।

'तुमने उन्हें क्यों मारा?' मृणालिनी चीखते हुए, बुरी तरह सिसकते हुए बोली। 'महोदया, मुझे लगता है कि आपको ही इसका स्पष्टीकरण देना होगा,' अधीश ने बीच में टोकते हुए कहा। 'आप तीनों ने सुब्बू को मारा है। उसने आपको किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचाया। वह एक मार्गदर्शक के रूप में बहुत अच्छा काम कर रहा था और सभी के प्रति दयालु और उत्साहवर्धक था।'

मृणालिनी विलाप करते हुए बोली, 'हमें यह करना ही पड़ा। बच्चों को यह बताना

ज़रूरी था कि वे कौन हैं और उनकी विरासत क्या है। हम विद्वान राक्षसों के वंश से आते हैं, जो बहुत पढ़े-लिखे, गहन ज्ञानी और बुद्धिमान हैं। बच्चों को अपने मूल्यों और परंपराओं को जानना चाहिए। सदियों से मनुष्यों के साथ इतना मेलजोल होने से वे नरम और भावुक हो गए हैं। हम बस उन्हें उनकी सच्ची विरासत दिखा रहे थे,' वह हिचकी लेते हुए रोई। आइनार ने शांत भाव से जवाब दिया, 'लेकिन तुमने उन्हें जो दिखाया या सिखाने की कोशिश की, वे सही मूल्य नहीं थे, बल्कि तुम उन्हें बिल्कुल विपरीत सिखा रहे थे। उन्हें रोकना ज़रूरी था, वे पहले ही बहुत नुकसान कर चुके थे।'

'यह उनके भाग्य का हिस्सा है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए उन्हें इसी तरह अपना गुजारा करना होगा, कोई और रास्ता नहीं है,' मृणालिनी ने फिर विलाप किया।

'मुझे खेद है, यह बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, इस युग और परिस्थिति में तो बिल्कुल नहीं,' अधीश ने दृढ़ता से कहा। फिर उसने दूसरे जुड़वा भाई करण की ओर देखा, जो अभी भी अपने सामने घट रहे दृश्य को भयभीत होकर देख रहा था। तो, गुरुजी इसी के बारे में बात कर रहे थे। करण वह राक्षस था जिसमें राक्षसी गुणों से कहीं अधिक मानवीय गुण थे। उसी का पुनर्वास होना था! अच्छे और बुरे राक्षस हमेशा से होते आए हैं। अच्छे राक्षस देवता बन जाते हैं, प्रेम से मार्गदर्शन और उपचार करते हैं। बुरे राक्षस एक ऐसी शक्ति में बदल जाते हैं जो लालच और घृणा के माध्यम से विनाश और पीड़ा में आनंद लेती है।

उसने आह भरी। अब एक विश्वसनीय कहानी गढ़नी होगी और बाकी लोगों के जागने से पहले सब कुछ समेटना होगा।

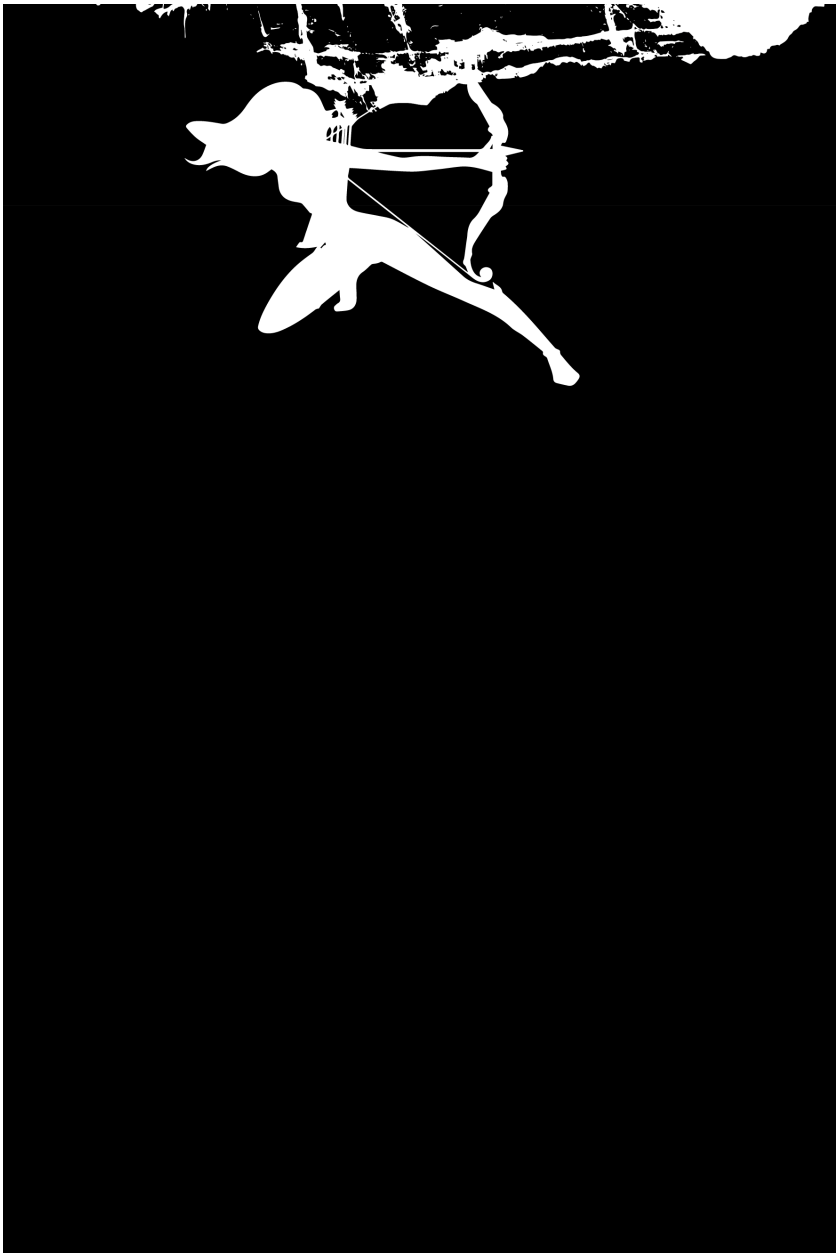

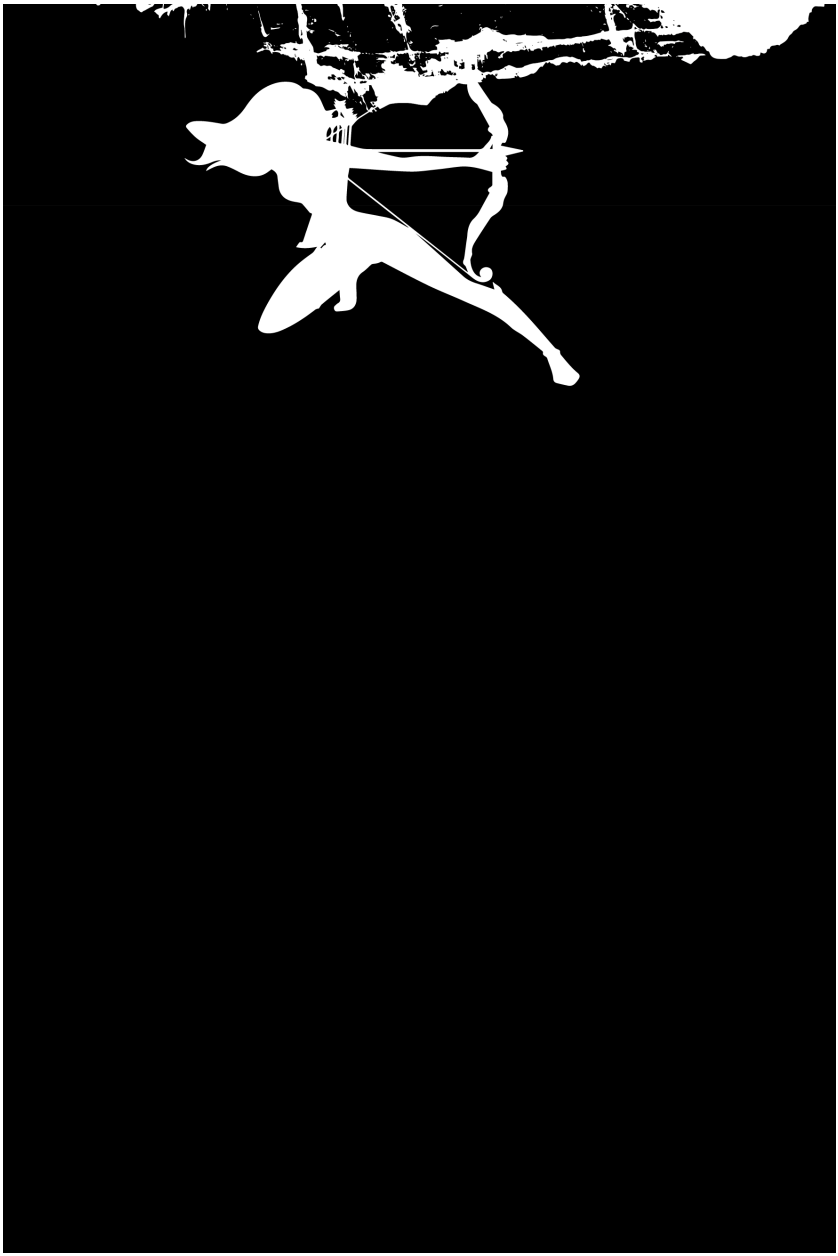

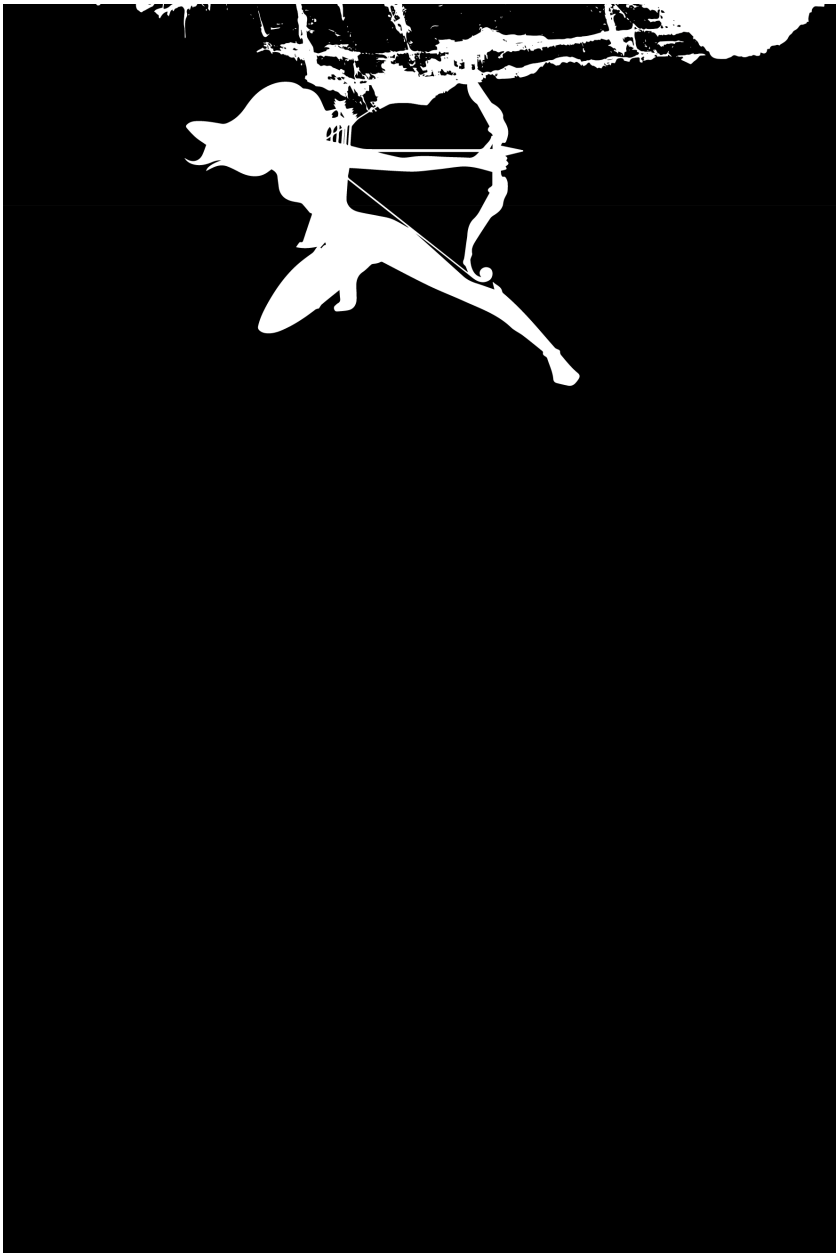

आधे नस्ल के

‘डब्ल्यू

रामायण काल में जब राक्षस भाग निकले, तो आप सभी जानते हैं कि वे अनेक स्थानों पर भागे और अपनी-अपनी नियत तारीखों पर बाहर निकले, जो किसी भी शताब्दी में हो सकती हैं। यह इस शताब्दी में हो सकता है, या चार शताब्दी पहले, या शायद दो शताब्दी बाद भी। आपने युगों-युगों तक इन राक्षसों से युद्ध किया है और आपमें से प्रत्येक उनसे लड़ने और उन्हें नष्ट करने में भली-भांति पारंगत है। लेकिन हर कहानी और इतिहास में अपवाद होते हैं।

वे मुख्य भवन के पीछे बरगद के पेड़ की छाया में बैठे थे। आश्रम धीरे-धीरे पुराने गुरुकुल जैसा दिखने लगा था, हालांकि उसमें कुछ बदलाव आ गए थे; ऐशानी को लगता था कि इन बदलावों ने इसे और भी सुंदर बना दिया है।

वनस्पति और जीव-जंतुओं की स्थिति में काफी सुधार हो रहा था, हालांकि बड़े पेड़ों को अभी भी अपनी पूरी ऊंचाई और चौड़ाई तक बढ़ना बाकी था।

वनस्पति विज्ञान विभाग इन पेड़ों की वृद्धि को तेज करने के लिए दिन-रात काम कर रहा था। गुरुजी के थोड़े से प्रोत्साहन से, बड़े पेड़ ऐसे दिखने लगे थे मानो वे सदियों से यहाँ मौजूद हों। सभी ने नदियों और उनके सहायक नालों की सफाई के लिए अथक परिश्रम किया था और भीषण तबाही के बाद अब इन जलमार्गों का पानी धीरे-धीरे मधुर होने लगा था। हालांकि वसंत ऋतु नहीं थी, फिर भी हर पेड़ और हर फूल की कली नई लग रही थी, और वे सचमुच नए थे। छोटे पक्षियों ने इन पेड़ों में घोंसले बनाने शुरू कर दिए थे और उनकी चहचहाहट से गुरुकुल के निवासी सुबह-सुबह जागने लगे थे, हालांकि बड़े पक्षियों ने अभी तक यहाँ घोंसला बनाने की हिम्मत नहीं जुटाई थी। कुल मिलाकर, गुरुकुल में खुशी और आशावाद धीरे-धीरे लौट रहा था।

वहाँ से गुजरने वाला कोई भी व्यक्ति गुरुजी को कुछ छात्रों और शिक्षकों को प्रवचन देते हुए देख सकता था। इस बार गुरुकुल का पुनर्निर्माण इस प्रकार किया गया था कि जब भी दो या दो से अधिक लोग किसी विषय पर चर्चा करने या बातचीत करने के लिए बैठते थे, तो उनके चारों ओर एक अदृश्य सुरक्षात्मक आभा बन जाती थी और कोई भी बाहरी व्यक्ति यह नहीं समझ पाता था कि वहाँ क्या हो रहा है या क्या कहा जा रहा है। चर्चा का विषय वास्तव में बहुत गंभीर था। गुरुजी की मुख्य टीम, जिसमें अधीश, ऐशानी, जयंत, रूबी, उदय, तेजस और अब ऐनार भी शामिल थे, वहाँ उपस्थित थे।

तेजस बहुत चंचल था। वह एक जगह स्थिर नहीं बैठ सकता था। आमतौर पर, जब भी उसके अपने लोगों की कोई सभा होती, वह उछल-कूद करता रहता या अगर सभा बाहर होती, तो वह किसी पेड़ की डाल से लटक जाता। यह सच था कि वह सबसे छोटा था और सभी उसे इतनी छूट देते थे। लेकिन उसकी एक गंभीर समस्या थी। अपने शरीर को लचीला बनाए रखने के लिए, उसने पाया था कि उसे खूब सारा तरल पदार्थ पीना और इधर-उधर घूमना पड़ता है ताकि पानी उसके शरीर में पूरी तरह से अवशोषित हो जाए। पानी हर इंसान के लिए अमृत है, लेकिन तेजस के लिए यह और भी अधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे उसकी विशेष शक्ति बरकरार रहती थी। लोगों द्वारा उसे गंभीरता से न लेने का एक कारण उसकी चंचलता भी थी। वह पहली बार गुरुजी की सभा में भाग ले रहा था। तेजस को अपने आप पर बहुत गर्व हो रहा था और वह आत्म-महत्व की भावना से भरा हुआ था। आखिरकार उसे गंभीरता से लिया जा रहा था और वह इसे किसी भी कीमत पर खराब नहीं होने देना चाहता था। वह बिना हिले-डुले एकदम शांत बैठा रहा, हालांकि कुछ समय बाद उसका शरीर हिलने-डुलने और पानी पीने के लिए तड़पने लगा।

गुरुजी उन्हें एक ऐसी स्थिति से अवगत करा रहे थे जो धीरे-धीरे सामने आ रही थी और इससे पहले कि कोई वास्तविक नुकसान हो सके, इसे शुरुआत में ही रोकना आवश्यक था।

सदियों के अंतराल में इनमें से कई राक्षस शीतनिद्रा से बाहर आए, खुद को मनुष्य में परिवर्तित किया और चुपके से मानव जाति में घुलमिल गए। उन्होंने मनुष्यों से विवाह किया, उनके साथ शारीरिक संबंध बनाए और संतान उत्पन्न की। ये बच्चे पीढ़ियों तक मनुष्यों जैसे दिखते हैं, ज्यादातर समय मनुष्यों जैसा व्यवहार करते हैं। और अधिक अंतर्संबंध के बाद वे स्वभाव से भी राक्षस से अधिक मनुष्य बन गए। लेकिन राक्षसी रक्त को इतनी आसानी से नकारा नहीं जा सकता। कभी-कभी यह कुछ व्यक्तियों में अपना असली रूप प्रकट कर देता है और यही वह समय होता है जब परिस्थितियाँ बहुत गंभीर मोड़ ले लेती हैं।

'ये भूत-प्रेत सबसे खतरनाक हैं। वे मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं को भली-भांति जानते हैं क्योंकि वे स्वयं मनुष्य हैं। लेकिन उनका राक्षसी स्वभाव भी उनके मूल में मौजूद है। यह तब और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है जब अनजाने में उन्हें मानव रक्त का स्वाद मिल जाता है। सदियों पुरानी यादें उनके मन में उमड़ पड़ती हैं। उनमें से कुछ

इस घटना को सहन नहीं कर पाते और आत्महत्या करके आसान रास्ता चुन लेते हैं। हमें उन अन्य लोगों से सावधान रहना होगा, वे मनुष्य या राक्षस जो अपने भीतर के संघर्ष के बाद अपने राक्षसी स्वभाव को हावी होने देते हैं। इन राक्षसों को सामान्य मनुष्यों से अलग करना असंभव हो गया है क्योंकि वे अब अधिक बुद्धिमान और अधिक धूर्त भी हो गए हैं। उनमें से कई अपनी इच्छा से मनुष्य या राक्षस में रूपांतरित होने की क्षमता रखते हैं।'

गुरुजी रुक गए और अपने सामने उपस्थित सभा की ओर देखा। अधीश ने सहमति जताते हुए कहा, 'गुरुजी, ये लोग अब अति बुद्धिमान हो गए हैं। राक्षस तो हमेशा से ही निस्संदेह बहुत बुद्धिमान रहे हैं। उनकी उस क्रूर और धूर्त बुद्धि की स्मृति, उनकी सामान्य मानवीय बुद्धि के साथ मिलकर उन्हें बेहद खतरनाक और उतना ही मुश्किल बना देती है।'

बाकी सब चुपचाप चर्चा पर पूरा ध्यान दे रहे थे। उनके दिमाग में पहले से ही इन भेस बदले हुए और शातिर राक्षसों को पकड़ने के लिए तरह-तरह के उपाय चल रहे थे, लेकिन शायद गुरुजी की योजना कुछ अलग ही थी।

हमारे जासूसों और खुफिया टीमों ने इन राक्षसों के बारे में कई परेशान करने वाली बातें पता लगाई हैं। इनमें से काफी लोगों ने एक-दूसरे को खोज लिया है और एक-दूसरे के संपर्क में हैं। ये समाज में ऊंचे पदों पर बैठे लोग हैं। इनमें से कुछ, अपनी असलियत जानने के बाद, सदमे से टूट चुके हैं। इन राक्षसों में शुद्ध राक्षसों की तुलना में कहीं अधिक मानवीय पहलू हैं और कभी-कभी ये हिंसक और बेकाबू होने के लिए अधिक प्रवृत्त होते हैं। किसी भी मामले में, दोनों प्रकार के राक्षस मानव जाति के लिए खतरनाक हैं। एक प्रकार वह है जो अपनी जड़ों की ओर लौटना चाहता है और दूसरा वह है जो बेताब होकर इंसान बने रहना चाहता है, लेकिन कभी-कभी खून पीना चाहता है और डॉ. जेकिल और मिस्टर हाइड की तरह अन्य नकारात्मक और विरोधाभासी इच्छाएं पालता है।

सभी मन ही मन मुस्कुराए। गुरुजी का किसी बात को समझाने के लिए इस तरह का उदाहरण देना हास्यास्पद था। गुरुजी के सामने बैठे युवा योद्धाओं ने गहरी साँस ली। तेजस बेताब होकर कहीं भाग जाना चाहता था। गुरुजी ने उन्हें गंभीरता से देखा।

बच्चों, यह याद रखना कि हर क्रिया की एक समान प्रतिक्रिया होती है। इस मामले में भी, ऐसी विपत्ति के बावजूद हमारे लिए कुछ अच्छा है। ये वे विशेष रूप से अच्छे

इंसान हैं जो अपने राक्षस होने के ज्ञान से टूटकर परोपकार के दूसरे चरम पर पहुँच जाते हैं। यह सब बहुत अच्छा है, लेकिन वे अचानक राक्षस बन जाते हैं और बिना किसी जागरूकता के हत्या करते हैं कि उन्होंने वास्तव में मनुष्यों और अन्य जीवों को भी मार डाला है। जब वे अपनी मानवता को पुनः प्राप्त करते हैं, तो उन्हें अपना राक्षसी स्वभाव याद नहीं रहता। वे ऐसे जीवन जीते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो, लेकिन अपने पीछे खून के निशान छोड़ जाते हैं। वे अपने निशान नहीं छुपाते क्योंकि उन्हें पता ही नहीं होता कि उन्होंने किसी को मारा या नुकसान पहुँचाया है। इन राक्षसों को उन दूसरों से पहले नष्ट करना होगा, जो जानते हैं कि वे क्या हैं और इसे स्वीकार करते हैं।
गुरुजी ने सहज भाव से कहा, 'उदय और ऐनार रूबी, जयंत और तेजस के साथ इस अभियान का नेतृत्व करेंगे।' सभी ने सहमति में सिर हिलाया। अधीश और ऐशानी चौंक गए। उन्हें दूसरों के नेतृत्व करने पर कोई आपत्ति नहीं थी, आश्चर्य की बात यह थी कि गुरुजी ने उन्हें इस अभ्यास में शामिल नहीं किया था। शायद गुरुजी उन्हें किसी और अभियान के लिए तैयार कर रहे थे। खैर, उनके पास कोई कारण तो होगा, अधीश ने सोचा। उसने मन ही मन ऐशानी को संदेश भेजा और उसे सकारात्मक उत्तर मिला। अब आश्वस्त होकर उसने समूह पर सरसरी नज़र डाली। ऐनार को छोड़कर, सभी स्पष्ट रूप से उलझन में थे। गुरुजी ने कक्षा समाप्त की और वे अपने-अपने रास्ते चले गए। इसलिए, अधीश और ऐशानी को शामिल न करने का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सकता था।
सबके चले जाने के बाद, अधीश और ऐशानी को गुरुजी का एक संदेश मिला जिसमें उन्हें वापस बुलाया गया था। उन्होंने एक-दूसरे को देखा, मुस्कुराए और बरगद के पेड़ की ओर वापस चल दिए। गुरुजी ने स्नेहपूर्वक उनकी ओर देखा और कहा, "तुम दोनों को कुछ समय के लिए अपने कर्तव्यों से मुक्त किया जाता है। पिछले छह महीनों से तुम दोनों ने हर तरह की पीड़ा, असहनीय कष्ट और दर्द सहा है। तुम्हारे पास महाशक्तियाँ हैं, लेकिन फिर भी तुम इंसान हो। तुम्हारी सहनशक्ति की भी एक सीमा है। तुम दोनों को मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ होने की आवश्यकता है। ऐशानी अपनी कुछ भावनाओं को व्यक्त कर पाई है, लेकिन अधीश नहीं। मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों पूरी तरह से आराम करो। कहीं घूमने जाओ या अपने परिवार के साथ घर पर रहो, जो भी करना चाहो।" गुरुजी के पास शब्द नहीं थे। उन्होंने स्वयं कभी आराम नहीं किया था, इसलिए उन्हें कई विकल्प देने में उन्हें

हिचकिचाहट हो रही थी। फिर भी वे मुस्कुरा दिए।

'लेकिन गुरुजी...' अधिश ने अभी अपनी आपत्ति जताई भी नहीं थी कि गुरुजी ने हाथ उठाकर उसे रोक दिया। 'कोई किंतु-परंतु नहीं, अधिश, तुम दोनों को गुरुकुल में बिल्कुल नहीं आना है।' फिर ऐशानी के चेहरे पर हैरानी देखकर वे मान गए, 'ठीक है, तुम हर दिन थोड़ी देर के लिए गुरुकुल आ सकते हो, लेकिन दूसरों से मिलना-जुलना नहीं और कोई काम नहीं। बस आराम करो, घूमो-फिरो और खुश रहो, मेरे बच्चों,' उन्होंने रूखे स्वर में कहा। ऐशानी की आँखें नम हो गईं। उन्होंने गुरुजी के पैर छुए और चले गए।

उदय और ऐनार विष्णुस्थान गए जहाँ प्रशासन और राजनीति की शिक्षा दी जाती थी। इस समय तक, ऐनार गुरुकुल की सभी परीक्षाएँ उत्कृष्ट अंकों से उत्तीर्ण कर चुके थे और गुरुकुल के विशेष मंडल का हिस्सा बन चुके थे। यह मात्र एक औपचारिकता थी, पर अनिवार्य भी। ऐनार उन महान योद्धाओं में से एक थे जिनसे वे मिले थे। अपने क्षेत्र के राक्षसों के बारे में उनका ज्ञान और भारतीय योद्धाओं की शक्ति और ज्ञान ने उन्हें एक दुर्जेय शत्रु बना दिया था।

विष्णुस्थान वह स्थान भी था जहाँ एकत्रित जानकारी लाई जाती और उसका विश्लेषण किया जाता था। इस विभाग से प्राप्त जानकारी के आधार पर वे अपनी रणनीति बनाते और फिर चुनौती देते। यहाँ उन्हें जो मिला वह बहुत आश्चर्यजनक नहीं था क्योंकि गुरुजी ने उन्हें लगभग सब कुछ बता दिया था। एक अप्रत्याशित खोज यह थी कि ये सभी भले लोग भौगोलिक रूप से एक-दूसरे के काफी करीब थे, इसलिए उन्हें ढूँढ़ना बहुत मुश्किल नहीं होगा। उन्होंने विष्णुस्थान के विशेषज्ञों, शिक्षकों या योद्धाओं से जानकारी एकत्र की और फिर पुस्तकालय में बैठकर अपनी रणनीति पर चर्चा की। अधीश और ऐशानी की अनुपस्थिति थोड़ी अजीब थी, लेकिन उन्होंने इससे भी अजीब अनुभव किए थे।

रूबी तेजस के लिए खूब सारा पानी लाई थी, जिसके बिना वह बेचैन हो जाता। वे जूनियर लाइब्रेरी में थे क्योंकि वे अभी सीनियर लाइब्रेरी में बैठने के योग्य नहीं थे। उदय ने हाल ही में योग्यता प्राप्त की थी, लेकिन वह अपने समूह के साथ बैठा था क्योंकि यह सबके लिए ज़्यादा सुविधाजनक था। वैसे भी, सीनियर लाइब्रेरी की किताबें उनकी बातचीत का हर शब्द सुन रही होतीं, जो सुरक्षित नहीं होता क्योंकि अभी भी कुछ ऐसी शक्तियां मौजूद थीं जो किताबों से रहस्य निकाल सकती थीं।

विष्णुस्थान के जासूसों से मिली जानकारी के आधार पर उन्होंने एक अचूक योजना बनाई। इस नई योजना में हर किसी की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। पूरे अभियान की शुरुआत तेजस द्वारा क्षेत्र की पड़ताल से होगी, जो किसी भी संरचना पर चढ़ सकता था, सबसे छोटे छेद से भी निकल सकता था और लोगों, उनकी आदतों और उनके अक्सर आने-जाने वाले स्थानों का मोटा-मोटा अंदाजा लगा सकता था। जयंत भी पीछे नहीं रहेगा। अपनी एक्स-रे जैसी दृष्टि से वह सबसे छिपे हुए स्थानों और लोगों को भी देख सकता था। उन सभी को बताया गया था कि ये छद्म-राक्षस या छद्म-मनुष्य इस समय सबसे अधिक प्रताड़ित लोग हैं। यह प्रचंड पीड़ा उन्होंने स्वयं ही झेली है। राक्षस होने के सदमे और अपराधबोध ने उनके मन पर गहरा असर डाला है। वे सभी अच्छे प्राणी थे, वे अच्छे बनना चाहते थे और इसलिए वे ज्यादातर समय अच्छे ही रहते थे। वे समाज के आदर्श नागरिक की तरह व्यवहार करते थे, लेकिन कभी-कभी उनके दिमाग में कुछ ऐसा हो जाता था जो उन्हें मनुष्यों को मारने और खाने जैसे भयानक काम करने पर मजबूर कर देता था। बाद में उन्हें अपने किसी भी कुकर्म की कोई याद नहीं रहती थी।

यहीं पर रूबी की एंट्री हुई। जब ये तथाकथित सामान्य लोग दानव बन जाते, तो वे स्त्रियों के प्रति वासना से भर उठते। वे उसके हाथों की कठपुतली बन जाते। वह उन्हें एक-एक करके पास-पास के घरों में ले आती। उसके बाद उदय और ऐनार के लिए इन आधे-राक्षसों का सफाया करना बच्चों का खेल हो जाता। उदय अपने पाश के साथ और ऐनार अपने ग्राम के साथ— इन दोनों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था।

क्या इसी वजह से गुरुजी ने उदय और ऐनार को यह ज़िम्मेदारी सौंपी थी? रूबी इस विचार में डूबी रही। पिछले कुछ महीनों में अधीश और ऐशानी ने कई लड़ाइयाँ जीती और हारी थीं, भावनात्मक और शारीरिक दोनों तरह की। शायद जब निर्दोष आधे इंसान या मानव-राक्षस अपनी जान की भीख मांगते और गिड़गिड़ाते, तो वे थोड़ा हिचकिचाते। लेकिन उदय के साथ ऐसा बिल्कुल नहीं था। एक बार उदय को यकीन हो जाता कि ये मानव-राक्षस समाज के लिए खतरा हैं और आदेश जारी हो जाते, तो उदय को रोकना लगभग नामुमकिन हो जाता। वह बिना किसी दया या करुणा के मार डालता। रूबी को शक था कि ऐनार के साथ भी ऐसा ही था। रूबी ने ऐनार के बारे में एक और बात गौर की कि चाहे वह कितनी भी ज़ोरदार लड़ाई लड़े और कितना भी

बुरी तरह घायल हो जाए, वह सुबह तक पूरी तरह ठीक हो जाता था। शायद यही उसकी एक खास खूबी थी।

रूबी ने आह भरी। वे सभी इतने प्रतिभाशाली और शक्तिशाली थे कि अब उसे किसी भी बात पर आश्चर्य नहीं होता था। या शायद गुरुजी अधीश और ऐशानी को थोड़ा आराम देना चाहते थे। बेचारे, उसने स्नेह से सोचा, अभी-अभी शादी हुई है लेकिन प्यार के लिए समय ही नहीं है। उसने फिर आह भरी। उसने कभी खुद की तुलना ऐशानी से नहीं की, जो उसकी नेता थी और वह ऐशानी की रक्षकों में से एक थी। वे सभी ऐशानी के रक्षक थे। लेकिन कभी-कभी, हालांकि बहुत कम ही, उसका दिल दुखता था। ऐशानी की रक्षा करने के लिए उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी। ऐसा नहीं था कि उसे कभी इसका पछतावा हुआ हो। अगर उसे मौका मिलता, तो वह फिर से वही रास्ता चुनती। किसी भी अन्य महिला की तरह, वह भी एक ऐसे पुरुष की चाहत रखती थी जो उससे प्यार करे और उसे संजोए। रूबी ने अपना सिर हिलाया। अब काम करना है। पुरानी यादों में खोना नहीं।

रूबी को ठीक से पता नहीं था कि गुरुकुल में कोई आपदा आई थी या अधीश और ऐशानी को किसी बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ा था। उसे और उसके परिवार को, साथ ही ऐशानी के परिवार को भी अपनी-अपनी कई समस्याओं से जूझना पड़ा था। पहले तो सूक्ष्म राक्षसों का सामना करना पड़ा, जिन्हें वे संख्या में अधिक होने के कारण हरा नहीं पाए। फिर मधु के घर में आग लग गई और राक्षसों ने घर पर हमला करके उसे तहस-नहस कर दिया। उसके बाद उन्हें हरिद्वार भागना पड़ा और वहीं रहना पड़ा, और इन सबके ऊपर उदय का राक्षसी प्रिशा से संबंध। रूबी जानती थी कि उदय ने कभी किसी लड़की से सच्चा प्यार नहीं किया था। एक बार उसे शक हुआ था कि उदय ऐशानी की तरफ आकर्षित हुआ था। लेकिन अधीश के आने से पहले ही वह आकर्षण अचानक खत्म हो गया था। रूबी को इसका कारण नहीं पता था और न ही उसे इसमें कोई दिलचस्पी थी। वर्तमान में लौटते हुए, रूबी को अंदर से महसूस हो रहा था कि उन्हीं सूक्ष्म राक्षसों ने गुरुकुल और उसके निवासियों पर हमला कर दिया है। गुरुकुल में नई शुरुआत के कई संकेत थे, जिन पर किसी आगंतुक का ध्यान नहीं जाता, लेकिन रूबी के लिए गुरुकुल उसके अपने घर से भी ज़्यादा घर जैसा था। गुरुकुल में अगर पेड़ की कोई छोटी सी शाखा भी टूट जाती, तो उसे पता चल जाता। पेड़-पौधे, पक्षी और यहाँ तक कि उनके अध्ययन केंद्र भी वही थे, लेकिन बड़े पक्षी

वहाँ नहीं थे, पुराने पेड़ गायब थे। रूबी जानती थी कि ये पेड़ अभी-अभी उगे हैं—कैसे, यह उसे नहीं पता था। वह जानती थी कि वह ऐशानी से कभी भी पूछ सकती है और ऐशानी उससे कुछ भी नहीं छिपाएगी। लेकिन इन दिनों ऐशानी के पास समय नहीं लगता था। वह हमेशा किसी न किसी काम में व्यस्त रहती थी। बेशक, यह मुख्य रूप से राक्षसों के बारे में था, लेकिन ऐशानी अन्य चीजों में भी व्यस्त हो गई थी। ठीक-ठीक क्या, रूबी बता नहीं सकती थी। ऐशानी गुरुकुल के अन्य सदस्यों की देखभाल करने और उनसे बात करने लगी थी। वह उन्हें दवाइयाँ देती और पहले की तुलना में उनसे ज़्यादा खुलकर बातें करती। हालाँकि ऐशानी गुरुकुल के सभी कर्मचारियों से परिचित थी, फिर भी वह हमेशा एक शांत स्वभाव की व्यक्ति रही थी। रूबी के मन में कहीं न कहीं यह बात थी कि ऐशानी के व्यक्तित्व में कोई बदलाव नहीं आया था, लेकिन उसके जीवन में कुछ तो स्थायी रूप से बदल गया था। शायद यह एक नई परिपक्वता थी।

फिर गुरुकुल के लापता कर्मचारियों और नए सदस्यों के शामिल होने का मामला था, जिनमें सबसे नया और चौंकाने वाला नाम आइनार का था, जो एक सच्चा प्रथम श्रेणी का स्वीडिश योद्धा था। केवल एक बात स्पष्ट थी: ऐशानी और अधीश कहीं साथ गए थे और आइनार के साथ वापस आए थे। रूबी के मन में कुछ और सवाल उठ रहे थे। रूबी यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि जब ऐशानी का घर जल रहा था, तो ऐशानी और अधीश मदद के लिए क्यों नहीं आए? क्या वे खुद भी किसी समस्या से जूझ रहे थे? गुरुकुल में यह बदलाव क्यों आ गया था? कभी-कभी गुरुकुल की 'कोई सवाल नहीं' वाली नीति बहुत परेशान करने वाली हो जाती थी।

उसने अपना सिर हिलाया। वह अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने वाली थी। रूबी के लिए राक्षसों की तुलना में मनुष्यों को फंसाना आसान था। उसका काम इन मानव राक्षसों को पकड़ना और उनमें से यथासंभव अधिक से अधिक को एक या अधिक स्थानों पर इकट्ठा करना था।

उसने आह भरी। एक और दिन, एक और नई शुरुआत।

खुफिया रिपोर्टों से पता चला था कि आधे इंसान और आधे राक्षस ने कुछ समूह बना लिए थे और ज्यादातर एक साथ रहते थे ताकि अपनी रक्षा कर सकें, अपनी मुसीबतों को साझा कर सकें और राक्षस बनने पर खुशी भी बाँट सकें। गुरुकुल की खुफिया जानकारी में उन्हें यह नहीं बताया गया था कि ये प्रताड़ित आत्माओं का एक गुट थे।

उन्होंने मनुष्यों के अच्छे गुणों को अपना लिया था और अब वे तीन चौथाई से अधिक मनुष्य बन चुके थे, राक्षस नहीं। वे लगभग भूल चुके थे कि किसी युग में, किसी बीते युग में वे राक्षस थे। वे मनुष्य बनने के लिए बेताब थे, लेकिन अनजाने में जब कोई गंभीर आपात स्थिति आई, तो उनका राक्षसी स्वभाव सामने आ गया और उन्हें इतना पागल बना दिया कि वे हत्या, यातना, मानव रक्त और मांस खाने और पीने जैसे जघन्य कृत्य करने लगे। बाद में उन्हें याद भी नहीं रहता था कि उन्होंने कितने भयानक कृत्य किए थे। अगर उनमें से किसी को धुंधला सा भी याद आ जाता था कि उन्होंने क्या किया है, तो वे अपने व्यवहार से इतने भयभीत होते थे कि वे भाग जाते और अपनी दुनिया के किसी दूरदराज कोने में छिप जाते और दिनों, हफ्तों या महीनों तक वहीं रहते। वे पूरी तरह से और ईमानदारी से पश्चाताप कर रहे थे और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे इस अपराध से कैसे बाज आएं।

टीम इन व्यक्तियों की दयनीय और अंतरात्मा से व्याकुल भावनाओं से अवगत थी, लेकिन गुरुजी ने कहा कि इन आधे-मानवों पर दया नहीं दिखाई जा सकती क्योंकि वे पूर्ण राक्षसों से भी अधिक खतरनाक थे। ये आधे-मानव मुख्य आबादी में घुलमिल जाते थे और जरा भी संदेह होने पर हमला कर देते थे।

इस बार ऑपरेशन रूबी से शुरू हुआ। उन्हें नहीं पता था कि रूबी ने इतने सारे तथाकथित राक्षसों को इस जगह पर कैसे बुलाया, और न ही उन्हें इसकी परवाह थी। उदय और बाकी लोग रूबी के संभावित खतरे को जानकर थोड़ा असहज महसूस कर रहे थे, क्योंकि वह उनकी इंसानी बहन थी। उन्होंने रूबी को इन राक्षसों को कुछ अपार्टमेंट में बुलाने का निर्देश दिया, जहाँ वे उनका इंतज़ार कर रहे थे। रूबी ने वैसा ही किया जैसा उसे बताया गया था। ऐनार और उदय ने उस अपार्टमेंट को ढूंढ लिया था जहाँ रूबी उन्हें ले गई थी, लेकिन रूबी उन्हें निश्चित रूप से यह नहीं बता सकी कि वे किस घर में थे, क्योंकि उसने उन पर जादू कर दिया था और उन्हें रात के अंधेरे में यहाँ ले आई थी जब वह घर के नंबर नहीं देख सकती थी। लेकिन उसे इलाके की कुछ जानकारी याद थी और बेशक वह अधिकांश आधे-मानवों की शारीरिक बनावट और रूप-रंग का वर्णन कर सकती थी। इसके बाद जयंत ने कमान संभाली और रूबी के वर्णन के आधार पर, अपनी असाधारण दृष्टि से वह ठीक-ठीक बता सका कि वे किस अपार्टमेंट और यहाँ तक कि किस कमरे में थे। ऐसा लग रहा था कि उनमें से अधिकांश दो अपार्टमेंट में बिखरे हुए थे।

उसके बाद उदय और ऐनार के लिए सब कुछ आसान हो गया, हालाँकि रात लंबी और मुश्किल भरी होने वाली थी। जयंत उन्हें एक सादे से अपार्टमेंट में ले गया जो देखने में बड़ा लग रहा था। वे अपने हथियारों से पूरी तरह लैस थे। उन्होंने दरवाज़े पर दस्तक दी, जिसके पीछे से उन्हें कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। दस्तक के बाद एकदम सन्नाटा छा गया। वे इंतज़ार करते रहे, फिर दरवाज़े पर दोबारा दस्तक दी। अब पैरों की आहट सुनाई दी, मानो कोई भागने की कोशिश कर रहा हो। ऐनार और उदय ने एक-दूसरे को देखा, फिर दरवाज़ा तोड़ दिया। आधे इंसान और आधे राक्षस अंदर आते देख चौंक गए। वहाँ करीब दस लोग थे, जिनमें पुरुष और महिलाएँ दोनों शामिल थीं। 'इसका क्या मतलब है? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई इस तरह अंदर आने की?' उनमें से एक आदमी ने गुस्से से उनसे पूछा। उसकी आवाज़ गहरी, आकर्षक और सभ्य थी। अगर उनके पास पुख्ता खुफिया रिपोर्ट न होती, तो वे एक पल के लिए हिचकिचा जाते। बाकी लोग भी अच्छे कपड़े पहने हुए और सभ्य दिख रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे किसी तरह की पार्टी कर रहे थे और इसलिए उनका यह व्यवहार स्वाभाविक रूप से अपमानजनक था। उदय ने उन्हें गौर से देखा। वाकई, उनके हाथों और मुंह के कोनों पर जल्दबाजी में पोंछे गए खून के निशान साफ दिख रहे थे। उदय ने उनका विरोध करने वाले आदमी को धक्का देकर अंदर चला गया। ऐनार भी अंदर चला गया। अंदर के कमरे का मंजर देखकर वे लड़खड़ा गए और उनका दम घुटने लगा। एक बड़ी सी मेज पर दो नग्न शव पड़े थे। एक शव आधा खाया हुआ था और दूसरा ऐसा लग रहा था जैसे अभी-अभी मारा गया हो। शवों के चारों ओर चार और राक्षस थे, जिनके मुंह उन शवों से नोचे गए मांस से भरे हुए थे।

दो अजनबियों के अचानक उनके भोज में घुस आने के सदमे से राक्षस जल्दी ही उबर गए। पलक झपकते ही उन्होंने अपने हथियार निकाल लिए और हमला करने के लिए तैयार हो गए। लेकिन इन योद्धाओं के सामने उनका कोई अस्तित्व नहीं था। उदय और ऐनार ने अपने-अपने हथियारों से उन्हें काट डाला और कुचल दिया। उदय के पास भगवान परशुराम के समान एक बड़ा हथियार था और ऐनार के ग्राम ने तो ड्रैगनों को भी मार डाला था। यह सारा अभियान इतनी तेज़ी से चला कि राक्षस चीख भी नहीं पाए। केवल मांस के फटने और हड्डियों के टूटने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। चारों ओर खून ही खून था, लेकिन उदय और ऐनार ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। उनका अभियान अभी शुरू ही हुआ था। राक्षस यहाँ के अन्य घरों में बिखरे पड़े थे। उन्हें यह

सब आज रात ही करना था क्योंकि अगर कुछ राक्षस भाग भी गए तो उन्हें ढूंढना मुश्किल हो जाएगा।

सबूतों को छिपाने की बात हो, उदय और ऐनार को इसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी। जब भी योद्धा किसी मिशन पर जाते, खासकर भीड़-भाड़ वाली जगहों पर, उनके साथ सफाईकर्मियों की एक टीम हमेशा रहती थी। इन सफाईकर्मियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि अगर इतनी सारी लाशें मिल जातीं, जिनमें से कुछ तो इंसान भी नहीं थीं, तो मानव समाज में पूरी तरह से अफरा-तफरी और दहशत फैल जाती। ये सफाईकर्मी बहुत कुशलता से, चुपचाप और तेज़ी से काम करते थे। यह अनुमान लगाना गलत नहीं होगा कि सफाईकर्मियों के पास भी कोई ऐसी शक्ति थी जिससे वे इतनी तेज़ी और चुपचाप खून-खराबे को साफ कर देते थे। जब तक वे अपना काम खत्म करते, तब तक किसी अप्रिय घटना का कोई निशान नहीं बचता था। यह सबके लिए अच्छा था: राक्षस नष्ट हो गए और इंसानों को इसकी भनक तक नहीं लगी। ऐनार और उदय जल्दी से उस अगली जगह की ओर चल पड़े जहाँ रूबी और जयंत ने उन्हें जाने के लिए कहा था। रूबी ने इतने सारे आधे-इंसानों को एक जगह इकट्ठा करने में अहम भूमिका निभाई थी और जयंत लगातार बता रहा था कि वे कहाँ हैं और कहीं छिपे हैं या नहीं। उसके बाद दोनों योद्धाओं के लिए सब कुछ आसान हो गया। लेकिन जब तक वे विनाश के अंत तक पहुँचे, किसी तरह कुछ अर्ध-राक्षसों को भनक लग गई कि मनुष्य उन्हें मार रहे हैं। भय और हताशा में उन्होंने भागने और छिपने की कोशिश की, लेकिन जयंत और तेजस उदय और ऐनार के साथ उनका पीछा करते रहे। वे इतने भयभीत और व्याकुल थे कि उनमें से कुछ सचमुच अपने मूल रूप, राक्षस में परिवर्तित हो गए। लेकिन वे कई पीढ़ियों से मनुष्य रहे थे, इसलिए अब वे खुद को ढाल नहीं पा रहे थे। जैसे ही उन्हें एहसास होता कि वे राक्षस बन गए हैं, उनका अच्छा पक्ष उन्हें वापस मनुष्य में बदल देता। जैसा कि गुरुजी ने कहा था, यह उनके लिए डॉ. जेकिल और मिस्टर हाइड जैसी स्थिति थी, बस फर्क इतना था कि परिवर्तन इतनी तेज़ी से हो रहा था कि वे उसे नियंत्रित नहीं कर पा रहे थे। कुछ लोग इस खतरनाक रूप से तेज़ परिवर्तन को सहन नहीं कर सके। उन्होंने हार मान ली और मर गए।

फिर भी, वे केवल छोटे, निहत्थे बच्चों को ही मार सकते थे। उन्होंने पहले भी मानव शिशुओं को मारकर खाया था। उसी समय वे अनजाने में, बिना किसी कारण के,

राक्षस बन गए। वे उदय और ऐनार का मुकाबला नहीं कर सके, जिन्होंने उन्हें एक ही झटके में मार डाला। फिर भी, कुछ राक्षस उस अफरा-तफरी में भागने में कामयाब हो गए। रूबी ने कुछ समय बाद यह देखा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

दो माताएँ

मैं

यह खबर सभी समाचार चैनलों और अखबारों में छाई हुई थी। देशभर से बच्चों को अगवा किया जा रहा था और अब तक एक भी बच्चा नहीं मिला था। परेशान माता-पिता पुलिस स्टेशनों, जिला प्रशासन के दफ्तरों, हर उस जगह पर गुहार लगा रहे थे जहां उन्हें अपने बच्चों को ढूंढने में मदद मिलने की उम्मीद थी। मुख्यमंत्रियों और यहां तक कि प्रधानमंत्री ने भी माता-पिता को आश्वासन दिया था कि बच्चों को ढूंढने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

'ये लोग राक्षस नहीं तो और कौन हैं?' ऐशानी का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। वे सब ऐशानी के घर पर बैठे थे। सब लोग वहाँ मौजूद थे: रूबी, उदय और तेजस भी। यह एक तरह का मिलन समारोह था, जिसका मकसद आइनार का ठीक से परिचय कराना था। उन्होंने बताया कि आइनार उन्हीं की तरह एक योद्धा है, बस स्वीडन से आया है।

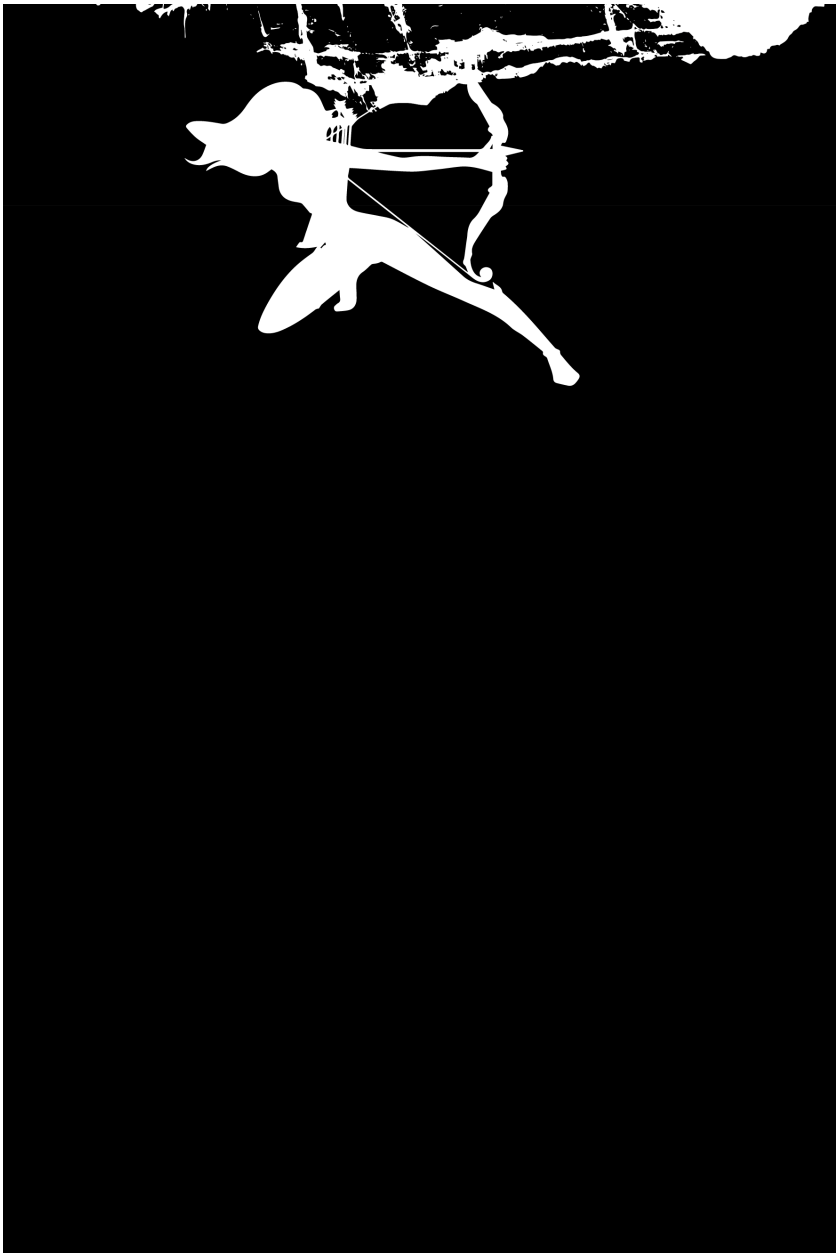

अधीश और ऐशानी ने बताया कि कैसे उनकी मुलाकात ऐनार से तब हुई जब वे गुरुकुल के बीमार और घायल लोगों के साथ हिमालय में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे।

उनका देश भी विभिन्न प्रकार के राक्षसों से भरा हुआ था। ऐनार ने अकेले ही कई राक्षसों का वध किया था और इसमें उन्हें आनंद भी मिलता था। वे हमेशा मानते थे कि राक्षसों का वध करना उनके समाज को सुरक्षित रखने में उनका छोटा सा योगदान था। लेकिन ऐनार हमेशा बेचैन रहते थे। उन्हें हमेशा लगता था कि उनकी आत्मा में कुछ कमी है, हालांकि उन्हें इसका कोई अंदाजा नहीं था। इस भावना के साथ-साथ उन्हें किसी खोज पर निकलने की तीव्र इच्छा भी थी। ऐनार में यह क्षमता थी कि जब भी वे किसी राक्षस से लड़ते, चाहे वे कितने भी घायल और टूटे हुए क्यों न हों, वे रात में आराम कर लेते और सुबह तरोताजा होकर लड़ने के लिए तैयार हो जाते। लेकिन वे इस बात से भी अवगत थे कि वे एक वृद्ध आत्मा हैं और इस पृथ्वी पर उनका अंत निकट है। इसीलिए वे बेचैन रहते थे।

अधीश और ऐनार की तुरंत ही अच्छी दोस्ती हो गई थी। ऐनार ने उनकी बहुत मदद की, हालाँकि ऐशानी इतनी व्यस्त थी कि उसने शायद ही इस बात पर ध्यान दिया हो। हिमालय में, उसे लगातार बड़ी मात्रा में गर्म पानी और तरह-तरह की जड़ी-बूटियों की ज़रूरत पड़ती थी, जो उसे बिना किसी सवाल के कल ही चाहिए होती थीं। अधीश और देवनाथ दोनों ही ऐशानी से उलझने की हिम्मत नहीं करते थे। वे जानते थे कि वह क्या कर रही है, समय के साथ जी-तोड़ मेहनत कर रही है और ज़ाहिर है, वे उसके गुस्से का सामना नहीं करना चाहते थे। लेकिन वे भी परेशान और तनावग्रस्त हो गए थे। जड़ी-बूटियाँ आसानी से नहीं मिलती थीं; उन्हें जो भी मिलता था, उसी में से चुनना पड़ता था। उनके पास पानी उबालने के लिए बड़े बर्तन नहीं थे, इसलिए किसी न किसी को हर समय पानी उबालने और बिना कुल्हाड़ी के लकड़ी काटने के लिए मौजूद रहना पड़ता था। ऐसे समय में, एक तीसरे हाथ का होना बहुत ज़रूरी था। हालाँकि ऐनार यह नहीं समझ पा रहा था कि इतने सारे बीमार और घायल लोग क्यों हैं, लेकिन वह स्थिति को तुरंत समझ गया और तुरंत काम पर लग गया। बाद में, जब मरीज़ों में सुधार के लक्षण दिखने लगे, तो ऐशानी ने ऐनार को देखा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक व्यक्ति, जो उन्हीं की तरह था लेकिन दूसरे देश से आया था, उनकी मदद ऐसे कर रहा था जैसे वे उसके अपने भाई-बंधु हों। आइनार ने अपने जीवन में ऐशानी जैसी स्त्री कभी नहीं देखी थी। उसके देश में बहादुर और सुंदर महिलाओं की कोई कमी नहीं थी। ऐशानी से शक्ति और सामर्थ्य की एक ऐसी आभा निकल रही थी जिसका उसे स्वयं भी एहसास नहीं था।

लगभग एक महीने बाद वह यहाँ था। आज उसका ऐशानी के परिवार से परिचय था, न केवल उसके करीबी परिवार से, बल्कि उनके समूह के सभी लोगों से। सहज रूप से, वह इस घर में हुए बड़े बदलावों के बारे में जानता था। वे भी अधीश के दोस्त के चुनाव से हैरान थे। वह उनसे बहुत अलग था, कम से कम शारीरिक रूप से। ऐनार में स्पष्ट रूप से नॉर्डिक विशेषताएं थीं। वह लंबा था, मजबूत चेहरे वाला, सुनहरे लगभग सफेद बाल, नीली भेदक आँखें, बड़े और सक्षम हाथ-पैर। उसकी सुंदरता और उसका एकांत स्वभाव ही उसे लड़कियों और महिलाओं के लिए इतना आकर्षक बनाता था। लेकिन ऐनार ने महिलाओं के ध्यान पर शायद ही ध्यान दिया, वह अपनी खोजों में इतना मग्न था। हिमालय में पर्वतारोहण और ट्रेकिंग उसे कुछ शांति प्रदान करते थे। वास्तव में, यही एकमात्र स्थान था जहाँ उसे घर वापसी का आभास होता था। वह हिमालय में कुछ भिक्षुओं के साथ रहा था जिन्होंने उसे आध्यात्मिकता और अपने पिछले जन्मों के बारे में कई बातें सिखाई थीं। स्पष्ट कारणों से उसने यह सारी जानकारी किसी के साथ साझा नहीं की। उसके कोई दोस्त नहीं थे; वह अकेला रहना पसंद करता था और इसी तरह रहना उसे अच्छा लगता था। वैसे भी, अगर वह अपने अनुभवों के बारे में किसी को बताता भी तो कोई उस पर विश्वास नहीं करता।

शुरुआत में, ऐनार को अकेलापन महसूस होता था क्योंकि उसके जैसा या उससे मिलता-जुलता कोई नहीं था। जब वह अधीश और ऐशानी से मिला, तभी उसे यह एहसास हुआ कि दुनिया में उसके जैसे और भी लोग हो सकते हैं। कैलाश में रोगियों के प्रति ऐशानी के समर्पण को देखकर वह दंग रह गया। वह उसके बारे में नहीं जानता था, लेकिन उसे पता था कि उसने बहुत बड़ा दुख झेला है और अभी भी शोक में डूबी हुई है। इसके बावजूद, पीड़ितों के प्रति उसकी पूरी लगन और देखभाल प्रेरणादायक थी। वे कई दिनों तक अथक परिश्रम करते हुए कुचले और टूटे हुए शरीरों की देखभाल करते रहे। इन लोगों के घाव अब धीरे-धीरे भर रहे थे। कभी-कभी, उनमें से एक-दो लोग बाहर जाकर आसपास के भव्य वातावरण को निहारते और उसकी सुंदरता का आनंद लेते थे। चारों ओर बर्फ थी, लेकिन उन्हें ठंड ज्यादा महसूस नहीं हो रही थी। देवनाथ ने उन्हें बड़े गर्व से बताया कि यह भगवान का निवास स्थान है, और यहाँ का तापमान यहाँ रहने वाले सभी लोगों के अनुकूल नियंत्रित किया जाता है। वे उसकी बात पर मुस्कुराए, लेकिन मन ही मन वे जानते थे कि यह एक सार्थक सिद्धांत है। उनमें से प्रत्येक को विश्वास था कि वे अपना शेष जीवन यहाँ पूर्ण संतोष और आनंद

के साथ व्यतीत कर सकते हैं। लेकिन ईश्वर की योजना उनके लिए कुछ और ही थी, और वह यह थी कि पृथ्वी के शेष भाग को कैलाश के समान सुंदर और पवित्र बनाया जाए।

ऐनार के लिए यह घर वापसी जैसा था जब वह रूबी, उदय और तेजस के साथ ऐशानी के परिवार से मिला। वह आश्चर्य और खुशी से अभिभूत था। यह सोचकर कि दुनिया में उसके जैसे और भी लोग हैं, एक ही स्तर पर, एक ही सोच के साथ। वह अब कोई अपवाद नहीं था। ये लोग बिल्कुल उसके जैसे थे, सोच और कर्म में भी, और आगे भी ऐसे ही लोग मिलेंगे। यहाँ हर कोई अलौकिक शक्तियों में विश्वास करता था। उसने भारत के बारे में पढ़ा और सुना था कि यह एक बहुत ही आध्यात्मिक देश है, लेकिन यह! यह तो बिल्कुल अविश्वसनीय था। उसके वर्षों का अकेलापन पल भर में मिट गया। उसे यह एहसास भी नहीं था कि वह अकेला है। इस 'सामान्य' परिवार से मिलने के बाद ही उसे एहसास हुआ कि वह अकेला इसलिए था क्योंकि वह किसी से भी अपनी भावनाओं और विश्वासों के बारे में बात नहीं कर पाता था। वे कोई सुपरहीरो या हीरोइन नहीं थे, बस कुछ खास शक्तियों वाले लोग थे। उसे एक और एहसास हुआ कि वहाँ मौजूद हर व्यक्ति किसी न किसी तरह ऐशानी के इर्द-गिर्द इकट्ठा हो रहा था। वह इस एहसास को ठीक से बता नहीं सकता था; बस इतना जानता था कि ऐसा ही है। उसे ऐसा लगा मानो ऐशानी भी अपने आस-पास के इस प्रभाव से अनभिज्ञ थी। उसके आस-पास इतने शक्तिशाली लोग थे, हर कोई विशेष शक्तियों से युक्त था।

धीरे-धीरे, उसके मन में ऐशानी के प्रति श्रद्धा का भाव विकसित होने लगा। मानो वही अंततः सभी राक्षसों का नाश करेगी और बाकी सब उसके इस प्रयास में उसकी सहायता करने के लिए मौजूद रहेंगे।

जब वे अपने घर और गुरुकुल लौट आए, तो ऐनार उन संन्यासियों के पास रहने चले गए जो उनका दीक्षा संस्कार पूरा करने वाले थे। दीक्षा संस्कार पूरा होने पर, संन्यासियों ने उन्हें बताया कि वे अपने परिवार के पास लौट आए हैं और यहीं वे अपना शेष जीवन व्यतीत करेंगे। ऐनार यही सुनना चाहते थे। हिमालय में रहने और अधीश और ऐशानी से मिलने के बाद, उन्हें भी लगा कि अब वे अपने लोगों के बीच हैं। खोज की इच्छा धीरे-धीरे कम हो रही थी। बेशक, उन्हें इन अद्भुत लोगों के बारे में बहुत कुछ सीखना था, लेकिन वह बाद में। फिलहाल, वे बस आनंद लेना चाहते थे, पल में जीना चाहते थे।

अधीश और ऐशानी दोनों को पता था कि ऐनार समय में यात्रा कर सकता है, हालाँकि उसने उनसे स्वीकार किया था कि वह ज़्यादा दूर तक यात्रा नहीं कर सकता, बस कुछ साल आगे-पीछे। इस बीच, गुरुकुल और ऐशानी के घर में बहुत कुछ घटित हो चुका था। ऐनार इन सब बातों से अनजान था, और उसे बताने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी। ऐनार ने जो देखा और अनुभव किया, वह एक प्रेममय परिवार था, जिसमें उनकी अपनी कुछ खास आदतें और शौक थे, और जो वह समझ पाया, वह था उनके बीच का अटूट बंधन। उसके मन में यह अवचेतन विचार था कि ये सभी प्राचीन आत्माएँ हैं जो अनगिनत जन्मों से एक-दूसरे से बंधी हुई हैं। उसने सोचा कि गुरुकुल अब तक देखे गए सबसे मनमोहक और सुंदर स्थानों में से एक है। वह जानता था कि गुरुकुल में कई ऐसे स्थान हैं जिन्हें वह कभी नहीं देख पाएगा क्योंकि वे सामान्य दृष्टि से छिपे हुए हैं और उनमें से कुछ को देखने से पहले उसे कई परीक्षाएँ देनी होंगी। लेकिन वह सब कुछ सहजता से लेने वाला था और नियत समय आने पर ही सब कुछ होने देगा।

उनकी मुलाकात गुरुजी से हुई, जो मोटे-ताज़े, दादाजी जैसे दिखने वाले साधु थे। ऐनार उनकी शक्ल-सूरत से धोखा नहीं खाए। गुरुजी की तेज़, चमकती आँखों ने कुछ और ही कहानी बयां कर दी। ऐशानी की तरह, गुरुजी से नज़रें मिलते ही ऐनार को भी एक तरह का खिंचाव महसूस हुआ। मानो वह गुरुजी को जन्म से बहुत पहले से जानते हों। उन्होंने गुरुजी के चरणों को छुआ, जैसा कि उन्हें हिमालय में उनके तपस्वी गुरुओं ने सिखाया था। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

'तुम हमारे ही हो; तुम यहीं के हो, तुम्हें यहाँ किसी खास मकसद से लाया गया है।' आइनार ने सिर हिलाया। वह जानता था कि अपने पालक परिवार से उसकी मुलाकात कोई संयोग नहीं थी। हिंदू दर्शन में एक कहावत है, 'आपको अपने भाग्य के अलावा कुछ नहीं मिलता और वह भी सही समय से पहले नहीं मिलता।' आइनार भी अब इस बात पर विश्वास करने लगा था।

'हम एक संकट का सामना कर रहे हैं। इस बार हमारे आदेश एक अधिक मानवीय स्रोत से आए हैं। फिर भी वह एक बेहद मजबूत व्यक्ति हैं, वास्तव में सरकारी तंत्र में सबसे मजबूत।'

तीनों गुरुजी की बात ध्यान से सुनने के लिए आगे झुक गए। गुरुजी ने उन्हें बताया, "यद्यपि वे सभी मनुष्य हैं, फिर भी वे सामान्य मनुष्यों से भिन्न हैं। वास्तव में आपको उनकी पहचान जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। इतना ही काफी है कि हमें किसी

भी प्रकार की आवश्यकता पड़ने पर हर संभव सहायता का आश्वासन दिया गया है।" उन्होंने इंतजार किया।

गुरुजी ने बिना किसी संकोच के आगे कहा, "पिछले कुछ महीनों में बच्चों के अपहरण की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। इनमें से कोई भी मामला अनसुलझा है। कुछ मामलों में, कुछ नवजात शिशुओं के शव नीले पड़ गए हैं। उनकी मृत्यु का कारण एक घातक जहर है। शरीर पर संघर्ष के कोई निशान या घाव के निशान भी नहीं हैं। सभी शिशुओं की उम्र छह महीने से अठारह महीने के बीच है। ऐसा लगता है कि उनका अपहरण बेचने के लिए नहीं किया गया है। उनका अपहरण केवल किसी राक्षसी स्त्री की मातृत्व की भावना को शांत करने के लिए किया गया है।"

उन्होंने धैर्यपूर्वक सुना। अब उन्हें किसी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था। कुछ भी संभव था, चाहे कितना भी विचित्र क्यों न हो। अब तक वे जान चुके थे कि हर दानव का अपना एक मकसद होता है और अपना एक स्वार्थ होता है। अंततः, इसका परिणाम किसी न किसी तरह से मानव जाति का विनाश ही होता है। वर्तमान संकट उनके लिए थोड़ा चौंकाने वाला था। उन्होंने दानवों में मातृत्व की भावना के बारे में नहीं सुना था। वे दानवों के बारे में इतना ही जानते थे कि अत्यधिक भूख लगने पर वे बिना किसी संकोच के अपने बच्चों को खा जाते हैं। इस विशेष दानवनी में मातृत्व की भावना इतनी प्रबल प्रतीत होती थी कि वह परिणामों की परवाह किए बिना एक मानव बच्चे को भी खिलाना चाहती थी। 'ऐसा प्रतीत होता है कि इस दानवनी का बच्चा एक मानव योद्धा के साथ हुई झड़प में मारा गया, जब वह अभी भी दूध पी रहा था। दानव का बच्चा अपनी माँ से दूर रेंग गया था। एक महिला योद्धा ने उसे देखा और वह समझ नहीं पाई कि क्या करे। सभी बच्चे प्यारे और मासूम होते हैं, और यह भी कोई अपवाद नहीं था। उसने बच्चे को इस इरादे से उठाया कि उसे किसी सुरक्षित स्थान पर छोड़ देगी जहाँ उसकी माँ उसे ढूंढ लेगी। दुर्भाग्यवश, जब राक्षसी को अपने बच्चे को दूध पिलाने की आवश्यकता महसूस हुई, तो उसने पाया कि बच्चा गायब है। वह क्रोधित हो उठी, अपने बच्चे की तलाश में निकली और उसे एक मनुष्य के साथ पाया। बिना सोचे-समझे उसने उस महिला योद्धा पर हमला कर दिया। भयंकर संघर्ष के बाद, दोनों योद्धा बच गईं, लेकिन दुर्भाग्य से राक्षसी शिशु की मृत्यु हो गई। राक्षसों में मातृत्व की भावनाएँ न के बराबर होती हैं; जो भी भावनाएँ होती हैं, वे केवल तब तक ही रहती हैं जब तक बच्चा दूध पीता है। चूंकि राक्षसी को इस भावना की संतुष्टि नहीं मिल पाई,

इसलिए यह इच्छा उसके मन में गहराई से बैठ गई। 'उस घटना के बाद, वह हमेशा बच्चों की तलाश में रहती थी। वह एक सुंदर स्त्री का रूप धारण कर लेती और मनुष्यों के साथ घुलमिल जाती। उपयुक्त अवसर मिलते ही, राक्षसी एक छोटे मानव शिशु को चुरा लेती और उसे दूध पिलाने के लिए जंगल की ओर दौड़ पड़ती। लेकिन वह राक्षसी का विषैला दूध होता था। कोई बचाव नहीं था, बच्चों को मरना ही था, और वे मर गए।' गुरुजी ने आगे कहा, 'न केवल इस राक्षसी का नाश करना है, बल्कि इसकी मृत्यु की रस्म भी असामान्य तरीके से करनी होगी।' गुरुजी ने जोर देकर कहा, 'इसकी हड्डियाँ और बाल जला देने चाहिए और इसका मांस, विशेषकर स्तन, चीरकर दफना देना चाहिए। तभी यह प्रचंड मातृत्व वृत्ति किसी अन्य राक्षसी में स्थानांतरित नहीं होगी।'

वे तीनों गुरुजी के चरणों में चुपचाप, भावहीन चेहरों के साथ बैठे रहे, अपने विचारों और भावनाओं को चेहरे पर ज़ाहिर नहीं होने दिया। किसी राक्षस या राक्षसों को साफ़-सुथरा मारना एक बात थी। लेकिन शरीर को टुकड़ों में काटकर, फिर उसका दाह संस्कार और दफ़नाना, ये सब बहुत ही भयानक हो जाता था। कितना खौफनाक होगा ये! गुरुजी ने उनकी ओर देखा और समझ गए। वे उनके गुरु यूँ ही नहीं थे, 'आपको राक्षस के शरीर के अंतिम संस्कार की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। ये काम आपके साथ आने वाले शवदाह करने वाले कर देंगे। आपको बस उस राक्षसी को मारना है।'

हालांकि उनके चेहरे अभी भी भावहीन थे, गुरुजी उनमें राहत महसूस कर सकते थे। वे उनके मेधावी शिष्य थे, जो अंत्येष्टि और दाह संस्कार से कहीं अधिक महान कार्यों के लिए बने थे।

गुरुजी ने उन्हें निर्देश दिया, ‘अगर रूबी आपके साथ टीम में हो तो बेहतर होगा।’ सबने एकमत से सिर हिलाया। ऐशानी ने राहत की सांस ली। गुरुकुल के विध्वंस के बाद रूबी से दिल खोलकर बात करने का समय सचमुच नहीं मिला था। रूबी के पास भी उससे साझा करने के लिए कई अनुभव थे। अभी भी ऐशानी को नहीं पता था कि उन्हें कभी एकांत का समय मिलेगा या नहीं, लेकिन वह रूबी की संगति को संजोकर रखती थी और खुश थी कि रूबी उनके साथ होगी। अधीश रूबी के साथ सहज महसूस कर रहा था और ऐनार रूबी की सुंदरता पर मोहित था। उसके देश में सुंदर महिलाओं की कमी नहीं थी, लेकिन रूबी की अलौकिक सुंदरता पृथ्वी पर किसी से कम नहीं थी।

उसके संपर्क में आने वाले पुरुषों के आसपास उसका व्यक्तित्व सूक्ष्म रूप से बदल जाता था, जिससे वे दीवाने हो जाते थे और हर समय उसके साथ रहना चाहते थे। ऐनार रूबी की शक्तियों से पूरी तरह अवगत नहीं था, लेकिन वह जानता था कि वह पूरी तरह से पृथ्वी की प्राणी नहीं थी।

अधीश, ऐशानी और ऐनार इस कस्बे में डेरा डाले हुए थे। गुरुजी ने उन्हें यहाँ भेजा था। उन्हें सूचना मिली थी कि राक्षसी इस कस्बे के आसपास कहीं है। जब वे वहाँ गए, तो उन्हें समझ आया कि वह राक्षसी यहाँ लंबे समय से क्यों थी। कस्बे के बाहरी इलाके में घना जंगल था जो उस राक्षसी के लिए एकदम सही था। वह किसी बच्चे को उठाती, जंगल में भागती, उसे खिलाती और बच्चे के मरने के बाद उसे वापस कस्बे में फेंक देती। देवनाथ के साथ गुरुकुल के दो शवदाह करने वाले भी उनके साथ थे। देवनाथ इस क्षेत्र में अपनी वीरता और विशेषज्ञता साबित करने का इतना बड़ा मौका नहीं छोड़ना चाहता था। वैसे इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी: अधीश देवनाथ की काबिलियत से भली-भांति परिचित था। शायद देवनाथ खुद को कुछ साबित करना चाहता था। मृतकों और उनके शरीरों से संपर्क करना उसकी खासियत थी। अधीश ने भी माना कि देवनाथ इस मिशन में बहुत मददगार साबित होगा। पाँचों एक साथ बैठे और अपनी रणनीति पर चर्चा की। वे यह अनुमान नहीं लगा सकते थे कि राक्षसी कब किसी बच्चे का अपहरण कर लेगी। राक्षसी और मनुष्य स्त्री में अंतर करना कठिन था क्योंकि यह राक्षसी मनुष्य स्त्री का रूप धारण कर लेती थी। केवल देवनाथ ही उनकी विशिष्ट गंध के कारण राक्षसों को पहचान पाते थे। मनुष्य रूप में, राक्षसी इतनी मनुष्यी गंधों से ढकी होती थी कि कोई भी उसे पहचान नहीं पाता था। दो शवदाह करने वाले भी उनसे उचित दूरी पर बैठे थे। उनके नाम छाया और मुकुंद थे। वे गुरुकुल के अदृश्य लोग थे, दिखाई तो देते थे लेकिन किसी का ध्यान उन पर नहीं जाता था। गुरुकुल के अन्य लोगों की तरह वे भी योद्धा थे, लेकिन उन्हें युद्धकला की केवल बुनियादी जानकारी थी—केवल इतना कि वे खुद को किसी छोटे राक्षस से बचा सकें या उसे रोक सकें। वे लगभग समझ चुके थे कि वे इस विशिष्ट समूह के साथ क्यों हैं। छाया किसी को भी शक हुए बिना किसी को भी या किसी भी चीज को पृथ्वी के भीतर गहराई में दफनाने में माहिर थी। इसी प्रकार, मुकुंद किसी भी चीज को जला सकता था और जरूरत पड़ने पर आग या उससे निकलने वाले धुएं का पता सबसे आधुनिक मशीनों से भी नहीं लगाया जा सकता था। अधीश ने अधीरता से कहा,

"खैर, हम यहाँ हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रह सकते, इस उम्मीद में कि वह राक्षसी प्रकट होगी और किसी बच्चे का अपहरण कर लेगी। समय तेजी से बीत रहा है।"

'अधीश, अगर हमारे पास कोई चारा हो तो हम इस राक्षसी को जंगल की ओर लुभाकर मार सकते हैं,' यह आइनार था।

'ये तो बहुत बढ़िया विचार है, आइनार, लेकिन हमें चारा कहाँ से मिलेगा? इस मामले में चारा सिर्फ़ एक बच्चा ही हो सकता है। हमारे पास बच्चा नहीं है और कोई भी माँ अपने बच्चे को राक्षस को लुभाने के लिए नहीं देगी। हालाँकि हम अपनी पूरी कोशिश करेंगे, लेकिन हम बच्चे के जीवित रहने की गारंटी नहीं दे सकते।' रूबी, जो उनकी बातचीत को बड़े ध्यान से सुन रही थी, अचानक बोली, 'मैं आपको एक इंसान का बच्चा दिला सकती हूँ।' सब लोग अविश्वास से उसकी तरफ देखने लगे।

'रूबी, तुम्हें बच्चा कहां से मिलेगा? ये सब बकवास है! कौन तुम्हें अपना बच्चा देगा? हम किसी से बच्चा छीन नहीं सकते,' ऐशानी झुंझला गई।

'ज़्यादा सवाल मत पूछो, लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ कि माता-पिता इस नेक काम के लिए खुशी-खुशी बच्चे को हमें सौंप देंगे और मुझे पता है कि मेरे आस-पास इतने अच्छे लोग हैं, इसलिए बच्चे को कोई नुकसान नहीं होगा।' ऐशानी ने रूबी को गौर से देखा, लेकिन रूबी ने उसकी आँखों में देखने से इनकार कर दिया। एक गहरी साँस लेते हुए, ऐशानी चुप रही, उसे शक था कि रूबी जो बता रही है, उससे कहीं ज़्यादा कुछ और भी है। उसने आह भरी। उसे रूबी के साथ किसी शांत जगह पर बैठकर काफ़ी समय लेकर उससे सच निकलवाना होगा, शायद उसे अपनी कुछ सच्चाई बतानी पड़े और बदले में असली कहानी पता चले। फिर भी, रूबी शायद कुछ भी कबूल न करे या कुछ भी न बताए। लेकिन अभी इन सब बातों के लिए समय नहीं था। उसने अधीश की तरफ देखा। वह उसे भावहीन, बेफिक्र होकर देख रहा था। मर्दों का यही हाल होता है, उसने सोचा। जो बात औरतों के लिए इतनी बड़ी होती है, वो उनके लिए कोई मायने नहीं रखती। खैर, बाद में इन दोनों से निपटना होगा। अब उन्हें या तो चारा चाहिए था या बच्चा।

रूबी उनकी तरफ मुड़ी, 'मैं कल दोपहर को बच्चे को लेकर आऊंगी। फिर हम बाजार जाएंगे। वह बहुत चहल-पहल वाली जगह है। औरतें वहां घरेलू सामान खरीदने जाती हैं। उनमें से कुछ अपने बच्चों के साथ होंगी। उम्मीद है, वह राक्षसी भी वहां होगी। हम शायद पहचान न पाएं, लेकिन देवनाथ जान जाएगा। जब वह इशारा करेगा, तो मैं

जानबूझकर बच्चे को किसी कुर्सी या किसी और चीज पर सामान खरीदने के बहाने छोड़ दूंगी। बच्चे को अकेला देखकर राक्षसी उसे जल्दी से लेकिन चुपचाप उठा लेगी और उसे खिलाने के लिए जंगल की तरफ भाग जाएगी।' रूबी ने एक पल के लिए अपनी आंखें बंद कर लीं। एक बार फिर, ऐशानी को लगा कि रूबी कुछ छिपा रही है। अचानक ऐसा लगा जैसे पासा पलट गया हो। रूबी हमेशा से अनुयायी और रक्षक रही थी, कभी नेता नहीं। हालांकि अधीश और ऐशानी ने इसे कभी खुलकर स्वीकार नहीं किया, लेकिन अपने मन में वे जानते थे कि हर कोई अपने नेता के लिए खुशी-खुशी अपनी जान दे देगा। भूमिका में यह बदलाव, भले ही क्षणिक था, काफी आश्चर्यजनक था, हालांकि पूरी तरह अप्रिय नहीं था। वे दोनों अंतिम संस्कार करने वाले मुकुंद और छाया के साथ अपनी रणनीति पर चर्चा करने के लिए बैठ गए। अधिश और ऐनार बाज़ार में उन जगहों की तलाश में जुट गए जहाँ महिलाओं के खरीदारी करने की सबसे अधिक संभावना थी। पूरी टीम वहाँ मौजूद होगी, लेकिन देवनाथ ही उस राक्षसी को ढूँढ़ने वाला था। यह उसका मौका था, और बाज़ार में भीड़ जमा होने से पहले वह कुछ मिनटों तक इतराता रहा। रूबी भी बच्चे के साथ खरीदारी करने वालों में शामिल होगी। रूबी बाज़ार में भीड़भाड़ के ठीक पहले पहुँची। उन्हें यकीन था कि राक्षसी वहाँ पहले ही आ जाएगी ताकि उसे दूध पिलाने के लिए कोई बच्चा मिल जाए। वे बाज़ार में बेतरतीब ढंग से घूमते रहे, उनकी इंद्रियाँ सतर्क थीं, लेकिन देवनाथ की तरफ से कोई संकेत नहीं मिला। अब दोपहर ढल चुकी थी। बाज़ार की चहल-पहल अपने चरम पर थी। अधिश का दल बेचैन होता जा रहा था। कुछ देर बाद शाम हो जाएगी, और भीड़ कम होने लगेगी। बहुत जल्द खाना बनाने और बच्चों को सुलाने का समय हो जाएगा। अगर राक्षसी हमला करती, तो अभी करती, वरना अपहरण नहीं हो पाता। 'किसने सोचा था कि हम सच में किसी बच्चे का अपहरण करवाना चाहेंगे, वो भी रूबी के बच्चे का,' ऐशानी ने अधीश से फुसफुसाते हुए कहा और शर्म से अपना मुंह ढक लिया। वो क्या कह रही थी! रूबी तो बस एक दोस्त का बच्चा ला रही थी और उन्हें बच्चे को बचाना था और रूबी को वापस देना था ताकि वो उसे उसके माता-पिता को लौटा दे। अधीश उसे भावहीनता से देख रहा था। हे भगवान, उसे पता था! या उसने भी यही अनुमान लगाया था! लेकिन उसने क्या अनुमान लगाया था? दोनों रूबी की ओर मुड़े और देखा कि वो बच्चे को कैसे पकड़े हुए थी। पहली बार उसने रूबी के चेहरे पर तनाव देखा। बच्चा रूबी की बाहों में बिल्कुल सहज था। इसके और भी कारण हो

सकते हैं, जैसे बच्चे से उसकी जान-पहचान। लेकिन अगर बच्चा उसका होता, तो ये उसके जीवन का सबसे बड़ा बलिदान होता। जब अधीश और ऐशानी ने एक-दूसरे को देखा, तो उनकी आँखों ने सब कुछ कह दिया। उनकी आँखों ने एक-दूसरे से वादा किया कि वे बच्चे को कुछ भी नहीं होने देंगे।

इसी बीच रूबी ने बच्चे को उसकी गाड़ी में बिठा दिया और दुकान में कुछ चूड़ियों और कंगनों में व्यस्त हो गई। ऐनार पूरी तरह सतर्क था। दरअसल, उसकी इंद्रियाँ हमेशा दूसरों से कहीं ज़्यादा तेज़ थीं। आज जिस मुकाम पर वह था, वहाँ पहुँचने के लिए उसने बहुत अभ्यास और ध्यान किया था। उसने अपनी आँखों के कोने से देवनाथ को एक बहुत ही सूक्ष्म इशारा करते देखा। यह एक महिलाओं की दुकान थी और वे उससे कुछ दूरी पर खड़ी थीं। दुकानदार के चारों ओर कई महिलाएँ जमा थीं, जो कुछ न कुछ देखने की माँग कर रही थीं। उनमें से कुछ के बच्चे थे, लेकिन वे दो से चार साल की उम्र के लग रहे थे, स्तनपान की अवस्था में नहीं। रूबी के साथ वाला बच्चा ही लगभग आठ महीने का था। देवनाथ का इशारा बहुत ही सहज था, जैसे किसी मक्खी को भगा रहा हो, लेकिन ऐनार तुरंत सतर्क हो गया। वह अपने रंग और चेहरे की बनावट के कारण दुकान के ज़्यादा पास नहीं जा सकता था। लेकिन दूर से भी वह उस राक्षसी को पहचान गया था। गहरी काजल लगी आंखों, सुगंधित शरीर, बेदाग ढंग से पहनी हुई साड़ी और घने लंबे बालों के साथ वह बेहद खूबसूरत थी। अब तक वह राक्षसी रूबी और बच्चे के आसपास मंडराने लगी थी। भले ही रूबी को बच्चे के पास किसी खतरे का आभास था, उसने कोई संकेत नहीं दिया और शांत भाव से चूड़ियाँ चुनती रही। टीम के किसी भी सदस्य के कुछ समझ पाने से पहले ही, उस राक्षसी ने बच्चे को एक झटके में प्रैम से बाहर निकाला, उसे अपनी साड़ी के पल्लू में छिपाया और लगभग उड़ते हुए जंगल की ओर चली गई।

तुरंत ही वे सब मुड़कर उस राक्षसी के पीछे दौड़ पड़े। वे अलग-अलग दिशाओं से लगभग बिजली की गति से भागे। गति यहाँ सबसे महत्वपूर्ण कारक थी। राक्षसी को बैठकर बच्चे को दूध पिलाने की अनुमति नहीं दी जा सकती थी। अब तक वह राक्षसी किसी शांत, एकांत जगह की तलाश में होगी जहाँ वह बच्चे को दूध पिला सके और प्यार कर सके, भले ही वह एक मानव बच्चा ही क्यों न हो जिसे वह आसानी से खा सकती थी। यह भाग्य का विचित्र खेल था, लेकिन उसने अपने बच्चे की मृत्यु के बाद भी दूध पिलाना जारी रखा होगा। उसकी मातृत्व भावना चरम पर पहुँच गई थी।

दिक्कत यह थी कि कोई भी बच्चा उसका खून पचा नहीं सकता था क्योंकि यह मानव बच्चों के लिए विषैला था। राक्षसी के पीछे भागते हुए, ऐशानी को रूबी का चेहरा दिखाई दिया। रूबी के हाथ उसकी छाती पर थे, उसकी आँखें बंद थीं और उसका चेहरा स्लेट जैसा सफेद था। ऐशानी के पास सोचने का समय नहीं था, लेकिन वह छवि उसके मन में बस गई। वह दूसरों के साथ उस राक्षसी के पीछे दौड़ी, जो सौभाग्य से अभी भी एकांत जगह की तलाश में थी। अब तक बच्ची भी बेचैन होने लगी थी, जिससे राक्षसी को उसे खिलाने का और प्रोत्साहन मिला। आखिरकार, उसे पेड़ों के झुरमुट में एक जगह मिल गई। अधीश और ऐनार अपने हथियारों के साथ तैयार थे। अधीश के पास उसका विशेष धनुष और बाण था, जो राक्षसों को घायल और मार सकता था, लेकिन उसे इसका इस्तेमाल बहुत सोच-समझकर करना होगा क्योंकि बच्ची बीच में थी। ऐनार के साथ भी यही हाल था। उसके पास ग्राम नाम की तलवार थी। ग्राम का इस्तेमाल नॉर्दिक पौराणिक कथाओं में ड्रैगन को मारने के लिए किया जाता था। लेकिन चुनौती वही थी। बच्ची को हर कीमत पर बचाना था। अधीश ने ऐनार की ओर देखा। उनके बीच एक समझ विकसित हुई। ऐनार अपनी तलवार लेकर राक्षसी की ओर दौड़ा जबकि अधीश ने वहीं से अपना बाण साधा। राक्षसी इतनी मग्न थी कि उसने उन्हें देखने में एक पल की देरी कर दी, और अधीश और ऐनार को बस एक पल की ही जरूरत थी। अधीश ने उसके पैरों पर निशाना साधा और ऐनार ने उसके कंधों पर वार किया। राक्षसी एक पेड़ के ठूंठ पर बैठी थी। वह गिरी नहीं, बल्कि ज़मीन पर लुढ़क गई। बच्चा ज़मीन पर गिरकर रोने लगा। राक्षसनी अब बच्चे को दूध पिलाने के लिए बेताब थी। उसे अपने कटे हुए हाथों और पैरों का दर्द महसूस नहीं हो रहा था। अब करो या मरो। अगर वह बच्चे को अभी दूध नहीं पिला पाई, तो उसकी दिली इच्छा पूरी होने से पहले ही बच्चा मर जाएगा। दर्द, क्रोध और प्रेम से भरी एक गर्जना के साथ, वह बच्चे पर गिर पड़ी और उसे दूध पिलाने की कोशिश करने लगी। ऐशानी दूर से यह सब तमाशा देख रही थी। एक और मिनट में बच्चा राक्षसनी के थनों तक पहुँच जाएगा, उन्हें चूसने लगेगा और मर जाएगा। ऐसा नहीं होने दिया जा सकता! उसने बेचैनी से सोचा। इस उन्माद में उसके मन में केवल एक ही विचार आया। उसने धनुष से बाण निकाला और एक ही वार में राक्षसनी के थन काट दिए। एक पल के लिए, किसी को समझ नहीं आया कि क्या हुआ, राक्षसनी को तो बिल्कुल भी नहीं। फिर क्रोध, दर्द और हताशा से भरी एक चीख के साथ वह अपने

शत्रुओं की ओर मुड़ी। अधीश और ऐनार ने स्थिति को तुरंत भांप लिया था और चूंकि ऐनार पास ही था, इसलिए वह राक्षस पर तब तक वार करता रहा जब तक वह मर नहीं गया। अधीश तुरंत ऐशानी के पास पहुंचा और उसके साथ शव ले जाने वाले भी आ गए। 'शाबाश, ऐनार!' अधीश और ऐनार ने एक तरह से हाई फाइव किया। ऐनार ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा, 'यह तो रोज़ का काम है।' उन्होंने राक्षस के शव को शव ले जाने वाले छाया और मुकुंद के पास छोड़ दिया। ऐशानी ने शिशु को प्यार से अपनी बाहों में उठाया और उसके खून से सने चेहरे को हाथों से पोंछने की कोशिश की। बच्चा फिर से रोने लगा था। वह भूखा था और उसे ज्यादा हिलना-डुलना पसंद नहीं था, यहां तक कि गिरना भी। ऐशानी और अधीश बच्चे को लेकर बाजार की ओर दौड़े। ऐनार थोड़ा धीरे-धीरे उनके पीछे-पीछे चला। बाजार के पास कहीं अधीश ने ऐशानी को रोका, 'ऐश, मुझे पता है कि हम बच्चे को उसके माता-पिता को सौंपने की जल्दी में हैं, भगवान जाने वे किस तनाव से गुजर रहे होंगे।' क्या आपको नहीं लगता कि बच्चे को थोड़ा साफ कर देना बेहतर होगा? यह तो लगभग राक्षस के खून से सना हुआ है। अगर माता-पिता बच्चे को इस हालत में देखेंगे तो और भी घबरा जाएंगे।' उसने जल्दी से बच्चे को साफ किया। यह भी पसंद न आने पर बच्चा जोर से रोने लगा, जिससे उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। ऐशानी रुक गई। बात समझ में आ गई। एक बार फिर रूबी का पीला चेहरा उसकी आंखों के सामने आ गया। आइनार उनके पास आ गया था। 'मेरे पास पानी की बोतल है,' उसने बोतल ऐशानी को दी, जिसने झटपट बच्चे का चेहरा धो दिया।

तब तक वे बाज़ार के बाहरी इलाके में पहुँच चुके थे। रूबी वहाँ बेसब्री से उनका इंतज़ार कर रही थी। उसने ऐशानी की गोद से बच्ची को छीन लिया और उसे लेकर एक दुकान के पीछे भाग गई, जो तब तक बंद हो चुकी थी। ऐशानी उसके पीछे भागने की कोशिश कर रही थी, लेकिन अधीश ने उसका हाथ पकड़ लिया। 'थोड़ी देर रुको, फिर उसके पास जाओ,' उसने धीरे से कहा। 'उसे फिर से संभलने का समय दो।'

ऐशानी अवाक रह गई और अधीश को घूरने लगी। यहाँ तक कि वह अभी भी अनुमान ही लगा रही थी और अधीश समझ गया था। ऐनार भी समझ गया था, हालाँकि उसे उनकी पिछली कहानी नहीं पता थी। ऐशानी कुछ देर रुकी, फिर दुकान के पीछे गई जहाँ रूबी बच्चे के साथ बैठी थी। बच्चा रोना बंद कर चुका था और अब आराम से माँ का दूध पी रहा था। रूबी की आँखें बंद थीं। ऐशानी के पास होने का आभास होते ही

उसने आँखें खोलीं। ऐशानी उसके पास जाकर बैठ गई। रूबी ने अपना सिर ऐशानी के कंधे पर रखा और फिर से आँखें बंद कर लीं। उसकी बंद आँखों से कुछ आँसू बह निकले। धीरे से उसने कहा, 'ऐश, मैं तुम्हें बताना चाहती थी लेकिन जब भी मैं तुमसे बात करना चाहती थी, तुम उपलब्ध नहीं थे,' उसके होंठों से एक सिसकी फूट पड़ी। 'शश...रूबी...शश, कुछ मत कहो, सब कुछ बताने के लिए बहुत समय है। राहत को महसूस करो और अपने बच्चे से प्यार करो। जब तुम पूरी तरह से शांत हो जाओगी, तब हम इस बारे में बात करेंगे।'

आत्मा का आदान-प्रदान

टी

वे सब एक साथ चल रहे थे: अधीश और ऐनार आगे, ऐशानी और रूबी उनके पीछे, उदय और जयंत उनके पीछे-पीछे। तेजस भी टीम का हिस्सा था, लेकिन वह पेड़ों पर कूदते हुए उनके साथ चलना पसंद करता था। देवनाथ हर जगह मौजूद था। इन दोनों को तभी बुलाया जाता जब कोई गंभीर स्थिति होती। तब तेजस और देवनाथ को नियमों का पालन करना पड़ता। वे निचले हिमालयी क्षेत्र में फैले कई जंगलों में से एक में आराम से नियमित निगरानी कर रहे थे। उन्हें जंगल के इस हिस्से में किसी राक्षस के होने की सूचना नहीं दी गई थी। यह लगभग छुट्टी जैसा था, और वे उतने सतर्क नहीं थे जितने कि राक्षसों का शिकार करने और उन्हें मारने के अभियान में होते। 'अदीश, मुझे पेड़ों और झाड़ियों के आसपास कुछ धुंधली आकृतियाँ दिखाई दे रही हैं,' जयंत ने अधीश से कहा।

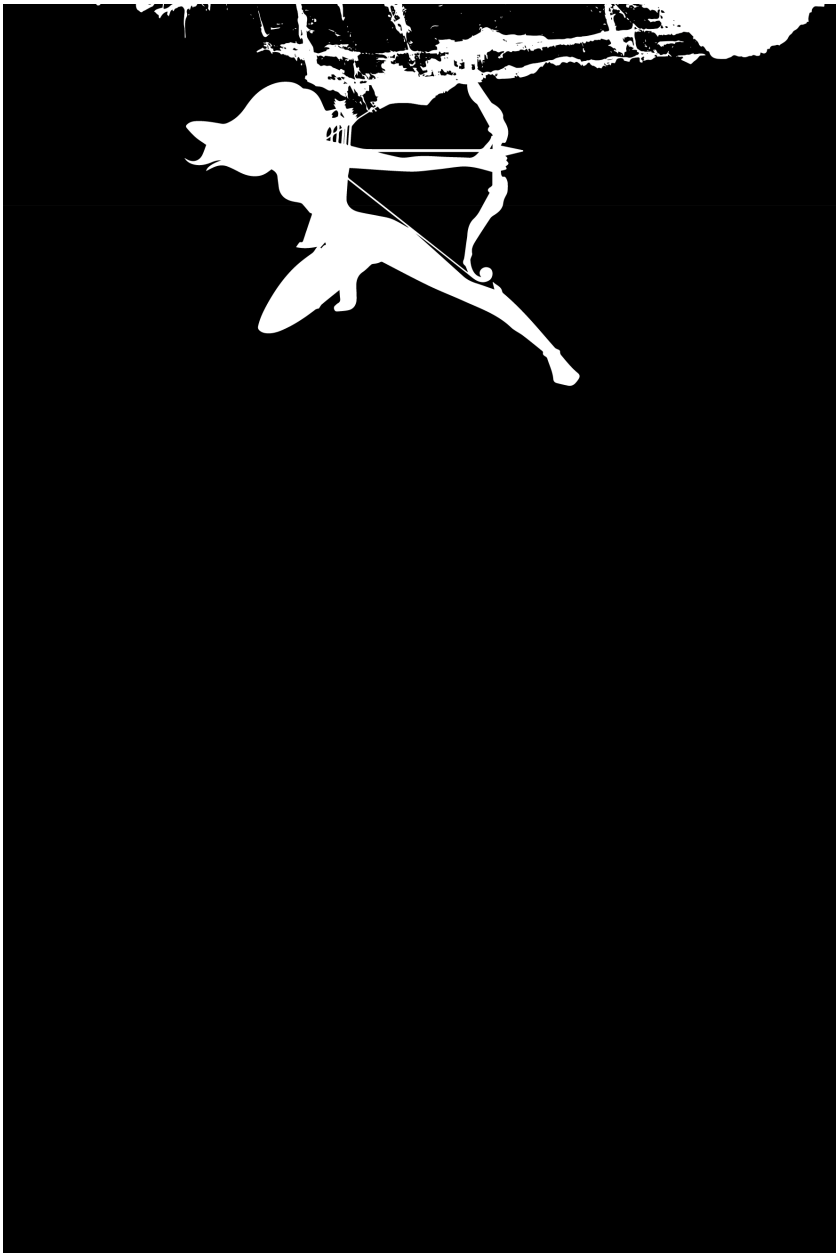

‘क्या ऐसा है? चलो उनके पास जाकर उन्हें देखते हैं,’ ऐसा कहते हुए वह जयंत के पीछे-पीछे पेड़ों के झुरमुट की ओर चल पड़ा।

‘देखो! मुझे उस पेड़ के पास एक बड़ी हिलती हुई परछाई दिखाई दे रही है।’
‘ठीक है,’ अधीश उस पेड़ के पास गया और जयंत द्वारा बताए गए स्थान पर अपनी विशाल तलवार घुमाई, लेकिन कोई राक्षस प्रकट नहीं हुआ और उसकी तलवार हवा में सरसराती हुई निकल गई।
‘यंत, यहाँ कुछ नहीं है, शायद शाम की रोशनी ने तुम्हें भ्रमित कर दिया हो,’ अधीश मुस्कुराया, ‘चलो जयंत, बुरा मत मानो, तुम्हारे साथ पहले भी ऐसा हो चुका है। तुम्हें चीजें गलत दिखाई देती हैं।’
‘ठीक है अधीश, अगर तुम ऐसा कहते हो,’ जयंत ने जवाब दिया, वह अधीश के तर्क से बिल्कुल सहमत नहीं था। अज्ञात और अदृश्य को देखना उसका काम था। उसे यकीन था कि अदृश्य जीव होते हैं, लेकिन जैसे ही कोई इंसान उनके पास जाता, वे तुरंत अपना रूप बदल लेते या हवा में गायब हो जाते। सालों से जयंत ने अपने कौशल को इतना निखारा था कि वह किसी भी नकारात्मक शक्ति की उपस्थिति को सहज रूप से महसूस कर सकता था, मानो वह उनके विचारों को पढ़ सकता हो। जब उसने अधीश और बाकी लोगों को जंगल में बेफिक्र घूमते देखा तो उसे बिलकुल अच्छा नहीं लगा। उसने पीछे मुड़कर देखा। ऐशानी और रूबी किसी बेवकूफी भरी बात पर हंस रही थीं। आगे अधीश और ऐनार बातें करते हुए टहल रहे थे। उदय उनसे थोड़ा पीछे था, बातचीत में हिस्सा नहीं ले रहा था—यही तो उदय था, हमेशा अकेला रहने वाला। यह कहना कि वे अचानक पकड़े गए, कम होगा। वे थोड़े लापरवाह थे, और इसी वजह से उन्होंने अपने समूह के दो सबसे महत्वपूर्ण सदस्यों की जान गंवा दी।
गुरुकुल पर हमले के बाद, राक्षस आत्मविश्वास से भर गए थे, घमंडी हो गए थे और जोखिम लेने के लिए बेताब थे। वैसे भी, राक्षस कभी अनुशासित नहीं होते थे और इस समय वे अहंकार और बहादुरी से भरे हुए थे; वे अब कोई भी जोखिम उठाने को तैयार थे, चाहे वह कितना भी छोटा या मूर्खतापूर्ण क्यों न हो। अधीश और ऐनार के साथ भी ठीक यही हुआ, बस फर्क इतना था कि वे सतर्क नहीं थे। अधीश और ऐनार मानसरोवर और कैलाश में बिताए अपने दिनों को याद कर रहे थे। उदय अनजाने में उनकी बातें सुन रहा था। कहानी सुनकर वह दंग रह गया। वह सोच रहा था कि उसने अपने जीवन की सबसे खतरनाक परीक्षा झेली है! लेकिन उसका बुरा सपना अधीश और ऐशानी पर आई विपत्ति के सामने कुछ भी नहीं था। आम तौर पर, उदय कभी किसी की बातें नहीं सुनता, अधीश और ऐनार की तो बात ही छोड़िए, लेकिन यह

मामला इतना चौंकाने वाला था कि वह थोड़ा और करीब चला गया। अचानक एक विशाल राक्षस उनके सामने कूद पड़ा। वह देखने में एक हट्टे-कट्टे बूढ़े आदमी जैसा लग रहा था, लेकिन उसकी आकृति भले ही इंसान जैसी थी, पर उसका चेहरा शेर जैसा था और उसकी पूंछ बिच्छू जैसी विशाल थी जिससे तीर जैसे तीर बरस रहे थे। ये तीर या भाले बेहद ज़हरीले थे। ज़हरीले भालों ने उनके पूरे शरीर पर डंक मारे। ऐनार अधीश से थोड़ा आगे था, और वह उस जीव के ज़हरीले भालों से बुरी तरह घायल हो गया। अधीश ने ऐनार को बचाने के लिए उसके सामने आकर उस जीव का सामना किया। नतीजतन, उसे ही सारे तीर लगे और वह गिर पड़ा। पल भर में ऐनार स्थिति को समझ गया। यह वही रूप बदलने वाला राक्षस था जिसने ऐनार को मार डाला और अधीश को गुड़िया की तरह नोंच डाला। यह राक्षस एक मैन्टिकोर था। ऐनार मैन्टिकोर से परिचित था। वह जानता था कि अब वह बैठकर अधीश को खा जाएगा और अपने ज़हरीले भाले चारों ओर फेंकता रहेगा ताकि कोई उसे खाने से रोक न सके। कुछ तो तुरंत करना ही था। पलक झपकते ही आइनार ने अपनी तलवार, ग्राम, घुमाई और एक ही वार में मैन्टिकोर की बिच्छू जैसी पूंछ को काट दिया, जो जहरीले तीर फेंक रही थी।

एक चीख के साथ, मैन्टिकोर ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी चीख तुरही की आवाज़ जैसी थी। उसे पता था कि वह हार गया है और उसमें पीछे हटने की धूर्तता थी। किसी तरह वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ, अपने पंख फैलाए और आइनार के दोबारा वार करने से पहले ही तेज़ी से उड़ गया। आइनार को उसे छोड़ना पड़ा, हालाँकि वह मैन्टिकोर का पीछा करके उसे मार डालना चाहता था। वह बुरी तरह घायल हो गया और अधीश के पास गिर पड़ा। उदय ने यह सारा दृश्य भय से देखा। उसने आइनार को उस जीव की पूंछ काटते देखा और उस राक्षस को ज़ोर से दहाड़ते हुए जंगल में उड़ते देखा। अपनी तलवार निकालकर, वह उस राक्षस के पीछे भागा, जो शायद इसलिए नीचे उड़ रहा था क्योंकि उसकी पूंछ कट कर अलग हो गई थी। उदय जल्द ही उस जीव के पीछे गायब हो गया। रूबी और ऐशानी अपनी आँखों के सामने घटे इस दृश्य को देखकर स्तब्ध रह गईं, जो पल भर में समाप्त हो गया। वे दोनों योद्धाओं की ओर दौड़ीं, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। जयंत, तेजस और देवनाथ भी मौके पर पहुँच गए। सब कुछ इतनी तेज़ी से हुआ कि वे समझ ही नहीं पाए कि क्या हुआ है। 'नहीं, नहीं!' ऐशानी चीखी, उसका दर्द और बेबसी बेकाबू हो गई। वह खुद एक राक्षसी की

तरह थी, अपने बच्चों की रक्षा के लिए शेरनी की तरह गुस्से में लड़ रही थी। लेकिन अब बचाने वाला कोई नहीं था। जो दो लोग उसके साथ थे, वे अब उसके साथ नहीं थे। बाकी लोग भी बस एक पल पीछे ही थे। अधीश और ऐनार ज़मीन पर बेजान पड़े थे। अधीश का शरीर चाकू के ज़ख्मों से भरा था, इन हमलों में उसका बचना नामुमकिन था; ऐनार के शरीर पर ज़्यादा चाकू के ज़ख्म नहीं थे, लेकिन वह भी मर चुका था और अब वे दोनों उसके पैरों के पास मृत पड़े थे। बाकी लोग बहुत देर से पहुँचे। वे अपने हथियारों से इधर-उधर वार कर रहे थे, लेकिन कोई फायदा नहीं हो रहा था।

अचंभित ऐशानी अधीश के बगल में बैठ गई और उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए। उदय कुछ मिनट बाद राक्षस को ढूंढने में असफल होकर लौटा। अधीश और ऐनार के बारे में उसकी चिंता ने उसे पीछा छोड़ने पर मजबूर कर दिया। उदय और जयंत ने मोर्चा संभाल लिया था और वे तेज़ी से गोलीबारी कर रहे थे। तेजस और रूबी भी, भले ही वे असली योद्धा न हों, हर दिशा में गोली चला रहे थे। लेकिन सारा प्रयास व्यर्थ था। हत्यारे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के बाद गायब हो गए थे और बाकी लोग बस हाथ-पैर मार रहे थे। हार मानकर रूबी ऐशानी की ओर मुड़ी, जो पूरी तरह से स्तब्ध थी और अपने आसपास के हंगामे से बेखबर थी। उसके चेहरे पर पत्थर जैसा भाव था और वह अधीश को टकटकी लगाए देख रही थी।

रूबी अपनी प्यारी दोस्त के दुख, निराशा और अविश्वास को समझ सकती थी। रूबी बस उसके बगल में बैठी रही, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह खुद भी दर्द में थी। यह कैसे हो सकता है? उन्हें इतने मामूली मिशन पर भेजा गया था और अब कुछ भी नहीं बचा था। दर्द के धुंधलेपन में उसने देखा कि देवनाथ, अधीश के पास जा रहा है। उसने देखा कि देवनाथ ने अधीश को छुआ, फिर ऐनार को। बहुत धीरे से देवनाथ रूबी की ओर मुड़ा और फुसफुसाया, 'वे अभी भी जीवित हैं, बस किसी तरह, उन्हें एक इंच भी हिलाने से उनकी मृत्यु हो जाएगी। हमें कुछ बहुत जल्दी और बहुत धीरे से करना होगा।' फिर बहुत धीमी आवाज़ में, ताकि केवल रूबी ही सुन सके, 'ऐनार किसी भी समय दुनिया छोड़ सकता है।'

पहले तो रूबी को शब्द समझ में नहीं आए। जब आखिरकार उसे देवनाथ का अर्थ समझ आया, तो वह इतनी डर गई कि हिलने से भी हिचकिचा रही थी, कहीं कुछ हो न जाए। वे क्या कर सकते थे? वे नज़दीकी अस्पताल से बहुत दूर थे, और उन्हें कहीं

ले जाया नहीं जा सकता था। रूबी ने बहुत सोचा, फिर धीरे से और सावधानी से एक पेड़ के पीछे कोने में जाकर बैठ गई और ध्यान लगाने और गुरुजी से बात करने लगी। उसने पूरी श्रद्धा से प्रार्थना की कि गुरुजी उसकी प्रार्थना सुन लें। उसके हाथ में वह विशेष माला थी जो गुरुजी ने उसे ऐसी आपात स्थितियों के लिए दी थी। उसने अपने मन को शांत किया और रुद्राक्ष की माला पर दुर्गा मंत्र का जाप करने लगी। लोककथाओं में, रुद्राक्ष की माला को भगवान शिव के आँसू माना जाता है जब उनकी पत्नी सती का निधन हुआ था। रुद्राक्ष के वृक्ष ऊपरी हिमालय में पाए जाते हैं जहाँ भगवान शिव निवास करते हैं। रूबी ने पूरी विनम्रता और बेताबी से मंत्र का जाप किया, देवी से प्रार्थना की कि वे गुरुजी को उसके पास भेजें। उसे नहीं पता था कैसे; यह केवल अंधविश्वास था। वह बेसब्री से चाहती थी कि अधीश और ऐनार दोनों जीवित रहें और स्वस्थ हो जाएँ। अप्सरा रूबी की शक्ति ऐसी थी कि गुरुजी ने उसकी प्रार्थना सुन ली और उसके सामने प्रकट हो गए। विश्वास और अविश्वास से भरी रूबी को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या प्रतिक्रिया दे। उसकी आँखों से चुपचाप आँसू बह रहे थे और वह गुरुजी के चरणों में गिर पड़ी। गुरुजी ने अपने सामने का पूरा दृश्य देखा, वहाँ दो शव पड़े थे और सदमे से उबर न पा रही स्तब्ध टीम वहीं खड़ी थी। गुरुजी जल्दी से अधीश और ऐनार की ओर बढ़े। गुरुजी ने दोनों शवों को छुआ, ऐशानी और अन्य लोगों को देखा और फिर कुछ करने का निश्चय किया। गुरुजी उदय और देवनाथ की ओर मुड़े और बोले, 'ऐनार का अभी निधन हो गया है, अधीश भी मृत्यु के कगार पर है। मुझे तुरंत कुछ करना होगा, नहीं तो हम दोनों को खो देंगे।'

यह कहते हुए गुरुजी ने उन्हें अपने चारों ओर एक बड़ा घेरा बनाने और बाहर की ओर मुंह करने का निर्देश दिया। इससे वे नए खतरों का पता लगा सकेंगे और गुरुजी के अनुष्ठानों के साक्षी नहीं बन पाएंगे। योद्धा इतने सदमे में थे कि वे कुछ बोल भी नहीं पाए और न ही कोई प्रतिक्रिया दे पाए। जैसे वे किसी भूत-प्रेत की तरह गुरुजी के निर्देशों का पालन करते हुए बाहर की ओर मुड़ गए। घेरे के अंदर केवल ऐशानी थी, लेकिन वह इतनी गहरी सदमे में थी कि उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह सदमे में थी, उसे न तो अपने ठिकाने का पता था और न ही अपने आसपास हो रही घटनाओं का।

गुरुजी को हमेशा से पता था कि ऐसा दिन आएगा, लेकिन अभी भी कई बाधाएं दूर करनी बाकी थीं। शीतनिद्रा से बड़ी संख्या में बाहर आ रहे राक्षसों को रोकने के लिए

अधीश और ऐशानी दोनों की संयुक्त शक्ति की आवश्यकता थी। यह विशेष युग और शताब्दी राक्षसों के लिए बहुत अनुकूल थी क्योंकि मानवता तेजी से पतन और अनैतिकता की ओर बढ़ रही थी। गुरुजी ने आह भरी। जो होना था, वह होकर रहेगा और बहुत जल्दी होगा। जंगल भी उतना ही शांत था, सांस रोककर गुरुजी के चमत्कार देखने की प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन जो हो गया सो हो गया, उसे बदला नहीं जा सकता था। वे दिवंगत आत्मा को वापस तो नहीं ला सकते थे, लेकिन एक आत्मा को एक क्षतिग्रस्त शरीर से दूसरे स्वस्थ शरीर में स्थानांतरित कर सकते थे।

ऐनार की आत्मा पहले ही क्षीण होने लगी थी। यदि वह पूरी तरह से शरीर त्याग देती, तो उसके शरीर का भौतिक विघटन शुरू हो जाता। यह अनुष्ठान शीघ्रता से, लेकिन संयमित गति से करना आवश्यक था। गुरुजी अधीश और ऐनार के बीच पद्मासन में बैठे, उनके सिर पर हाथ रखे और एक अत्यंत भिन्न मंत्र का जाप करने लगे। बाहर खड़े लोग उस अपरिचित जाप को सुन सकते थे, लेकिन वे शब्दों को समझ नहीं पा रहे थे, यदि वे शब्द थे भी तो। और न ही उन्हें इसमें कोई रुचि थी। उन्हें गुरुजी पर पूर्ण विश्वास था। वे इस उम्मीद में थे कि गुरुजी उन दोनों को जीवनदान देंगे। कुछ समय बाद, गुरुजी ने अपने थैले से कुछ वस्तुएँ निकालीं और उन्हें ज़मीन पर रख दिया। फिर उन्होंने एक अस्थायी हवन कुंड बनाया, अग्नि प्रज्वलित की और हवन शुरू किया। उनके चारों ओर का वातावरण भारी हो गया। वे जंगल के भीतर एक खुले स्थान पर थे। गुरुजी कुंड में अज्ञात और अपरिचित वस्तुएँ डाल रहे थे। धीरे-धीरे उनके चारों ओर का वातावरण हल्का हो गया और जंगल के उस क्षेत्र को ढक लिया। यह एक अदृश्य आवरण के समान था। गुरुजी किसी भी प्रकार की अशांति नहीं चाहते थे। विशाल चमकीला वृत्त उन सभी को घेरे हुए था और वह लगातार और भी चमकीला होता जा रहा था। जल्द ही उनके लिए सीधे प्रकाश में देखना मुश्किल हो गया। वे और भी सतर्क हो गए। वृत्त के भीतर, गुरुजी दोनों शरीरों के बीच एक माध्यम की तरह थे। एक ज्ञानी तांत्रिक जानता होगा कि गुरुजी क्या कर रहे थे। वे अधीश की आत्मा को ऐनार के शरीर में स्थानांतरित कर रहे थे। यह एक सीधी प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि तीन चरणों वाली प्रक्रिया थी। पहले अधीश की आत्मा को उसके शरीर से बाहर आना था। फिर उसे गुरुजी के शरीर में प्रवेश करना था। गुरुजी के शरीर से ही अधीश को ऐनार के शरीर में प्रवेश करने की प्रेरणा मिलती। यह इसी तरह करना आवश्यक था क्योंकि अधीश की आत्मा दिशाहीन हो गई थी, उसे पता नहीं था कि क्या करना है। वह या तो

पृथ्वी पर बिना शरीर के रह सकती थी या फिर अपने ईश्वर के पास जा सकती थी। यह कार्य अत्यंत शीघ्रता से करना आवश्यक था, क्योंकि अब अधीश का शरीर आत्माहीन था और उसे बिना किसी देरी के गुरुकुल अस्पताल ले जाना था, क्योंकि शरीर का क्षय लगभग तुरंत शुरू हो जाता है। अगर बाकी लोग देख पाते, तो आइनार के शरीर में हल्की हलचल देखकर वे चकित रह जाते। बहुत जल्द, आइनार का शरीर, हालांकि वह मृत था, जीवन के संकेत दिखाने लगा। उसका रंग भूरे से सफेद हो गया और अब उसकी त्वचा पर गुलाबीपन छाने लगा था। अधीश में सुधार के कोई लक्षण नहीं दिख रहे थे। वह बस वहीं पड़ा रहा।

गुरुजी ने जल्द ही अपना मंत्रोच्चार और अनुष्ठान समाप्त किया और दूसरों को अपनी ओर मुड़ने का इशारा किया।

हमें उन्हें वापस आश्रम ले जाना होगा।

देवनाथ ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला, लेकिन बिना कुछ बोले ही बंद कर दिया। उनकी अंतरात्मा उन्हें बता रही थी कि उनकी पीठ पीछे कुछ बहुत ही भयानक घटित हुआ है। ठीक क्या, यह उन्हें नहीं पता था। गुरुजी ने जो किया या नहीं किया, उससे भयभीत होकर, उन्होंने दूसरों के साथ मिलकर जल्दी से अस्थायी पलंग बनाए और दोनों अधमरे शरीरों को गुरुकुल ले गए।

अधीश अब ऐनार के शरीर में था। पहले दो दिन जब अधीश और ऐनार के शवों को गुरुकुल लाया गया, तो गुरुजी और उनके चिकित्सक गुरुकुल की वैद्यशाला में उनकी देखभाल में अत्यंत व्यस्त रहे। तीसरे दिन, गुरुजी ने ऐशानी को अपनी कुटिया में बुलाया। शोक से व्याकुल ऐशानी जाकर गुरुजी के सामने बैठ गई।

गुरुजी ने ऐशानी को बताया कि जिस प्राणी ने इतना भयानक और दिल दहला देने वाला आतंक मचाया था, वह एक मंटिकोर था। मंटिकोर फारसी पौराणिक कथाओं का प्राणी है, हालांकि इसका उल्लेख कभी-कभी भारतीय पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। गुरुजी ने उसे यह भी बताया कि जब राक्षसों की संख्या कम हो जाती है और उन्हें पूर्ण विनाश का भय होता है, तो वे कभी-कभी दूसरे लोकों के राक्षसों या प्राणियों को बुला लेते हैं। रूप बदलने वाले राक्षसों के साथ-साथ इसी कारण से उन पर इतना बड़ा संकट आया था। वे रूप बदलने वाले राक्षसों के लिए लगभग हमेशा तैयार रहते थे, जो उपमहाद्वीप के इस हिस्से में काफी आम थे। लेकिन यहां तक कि बुजुर्ग भी मंटिकोर के लिए तैयार नहीं थे। भारतीय पौराणिक कथाओं में, इसका मूल

अर्थ है नरभक्षी (मंती या मर्द या मनुष्य और कोर या खोर या 'खाना')। वे मंटिकोर को पूरी तरह से देख भी नहीं पाए थे, क्योंकि इससे पहले कि वे इसे पूरी तरह समझ पाते, उसने उन्हें नष्ट कर दिया। बाद में, जब अधीश को होश आया, तो उसे एक बूढ़े व्यक्ति की धुंधली सी याद आई, जिसका शरीर शेर जैसा और पूंछ बिच्छू जैसी थी, जो बहुत तेज गति से तीखे तीर चला रहा था। उसे बताया गया कि उनमें से कुछ के विशाल पंख भी थे। हालाँकि उसका चेहरा मनुष्य जैसा था, फिर भी उसके तीन जोड़ी नुकीले ऊपरी दाँत और तीन जोड़ी नुकीले निचले दाँत थे, जो अपने विशाल जबड़ों के एक ही वार से किसी मनुष्य को चीर डालने के लिए पर्याप्त थे।

'बेटा, जंगल में हुई झड़प में ऐनार मारा गया।' ऐशानी ने सिर हिलाया। उसे यही उम्मीद थी। रूप बदलने वाले राक्षसों ने बड़ी चालाकी से उन्हें मात दे दी थी।

'ऐनार का समय आ गया था। उसे जाना ही था...' गुरुजी रुके, फिर बोले, 'अधीश इतनी बुरी तरह घायल था कि उसे ज़रा सा भी हिलाने से उसकी जान जा सकती थी। अभी अधीश का समय नहीं आया है। इसलिए, मैंने परिस्थितियों के अनुसार सबसे व्यावहारिक उपाय किया। मैंने अधीश की आत्मा को अस्थायी रूप से ऐनार के शरीर में तब तक के लिए स्थानांतरित कर दिया है, जब तक कि अधीश का शरीर पूरी तरह से ठीक नहीं हो जाता। मैंने ऐनार और उसकी आत्मा के लिए एक छोटा सा अनुष्ठान किया है। अधीश की आत्मा के अपने शरीर में वापस आने के बाद, ऐनार का उसके राज्य के नियमों और उसकी इच्छा के अनुसार पूर्ण अंतिम संस्कार किया जाएगा।'

कुछ मिनटों तक ऐशानी गुरुजी के शब्दों का पूरा अर्थ नहीं समझ पाई। फिर उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। अधीश जीवित था! और बिल्कुल ठीक-ठाक! सचमुच! वह धीरे-धीरे रोने लगी। धीरे-धीरे उसका रोना बेकाबू सिसकियों में बदल गया। गुरुजी ने कोमलता से उसके सिर पर हाथ फेरा। इतने शक्तिशाली फिर भी इतने संवेदनशील और कोमल। गुरुजी भगवान हनुमान के शिष्य थे। अपने प्रभु की तरह गुरुजी भी ब्रह्मचारी थे। सदियों के जीवन अनुभव के बावजूद, गुरुजी को स्त्री के मन की गहरी समझ नहीं थी। लेकिन युगों से ऐशानी के निकट रहने के कारण वे उसकी निराशा और पीड़ा को महसूस कर सकते थे। गुरुजी निर्वाण के उस स्तर तक पहुँच चुके थे जहाँ वे संसार की किसी भी वस्तु से आसक्त नहीं थे, लेकिन यदि किसी के प्रति उनके मन में थोड़ी सी भी भावनाएँ थीं, तो वे ऐशानी के लिए थीं। यदि किसी की खुशी उन्हें प्रसन्न करती थी, तो वह ऐशानी की खुशी थी। यदि गुरुजी ने कभी इस

संसार में किसी की रक्षा और देखभाल करने की इच्छा की थी, तो वह ऐशानी ही थीं। ऐशानी ने आँसुओं से भीगी आँखों से गुरुजी की ओर देखा, 'क्या मैं उन्हें देख सकती हूँ?'

जी हां, बिल्कुल आप कर सकते हैं, लेकिन अभी आप यह नहीं पहचान पाएंगे कि यह अधीश है, जब तक वह आपसे बात नहीं करता। वह कुछ दिनों में होश में आ जाएगा। शुरुआत में तो वह खुद को भी नहीं पहचान पाएगा। हम सभी को उसे अपने नए शरीर के अनुकूल ढलने में मदद करनी होगी। बहुत से लोग अभी भी सच्चाई नहीं जानते होंगे, बस हममें से कुछ ही लोग।

'और अधीश के असली शरीर का क्या होगा?' ऐशानी ने फुसफुसाते हुए पूछा। वह इस विचार की आदी होती जा रही थी।

"बेटा, इसमें बहुत समय लगेगा। उसकी आत्मा उसके शरीर में नहीं है। जब आत्मा शरीर में होती है, तो वह ब्रह्मांड और अपने आस-पास की हर चीज़ से जुड़ती है, चाहे वह मनुष्य हो या दवा। शरीर बहुत जल्दी ठीक हो जाता है। अभी तो अधीश का शरीर बस एक खोखला ढाँचा है, पूरी तरह से टूटा हुआ ढाँचा। इसे जड़ी-बूटियों, मंत्रों और यहाँ तक कि तंत्र से बाहर से ही ठीक होना होगा। ज़ाहिर है, हम उसे तुम्हारे ससुर के अस्पताल नहीं भेज सकते। हम इस रहस्य को अपने सबसे करीबी और भरोसेमंद लोगों को भी नहीं बताना चाहते। एक और बात यह है कि श्री विद्याधर जी का अस्पताल, भले ही अत्याधुनिक मशीनों और बेहतरीन डॉक्टरों के साथ देश के सर्वश्रेष्ठ अस्पतालों में से एक है, फिर भी यह आम मनुष्यों की बीमारियों और रोगों का इलाज करने वाला अस्पताल है। यहाँ जो हुआ है वह कोई बीमारी नहीं है; यह एक आत्मा का दूसरे व्यक्ति के शरीर में स्थानांतरण है। यह केवल गुरुकुल में ही हो सकता है, कहीं और नहीं।" तीन महीने बीत गए। अधीश धीरे-धीरे ही सही, अपने नए शरीर में ढल गया। ऐनार के शरीर पर ऐसे घाव थे जिन्हें भरने में समय लगा। ऐनार एक बहुत ठंडे देश से थे। उनका इलाज अलग तरीके से करना पड़ा, लेकिन गुरुकुल के वैद्यों ने जल्द ही ऐसी दवाइयाँ खोज लीं जो उनके शरीर के लिए उपयुक्त थीं। फिर अधीश की आत्मा थी, जिसकी अपनी आदतें और तौर-तरीके थे। हालाँकि ऐनार कई वर्षों तक हिमालय में रहे थे, लेकिन उनके शरीर की मूल संरचना भारतीय थी। जब उनकी आत्मा वहाँ थी, तो वे और उनका शरीर भारतीय जीवन शैली में ढल सकते थे। उनकी आत्मा उनके शरीर के साथ सामंजस्य में थी। लेकिन अब अधीश की आत्मा उनके

शरीर में थी। ऐनार का शरीर इतने सारे मसालों से भरे शाकाहारी भोजन के विचार से ही घबरा जाता था, जबकि अधीश की आत्मा को सादा, मसालेदार शाकाहारी भोजन चाहिए था। इतने सारे अन्य अंतर थे कि ऐसा लगता था मानो एक ही शरीर में दो स्वतंत्र व्यक्तित्व हों। एक अधीश की आत्मा थी और दूसरा ऐनार का शरीर।

फिर भावनात्मक पहलू भी था। आइनेर की मौत के लिए खुद को जिम्मेदार ठहराने का अपराधबोध उसे लगातार सता रहा था। अधिश और उसके करीबी लोग उस क्षण को जानते और अनुभव कर चुके थे जब एक योद्धा की रक्षा करने की सहज प्रवृत्ति अनिवार्य हो जाती है, और यही वह क्षण था जब आइनेर अधिश के सामने आ गया था, जिसकी कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी।

तो, गुरुजी ने एक बार इसी बात का जिक्र किया था जब उन्होंने कहा था कि वे ऐनार के बहुत ऋणी हैं। ऐनार ने भी एक बार हिमालय में उनसे कहा था कि उनके पास जीने के लिए ज्यादा समय नहीं बचा है और कैलाश की उनकी यात्रा ही उनकी आखिरी यात्रा होगी। सब कुछ पहले से तय था, अधीश सोचने लगे। ऐनार जानते थे कि उनकी मृत्यु होने वाली है, गुरुजी जानते थे कि ऐनार पृथ्वी पर अपना शरीर त्याग देंगे और अधीश उसमें प्रवेश करेंगे। अधीश ने आह भरी। जीवन कितना जटिल है। एक योद्धा बनना और सादा जीवन जीना कहीं बेहतर है। वह जानते थे कि जब वे अपने शरीर में वापस लौटेंगे तो फिर से जटिलताएं आएंगी, क्योंकि तब तक उनकी आत्मा ऐनार के शरीर में ढल चुकी होगी।

गुरुकुल के पीछे स्थित दो विशाल बरगद के पेड़ों के नीचे वे अपनी हमेशा की जगह पर बैठे थे। पेड़ों की उम्र किसी को नहीं पता थी, लेकिन उनकी मौजूदगी ही मन को सुकून देती थी। कोई उन पर ज़्यादा ध्यान नहीं देता था, क्योंकि एक तो वे गुरुकुल की सीमा के बिल्कुल पास थे और दूसरा, वे गुरुकुल के अन्य पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की तरह ही थे। अधीश और ऐशानी के लिए एकांत और निजता के कुछ पल बिताने के लिए यह बिल्कुल सही जगह थी। आजकल अधीश ऐशानी को छूने से कतराता था। वह हमेशा उससे उचित दूरी पर बैठता था। ऐशानी की बात करें तो, भले ही वह जानती थी कि उसके बगल में बैठा व्यक्ति अधीश है, फिर भी अब वह मुश्किल से ही उसकी ओर देख पाती थी।

'राख।'

'हम्म।'

'मुझे पता है कि मुझे यह नहीं कहना चाहिए, लेकिन कभी-कभी मुझे मांसाहारी भोजन खाने की तीव्र इच्छा होती है। मुझे वास्तव में लिंगोनबेरी के साथ कुछ स्वादिष्ट मीटबॉल खाने का मन कर रहा है।'

ऐशानी थोड़ा पीछे हट गई। उसने पाया कि अगर वह अपने बगल में बैठे व्यक्ति को सीधे न देखे, तो वह उससे वैसे ही बात कर सकती है जैसे वह अधीश से करती है। उसे अभी भी इस शारीरिक रूप से भिन्न दिखने वाले व्यक्ति के साथ तालमेल बिठाना था। शुरू में तो वह उसे अधीश के रूप में स्वीकार ही नहीं कर पाई क्योंकि उसकी आवाज़ भी ऐनार जैसी थी। समय बीतने के साथ, ऐनार उसका बहुत प्रिय मित्र बन गया। अधीश और ऐशानी दोनों ने पाया कि वे ऐनार से कई परिचित और अपरिचित विषयों पर बात कर सकते हैं। यद्यपि उनकी पृष्ठभूमि अलग-अलग थी, उनके लक्ष्य और नियति एक ही थे, जो कि पृथ्वी से हर प्रकार के दुष्टों को मिटाना था।

'मुझे पता है, अधीश; आइनार के शरीर को इन खाद्य पदार्थों की आवश्यकता है।'

'हाँ, ऐश, मुझे पता है, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं खुद इस बात से और इस शरीर की तमाम अन्य मांगों से हैरान हूँ। ऐनार की आत्मा को शांति मिले। जितनी जल्दी मैं अपने शरीर में प्रवेश करूँ, उतनी जल्दी हम इस शरीर का अंतिम संस्कार कर सकेंगे,' अधीश ने लगभग उदास स्वर में कहा।

ऐशानी समझ गई। अधीश को अपने इस नए शरीर से थोड़ा लगाव हो रहा था। उसने पहले भी ऐसा होते देखा था, हालांकि तब राक्षस थे। जो राक्षस किसी शरीर में प्रवेश करते हैं, वे उसे छोड़ना नहीं चाहते। सच तो यह है कि राक्षसों के पास रहने के लिए कोई उचित शरीर नहीं होता, और दूसरा, यह उनके लिए एक आरामदायक घर जैसा होता है जिसे कोई भी छोड़ना नहीं चाहेगा। अधीश के साथ भी ऐसा ही था, न केवल उसे एक अनुकूल शरीर मिला था, बल्कि अब उसे कुछ अतिरिक्त शक्तियां भी मिल गई थीं। इस स्थिति में, यह वरदान था कि अधीश ने ऐनार के शरीर की कुछ शक्तियां ग्रहण कर ली थीं, क्योंकि उन्हें रूप बदलने वालों को ढूंढ निकालने और उन्हें मारने के लिए अपार शक्ति की आवश्यकता होगी। हालांकि ऐशानी भी अधीश के ऐनार के शरीर में रहने के आदी हो गई थी, फिर भी जब भी बड़े राक्षसों को नष्ट करने के लिए उनकी शक्तियों को आपस में मिलाना पड़ता था, तो उसके मन में एक अजीब सी बेचैनी उठती थी। यह गुरुकुल के वरिष्ठों के लिए एक बड़ा झटका था। राक्षसों को इसकी भनक तक नहीं लगी थी।

फिर भी, उनमें से जो बड़े और अधिक ज्ञानी थे, वे अधीश-ऐशानी के मेल को लेकर अभी भी सतर्क थे और कम से कम फिलहाल के लिए खुद को खतरे से बचा रहे थे। लेकिन वे जानते थे कि यह राहत केवल अस्थायी है। गुरुजी इस बात से भलीभांति परिचित थे। वे और उनके डॉक्टर अधीश के शरीर को सामान्य स्थिति में लाने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे थे। लेकिन प्रक्रिया में जल्दबाजी करने की भी एक सीमा होती है, क्योंकि आत्मा के बिना शरीर स्वयं को पुनर्जीवित नहीं कर सकता।

गुरुजी की अलौकिक शक्तियों के कारण ही अधीश का शरीर सुरक्षित और स्वस्थ हो रहा था। समय तेजी से बीत रहा था।

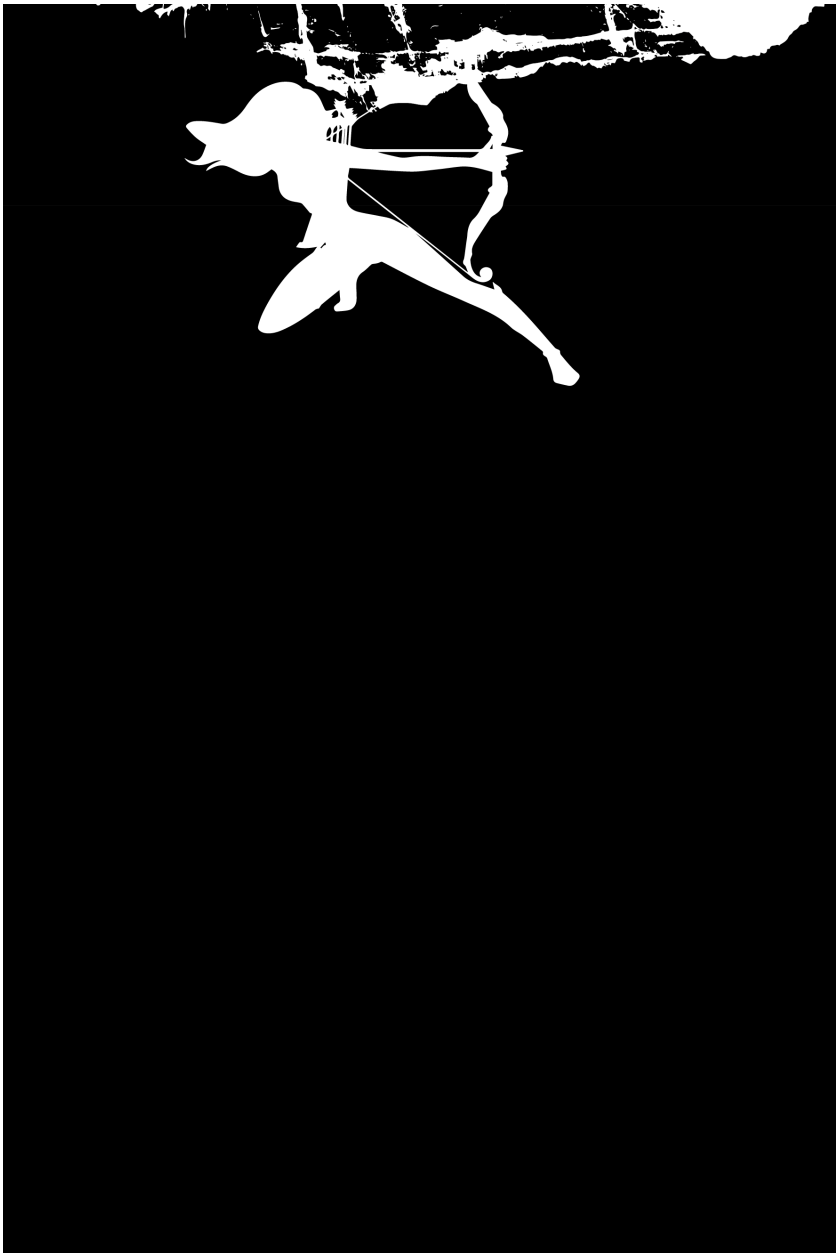

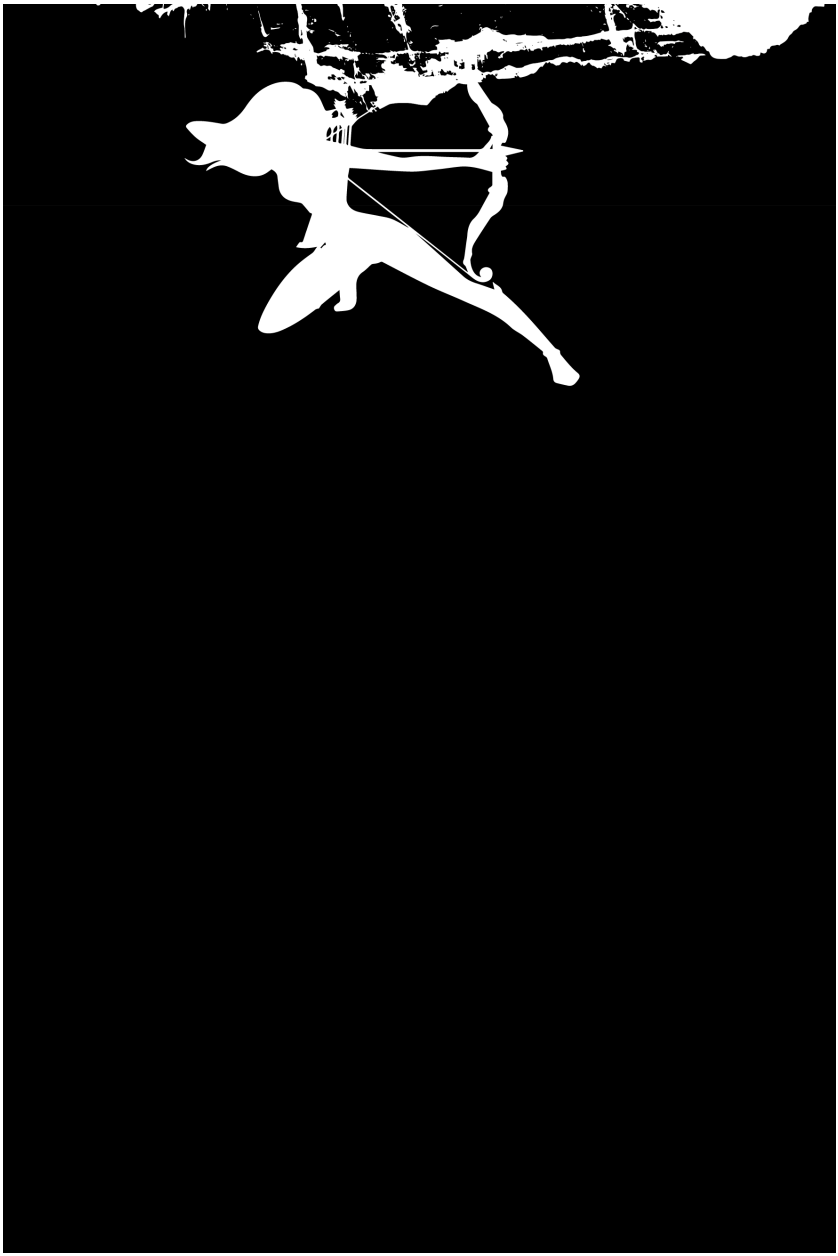

रेगिस्तान में

'टी

'विशाल थार रेगिस्तान के आसपास के क्षेत्रों में बहुत हलचल है।' अधीश और ऐशानी गुरुजी की कुटिया में बैठे थे। अधीश की आत्मा अभी भी ऐनार के शरीर में थी। उनका अपना शरीर गुरुकुल के वैद्यशाला में अभी भी स्वस्थ हो रहा था। समूह के मुख्य सदस्यों को पता था कि अधीश की आत्मा ऐनार के शरीर में है। उन्हें बताना ज़रूरी था, अन्यथा समूह में ही भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती। अगर उन्हें ऐनार के शरीर में अधीश की आत्मा के स्थानांतरण के बारे में नहीं बताया जाता, तो वे सोचते कि अधीश के अस्पताल में भर्ती होने और कोमा जैसी स्थिति में रहने के बाद, ऐशानी ने अपनी मित्रता (बेहतर शब्द के अभाव में) ऐनार की ओर मोड़ ली है। यह बात बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं होती। इसलिए, शर्मिंदगी से बचने के लिए, गुरुजी ने समूह के सदस्यों को सच्चाई बता दी थी।

गुरुजी समझ गए थे कि अधीश और ऐशानी के बीच सब कुछ ठीक नहीं था। बेशक, कुछ दिक्कतें तो थीं ही, जैसे ऐनार के शरीर की विभिन्न गतिविधियों, चाहे बाहरी हों या आंतरिक, के साथ तालमेल बिठाना। ऐनार एक कंधे पर ज़्यादा ज़ोर देते थे, अधीश दूसरे पर। और भी कई बातें थीं। फिर ऐनार के मांसाहारी शरीर को जिस तरह के भोजन की चाह होती थी, वह भी एक समस्या थी। अधीश का मन उन मांसाहारी व्यंजनों के बारे में सोचकर ही घबरा जाता था। सबसे दुखद बात यह थी कि अधीश और ऐशानी दोनों जानते थे कि उनका प्रिय मित्र अब उनके साथ नहीं है और ब्रह्मांड और सर्वशक्तिमान में विलीन हो गया है।

ऐनार और गुरुजी ने भी पहले कई बार संकेत दिया था कि ऐनार थोड़े समय के लिए ही इस पृथ्वी पर हैं, लेकिन अधिश हमेशा उलझन में रहता था, फिर भी वह इन सूक्ष्म संकेतों को कभी पूरी तरह समझ नहीं पाया। अब ऐनार मर चुके थे और अधिश उनके शरीर में रह रहे थे। क्या ऐनार को इसी उद्देश्य से हिमालय भेजा गया था? अधिश ने कई बार सोचा—लेकिन कोई जवाब नहीं मिला, बस दिल में भारीपन था। वह ऐनार के लिए रोना और विलाप करना चाहता था, लेकिन वह ऐसा तभी कर सकता था जब वह अपने शरीर में वापस लौट आए।

फिर ऐशानी की बारी थी। जब खुद अधीश को इस शरीर में ढलने में कठिनाई हो रही थी, तो ऐशानी से यह उम्मीद कैसे की जा सकती थी कि वह ऐनार के शरीर में अधीश को पूरी तरह स्वीकार कर लेगी? आखिर वे भी इंसान ही थे! उन्हें तो अपनी आंखों पर

भरोसा करने की आदत थी, भले ही वे जानते थे कि सच्चाई कहीं और है। ऐशानी, जो इतनी आत्मविश्वासी थी, जो सबसे मजबूत थी, जिसे स्वयं मां दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त था, उसे भी ऐनार के शरीर में अधीश को स्वीकार करने में कठिनाई हो रही थी। एक और दिल दहला देने वाली बात यह थी कि जिस क्षण अधीश की आत्मा अपने शरीर में वापस जाएगी, उनके प्रिय मित्र ऐनार के वर्तमान शरीर का अंतिम संस्कार करना पड़ेगा।

गुरुजी अपने शिष्यों के मन में चल रहे भावों और संवेदनाओं के इस अंतर्संबंध से भलीभांति परिचित थे। वे यह भी जानते थे कि यदि वे उन्हें ऐसे मिशन पर भेजते जिसमें दोनों की शक्तियों की एक साथ आवश्यकता होती, तो अशीनी अधीश की शक्तियों का सहारा लिए बिना अपनी शक्तियों का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाती। इसलिए, गुरुजी ने एक ऐसा कार्य चुना जिसमें अशीनी की भूमिका कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी। बेशक, अधीश राक्षसों का नाश करने के लिए वहाँ मौजूद थे, लेकिन वे अशीनी से अलग और चुपचाप अपना कार्य कर रहे थे।

ये रेगिस्तानी राक्षस हैं; इन्होंने थार रेगिस्तान के एक हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया है और इतना अराजकता और विनाश मचा रहे हैं कि अब हम इसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। ये पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को नष्ट कर रहे हैं, मार रहे हैं, खा रहे हैं और अब इंसानों को भी निशाना बना रहे हैं। पहले ऐसी घटनाएं कभी-कभार ही होती थीं, लेकिन अब इनकी संख्या चिंताजनक स्तर तक बढ़ गई है। सरकार बढ़ते अपराधों पर लगाम लगाने के लिए कई उचित और सख्त कदम उठा रही है, हालांकि इससे कोई खास फायदा नहीं हो रहा है। इंसान अलौकिक, असामान्य प्राणियों से लड़ नहीं सकते। बताया जाता है कि कुछ लोग इन राक्षसों के हमलों से बच गए और अपनी कहानी सुनाने के लिए जीवित रहे। दोनों ने इन हमलों में अपना एक अंग खो दिया: एक ने अपनी बांह और दूसरे ने अपना दाहिना पैर। वे हथियारों से लैस होकर रेगिस्तान में गए लोगों के एक समूह के साथ थे। इन दोनों के अलावा कोई वापस नहीं लौटा। उनकी कहानियां हर बार और भी खौफनाक होती गईं और अब तो सेना के जवान भी रेगिस्तान में जाने से कतरा रहे हैं। जो गए भी, वे वापस नहीं लौटे। नतीजतन, लोग इन सीमावर्ती गांवों से पीछे हट रहे हैं और दूसरी जगहों पर पलायन कर रहे हैं। प्रवासन कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं है, लेकिन इसका परिणाम यह है कि सीमावर्ती क्षेत्र निर्जन होता जा रहा है, जिसे अगर रोका नहीं गया तो यह एक भयावह

जटिलता का रूप ले लेगा।

'गुरुजी, कितने राक्षस हैं और उन्हें नष्ट करने के लिए किस प्रकार के हथियारों का प्रयोग किया जाना चाहिए?' अधीश ने पूछा।

'अधीश, इनकी संख्या काफी है,' गुरुजी ने कुछ देर सोचा। 'लगभग दस परिपक्व, बड़े और उतने ही छोटे, जो अभी इस धंधे के गुर सीख रहे हैं। छोटे वालों की संख्या समय के साथ बढ़ती ही जाएगी। सही ज्ञान, साधन और औजार हों तो इन्हें निपटाना उतना मुश्किल नहीं है।'

दोनों गुरुजी की बातें ध्यान से सुन रहे थे। उन्हें सहज ही समझ आ गया था कि इसमें कोई न कोई पेंच है। किसी भी राक्षस को मारना अत्यंत पीड़ादायक प्रक्रिया होती है। इसलिए यदि यह प्रक्रिया कठिन न हो तो इसका अर्थ है कि इसमें किसी दैवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता है। गुरुजी ने उनकी ओर देखा और उनके विचार समझ गए।

ये रेगिस्तान के राक्षस हैं और सदियों से रेगिस्तान में ही जीवित हैं। जब कोई शिकार नहीं मिलता, तो ये रेगिस्तान में विलीन हो जाते हैं और कोई भी इनके बीच होने पर भी फर्क नहीं जान पाता। ये छुपकर शिकार के आने का इंतजार करते हैं। हाल के दशकों में ही मनुष्य अधिक साहसी हुए और अपने पशुओं के साथ रेगिस्तान में बसने लगे। धीरे-धीरे ये राक्षस भी इतने निर्भीक और बेखौफ हो गए हैं कि इन अर्ध-हरियाली वाले इलाकों में निकलकर मनुष्यों और पशुओं को मार डालते हैं। ये रेगिस्तान से एक छोटे बवंडर की तरह निकलते हैं, अपने शिकार को पकड़ते हैं और उसे खाने के लिए वापस रेगिस्तान के बीचोंबीच उड़ जाते हैं।

गुरुजी ने आगे कहा, 'ये राक्षस पानी और पानी से उगने वाली हरियाली से बेहद भयभीत होते हैं। जिस प्रकार मछली पानी से बाहर निकालने पर मर जाती है, ठीक उसी प्रकार ये राक्षस रेगिस्तान से बाहर निकालने पर मर जाते हैं।'

वे हमेशा की तरह प्रतीक्षा करते रहे। गुरुजी उन्हें कहीं ले जा रहे थे। 'रागस्थल में राक्षसों के डूबने और मरने के लिए प्रचुर मात्रा में पानी होना चाहिए। साथ ही, वहाँ प्रचुर मात्रा में वनस्पति भी होनी चाहिए ताकि जब ये राक्षस भयवश पानी से भागें, तो वे वनस्पति में उलझ जाएँ और फिर पानी में डूब जाएँ।'

'लेकिन गुरुजी, इसके लिए अत्यधिक और अनावश्यक मात्रा में पानी की आवश्यकता होगी, जो देश के पास नहीं है!' ऐशानी ने कहा। 'जी ऐशानी, तुम सही कह रही हो। यह सब भगवान की माया है, बेटा। मनुष्य सोचता है, भगवान करते हैं। एक द्वार बंद

होता है, दूसरा खुलता है। भगवान हमेशा एक द्वार खुला रखते हैं। हाल ही में ये रेगिस्तानी राक्षस इतने साहसी हो गए हैं कि जब मनुष्य भय से भाग गए, तो वे अपने भुंगों में ही रहने लगे। इस तरह वे रेगिस्तान में और अपने शिकारों, चाहे मनुष्य हों या जानवर, के आसपास ही रहते थे।'

'भुंगा?' अधीश और ऐशानी दोनों ने सवालिया निगाहों से ऊपर देखा। 'ये रेगिस्तान की सीमाओं के पास पाए जाने वाले घास-फूस की छतों वाले छोटे मिट्टी के घर होते हैं। अच्छा हुआ कि कुछ राक्षसों ने इन भुंगाओं को घेर लिया है, क्योंकि इससे इन्हें नष्ट करना थोड़ा आसान हो जाता है। पानी से भागने की कोशिश करते ही ये पौधों और वनस्पतियों की लताओं में उलझ जाते हैं और फिर पानी में डूब जाते हैं।'

यह बात उन्हें अब भी अव्यावहारिक और बेतुकी लग रही थी। वे यह भी जानते थे कि उनके काम में कुछ भी असंभव नहीं है। फिर भी, वे यह समझ नहीं पा रहे थे कि जंगल में घनी वनस्पति और हजारों गैलन पानी कैसे प्राप्त किया जा सकता है। गुरुजी ने उनकी ओर देखा और उनके संदेह को समझ गए। 'तुम दोनों ने सही अनुमान लगाया है। दैवीय हस्तक्षेप अवश्य होगा। इन रेगिस्तानी राक्षसों के मामले में, माता शाकुंभरी हमारी सहायता के लिए आएंगी। जैसा कि तुम दोनों जानते हो, माता शाकुंभरी दुर्गा माँ के अवतारों में से एक हैं और ऐशानी को स्वयं माँ दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त है।'

उन्होंने सिर हिलाया। स्थिति स्पष्ट होती जा रही थी और सब कुछ समझ में आने लगा था। पौराणिक कथा के अनुसार, जब पृथ्वी पर हज़ार वर्षों का सूखा पड़ा था, तब ऋषियों ने माँ दुर्गा से प्रार्थना की थी। उनकी प्रार्थना के उत्तर में, माँ दुर्गा ने माता शाकुंभरी को सूखा समाप्त करने और पृथ्वीवासियों को भोजन प्रदान करने के लिए भेजा। गुरुजी ने सिर हिलाया और फिर ऐशानी की ओर देखते हुए कहा, 'तुम्हें माँ दुर्गा के अवतारों में से एक, माता शाकुंभरी का आशीर्वाद लेना होगा।'

गुरुजी अब पूरी तरह से गंभीर हो गए थे। ये उनके सबसे तेज, सबसे सक्षम और अनुभवी योद्धा थे। वे इन निर्देशों को पल भर में समझ जाएंगे।

'पहले उदयपुर जाओ; वहाँ से सीकर के लिए बस पकड़ो। वहाँ तुम माता शाकुंभरी के मंदिर पहुँच जाओगे। अपनी रोज़ाना की प्रार्थना करो और मेरे पुजारी से मिलवाने का इंतज़ार करो। अधीश, इस मिशन में तुम ऐशानी के साथ रहोगे।' गुरुजी ने अधीश की ओर देखा। 'हम पर किसी का ध्यान नहीं जाना चाहिए। अधीश, मुझे लगता है कि

अगर तुम भारतीय वेश धारण कर लो तो बेहतर होगा। अभी तुम यूरोपीय जैसे दिख रहे हो और इससे लोगों का ध्यान तुम्हारी ओर आकर्षित होगा।'

'जी गुरुजी,' यह बात हास्यास्पद होती अगर दुखद न होती। वह अपने मित्र के शरीर में था, उस मित्र के शरीर में जो पहले ही इस दुनिया को छोड़ चुका था। भारतीय होते हुए भी उसे भारतीय दिखने के लिए अपना वेश बदलना पड़ा। उन्होंने सिर हिलाया, गुरुजी के चरण छुए और चले गए।

वे सीकर जा रही बस में बैठे थे। 'आधीश?'

'हम्म,' वह आधी नींद में था।

'हम हनुमान जी के योद्धा हैं और मां दुर्गा ने हमें आशीर्वाद दिया है, और हमारे पास विशेष शक्तियां भी हैं।'

अब अधीश जाग चुका था, 'जी ऐश, तुम क्या कहना चाहती हो?' वह मुस्कुरा रहा था। उसे ऐशानी के अगले सवाल का अंदाज़ा था। उसने अपने बालों को गहरे भूरे रंग में रंगा था और गहरे भूरे रंग के कॉन्टैक्ट लेंस पहने थे। स्थानीय लोगों की तरह कपड़े पहने वह बिल्कुल भारतीय लग रहा था। उसने ऐशानी के बोलने का इंतज़ार किया।

'तो फिर हम इस खस्ताहाल बस में क्यों बैठे हैं, माता के मंदिर के लिए हवाई जहाज़ से क्यों नहीं जा रहे?'

अधीश ज़ोर से हँस पड़ा। यह उनके बीच एक मज़ाक बन चुका था। उनके बीच हंसी-मज़ाक के मौके इतने कम आते थे कि जब भी हंसने का मौका मिलता, वे उसे लपक लेते थे। हंसी उनके लिए अनमोल थी।

'अच्छा, मुझे लगता है, हम आधे-आधे हैं, आप जानते हैं। आधे विशेष और आधे इंसान। यह हमारा मानवीय हिस्सा है।'

ऐशानी हंस पड़ी, मानो जवाब से संतुष्ट हो गई हो। उन्होंने हाथ पकड़े और खिड़की से बाहर सूखे रेगिस्तानी इलाके को देखने लगे। शाम को वे माता शाकुंभरी के मंदिर पहुंचे। गुरुजी पहले से ही वहां मौजूद थे। इस मंदिर में आने वाले अन्य लोगों ने सोचा होगा कि ऐशानी और अधीश माता शाकुंभरी का आशीर्वाद लेने आए अन्य तीर्थयात्रियों की तरह ही हैं। गुरुजी वहां मुख्य पुजारी के साथ इंतजार कर रहे थे, जो एक बूढ़ा और झुर्रियों वाला व्यक्ति था और मानो हर समय सोता रहता हो। गुरुजी ने उन्हें उनके आगमन के बारे में कुछ बातें पहले ही बता दी थीं। वे जानते थे कि गुरुजी बहुत कम बोलने वाले व्यक्ति हैं और उन्होंने मुख्य पुजारी को बहुत कम ही बताया

होगा, केवल मुख्य बातें। लेकिन वह थोड़ी सी जानकारी भी पुजारी को झकझोरने के लिए काफी थी। उनकी नींद से भरी आंखें विस्मय से खुल गईं। उन्होंने ऐशानी के सामने चापलूसी की और लगभग उनके पैर छूने का नाटक किया। गुरुजी की हल्की सी खांसी ने उन्हें शर्मिंदा कर दिया। अधीश पर एक नजर डालते ही उनकी आंखें फिर से चौड़ी हो गईं। वह अधीश के भेष को पहचान गए थे। उसकी आँखों में गुरुजी के लिए सवाल था, "यहाँ भेस बदलकर आया एक विदेशी क्यों?" लेकिन गुरुजी ने सवाल को अनसुना कर मुख्य पुजारी को आगे बढ़ने का आदेश दिया। पुजारी उन्हें पहली मंजिल पर एक कमरे में ले गया। यह कमरा भी मंदिर जैसा था। वहाँ एक चबूतरे पर माता शाकुंभरी और अन्य देवियों की मूर्तियाँ थीं, जिनके पास कुछ पूजा सामग्री रखी थी। पुजारी ने फिर से प्रणाम किया और चला गया। गुरुजी उनकी ओर मुड़े और बोले, "बच्चों, जाओ और तरोताज़ा हो जाओ, मैं तैयारी करता हूँ।" वे बाहर चले गए। एक पुजारी उनका इंतज़ार कर रहा था। उसने उन्हें शौचालय की ओर निर्देशित किया और फिर चला गया। अधीश और ऐशानी दोनों पुजारियों के तनाव को समझ गए और यह भी कि दोनों वहाँ रुकना चाहते थे, लेकिन गुरुजी के निर्देशों के कारण अनिच्छा से चले गए। अधीश और ऐशानी अब शक्तियों का आह्वान करने में माहिर हो चुके थे। यह सब गुरुजी के मार्गदर्शन में हुआ था। वे बहुत थोड़े समय के लिए ही शक्तियों के वाहक और संरक्षक थे। उनका काम पूरा होने के बाद, शक्तियाँ अपने मूल स्वरूप में लौट गईं। इन शक्तियों की यादें उनके मन से हमेशा के लिए मिट गई थीं, क्योंकि उनका मानवीय मन और शरीर इतनी महान शक्ति और क्षमता के लिए तैयार नहीं थे। अधीश को यहाँ ऐशानी के साथ बैठकर पूजा, मंत्र और हवन में भाग लेने के अलावा और कुछ खास काम नहीं था। गुरुजी ने देवता का आह्वान करते हुए मंत्रोच्चार शुरू किया। ऐशानी और अधीश ने उनका अनुसरण किया। मंत्रोच्चार और जाप पूरी रात चलता रहा। उन्होंने ध्यान रखा कि वे धीमी आवाज़ में जाप करें, क्योंकि तेज़ आवाज़ से पुजारी और अन्य तीर्थयात्री भी घबरा सकते थे। आधी रात के आसपास, अधीश ने कमरे के तापमान में बदलाव महसूस किया, पहले गर्मी हुई फिर ठंड। यह कुछ देर तक चलता रहा और फिर मौसम सुहावना हो गया। अधीश जानता था कि देवता ने उनकी प्रार्थना सुन ली है और जल्द ही उनके पास आएंगे। और यह बिल्कुल सही था।

सुबह करीब छह बजे अधीश ने ऐशानी में एक बड़ा बदलाव देखा। उसने मुड़कर देखा

तो दंग रह गया: उसका रंग लगभग हरा हो गया था। उसकी आँखों से पानी टपक रहा था, लेकिन अधीश जानता था कि वह रो नहीं रही थी। उसके सिर और हाथों के बाल बढ़ गए थे और पौधों की घुमावदार लताओं जैसे हो गए थे। अधीश जानता था कि ऐशानी को अब उनका एहसास नहीं था। वह स्वयं देवी बन गई थी, या कम से कम देवी का एक रूप। गुरुजी ने अपना जाप रोक दिया क्योंकि माता शाकुंभरी ऐशानी के शरीर में प्रवेश कर चुकी थीं; उन्होंने अपना जाप जारी रखा। समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था। गुरुजी और अधीश ने माता शाकुंभरी को प्रणाम किया। कुछ देर बाद, गुरुजी ने अधीश को इशारा किया, जो तुरंत मुख्य पुजारी को बुलाने के लिए बाहर चला गया। वह नीचे मुख्य मंदिर में उनका इंतजार कर रहा था। वह जल्दी से अधीश के पीछे उस कमरे में गया जहाँ ऐशानी थी। ऐशानी को देखकर उसकी आँखें अविश्वास से चौड़ी हो गईं। कुछ मिनटों तक वह ऐशानी को निहारता रहा, फिर उसके चरणों में गिरकर रोने लगा। उसने अपने जीवन में कई चमत्कार देखे थे, लेकिन यह चमत्कार सबसे अद्भुत था। यह तो स्वयं माता शाकुंभरी थीं! वह भावविभोर हो गया। गुरुजी ने उसे प्रेरित किया और कुछ करने को कहा।

“हमें उन भुंगों पर ले चलो जहाँ राक्षसों ने घेरा डाल रखा है। हमें नहीं पता कि माता कब तक हमारे साथ रहेंगी। वह एक सप्ताह तक हमारे साथ रह सकती हैं या कुछ ही घंटों में जा सकती हैं, हमें नहीं पता। इसलिए, हमारे पास बिल्कुल भी समय बर्बाद करने का समय नहीं है, आप समझते हैं?”

मुख्य पुजारी ने सिर हिलाया। उनका कितना मन कर रहा था कि वे माता के चरणों में बैठकर प्रार्थना करें और बस वहीं रहें। लेकिन माता का आह्वान एक अत्यंत विशिष्ट उद्देश्य के लिए किया गया था। अनिच्छा से, वे उन्हें एक गुप्त मार्ग से रेगिस्तान की सीमा तक ले गए। सूर्य अभी-अभी उगना शुरू हुआ था। उनके सामने मीलों तक फैला सूखा रेगिस्तान था, मीलों तक फैली रेत जो हर मिनट और गर्म होती जा रही थी। यह रेगिस्तानी राक्षसों के शिकार की तैयारी का समय था। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता, कोई निर्दोष यात्री आकर इन सुनसान सूखी झोपड़ियों में शरण लेता। राक्षस झोपड़ियों में इन निर्दोष लोगों पर हमला करने और उन्हें रेगिस्तान के भीतर गहराई तक घसीटकर ले जाने, वहीं उनकी हत्या करने, उनका मांस खाने और उनका खून पीने के लिए घात लगाए बैठे रहते। कभी-कभी वे किसी अनजान गाय, बकरी या अन्य जानवर को पकड़ लेते। उनका यही तरीका था। वे रेगिस्तान की गर्मी और जलती रेत के साथ एक

हो चुके थे। ठंडक, हरियाली और पानी उनके लिए अभिशाप थे। इस तरह रेगिस्तान धीरे-धीरे, दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था क्योंकि ग्रामीण भाग रहे थे, कुछ तो घबराहट में अपने पशुओं को भी वहीं छोड़ गए थे। जब चार लोगों का दल रेगिस्तान की इस सीमा पर पहुँचा, तो ऐशानी ने माँ शाकुंभरी के माध्यम से तुरंत काम शुरू कर दिया। उसके शरीर से प्रचुर मात्रा में जल बहने लगा; उसने सबसे पहले खाली भुंगों को निशाना बनाया क्योंकि वहीं रेगिस्तान के राक्षस छिपे होते थे, अनजान यात्रियों का इंतजार करते हुए।

ऐशानी ने स्वयं को इस प्रकार स्थापित किया कि उसकी पीठ रेगिस्तान की ओर थी और उसका मुख उन झोपड़ियों की ओर था जहाँ रेगिस्तानी राक्षस घात लगाए बैठे थे। उसकी शक्तियाँ इतनी प्रबल थीं कि पहली कुछ झोपड़ियाँ पानी से भर गईं। उसके शरीर से निकलने वाला पानी सूखी धरती में समा सकता था, लेकिन वह झोपड़ियों पर से झरना बनकर बह निकला, जिससे राक्षसों के पास झोपड़ियों से चीखते-चिल्लाते बाहर भागने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। उनमें से कुछ पहले ही घुलने लगे थे और ज़मीन पर गिरने लगे थे। वे सींग, पूंछ, पंजे और आग उगलती लाल आँखों वाले पारंपरिक राक्षसों जैसे नहीं थे। वे ढीले-ढाले ढंग से बंधे रेत के घने गुबार थे। अधीश और गुरुजी अपने अनुभव से राक्षस का चेहरा और शरीर पहचान सके, जबकि मुख्य पुजारी, जो सदमे और आश्चर्य से व्याकुल नहीं थे, केवल झोपड़ियों से उड़ते हुए रेत के तूफानों को देख सके। जैसे ही पानी इन राक्षसों को छूता, वे विघटित होने लगते। उनमें से कुछ ने कुछ क्षणों के लिए खुद को रोक लिया, चीखते-चिल्लाते हुए उस शक्ति से उन्हें बख्शने की विनती की। लेकिन देवी दया के मूड में नहीं थीं। उन्हें पर्याप्त छूट इस स्पष्ट शर्त के साथ दी गई थी कि वे कभी भी उनके क्षेत्र, यानी रेगिस्तान के मध्य भाग को पार नहीं करेंगे। उन्होंने समझौते का उल्लंघन किया था, प्रकृति के सामंजस्य को भंग किया था। इसलिए, उन्हें इसकी कीमत चुकानी ही होगी।

पहले कुछ झोपड़ियों में पानी भरकर वहां मौजूद राक्षसों को नष्ट करने के तुरंत बाद, ऐशानी बाकी झोपड़ियों की ओर बढ़ी और उन्हें भी पानी से भरने लगी। एक और चमत्कारिक घटना घट रही थी: अचानक घनी वनस्पति उगने लगी और आश्चर्यजनक गति से फैलने लगी, जिससे पहले की झोपड़ियों को तेजी से ढक लिया गया और इस तरह रेगिस्तानी राक्षसों का भाग्य तय हो गया। अब उनके लिए इन झोपड़ियों में वापस जाना असंभव था, भले ही उनमें से एक भी बच जाता। यह पूरा अभियान दोपहर तक

चलता रहा और तब तक सभी रेगिस्तानी राक्षसों का सफाया हो चुका था।
एक और आश्चर्यजनक घटना यह थी कि प्रत्येक कुटिया के रेगिस्तानी राक्षस के नाश होने के बाद, पानी अपने आप सूख जाता था और केवल हरियाली ही रह जाती थी। शाम तक, रेगिस्तान का यह हिस्सा राक्षसों से मुक्त हो गया था। माता शाकंभरी धीरे-धीरे चलने लगीं और अंततः रुक गईं। उन्होंने वापस जाने का नाटक किया, लेकिन मुख्य पुजारी के संकेत का इंतजार किया, जो अभी भी आश्चर्य से सब कुछ देख रहे थे। गुरुजी ने उन्हें हल्का सा धक्का दिया। वे चौंककर उठे और उन्हें अपनी स्थिति का एहसास हुआ। उन्होंने देवी के समक्ष हाथ जोड़कर प्रार्थना की और उसी गुप्त मार्ग से वापस मंदिर चले गए। ऐशानी से अभी भी पानी टपक रहा था; उसका शरीर अभी भी हरा था और उसमें से छोटी-छोटी कोमल लताएँ निकल रही थीं। अधीश अब बहुत चिंतित और परेशान था। वह जानता था कि देवी के शरीर छोड़ने और सामान्य मनुष्य बनने के बाद ऐशानी कितनी बीमार हो जाएगी। अपने पिछले अनुभव से अधीश यह भी जानता था कि भले ही उसका मन कुछ भी याद न रखे, लेकिन उसके शरीर को भूलने, ठीक होने और सामान्य स्थिति में आने में लंबा समय लगेगा। एक राहत की बात यह थी कि अब उसे उसके पिता के अस्पताल में भर्ती कराया जा सकता था ताकि वह स्वस्थ हो सके, जहां उसे चौबीसों घंटे देखभाल और सर्वोत्तम उपचार मिलेगा।
कमरे में लौटकर गुरुजी ने मुख्य पुजारी को जाने का इशारा किया, और वे तुरंत चले गए। वे सबसे सम्मानित और अनुभवी मुख्य पुजारी थे, लेकिन वे जानते थे कि वे हार चुके हैं। आज की घटनाएँ उनकी समझ से परे थीं। कमरे से निकलने से पहले गुरुजी ने उनसे उनके लिए एक गाड़ी का इंतज़ाम करने को कहा। वे इस महान समूह के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। अभी-अभी देखे गए चमत्कारों के अलावा, जो कुछ हुआ था वह मानवता के लिए एक बहुत बड़ा उपहार था। रेगिस्तान का विस्तार रुक जाएगा और लोग फिर से उसके किनारों पर बसने लगेंगे।

अनुवाद

टी

ऐशानी लाख कोशिश करने के बावजूद भी, ऐनार के शरीर में अधीश को देखकर पूरी तरह सहज नहीं थी। वह उसका अधीश था, ऐनार बिल्कुल नहीं, वह यह बात भली-भांति जानती थी; वह उनके दिलों की धड़कन को एक साथ देख और सुन सकती थी।

मंटिकोर के घातक हमले के बाद अधीश को जीवित रखने के लिए वह ईश्वर का जितना भी धन्यवाद करे, कम था। हर दिन, वह ईश्वर का पूरी श्रद्धा से धन्यवाद करती कि उन्होंने उसे अधीश दिया, चाहे वह किसी भी रूप में हो। और वह ऐनार की आत्मा का भी तहे दिल से धन्यवाद करती कि उन्होंने अधीश की आत्मा को अपने शरीर में तब तक रहने दिया जब तक कि उनका अपना शरीर उसे वापस स्वीकार करने के लिए स्वस्थ नहीं हो गया। सब कुछ जानने और स्वीकार करने और इसके लिए पूरी तरह से आभारी होने के बावजूद, जब भी वह अधीश को देखती, तो एक पल के लिए उसके मन में झिझक उठती थी। गुरुजी चिंतित थे। पड़ोसी देशों में से एक में भीषण भूकंप आया था।

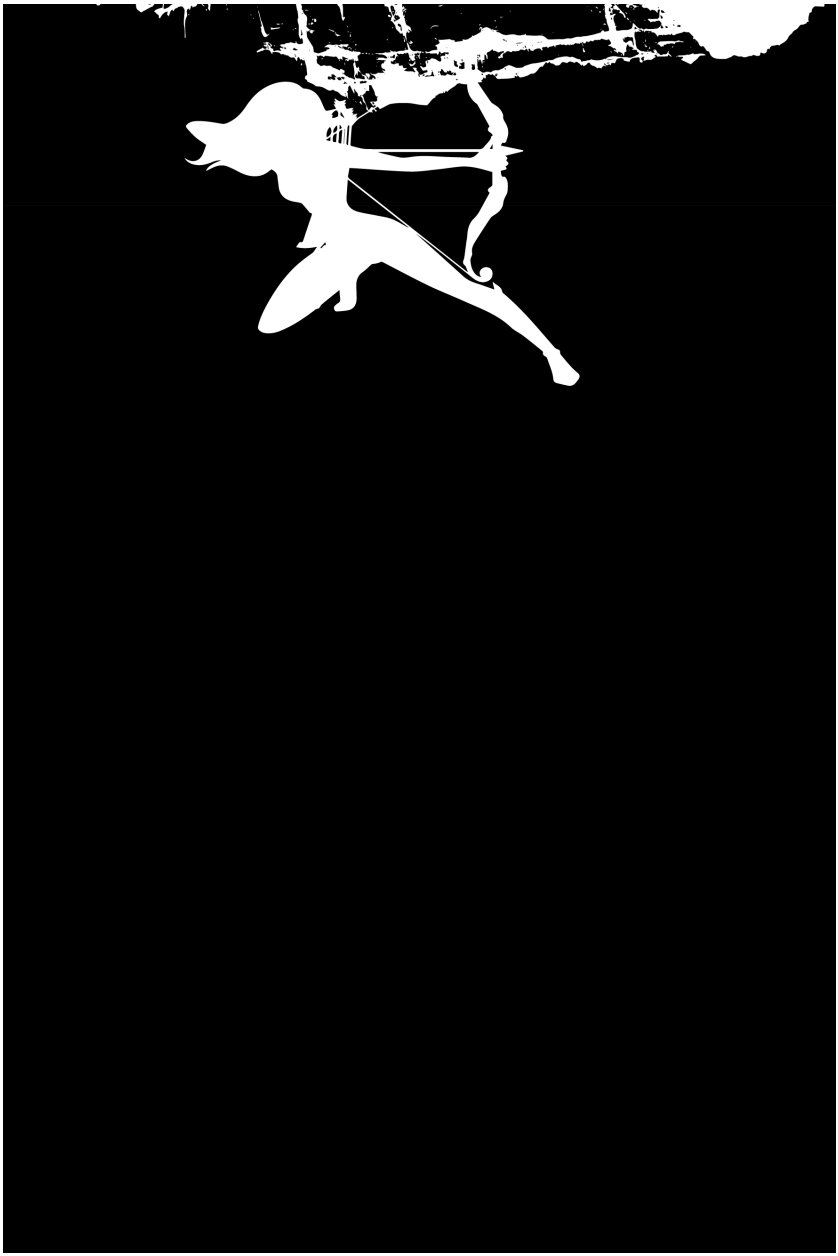

भूकंप के बाद हिंद महासागर में सुनामी आई जिसने दक्षिण और दक्षिणपूर्वी एशियाई देशों में भारी तबाही मचाई। गुरुजी के सूत्रों ने बताया था कि समुद्र के जल से एक

विशालकाय राक्षस निकला था। वास्तव में वह एक मछली थी, दुनिया के सबसे विशाल जीवों में से एक। इसे तिमिंगिला कहा जाता था, एक रंगीन, प्रकाशमान जीव जो वेदों के समय से अस्तित्व में था। रामायण में तिमिंगिला और अन्य समुद्री जीवों का उल्लेख है जो लंका और दक्षिण भारत के बीच के जलक्षेत्र में निवास करते थे, जहाँ राम ने राक्षस राजा रावण से युद्ध करने के लिए रामसेतु बनाया था। यह व्हेल और शार्क सहित सौ फीट लंबी मछलियों को एक ही बार में निगल सकता था। इसलिए, तिमिंगिला के आकार की कल्पना करना कठिन था।

किसी ने भी तिमिंगिला को नहीं देखा था, लेकिन लोगों ने अफवाहें सुनी थीं कि यह इतना विशाल और शक्तिशाली है कि यह समुद्र से आकाश में छलांग लगा सकता है और एक ही झटके में एक विशाल हवाई जहाज को निगल सकता है और फिर बिना किसी परेशानी के वापस पानी में फिसल सकता है। वयस्क तिमिंगिला लगभग सौ मीटर लंबा और उतना ही मोटा होता है। हालांकि प्राचीन ग्रंथों के अनुसार यह शांत दिखता है, लेकिन विशाल व्हेल, शार्क, जहाज या अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चीज को निगलने की इसकी क्षमता इसे बेहद खतरनाक बनाती है। गुरुकुल के वैज्ञानिकों से खबरें आ रही थीं कि एक विशाल सुनामी भारत के दक्षिणी भाग को तबाह करने वाली है। यह हिंद महासागर के सबसे गहरे हिस्से से निकलेगी और इतनी विशाल होगी कि पूरा महासागर और उसमें रहने वाले सभी जलीय जीव जललोक से पृथ्वी की सतह पर बह जाएंगे। अपने रास्ते में, यह अनजाने में सभी बड़े जलीय जीवों को निगल जाएगा, जिससे महासागर के पारिस्थितिक संतुलन में गड़बड़ी हो जाएगी। हालांकि इसे राक्षस की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता था, फिर भी इसे राक्षसों की श्रेणी में रखा गया था क्योंकि यह अपने भोजन के दौरान बहुत नुकसान पहुंचाता था और तटीय क्षेत्रों के पास आने पर भारी तबाही मचा सकता था। सुनामी द्वारा समुद्र और भूमि पर फेंके जाने की स्थिति में जीवन, वनस्पति और जीव-जंतुओं को बचाने के लिए इसका सफाया करना आवश्यक था।

सामान्य परिस्थितियों में, अधीश और ऐशानी इस अभियान के लिए आदर्श उम्मीदवार थे। जब वे साथ होते, तो उनकी शक्तियाँ इतनी बढ़ जातीं कि इस तिमिंगिला को नष्ट करना उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं होती। वे इसे बाहर आने से पहले ही गहरे समुद्र में विसर्जित कर देते। उन्हें जलमग्न अभ्यासों का भी कुछ अनुभव प्राप्त होता। उन्होंने पहले भी कई जलमग्न राक्षसों का नाश किया था, और यह उनके लिए एक

असाधारण अनुभव होता। लेकिन ऐसा नहीं होने वाला था, कम से कम इस बार तो नहीं। गुरुजी ने आह भरी। तिमिंगिला इतनी विशाल शक्ति थी कि केवल एक व्यक्ति उसे मार नहीं सकता था। ऐशानी जब भी ऐनार के शरीर में अधीश की आत्मा को देखती, तो वह पूरी तरह से सहज नहीं होती। एक क्षण के लिए ही सही, एक सूक्ष्म झिझक होती। और यही सब कुछ बदल देता। उनकी शक्तियाँ एक होकर कई गुना नहीं बढ़ सकती थीं। इस कठिन कार्य को करने के लिए कोई और नहीं था। मानवता और जलीय जीवन को बचाने के लिए, तिमिंगिला का उन्मूलन आवश्यक था।

मामला तय हो गया था। ये योद्धा उनके साथ जाएंगे। यह उनके लिए एक सीखने का अनुभव होगा। गुरुजी ने मन ही मन उन्हें यज्ञशाला में बुलाया। वे तुरंत आ गए। गुरुजी आम तौर पर उन्हें अपनी कुटिया में बुलाते थे। यह अभूतपूर्व था, लेकिन उनकी दुनिया में कुछ भी अप्रत्याशित या अजीब नहीं था। ऐशानी ने सही अनुमान लगाया कि यह एक आपातकालीन स्थिति है और गुरुजी तुरंत एक विशाल, सर्वव्यापी हवन से शुरुआत करना चाहते थे। लेकिन यहाँ कोई नहीं था। यज्ञशाला में सन्नाटा छाया हुआ था। यह असामान्य नहीं था। यज्ञशाला में कोई भी तब तक नहीं बोलता था जब तक कि उससे बात न की जाए। लेकिन यह सन्नाटा लोगों की अनुपस्थिति का था। वहाँ केवल तीन लोग थे: ऐशानी, अधीश और गुरुजी।

गुरुजी ने गंभीरता से उनकी ओर देखा और कहा, 'कुछ देर बाद हम हवन करेंगे। मैंने आपको पहले ही बुलाया था ताकि आपको कुछ दिनों में होने वाले घटनाक्रमों के बारे में बता सकूं। मैंने फैसला कर लिया है कि मैं इस विशालकाय संरचना को समुद्र की सतह तक पहुंचने से पहले ही ध्वस्त कर दूंगा।'

यह बात अधीश और ऐशानी दोनों के लिए पूरी तरह से आश्चर्यजनक थी। वे असमंजस में गुरुजी की ओर देखने लगे। उन्होंने जीवन भर गुरुजी को अपना मार्गदर्शक, मित्र और दार्शनिक माना था। वे जानते थे कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पवित्र त्रिमूर्ति के बाद, गुरुजी तीनों लोकों में सबसे शक्तिशाली सत्ता थे। लेकिन उन्होंने कभी कल्पना नहीं की थी कि गुरुजी किसी भी कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेंगे। गुरुजी ध्यान लगाकर अपने मन की शक्ति से सब कुछ नियंत्रित करते थे। और उनके योद्धाओं की सेनाएँ पूरे विश्व में फैली हुई थीं।

‘आप दोनों मेरे साथ रहेंगे, हालांकि कुछ दूरी पर। जब तक मैं आपको आगे बढ़ने का संकेत न दूं, आप हस्तक्षेप नहीं करेंगे। यह आप दोनों के लिए अपने पानी के भीतर के

कौशल और युद्ध प्रशिक्षण को निखारने का मौका है। पुनर्विचार करने पर, मैं आप दोनों को संघर्ष के अंतिम चरण में हमले में शामिल होने की अनुमति दे सकता हूं।'

उन्होंने सिर हिलाया, उनके मन में कई सवाल उठ रहे थे, लेकिन गुरुजी की बातों को हल्के में नहीं लिया जा सकता था। उन्होंने मिलकर इस विशालकाय मछली से भी कहीं अधिक भयंकर और शक्तिशाली राक्षसों का सामना किया था और उन्हें पराजित किया था। यह सच था कि तिमिंगिला को नष्ट करने के लिए सबसे शक्तिशाली बल की आवश्यकता थी, लेकिन क्या उनके पास वह शक्ति थी? या थी? चौंकाने वाली सच्चाई ने दोनों को एक ही समय पर झकझोर दिया। अधीश स्तब्ध रह गया और ऐशानी लज्जित हो गई। इसका संबंध ऐनार के शरीर में अधीश को स्वीकार करने में उसकी झिझक से था। यह केवल एक नैनोसेकंड के लिए था, लेकिन यह उन्हें अलग-अलग अस्तित्व के रूप में विभाजित करने के लिए पर्याप्त था। ऐसा इसलिए था क्योंकि अलग-अलग अस्तित्व के रूप में, उनके पास तिमिंगिला को नष्ट करने की शक्ति हो भी सकती है और नहीं भी। गुरुकुल में या दुनिया में कहीं भी किसी के पास तिमिंगिला को नष्ट करने की क्षमता नहीं थी।

इसलिए गुरुजी को स्वयं मामले को अपने हाथ में लेना पड़ा। ऐशानी कुछ नहीं कर सकती थी। वह जानती थी कि उसका प्रिय अधीश हर समय उसके साथ है, और वे बस उस समय का इंतजार कर रहे थे जब अधीश का शरीर उसकी आत्मा को फिर से धारण करने के लिए पर्याप्त रूप से स्वस्थ हो जाएगा।

कुछ ही देर में पंडित यज्ञशाला पहुँचने लगे। गुरुजी तुरंत इस मिशन पर निकलना चाहते थे, इसीलिए यज्ञ का आयोजन किया गया। नियम के अनुसार, वे हवन किए बिना कोई भी यज्ञ नहीं करते थे। हवन में लगभग एक घंटा लगा, जिसके बाद वे गुरुजी के पीछे-पीछे उनकी कुटिया में गए। गुरुजी ने अपनी कुटिया में कुछ अन्य अनुष्ठान किए। अधीश और ऐशानी अब इतने अनुभवी हो चुके थे कि वे समझ गए थे कि उन्हें देश के दक्षिणी भाग में ले जाया जा रहा है, जहाँ सुनामी आने की भविष्यवाणी की गई थी।

गुरुजी ने उनके सिर पर हाथ रखकर कुछ और मंत्रों का जाप किया। उनकी आँखें अपने आप बंद हो गईं और उन्हें समय का पता ही नहीं चला। कुछ देर बाद, शायद कुछ मिनट या कुछ घंटे, उन्हें पता नहीं चला, उन्होंने अपनी आँखें खोलीं। वे अब गुरुजी की कुटिया में नहीं थे, हालाँकि गुरुजी अभी भी उनके सिर पर हाथ रखकर

मंत्रों का जाप कर रहे थे। वे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते रहे। कुछ समय बाद गुरुजी ने अपने हाथ हटा लिए और वे खड़े होकर चारों ओर देखने लगे। उन्हें पता था कि वे दक्षिण भारत में हैं और अब समुद्र तट के किनारे पर हैं। समुद्र बहुत शांत और निर्मल था, लेकिन अधीश और ऐशानी दोनों जानते थे कि यह तूफान से पहले की शांति है। गुरुजी ने चारों ओर देखा और फिर बोले, 'अच्छा होगा कि तुम दोनों इस तट से परिचित हो जाओ। तुम्हें गुरुकुल जाने के लिए यहाँ वापस आना होगा।' उन्होंने सिर हिलाया और समुद्र तट पर चलने लगे। वे एक-दूसरे से बात नहीं कर रहे थे क्योंकि वे अपने विचारों में खोए हुए थे। उनके पैरों के नीचे की चट्टानें उनके विचारों की प्रतिध्वनि कर रही थीं और हर कदम पर उनकी फुर्ती और संतुलन की परीक्षा ले रही थीं। प्रकृति का असंतुलन पहले ही शुरू हो चुका था। ऊपर आकाश हल्का नीला और कोमल था, पत्थर नुकीले थे और मुलायम बादल लहरों पर तैर रहे थे। लहरों की लटें उनकी धड़कनों की प्रतिध्वनि कर रही थीं और इस सब के बीच पक्षी एक चाप में उड़ रहे थे और चीख रहे थे, उनकी अंतरात्मा उन्हें बता रही थी कि कुछ हो रहा है। किनारा एक द्वार की तरह था, जलीय और स्थलीय दुनिया का मिलन स्थल। फ़िरोज़ी लहरें समुद्र तट पर आ रही थीं, उनके पैरों को चूम रही थीं और झागदार निशान छोड़ते हुए पीछे हट रही थीं। लहरों ने दोनों योद्धाओं का स्वागत किया, वे अच्छी तरह जानती थीं कि वे कौन हैं और क्यों यहाँ हैं। वे धीरे-धीरे रेत पर अपने पदचिह्नों को छूती और मिटाती रहीं।

'ऐश, हमें अपने चिंतन को रोकना होगा और अब गुरुजी के साथ जुड़ना होगा।'

'ओह अधी, कभी-कभी मुझे सामान्य जीवन की बहुत याद आती है। काश सुनामी न आती और टाइमिंगिला से सामना न करना पड़ता...' वह आगे बोलने से पहले ही रुक गई।

'मुझे पता है बेबी,' उसने धीरे से कहा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कहीं जादू टूट न जाए। वह उसका अधीश था, वह जानता था कि वह यह जानती है, लेकिन उसके पास ऐनार का शरीर था। ऐनार एक असाधारण रूप से अच्छा दोस्त था, उनका सबसे अच्छा दोस्त, लेकिन वह ऐनार को कभी उस रूप में नहीं देख सकती थी।

'चलो अब हिम्मत जुटाकर गुरुजी के पास चलते हैं।'

वे पाँच मिनट में गुरुजी के पास पहुँच गए और निर्देशों की प्रतीक्षा करने लगे। गहरी आहें और उदासी गायब हो गई थी, इसके बजाय, गुरुजी के सामने दो बलवान, एकाग्र

योद्धा खड़े थे जिनके मन में राक्षस तिमिंगिला का नाश करने के अलावा और कोई विचार नहीं था।

गुरुजी ने अपने हाथों को झटका दिया और उनके सामने गोताखोरों के तीन जोड़े सूट प्रकट हो गए। उन्होंने जल्दी से उन्हें पहन लिया और गुरुजी के आदेशों की प्रतीक्षा में सावधान मुद्रा में खड़े हो गए।

गुरुजी ने कहा, "ये विशेष वस्त्र हैं। ये आपको समुद्र के सभी शिकारी जीवों से बचाएंगे। ये आपको समुद्री शैवाल या किसी अन्य खतरनाक जलीय या वनस्पति में उलझने पर भी बचाएंगे और मुक्त करेंगे।" उन्होंने सिर हिलाया। वे इन वस्त्रों से परिचित थे, क्योंकि उन्होंने इन्हें पहले भी पहना था, हालांकि कब, यह उन्हें ठीक से याद नहीं था। क्या यह इसी जन्म में था या किसी और जन्म में? अब इसके बारे में सोचने का समय नहीं था।

'पहले मैं पानी में जाकर टिमिंगिला को उसके मार्ग से मोड़ने की कोशिश करूंगा। यह इतनी विशाल है कि इसे उसके मार्ग से मोड़ना मुश्किल होगा। यह बहुत परेशान भी है। यह सुनामी में फंस गई है और अब किनारे की ओर धकेली जा रही है। ऐसा नहीं होने दिया जा सकता। टिमिंगिला को समुद्र की गहराई में कहीं रोकना होगा, किनारे के पास नहीं। अगर इसे वापस भेजने के मेरे प्रयास विफल हो जाते हैं, तो मुझे डर है कि मुझे इसे नष्ट करना पड़ेगा। यही हाल अन्य बड़ी मछलियों का भी है; उन्हें अपने परिचित परिवेश से बाहर निकाला जाना पसंद नहीं है। कोई भी जीवित प्राणी ऐसा नहीं चाहता।'

उन्हें समझ आ गया था कि गुरुजी इस स्थिति से प्रसन्न नहीं थे, लेकिन मानव जाति की रक्षा और संरक्षण के लिए वे ऐसा करेंगे। गुरुजी ने उनकी ओर देखा और कुछ और मंत्रों का जाप किया। उन्हें अपने जबड़े के आसपास थोड़ी सी बेचैनी और गर्मी महसूस हुई। अधीश ने अपना हाथ अपने जबड़े पर रखा। उसके जबड़े पर एक तरह की वृद्धि थी। कुछ ही सेकंड में, उसके जबड़े से चिपचिपे मांस के टुकड़े निकल आए। उसने ऐशानी की ओर देखा। उसके जबड़े पर भी ऐसे ही टुकड़े निकल आए थे।

उसने मन ही मन उससे कहा, 'अधी, तुम्हारी दाढ़ी उग आई है!'

'हां, तुमने भी!' उसने मन ही मन ठहाका लगाया।

शर्मिंदा होकर ऐशानी ने अपने जबड़े को छुआ। 'हे भगवान!' उसके भी घने बाल उग आए थे।

दोनों ने गुरुजी की ओर देखा, जो मुस्कुरा रहे थे।

“अच्छा, क्या तुम मेरे साथ सागर के बीचोंबीच नहीं जाना चाहते थे? ये गलफड़े हैं जिनसे तुम पानी में सांस ले पाते हो। मैंने तुम्हारी आंखों के लिए विशेष आवरण भी दिया है, ताकि खारे पानी में उनमें ज्यादा जलन न हो। इसके अलावा, बाकी सब तुम्हें खुद संभालना है। जितना हो सके उतने जीवों को बचाने की कोशिश करो और उन्हें सागर में ही रखने का प्रयास करो। चाहे कुछ भी हो जाए, सबसे पहले खुद को बचाओ। सब कुछ ध्यान से देखो और मेरे पास रहो।” यह कहकर गुरुजी पानी में चले गए और गायब हो गए। वे गुरुजी को देखते रहे, फिर पानी की ओर देखा। पानी एकदम साफ नीला था। खारी लहरें शांत और विशाल रूप से बह रही थीं। सीधे आगे देखते हुए, वे खारे नीले सागर और धुंधले क्षितिज के बीच अंतर नहीं कर पा रहे थे। यह इतना शांत था कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि सागर में एक ज्वालामुखी तूफान उठ खड़ा होगा जो पृथ्वी के कई हिस्सों को भी नष्ट कर देगा। घटनाओं के इस मोड़ से चकित और अवाक होकर, उन्होंने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और पानी में उतर गए। वे लगभग आधा मील चले, उनके गलफड़े उन्हें सांस लेने में मदद कर रहे थे। शुरुआत में, उन्हें कछुओं की कुछ प्रजातियाँ मिलीं, जिनमें से कुछ छोटी थीं और कुछ विशाल और हरे रंग की थीं। उन्होंने समुद्र के अंदर से ऊपर देखा। सूरज एक नरम, फैली हुई डिस्क की तरह चमक रहा था। पानी के अंदर सूरज की रोशनी सुनहरी नहीं बल्कि नीली थी और जैसे-जैसे वे नीचे जाते गए, किरणें और भी गहरी होती गईं। चट्टानें अब केवल परछाईं जैसी दिख रही थीं। कभी कोई मछली तो कभी कोई कछुआ उनके पास से बेपरवाह होकर गुजर रहा था। पानी का दबाव बढ़ गया और पानी सूप की तरह गाढ़ा होता चला गया। यह सचमुच एक त्रि-आयामी दुनिया थी।

जैसे-जैसे पानी का दबाव बढ़ता गया, उनके स्विमसूट उन्हें हिंद महासागर के गहरे मध्य में धकेलते चले गए। समुद्र तल अपनी पूरी सुंदरता से चमक रहा था। वे वनस्पतियों और जीवों को देखकर चकित रह गए। उन्होंने पहले कभी ऐसी सुंदरता नहीं देखी थी, इतनी मनमोहक, आकर्षक और विविधतापूर्ण, कुछ स्थिर खड़ी अपनी सुंदरता में इतरा रही थीं, कुछ रेशमी लहरों की तरह तैर रही थीं। वे विभिन्न रंगों को पहचान सकते थे। अब वे जलीय जीवों को भी देख सकते थे, जिनमें से अधिकतर मछलियाँ थीं। ऐशानी चाहती थी कि वह समुद्र की इस प्रचुरता का आनंद लेने के लिए

कुछ और समय यहाँ बिता सके। जैसे-जैसे वे पानी में और गहरे उतरते गए, उन्होंने डॉल्फ़िन को पीछे छोड़ दिया और समुद्र के अधिक खतरनाक जीवों को देखने लगे। अचानक, ऐशानी को लगा कि उसने एक नीली व्हेल देखी है। उत्साह में, वह इस दृश्य को साझा करने के लिए अधीश का हाथ पकड़ना चाहती थी, लेकिन जैसे ही वह उसकी ओर मुड़ी, उसने ऐनार को देखा और वह पल बीत गया। अधीश उसके बगल में था। उसने उसका इशारा देखा और समझ गया। दोनों एक साथ उस चमकीली नीली व्हेल को निहारने लगे। वह इतना विशाल था कि उसकी विशालता का पूरा अंदाजा लगाने के लिए उन्हें पूरे पांच मिनट तक तैरना पड़ा। वह अकेला नहीं था, उसका एक साथी भी था, वे नहीं जानते थे कि वह उसका साथी था या बच्चा। दोनों का आकार लगभग एक जैसा लग रहा था। अफसोस के साथ वे उसे पीछे छोड़कर उस ओर तैरने लगे जहाँ उन्हें लगा कि गुरुजी होंगे।

खारे पानी में दहशत के संकेत दिखाई दे रहे थे। पानी के दबाव और बहाव के अभ्यस्त होने के बाद, उन्होंने धीरे-धीरे अन्य चीजों पर भी ध्यान देना शुरू किया। पानी लहरों की तरह नहीं बह रहा था, बल्कि ऐसा लग रहा था कि वह केवल एक ही दिशा में बह रहा है - ऊपर की ओर। उन्होंने मछलियों के झुंडों को बढ़ते पानी के साथ ऊपर जाते देखा। जल्द ही उन्होंने एक किलर शार्क को ऊपर जाते देखा, फिर दूसरी और फिर तीसरी। देखते ही देखते मछलियों का एक झुंड ऊपर की ओर बढ़ने लगा। वे यह भी समझ गए कि वे उस उफनते पानी के साथ ऊपर जा रही थीं जो एक विशाल लहर में तब्दील हो रहा था। मछलियों के शल्क चांदी के कवच जैसे लग रहे थे क्योंकि पानी उन्हें जबरदस्ती ऊपर फेंक रहा था। इसमें कुछ भी स्वाभाविक या कोमल नहीं था। समुद्र का पानी धीरे से नहीं, बल्कि परमाणु विस्फोट की लहर की शक्ति से बह रहा था। लहर का न कोई अंत था और न ही कोई शुरुआत, उन्होंने इससे बचने के लिए यथासंभव दूर तैरने की कोशिश की। क्या यह सुनामी थी? उन्होंने इसका पता लगाने का इंतजार नहीं किया। अराजकता पूर्ण थी, इतनी भीषण कि वह पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर देने वाली थी। पानी के अंदर युद्ध के नगाड़े बज रहे थे।

उन्हें जल्द से जल्द गुरुजी तक पहुंचना था। समुद्र की सुंदरता को देखने के लिए अभी इंतजार करना पड़ेगा। समुद्र भी आगंतुकों का स्वागत करने के मूड में नहीं था। उसके निवासी खुद ही जबरन बेदखल किए जा रहे थे और समुद्र किसी भी आगंतुक का स्वागत करने के मूड में नहीं था। विशाल लहर द्वारा समुद्र से बाहर फेंके जा रहे

विशालकाय शार्क के आकार को देखकर गुरुजी के पास पहुंचने की आवश्यकता और भी बढ़ गई। ऐसा नहीं था कि उन्हें गुरुजी की स्थिति से निपटने की क्षमता पर विश्वास नहीं था—गुरुजी उनके भगवान थे, वे कुछ भी बना सकते थे और सब कुछ नष्ट कर सकते थे, लेकिन वे योद्धा थे, उन्हें अपने शत्रुओं को नष्ट करने के लिए युद्धक्षेत्र में रहना पसंद था। ऐशानी फिर से अपराधबोध से ग्रस्त हो गई। यह उसका और अधीश का कर्तव्य था। गुरुजी को ही इस स्थिति से निपटना था क्योंकि उनसे अधिक योग्य कोई और नहीं था।

पानी में उनकी शक्तियों ने उन्हें गुरुजी की ओर तेज़ी से समुद्र में धकेल दिया। कुछ ही मिनटों में, अधिश के ट्रैकर ने संकेत दिया कि वे गुरुजी तक पहुँच गए हैं, लेकिन वे उन्हें देख नहीं पा रहे थे, शायद इसलिए कि वे एक विशाल जहाज़ के मलबे के दूसरी तरफ थे। अधिश ने ऐशानी को इशारा किया कि गुरुजी तक पहुँचने के लिए उन्हें दूसरी तरफ तैरना होगा। गुरुजी ने उन्हें विशेष रूप से हस्तक्षेप न करने के लिए कहा था, इसलिए उन्होंने हस्तक्षेप नहीं किया। वे गुरुजी की अनुमति के बाद ही आगे बढ़ेंगे। उन्होंने जहाज़ के दूसरी तरफ तैरने की कोशिश की। वे तैरते रहे, लेकिन जहाज़ का किनारा इतना लंबा था कि उन्हें उस तरफ पहुँचना मुश्किल हो रहा था जहाँ उन्हें लग रहा था कि गुरुजी हैं। कुछ गड़बड़ थी। अपनी विशेष शक्तियों के कारण, वे बहुत तेज़ गति से तैर रहे थे, लेकिन मंज़िल कहीं नज़र नहीं आ रही थी। वे रुक गए। उन्होंने एक-दूसरे को देखा और फिर जहाज़ को, उसका ढाँचा सामान्य से कहीं ज़्यादा चिकना लग रहा था। उन्होंने जहाज़ को ऊपर से नीचे तक देखा। वह अपनी लंबाई के बराबर ही विशाल लग रहा था। उसी समय उन्हें सच्चाई का एहसास हुआ। यह किसी डूबे हुए जहाज़ का अवशेष नहीं था, यह तो स्वयं तिमिंगिला मछली थी! वे एक-दूसरे को हैरानी और उत्सुकता से देखने लगे, उनकी योद्धा प्रवृत्ति तुरंत जागृत हो गई। इतनी बड़ी मछली तो बिना किसी प्रयास के ही कई तटीय कस्बों को तबाह कर सकती थी। उन्हें गुरुजी की इसे नष्ट करने की क्षमता पर कोई संदेह नहीं था; वे देखना चाहते थे कि गुरुजी यह कैसे करेंगे। लेकिन पहले उन्हें इसे पार करना था। अपनी इस चौंकाने वाली खोज के बाद, उन्होंने अपनी यात्रा फिर से शुरू की और इस बार वे गुरुजी तक पहुँच गए। तिमिंगिला इतनी विशाल थी कि शायद उसे उनकी उपस्थिति का एहसास भी न हो। लेकिन वह निश्चित रूप से परेशान थी। उसके पेट से ज़ोरदार आवाज़ें आ रही थीं; यह 'ब्लूप' जैसी आवाज़ थी, जो किसी के ज़ोर से निगलने या निगलने पर

निकलती है। शायद यही एकमात्र आवाज़ थी जो वह जानती थी, क्योंकि उसने अपने पूरे जीवन में यही किया होगा। उन्होंने उस विशालकाय जीव को ठीक से देखने के लिए थोड़ा पीछे धकेला और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि वह बहुरंगी थी। उसके कुछ हिस्सों से फ्लोरोसेंट हरे, पीले और लाल रंग की रोशनी निकल रही थी। फ्लोरोसेंट रंग शायद उसे समुद्र में रास्ता खोजने में मदद कर रहे थे। अंततः, उन्हें गुरुजी दिखाई दिए। उन्होंने आँखों से उनका अभिवादन किया, लेकिन अब वे ऊपर की ओर देख रहे थे। उन्होंने गुरुजी की आँखों की दिशा का अनुसरण किया और उनकी आँखें फटी रह गईं। एक और विशालकाय जीव उनकी ओर आ रहा था जो कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा था। उन्होंने अपनी स्मृति में उसे याद करने की पुरजोर कोशिश की। अचानक अधीश के दिमाग में एक बात कौंधी। यह विशाल सफेद शार्क थी, समुद्र की सबसे घातक मछलियों में से एक। यह बहुत बड़ी थी और तेजी से उनकी ओर आ रही थी। उसने ऐशानी की ओर देखा। उसने पहले ही अपना धनुष और बाण निकाल लिया था, वही बाण जो बर्फ और आग के कई धारदार बाण चलाता था। उसने भी अपनी साधारण सी दिखने वाली तलवार निकाल ली जो एक बटन दबाते ही पाँच विशाल तलवारों में बदल जाती थी। लेकिन इससे पहले कि उनमें से कोई भी हमला कर पाता, विशाल शार्क लगभग आँखों से ओझल हो गई, एक जोरदार तुरही जैसी आवाज के साथ उनकी आँखों के सामने से गायब हो गई। वह कहाँ गई? उन्होंने चारों ओर तेज़ी से देखा, लेकिन विशाल सफेद शार्क गायब हो चुकी थी। कुछ क्षणों बाद उन्हें एहसास हुआ कि विशाल शार्क को तिमिंगिला ने निगल लिया है और तुरही जैसी आवाज़ तिमिंगिला के उसे निगलने की थी। इस नाटकीय दृश्य और जलीय जीवों के विशाल आकार को देखकर वे स्तब्ध और अचंभित रह गए और गुरुजी के निर्देशों की प्रतीक्षा में वहीं खड़े रहे। हालांकि तिमिंगिला भी धीरे-धीरे चल रही थी, लेकिन उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह इतनी विशाल थी कि उन्हें लगा जैसे वे उसके बगल में तैर रहे हों। साथ ही, वे भी सुनामी के भंवर में फंसते जा रहे थे और बाहर धकेले जा रहे थे। उन्होंने गुरुजी की ओर हताशा से देखा। गुरुजी की आंखें बंद थीं, वे शांत दिख रहे थे। लगभग हर दस सेकंड में, गुरुजी थोड़ा पानी निगलते, आंखें बंद करते, मन ही मन कोई मंत्र जपते और फिर ज़ोर से पानी तिमिंगिला पर थूक देते। यह सिलसिला कुछ मिनटों तक चलता रहा। कुछ नहीं हुआ सिवाय इसके कि विशाल मछली रुक गई और स्थिर खड़ी रही। वे तिमिंगिला की तुलना में इतने छोटे थे कि शायद उसे उनकी

उपस्थिति का एहसास भी नहीं हुआ। अधीश और ऐशानी हताश होते जा रहे थे। वे सभी बहुत तेज़ी से पानी से बाहर फेंके जा रहे थे, लेकिन उन्हें अपने गुरुजी पर पूरा भरोसा था। कुछ समय बाद, तिमिंगिला भी ऊपर की ओर बढ़ने लगी। और धीरे-धीरे उन्होंने एक बदलाव देखा, एक ऐसा अद्भुत बदलाव कि उन्हें जानबूझकर रुककर इसकी पुष्टि करनी पड़ी। गुरुजी तिमिंगिला पर अपने मुख से जादुई जल थूकते रहे। तिमिंगिला लंबाई और चौड़ाई में थोड़ी छोटी हो गई थी, हालांकि यह अभी भी इतनी बड़ी थी कि इस बदलाव का कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ सकता था। वे इंतज़ार करते रहे जबकि गुरुजी मंत्रों से भरे जल का छिड़काव करते रहे। धीरे-धीरे और अदृश्य रूप से, तिमिंगिला का आकार एक बड़ी व्हेल के आकार का हो गया। जैसे-जैसे गुरुजी छिड़काव करते रहे, यह एक छोटी व्हेल के आकार का हो गया। इसके बाद गुरुजी रुक गए और सभी ने राहत की सांस ली। तट पर एक छोटी व्हेल को संभाला जा सकता था। अचानक उन्हें समुद्र के किनारे फेंक दिया गया। तिमिंगिला को भी समुद्र में फेंक दिया गया था, हालांकि अब वह उतना डरावना नहीं लग रहा था। वह पानी की कमी के कारण किनारे पर छटपटा रहा था। गुरुजी दौड़कर उसके पास गए, लेकिन जब तक वे वहाँ पहुँचे, उसका छटपटाना बंद हो गया था और वह शांत हो गया था। गुरुजी ने उदास होकर कहा, 'यह मर गया है। यह कुछ समय तक बिना पानी के जीवित रह सकता था, लेकिन अपने शरीर के अचानक सिकुड़ने को सहन नहीं कर सका। काश मैं इसे बचाने के लिए कुछ कर पाता। अब सब प्रभु के हाथों में है।' गुरुजी ने हाथ जोड़कर एक छोटी सी प्रार्थना की। ऐशानी और अधीश ने भी तिमिंगिला और समुद्र में फेंके जा रहे अन्य समुद्री जीवों के लिए प्रार्थना की।

ड्रग दानव

"डी
अदा, क्या नशेड़ियों का मरना गलत है? मेरा मतलब है, वे पक्के नशेड़ी होते हैं; वे अपने रोज़ाना के नशे की खुराक पाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। मुझे यकीन है कि उन्होंने नशे की खुराक खरीदने के लिए थोड़े से पैसे जुटाने के लिए हत्या भी की होगी।
उदय ने सिर हिलाया। वह अपने छोटे भाई तेजस के साथ गुरुकुल के खाली कमरों में

से एक में बैठा था। तेजस को इतनी समझदारी से बोलते सुनकर वह हैरान रह गया। उसने फिर से तेजस की ओर देखा और उसे इतना बड़ा देखकर दंग रह गया। और क्यों न होता! तेजस अब गुरुकुल में वरिष्ठ हो गया था। वह लंबा और दुबला-पतला हो गया था और उसके व्यवहार में परिपक्वता आ गई थी। लेकिन उदय ने उसे कभी इस रूप में नहीं देखा था। उसके लिए तेजस एक पिल्ले की तरह था जो उसके चारों ओर भौंकता रहता था और हमेशा शोर मचाता रहता था।

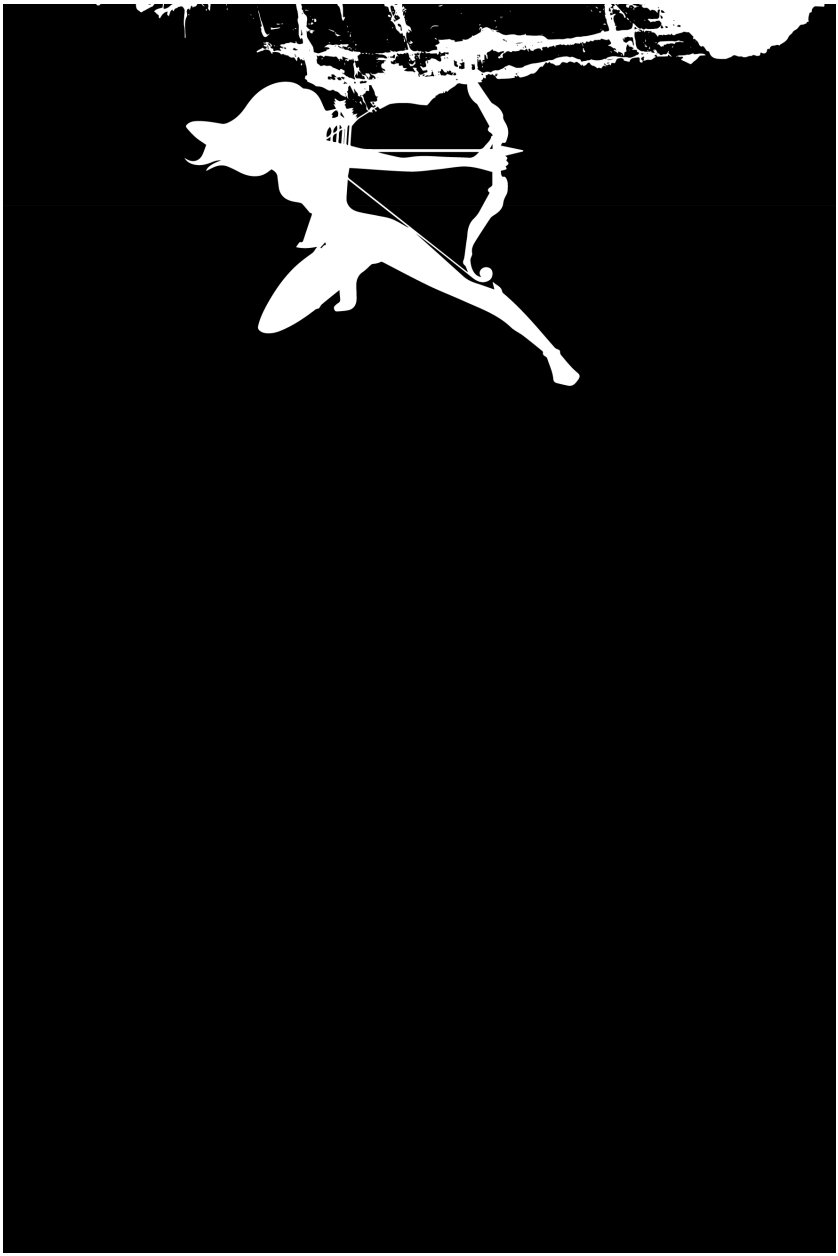

लेकिन उनके बीच प्यार का बंधन हमेशा से था। बस फर्क इतना था कि तेजस को कभी किसी ने गंभीरता से नहीं लिया, वह दोनों परिवारों का सबसे प्यारा और छोटा

सदस्य था, उनके परिवार का भी और ऐशानी के परिवार का भी। और यहाँ वह नशेड़ियों के बारे में इतनी समझदारी से बात कर रहा था।

'तेजस, मैं तुमसे सहमत हूँ, इन कट्टर नशाखोरों के बारे में कुछ नहीं किया जा सकता। उनका कभी पुनर्वास नहीं हो सकता। लेकिन वे भी इंसान हैं, और उन्हें अस्वाभाविक तरीके से मारा जा रहा है। ऐशानी और इस प्रकार मानवता के रक्षक के रूप में यह हमारा पवित्र कर्तव्य है कि हम सभी मनुष्यों की रक्षा करें, चाहे वे कितने भी पतित और घृणित क्यों न हों।'

कुछ समय बाद अधीश, ऐशानी और रूबी भी उनके साथ शामिल हो गए। जयंत भी उनके साथ था। आम तौर पर, जयंत समूह की बैठकों से दूर ही रहता था, जब तक कि गुरुजी उसे विशेष रूप से न बुलाएँ। दूसरों की तरह, वह भी अपने कर्तव्यों को भली-भांति जानता था और पूरी गंभीरता से उनका निर्वाह करता था। इसी कारण, वह वातावरण में किसी भी संकट या अस्थिरता के प्रकट होते ही उस पर नज़र रखता था। उसकी एक्स-रे जैसी दृष्टि उसे ऐसी चीजें देखने में सक्षम बनाती थी जो सामान्य आँखें नहीं देख सकती थीं। वह जानता था कि गुरुकुल और वे स्वयं हमेशा निरंतर खतरे में हैं और उसकी विशेष दृष्टि ने गुरुकुल की कई बार मदद की थी। अपने खाली समय में, जो कि बहुत कम मिलता था, वह बस मौज-मस्ती करता रहता था। कभी-कभी तेजस भी उसके साथ चला जाता था और अपनी शक्ति के कारण वह एक अविश्वसनीय रूप से मूल्यवान सहयोगी साबित हुआ था।

‘गुरुजी के पास जाकर निर्देश लेने से पहले,’ जयंत ने बात शुरू करते हुए कहा, ‘मैं आपको बता दूं कि तेजस और मैंने इन नशाखोरों के हत्यारों का पता लगा लिया है।’

सभी लोग हैरानी से जयंत और तेजस की ओर मुड़े। तेजस ने उदय से जल्दी से कहा, 'दादा, हमें इसके बारे में कल ही पता चला और मुझे लगा कि जयंत का आपको बताना ही उचित होगा। उसने अपनी असाधारण दृष्टि से पूरी कार्रवाई देखी थी।'

ऐशानी और अधीश बड़ी ध्यान से सुन रहे थे। मामला गंभीर होता जा रहा था। रूबी ने पूछा, 'जयंत, तुमने क्या देखा?'

जयंत ने उन सभी की ओर देखा। वे बेसब्री से उसके जवाब का इंतज़ार कर रहे थे, “खैर, हत्यारे राक्षस हैं, खून चूसने वाले राक्षस।” हालाँकि उन्हें उसके वाक्य का पूरा अर्थ समझ नहीं आया, फिर भी वे उसका सार समझ गए। वे कुछ और खुलासों की प्रतीक्षा करने लगे।

'ये खून चूसने वाले राक्षस हैं जो नशे के आदी भी हैं। नशे की उनकी ज़रूरत इतनी ज़्यादा है कि वे इसे पाने के लिए अपने शिकारों की हत्या कर देते हैं।'

'ऐसा नहीं है कि राक्षसों को हत्या और लूटपाट करने के लिए किसी कारण की आवश्यकता होती है। बाहर जाकर नशीली दवाएं खरीदना उनके लिए उपयुक्त तरीका नहीं होता,' ऐशानी ने व्यंग्यपूर्वक टिप्पणी की। 'वे बिना किसी प्रयास के नशेड़ियों से नशीली दवाएं छीन सकते थे।'

'बिल्कुल! लेकिन बात वो नहीं है,' जयंत ने कहा। 'तो फिर तुम्हारा मतलब क्या है?' रूबी ऊब रही थी; उसने राक्षसों के वध और उनके वध के इतने दृश्य देखे थे कि इस बात में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। 'बात ये है कि इन राक्षसी व्यसनी पर ऐसा श्राप है कि वे मांस और हड्डियाँ नहीं खा सकते। वे केवल रक्त पी सकते हैं और क्योंकि वे व्यसनी हैं, इसलिए उन्हें दूसरे रक्त व्यसनी लोगों को मारकर उनका रक्त पीना पड़ता है। ये एक अलग तरह का ड्रैकुला है।' बाकी लोग लगभग मुस्कुरा दिए। जब वे आखिरकार गुरुजी के पास पहुँचे, तो उन्होंने तुरंत उन्हें पुस्तकालय भेज दिया; अधीश, ऐशानी और अब उदय भी वरिष्ठ पुस्तकालय में चले गए। गुरुकुल के विनाश के बाद वरिष्ठ पुस्तकालय का स्थान बदल गया था। दोनों पुस्तकालय सुरक्षित बच गए थे, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि राक्षस उनकी तलाश नहीं कर रहे थे, दूसरा यह कि नैनो राक्षस उन्हें नहीं ढूंढ पाए क्योंकि वे बहुत अच्छी तरह से छिपे हुए थे। एक और अच्छी बात यह थी कि विनाश के दिन वहाँ कोई मनुष्य मौजूद नहीं था, यहाँ तक कि पुस्तकालयाध्यक्ष वशिष्ठ भी अनुपस्थित थे। यह बस यूं ही हो गया, राक्षसों को उस दिशा में किसी इंसान की गंध नहीं आई। इसलिए एक बड़ी आपदा टल गई। फिर भी, वरिष्ठ पुस्तकालय का स्थान बदल दिया गया था। अब यह खुले में था और इसमें दीवारें, फर्श या छत भी नहीं थी। कुछ वरिष्ठों को यह बहुत अजीब लगा और उन्होंने इसके बारे में पूछताछ भी की। पता चला कि अब पुस्तकालय के चारों ओर तीन स्तरीय अदृश्य सुरक्षा व्यवस्था थी और सभी किताबों की अलमारियों को अपने-अपने आपातकालीन अलार्म कोड दिए गए थे। यदि पुस्तकालय की सुरक्षा पहले से ही पुख्ता थी, तो अब यह और भी अधिक पुख्ता हो गई थी। एक अच्छी बात यह थी कि उन्हें हमेशा ऐसा लगता था मानो वे प्रकृति की गोद में बैठकर अपनी पसंदीदा किताबें पढ़ रहे हों।

रूबी, जयंत और तेजस नियमित पुस्तकालय जाते थे, जो किसी भी तरह से कम नहीं

था, फर्क सिर्फ इतना था कि वरिष्ठ पुस्तकालय में प्राचीन ग्रंथ अधिक थे और इसलिए वहां थोड़ी अधिक जानकारी और समाधान उपलब्ध थे। यहां तृतीय और मध्य स्तर के राक्षसों के बारे में पूरी जानकारी थी। कई बार, नियमित पुस्तकालय उनकी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त से अधिक होता था, साथ ही वहां समकालीन भाषाओं में अधिक पुस्तकें थीं, इसलिए उन्हें समझना आसान था। गुरुजी ने उन्हें अगले दिन बुलाया था। रक्त चूसने वाले राक्षस काफी आम थे। उनके बारे में ढेर सारी जानकारी उपलब्ध थी। लेकिन गांजा पीने वाले इतने आम नहीं थे। खोज से पर्याप्त परिणाम नहीं मिल रहे थे। तेजस भी रूबी और जयंत की मदद करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन असल में वह बस इधर-उधर समय बिता रहा था। पढ़ना उसकी सबसे बड़ी रुचि नहीं थी। तेजस तभी खुश हुआ जब जयंत ने एक ऐसी पुस्तक देखी जो उनके काम आ सकती थी। आखिरकार! शरीर को फैलाकर उसने उन पुस्तकों को निकाला जिनकी ओर जयंत इशारा कर रहा था, जो किताबों की अलमारी के ऊपर अन्य पुस्तकों के पीछे छिपी हुई थीं। जयंत की दृष्टि असाधारण थी, इसलिए वह पुस्तकों की पहली पंक्ति के आर-पार देख सकता था। इस विषय पर बहुत कम पुस्तकें थीं और धीरे-धीरे वे एक कोने में सिमट गई थीं। सभी राक्षस किसी न किसी प्रकार के व्यसनी थे, लेकिन उनके व्यसन मनुष्यों के व्यसनों से भिन्न थे: वे हत्या, लोभ, यातना, आलस्य, क्रोध और ऐसे ही अन्य दुर्गुणों के आदी थे। वे गांजा या हेरोइन जैसे मादक पदार्थों के सेवन से ऊपर थे। उनका पतन इससे कहीं अधिक था। योद्धा घंटों पुस्तकालय में पुस्तकों का अध्ययन करते रहे और अंततः कुछ निष्कर्षों पर पहुँचे। गुरुजी की कुटिया जाते समय, वे अधीश, ऐशानी और उदय से मिले, जो संभवतः उसी निष्कर्ष पर पहुँचे थे। जब वे पहुँचे, तब गुरुजी ने अपनी शाम की ध्यान साधना समाप्त कर ली थी। गुरुजी ने उन्हें बैठने का इशारा किया। उन्होंने अपनी चटाइयाँ बिछाईं और गुरुजी के चारों ओर अर्धवृत्त बनाकर जमीन पर बैठ गए।

'तो,' गुरुजी ने पूछा, 'तुम किस निष्कर्ष पर पहुँचे हो?' दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा, फिर जयंत बोला, 'गुरुजी, इन राक्षसों को मारने का एकमात्र तरीका विष है, वह भी सबसे शक्तिशाली विष। हमें ऐसे विषों का पता लगाना होगा जो मानव नशाखोरों को नुकसान पहुँचाए बिना इन राक्षसों को मार सकें। फिर हम उस राक्षस या राक्षसों का पता लगाएंगे जो नशाखोरों को मार रहे हैं। हमें किसी तरह राक्षस/राक्षसों को यह विश्वास दिलाना होगा कि वे नशाखोरों का खून पी रहे हैं, जबकि वे

वास्तव में सबसे शक्तिशाली विष पी रहे होंगे।'

'वाह, जयंत, तुमने बहुत अच्छा शोध किया है,' गुरुजी ने उसकी प्रशंसा की। जयंत थोड़ा झिझका। गुरुजी से यह प्रशंसा वाकई बहुत बड़ी थी। 'तो क्या तुमने राक्षसों को विष पिलाने की कोई रणनीति सोची है?' वे सब चुप रहे और नीचे देखने लगे। उन्हें जवाब पता था, लेकिन उसे ज़बान से कहने में असहज महसूस कर रहे थे। गुरुजी समझ गए। 'अब जब हम इस निष्कर्ष पर पहुँच ही गए हैं, तो हमें इसे अमल में लाना होगा।' रूबी की ओर मुड़ते हुए गुरुजी ने कहा, 'इस योजना को अंजाम देने के लिए तुमसे बेहतर कोई नहीं है।' रूबी एक पल के लिए चौंक गई, बाकी सब भी थोड़े हैरान हुए। लेकिन बस एक पल के लिए। उन्हें राहत भी मिली। यह सब योद्धाओं और रक्षकों के रूप में उनके जीवन का अभिन्न अंग था। 'जी गुरुजी,' रूबी ने सहमति में सिर झुकाया। 'आप सबको एक साथ बैठकर रणनीति बनानी होगी। ज़हर आपको माँगने पर ही दिया जाएगा।'

उन्होंने इस बात पर कोई सवाल नहीं उठाया क्योंकि वे जानते थे कि अगर गुरुजी चाहते तो गुरुकुल में ही पर्याप्त मात्रा में जहर उपलब्ध कराया जा सकता था। गुरुजी के चरणों को स्पर्श करके वे उनकी कुटिया से निकल गए। ऐशानी ने अधीश को इशारा किया। अधीश समझ गया और लड़कों को अपनी रणनीति पर चर्चा करने के लिए दूसरी दिशा में ले गया। ऐशानी और रूबी विपरीत दिशा में गईं और एक पेड़ के नीचे नदी के किनारे बैठ गईं।

ऐशानी अब पूरी तरह से काम में लग गई थी। वह जानती थी कि रूबी थोड़ी घबराई हुई है। 'रूबी, मुझे पता है कि पिछले कुछ महीनों से तुम्हारा अभ्यास छूट गया है। लेकिन तुम दृढ़ निश्चयी और मजबूत लड़की हो। कोई भी चीज़ तुम्हें रोक नहीं सकती। बस तुम थोड़ी लापरवाह हो गई हो। मुझे लगता है कि मैं इसका कारण भी जानती हूँ,' ऐशानी ने धीरे से कहा और कोमलता से उसका हाथ थाम लिया। 'मैं तुमसे कोई राज़ नहीं रख सकती ऐश, लेकिन अभी समय नहीं है, हम इस बारे में किसी और समय बात करेंगे जब हम पूरी तरह से शांत होंगे। अभी हमें उन शैतानी नशेड़ियों को मारने की योजना बनानी होगी।'

'मुझे पता है, रूबी, यह सही समय नहीं है। मुझे नहीं पता कि हम कब पूरी तरह से निश्चिंत हो पाएंगे। हमें अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालकर एक-दूसरे से बात करनी होगी और अपने जीवन के अनुभव साझा करने होंगे, जैसे पहले हुआ करते थे।'

रूबी ने कांपती हुई मुस्कान के साथ कहा, ‘चलो काम की बात करते हैं, ऐश। लड़के इन मानव नशाखोरों के छिपने के ठिकाने और उन जगहों का पता लगाएंगे जहां ये राक्षस उनसे मिलने आते हैं। हम रक्त बैंकों से खून लेंगे और उसमें मारिजुआना और हेरोइन जैसी नशीली दवाएं मिलाएंगे। राक्षसों को बोतलों और पैकेटों से खून पीना आसान और बेहतर लगेगा। इस प्रक्रिया में मैं उन्हें भी फंसा लूंगी। एक बार जब उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा हो जाएगा, तो मैं उन्हें जहर मिला हुआ खून दूंगी जिससे उनका तुरंत अंत हो जाएगा।’ ऐशानी ने सिर हिलाया, ‘अच्छी रणनीति है, रूबी। चलो लड़कों को ढूंढते हैं और उनके साथ रणनीति पर चर्चा करते हैं।’ उसने रूबी की ओर देखा और हिचकिचाई। ‘चिंता मत करो ऐश,’ रूबी ने भी उसका हाथ थाम लिया। ‘चिंता करने की कोई बात नहीं है।’ मेरा राज़ हमारा राज़ है, और इस मामले के सुलझने के बाद हम इस पर चर्चा करेंगे।’ ऐशानी को तसल्ली नहीं हुई, वह और बात करना चाहती थी, लेकिन लड़के अब उनकी तरफ आ रहे थे।

अधीश और बाकी लड़के रूबी की योजना की खूब तारीफ कर रहे थे। 'इनमें से ज्यादातर नशेड़ी रेलवे स्टेशनों के बाहरी इलाकों में भीख मांगते हुए पाए जाते हैं। जब उन्हें लोगों से पैसे मिलते हैं, तो वे तुरंत जाकर अपना नशा खरीदते हैं।'

अधीश ने बीच में टोकते हुए कहा, 'यह काम जल्दी करना होगा, क्योंकि लगभग हर दूसरे दिन इन नशाखोरों की मौत हो रही है।'

‘चिंता मत करो, अधीश; रूबी अभ्यास के अपने हिस्से को सफलतापूर्वक पूरा करने में पूरी तरह सक्षम है।’

उसके बाद सब चुप हो गए। हालांकि अब वे जानते थे कि रूबी एक अप्सरा, एक दिव्य अप्सरा है, फिर भी उसके मानव रूप में इस तरह का काम करने से वे असहज थे: राक्षसों को बहकाना और फंसाना। उस अजीब सी चुप्पी के बीच ऐशानी बोली, 'उदय, तुम नशीले पदार्थ से सना हुआ खून लाओगे, जिसे रूबी राक्षसों से दोस्ती करने के बाद उन्हें पिलाएगी। जयंत, तुम पता लगाओगे कि ये राक्षस आम तौर पर कब और कहाँ नशेड़ियों से मिलने जाते हैं। फिर आखिरी दिन, उदय खून की बोतलों में जहर मिला देगा और रूबी यह सुनिश्चित करेगी कि राक्षस उसे पी लें।'

ऐशानी ने स्वतः ही उनके नेता की भूमिका ग्रहण कर ली थी, और सभी ने इसे स्वीकार कर लिया था। वे जानते थे कि ऐशानी ही उनकी नेता हैं। गुरुकुल की गतिविधियों में कुछ समय के लिए शांति छा गई थी। इसकी पुरानी शान बहाल हो गई

थी और यह पहले से कहीं अधिक चमक रहा था। आश्रम ने जो विनाश और कष्ट झेले थे, उनका कोई निशान नहीं था, लेकिन पुराने लोग इसे जानते थे और इसके पुनरुत्थान पर प्रसन्न थे। उन्हें लगा कि उनका घर नया रूप ले चुका है और अपने पहले स्वरूप से भी बेहतर हो गया है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि किसी चीज का वास्तविक मूल्य तभी समझ में आता है जब वह खो जाती है और फिर बहुत परिश्रम और कठिनाइयों के बाद पुनः प्राप्त होती है। बेशक, अधीश और ऐशानी जैसे युवा पुराने की तुलना नए से करने से खुद को रोक नहीं पाए। कभी-कभी, कुछ जगहों पर, नया पुराने से बेहतर ढंग से डिजाइन किया गया था और बेहतर जगह पर स्थित था, लेकिन नए को अभी भी पुराने जैसा आराम नहीं मिला था। उदाहरण के लिए, गुरुकुल में फैले विशाल वृक्ष शायद गुरुकुल से भी पुराने थे। उनमें से कुछ अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुँच चुके थे, लेकिन उनके सूखे हुए भौतिक स्वरूप अभी भी वहीं मौजूद थे। कुछ पेड़ टेढ़े-मेढ़े हो गए थे और यही उनकी सुंदरता थी। जीव-जंतु भी वैसे ही थे। गुरुजी ने अपनी शक्तियों का प्रयोग करके भीषण आग में जले लगभग सभी जानवरों, कीड़ों और पक्षियों को वापस जीवित कर दिया था।

जब भी उन्हें फुर्सत मिलती, ऐशानी और अधीश गुरुकुल में घूमते और उसकी सुंदरता और प्राकृतिक सादगी का आनंद लेते। वे जानते थे कि राक्षसों द्वारा आश्रम को पूरी तरह नष्ट कर दिए जाने के बावजूद, कुछ स्थान इतने सुरक्षित थे कि राक्षसों को उनके अस्तित्व का भी पता नहीं था। साथ ही, ये स्थान अदृश्य भी थे।

वे भली-भांति जानते थे कि गुरुकुल के पुनर्निर्माण में कितनी मेहनत और योजना लगी थी और इंजीनियरों, वास्तुकारों, जीवविज्ञानियों और अन्य अनेकों ने इसे पुनः स्थापित करने के लिए कितनी लगन से काम किया था। बेशक, यह सब कुछ चमत्कारी शक्ति और गुरुजी की दिव्य कृपा के बिना संभव नहीं था। लेकिन अंत भला तो सब भला, उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक सोचा। 'अब तक', एक आवाज़ ने ऐशानी के कानों में फुसफुसाया। उसने इसे अनसुना नहीं किया क्योंकि वह जानती थी कि उनका भाग्य क्या है और वे अपना शेष जीवन कैसे व्यतीत करेंगे। वह इसे किसी और तरह से नहीं चाहती थी। गुरुकुल मनुष्य के दृढ़ संकल्प और दृढ़ता का एक छोटा सा उदाहरण मात्र था। जिस प्रकार उन्होंने गुरुकुल के भीतर के राक्षसों को भगाया था, उसी प्रकार वे इस संसार के राक्षसों को भी भगाकर इसे सत्ययुग के समान निर्मल और आनंदमय बनाएंगे। या फिर प्रयास करते हुए मर जाएंगे। सहज रूप से, वे जानते थे कि कहीं न

कहीं एक बड़ा संकट मंडरा रहा है, बस उन्हें यह नहीं पता था कि कहाँ। वे चिंतित भी नहीं थे। उन्होंने खतरे के बीच भी आनंद लेना सीख लिया था। वे अपने अतीत के बारे में सोचते और भविष्य की योजनाएँ भी बनाते थे, लेकिन उन्होंने अपने वर्तमान के हर पल का भरपूर आनंद लेने का निश्चय किया था। गुरुजी ने उन्हें विशेष ध्यान शक्तियाँ प्रदान की थीं, जिससे वे आने वाले खतरों से विमुख हो जाते थे और एक-दूसरे के प्रेम और कोमलता में डूबने का अनमोल समय पाते थे। वे इस बात से भलीभांति अवगत थे कि उन्होंने दिव्य हथियारों का भी प्रयोग किया था। यद्यपि उन्हें छोटे दिव्य हथियारों और उनके प्रयोग की स्पष्ट स्मृति थी, लेकिन अधिक शक्तिशाली और विनाशकारी हथियारों के प्रयोग के बाद उनकी स्मृतियाँ मिट गई थीं। उनके मन को तो याद नहीं था, लेकिन उनके शरीर में उन हमलों की यादें बसी हुई थीं; उन्हें अपने मानव शरीर में पुनः अभ्यस्त होने में काफी समय लगा था। जो भी हो।

इस बार भी उनकी आशंका सही निकली।

कुछ दिनों बाद उन्हें संदेश मिला कि गुरुजी ने उन्हें बुलाया है, लेकिन अपनी कुटिया में नहीं बल्कि वरिष्ठों के पुस्तकालय में। यह उनके लिए एक नई बात थी क्योंकि गुरुजी हमेशा उन्हें अपनी कुटिया में ही निर्देश देते थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि ये राक्षस बहुत प्राचीन काल के होंगे और उन्हें इनके बारे में जानकारी प्राचीन ग्रंथों में खोजनी होगी। अगले दिन वे दोनों पुस्तकालय में आधा घंटा पहले पहुँच गए। उन्हें यहाँ किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता था और प्राचीन ग्रंथ भी उन्हें ऐसा ही आनंद देते थे। उन्होंने कुछ किताबें देखीं, फिर जाकर गुरुजी की पसंदीदा कोने वाली मेज पर बैठ गए।

हमेशा की तरह, गुरुजी पुस्तकालय पहुँचते ही ज़रा भी समय बर्बाद नहीं किया। उन्होंने आदरपूर्वक उनके चरण छुए। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और सीधे मुद्दे पर आए, “कुछ बेहद चिंताजनक खुफिया रिपोर्टें मिली हैं जो पूरी तरह स्पष्ट नहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ राक्षस एकजुट हो गए हैं और पृथ्वी पर एक बड़ा आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं, जो अंततः पृथ्वी को ही नष्ट कर सकता है। अब मुझे पता है कि आप दोनों सोच रहे होंगे, ‘इसमें नया क्या है? हम अनादि काल से इन राक्षसों से लड़ते आ रहे हैं।’ लेकिन अंतर यह है कि ये राक्षस रामायण काल के नहीं हैं। बल्कि वे उससे भी बहुत पहले के समय के हैं जब देवता पृथ्वी पर स्वतंत्र रूप से विचरण करते थे। उस समय भी महान राक्षस थे। उनमें से कुछ अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए हजारों वर्षों तक प्रार्थना करते थे। तब उनके देवता उन्हें वरदान देते थे या उनकी

मनोकामना पूरी करते थे।”

इस कहानी में, तीन बंधुओं तारकाक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष ने ब्रह्मा से, जो हमारे ब्रह्मांड के तीन पवित्र देवताओं में से एक हैं, यह वरदान प्राप्त किया कि उन्हें तीन अमर और अभेद्य किले मिलेंगे। वे तारकासुर नामक राक्षस के पुत्र थे, जिनका वध भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय ने किया था। तारकासुर के तीनों पुत्रों ने एक पैर पर खड़े होकर 1000 वर्षों तक ब्रह्मा की प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना और भक्ति से प्रभावित होकर ब्रह्मा ने उन्हें वरदान देने का निर्णय लिया। उन्होंने अमरता का वरदान मांगा। ब्रह्मा ने उन्हें बताया कि इस पृथ्वी पर कुछ भी शाश्वत नहीं है, तो उन्होंने तीन ऐसे किले मांगे जिन्हें केवल एक बाण से ही नष्ट किया जा सके। वे भगवान शिव के महान भक्त थे और भली-भांति जानते थे कि ऐसा करतब केवल महादेव ही कर सकते हैं। अपने अति आत्मविश्वास और अहंकार में उन्होंने सोचा कि भगवान शिव उन्हें कभी हानि नहीं पहुंचाएंगे। ब्रह्मा ने उन्हें यह वरदान दे दिया। ये किले भी निर्विवाद श्रेणी के थे। इनका निर्माण मायासुर नामक राक्षस ने करवाया था, जो स्वयं भी भगवान शिव का महान भक्त था। सबसे छोटा किला लोहे की दीवारों से बना था और पृथ्वी पर स्थित था, मध्य किले की दीवारें चांदी की थीं और वह आकाश में था, और तीसरा किला सोने की दीवारों से बना था और स्वर्ग में स्थित था। इन किलों में घूमने की शक्ति थी, इसलिए वे कभी एक सीधी रेखा में नहीं आते थे और इसीलिए एक तीर से नष्ट नहीं हो सकते थे। केवल 1,000 वर्षों में एक बार ही वे एक सीधी रेखा में आते थे, जब पुष्य नक्षत्र कुछ क्षणों के लिए चंद्रमा के साथ युति बनाता था। पुष्य नक्षत्र किसी भी महान कार्य को करने के लिए सबसे शुभ समय होता है।

कुछ समय तक वे उपद्रव से दूर रहे, लेकिन जल्द ही उनका स्वाभाविक क्रूर राक्षसी स्वभाव फिर से प्रकट होने लगा और वे मनुष्यों, ऋषियों और यहाँ तक कि देवताओं को भी प्रताड़ित करने और मारने लगे। उन्होंने सभी लोकों की शांति भंग कर दी। देवता स्वाभाविक रूप से बहुत व्याकुल हो गए। वे अपने राजा इंद्र के साथ ब्रह्मा के पास गए और उनसे अपना वरदान वापस लेने की विनती की। ब्रह्मा ने इनकार कर दिया और उन्हें भगवान शिव के पास सहायता के लिए जाने को कहा। महादेव ने उनकी बात सुनी और सहायता करने के लिए सहमत हो गए। देवता प्रसन्न होकर लौटे और महादेव की सहायता के लिए एक विशाल सेना एकत्रित की। उन्होंने राक्षसों के साथ युद्ध शुरू किया। हालाँकि, राक्षस भारी पड़े, क्योंकि उन्होंने अपनी सभी

शक्तिशाली जादुई शक्तियों का प्रयोग किया।

फिर एक दिन सारे शहर एक सीध में आ गए, और भगवान शिव अपने रथ पर सवार होकर राक्षस सेना के सामने खड़े हो गए। देवताओं ने बड़ी राहत की सांस ली और वे सब देखते रह गए। लेकिन उन्होंने बस मुस्कुराया, और तीनों महान शहर या किले एक साथ नष्ट हो गए। सब लोग स्तब्ध रह गए; वे जानते थे कि महादेव शक्तिशाली हैं, लेकिन वे इस बात को समझ नहीं पा रहे थे कि महादेव ने बिना धनुष-बाण छुए ही तीनों शहरों को नष्ट कर दिया। तब ब्रह्मा ने महादेव से विनती की कि वे कम से कम धनुष-बाण का प्रयोग करें और दुनिया को दिखाएं कि उन्होंने युद्ध में निष्पक्ष और सही तरीके से जीत हासिल की है। महादेव मान गए और उन्होंने जलते हुए शहरों पर धनुष से बाण चला दिया। उस दिन से महादेव त्रिपुरंतकारी या तीन शहरों के नाशकर्ता के रूप में भी जाने जाते हैं। संक्षेप में, अंततः भगवान शिव ने इन किलों और राक्षसों को भी नष्ट कर दिया। ऐशानी और अधीश इस कहानी से मंत्रमुग्ध हो गए। गुरुजी द्वारा कहानी समाप्त करने के बाद भी वे काफी देर तक प्रतीक्षा करते रहे।

'तो अब गुरुजी, ये राक्षस या इनके वंशज फिर से प्रकट हो गए हैं और हमें इन्हें नष्ट करना होगा,' ऐशानी ने अपनी बात समाप्त की। 'इतनी जल्दी नहीं, ऐशानी,' गुरुजी लगभग मुस्कुराते हुए बोले। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराए। अगर मामला इतना स्पष्ट होता, तो गुरुजी उन्हें पुस्तकालय के इस हिस्से में नहीं बुलाते।

गुरुजी ने आगे कहा, 'ये राक्षस रामायण के भागे हुए राक्षस नहीं हैं। ये उससे भी पुराने समय के हैं। भगवान शिव ने इनका नाश किया था। लेकिन उनके कुछ वंशज बचे रहे, जो समय की प्रतीक्षा करते हुए युगों-युगों तक स्वयं को मजबूत करते रहे। इस बीच, देवता और देवियाँ पृथ्वी छोड़कर जा चुके थे और अब इन राक्षसों के एकमात्र शिकार असहाय मनुष्य हैं। उनके प्रतिशोध की इच्छा इतनी प्रबल है कि वे अब स्वयं धरती माता को नष्ट करने की योजना बना रहे हैं। लेकिन भगवान एक द्वार बंद करके दूसरा द्वार खोल देते हैं।'

प्रारंभिक जानकारी देने के बाद, गुरुजी अब पूरी तरह से काम में जुट गए। उन्होंने कहा, 'उम्मीद है कि उनके विनाश की शुरुआत होने से पहले हमारे पास कुछ समय है। आप दोनों इन तीनों भाइयों और उनके पूर्वजों के बारे में कुछ शोध करेंगे। अधीश, तुम ही अकेले हो जो इन प्राचीन भाषाओं को पढ़ सकते हो या कम से कम थोड़ा-बहुत समझ सकते हो। गहन शोध के बाद, हमें एक रणनीति बनानी होगी।' उन्होंने

आगे कहा, 'वर्तमान में उनके वंशज समाज में काफी अच्छी स्थिति में हैं। एक धनी हथियार व्यापारी है, दूसरा वास्तुकार है और तीसरा, हालांकि एक ही वंश का है, एक तपस्वी है। अफवाहें हैं कि वह एक महान तांत्रिक है। उनके नाम तरनजीत, वीरेंद्र और विद्या भूषण हैं।'

गुरुजी ने उन्हें यह संक्षिप्त जानकारी देकर छोड़ दिया। वे एक-दूसरे को हैरानी से देखने लगे, समझ नहीं पा रहे थे कि शुरुआत कहाँ से करें। लेकिन उन्होंने शुरुआत की। अगले पाँच दिनों तक वे जी-जान से काम करते रहे। अब तक तो किताबों को भी उनके शोध के समय का अंदाज़ा हो चुका था। इसलिए, जब भी वे किसी किताबों की अलमारी के पास से गुज़रते, उस काल के प्राचीन ग्रंथ एक अलग ही चमक के साथ दिखाई देते। उन्हें पता चला कि कहानी में गुरुजी द्वारा बताई गई बातों से कहीं ज़्यादा रहस्य छिपा था। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की पवित्र त्रिमूर्ति तीन नगरों या किलों के विनाश में शामिल थी और अंततः शिव ने केवल एक मुस्कान से ही उन तीनों को राक्षसों सहित नष्ट कर दिया था। देवताओं और ऋषियों को यह समझ आ गया था कि संपूर्ण ब्रह्मांड महादेव की रचना है और वे जब चाहें इसे नष्ट कर सकते हैं।

उन्होंने यही कामना की। उन्होंने दिन-रात शोध किया और जानकारी एकत्र की। अगले दिन उन्होंने अपने निष्कर्ष गुरुजी के सामने प्रस्तुत किए।

गुरुजी ने विचारमग्न होकर सिर हिलाया, "एक समस्या है जिसका सामना हमें हमेशा करना पड़ेगा। ये राक्षस तारकासुर के प्रत्यक्ष वंशज हैं, भले ही कई पीढ़ियों बाद के हों। पिछली शताब्दियों में उनका रक्त भले ही मिश्रित हो गया हो, लेकिन यह अभी भी वही राक्षसी रक्त है, जिसमें क्रूर जादू समाया हुआ है। जबकि आप और आपकी टीम, विशेष शक्तियों से संपन्न होने के बावजूद, अंततः मनुष्य ही हैं।"

फिर भी गुरुजी, हमने अनगिनत राक्षसों का वध करने में सफलता प्राप्त कर ली है।

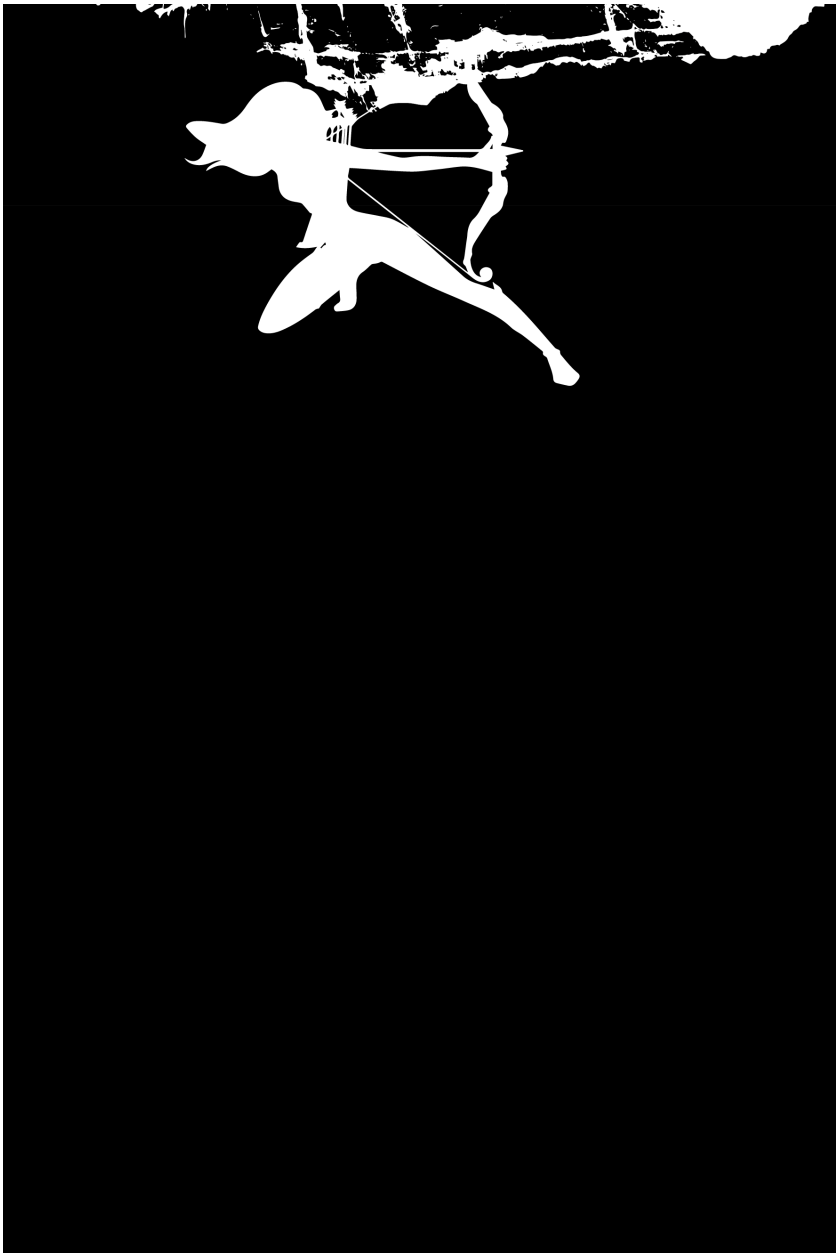

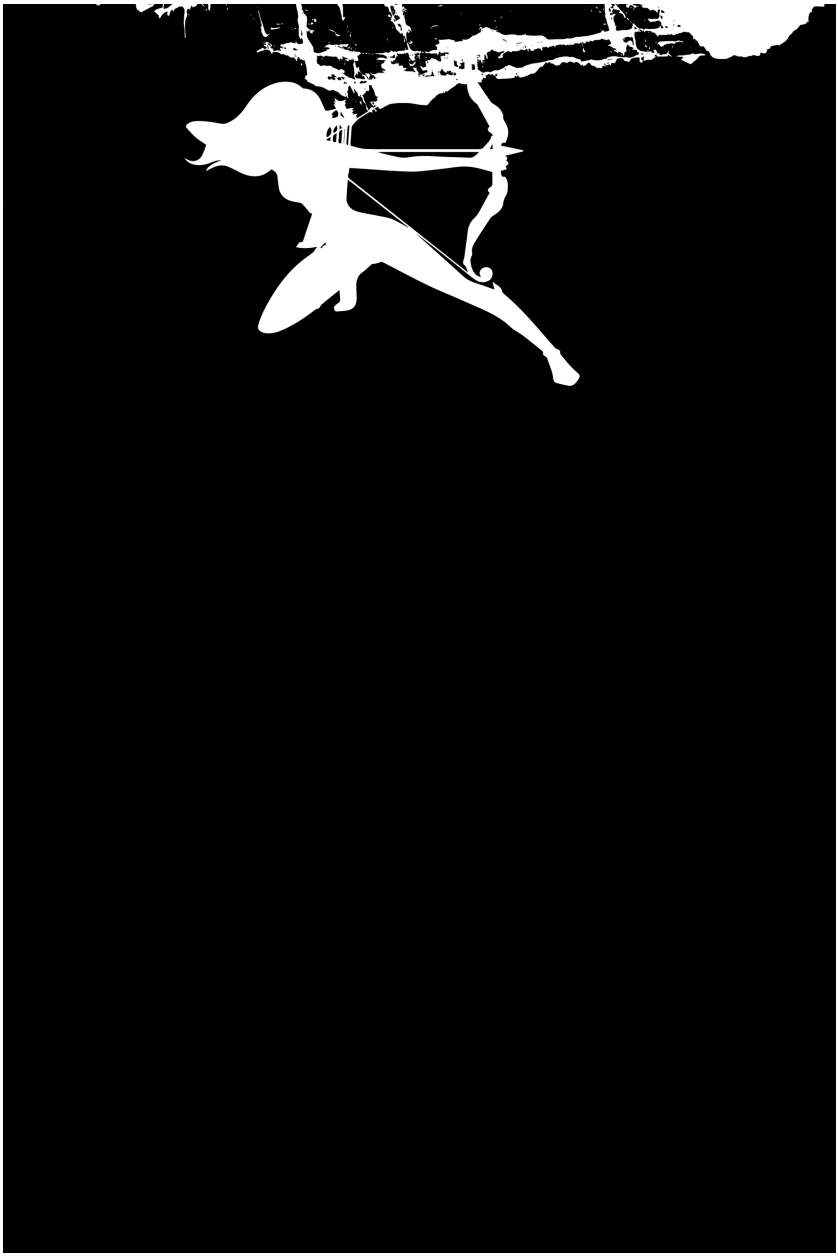

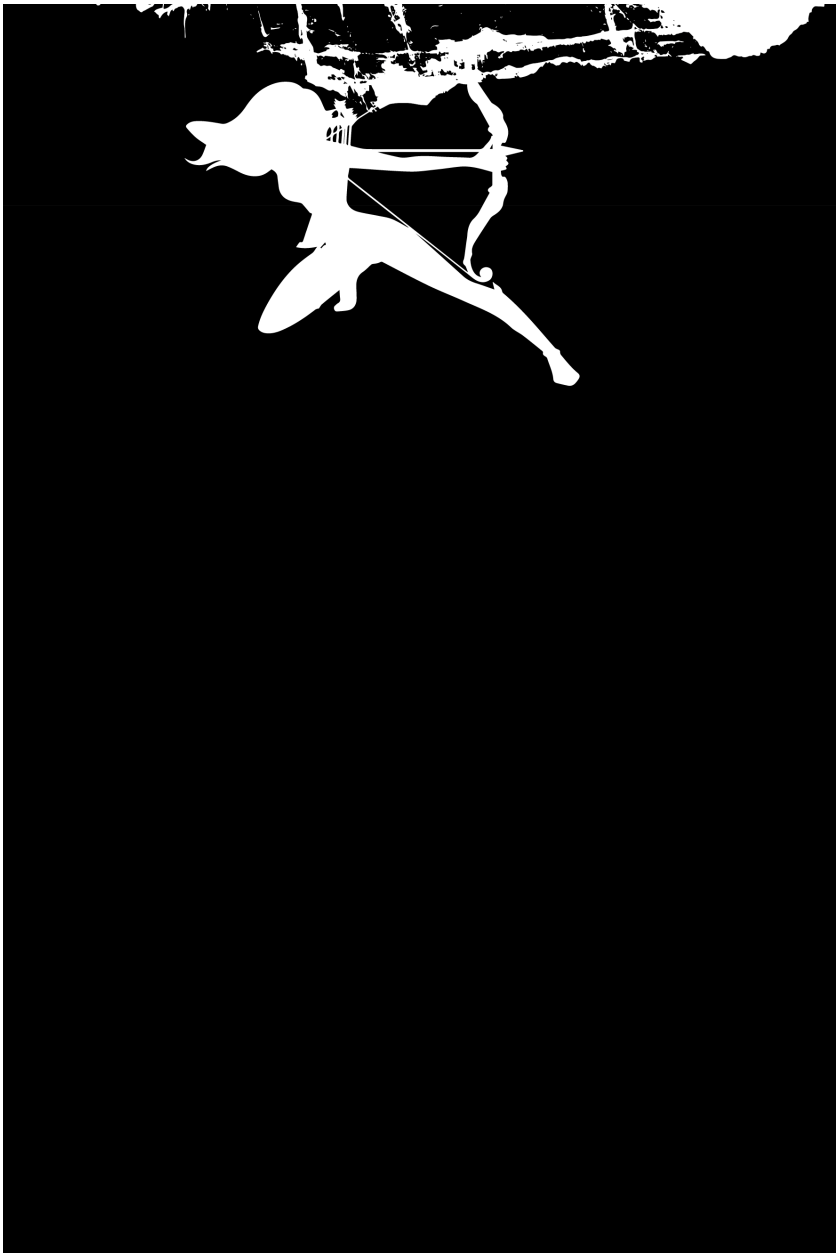

श्रेष्ठ

'टी
इन नशाखोरों को तुरंत नष्ट करना होगा, इससे पहले कि वे और इंसानों को मार डालें। आप चारों को उनके पास जाने से पहले मानसिक और शारीरिक रूप से पूरी तरह तैयार रहना होगा। नशे की हालत में वे बेहद खतरनाक हो सकते हैं।' तेजस ऐशानी की बात ध्यान से सुन रहा था, 'आप नहीं होंगी, दीदी? और अधीश भैया भी?' ऐशानी मुस्कुराई और उसके बालों को सहलाया। 'नहीं तेजस, हम नहीं होंगे। ये तीनों नशाखोरों को खत्म करने में पूरी तरह सक्षम हैं, बेशक आपकी मदद से। आपके बिना रास्ता बनाए, काम थोड़ा मुश्किल हो सकता है।' तेजस इतराया और बाकी सब दबे स्वर में मुस्कुराए।

ऐशानी और अधीश को उन्हें अपने ठिकाने के बारे में बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी और न ही उनके मन में पूछने का विचार आया।

लेकिन ऐशानी और अधीश गुरुजी के साथ एक तरह के साधना-पाठ पर जा रहे थे। गुरुजी उन्हें जंगल के एक अलग और पवित्र हिस्से में ले जा रहे थे, जहाँ वे कुछ दिनों तक ठहरेंगे। यह गुरुजी द्वारा उनके लिए एक तरह का आत्म-सुधार कार्यक्रम होगा। पूरी तरह से टूटे हुए और भावनात्मक रूप से विचलित, उनके लिए यह आराम करने का बिल्कुल सही समय था। गुरुजी उन्हें कुछ उन्नत मंत्र सिखाने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ाएंगे। गुरुजी ने सकारात्मक और नकारात्मक, सभी विचारों से मन को शुद्ध करने और उसे फिर से एक खाली स्लेट में बदलने की आवश्यकता पर जोर दिया। कर्तव्य और जिम्मेदारी की यह प्रबल भावना उनमें इतनी गहराई से समाई हुई थी कि वे हमेशा अपने निजी जीवन को उपेक्षित रखते थे। गुरुजी यह जानते थे कि उनकी शक्तियाँ तभी बढ़ेंगी जब वे वास्तव में एक साथ होंगे। एक ब्रह्मचारी होने के नाते, गुरुजी ने इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया कि पति-पत्नी को एक-दूसरे के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना चाहिए। यह बात ऐशानी की माता मधु ने उनके ध्यान में लाई, जो कुछ दिन पहले गुरुजी से मिलने आई थीं। गुरुजी उनसे अपनी कुटिया के बाहर मिले क्योंकि वे महिलाओं को उनसे मिलने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते थे।

मधु ने प्रणाम किया। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। वह एक पूर्व योद्धा थीं और गुरुजी के सबसे महत्वपूर्ण पंडित और शिष्य, जिनका अब निधन हो चुका था, की पत्नी थीं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह ऐशानी की माता थीं। मधु सीधे मुद्दे पर आईं। गुरुजी अपनी कुटिया के बाहर एक बेंच पर बैठे थे, मधु उनके सामने एक चटाई

पर बैठी थीं। यह गुरु-शिष्य परंपरा थी। शिष्य कभी भी अपने गुरु से ऊपर या उनके बराबर नहीं बैठता था, चाहे वह कोई भी हो। मधु एक वास्तविक शिष्या नहीं थीं, वह शिष्या के सबसे वरिष्ठ सदस्य की पत्नी और ऐशानी की माता थीं, लेकिन पदक्रम के अनुसार, वह गुरुजी से कनिष्ठ थीं।

मधु ने गुरुजी से कहा, 'शादी के बाद से ही बच्चों ने बहुत कठिन समय बिताया है। मैं उनमें से कुछ को जानती हूं और मैं उनके अन्य ऑपरेशनों के बारे में नहीं जानना चाहती क्योंकि इससे मेरी उनकी मदद करने की बेचैनी और बढ़ जाएगी।'

गुरुजी ने सहमति जताते हुए कहा, 'इस पूरे संसार में ऐशानी और अधिश से श्रेष्ठ कोई नहीं है। इतने विनम्र, इतने एकाग्र और ईश्वर की कृपा से धन्य, हम वास्तव में बेहद भाग्यशाली हैं कि वे हमारे साथ हैं।'

"जी गुरुजी, लेकिन मुझे एक गंभीर बात पर चर्चा करनी है। अपने कर्तव्यों के निर्वाह में अधीश और ऐश दोनों शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से बुरी तरह आहत और घायल हो गए हैं। पिछले कई महीनों से उन्हें कोई राहत नहीं मिली है। यह सच है कि उन्हें ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त है और उनके पास विशेष शक्तियां हैं, लेकिन वे फिर भी इंसान हैं। उन्हें आराम, सहारा और देखभाल की ज़रूरत है, खासकर एक-दूसरे से। यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे वे खुद भी अनजान हैं और अगर कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी बात वे सुनेंगे, तो वह आप ही हैं गुरुजी," मधु ने नम आंखों से विनती की।

अगर गुरुजी को झटका लगना मुमकिन था, तो उन्हें ज़रूर झटका लगा था। उनके इष्ट देव ने उन्हें पृथ्वी को राक्षसों के प्रकोप से मुक्त करने का आदेश दिया था और सदियों से गुरुजी और उनके योद्धा विवेकपूर्ण ढंग से अपना कर्तव्य निभाते आ रहे थे। लेकिन कभी-कभी गुरुजी भूल जाते थे कि उनके योद्धा भी इंसान हैं, चाहे वे कितने भी सौभाग्यशाली क्यों न हों। उन्हें प्यार, सांत्वना, भावनात्मक और शारीरिक विश्राम की ज़रूरत होती है। उनके सभी योद्धाओं में, उनके सर्वश्रेष्ठ योद्धा अधीश और ऐशानी ने सबसे कठिन समय झेला था। उन्हें दूसरों से कहीं ज़्यादा आराम की ज़रूरत थी। गुरुजी ने मधु को सिर हिलाकर कहा, 'मुझे माफ़ करना मधु, लेकिन निश्चिंत रहो कि मैं उनके लिए विश्राम करना अनिवार्य कर दूंगा। मैं उन्हें अगले दो मिशनों पर भी नहीं भेजूंगा।'

मधु ने हाथ जोड़कर गुरुजी के चरणों को छूने का इशारा किया। किसी भी महिला को

उनके चरणों को छूने की अनुमति नहीं थी। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया और वह इस बात से प्रसन्न होकर घर चली गई कि अब उसके बच्चों को कुछ राहत मिलेगी।

उसी शाम रूबी रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली एक गली से गुज़री। स्टेशन तक न केवल मुख्य सड़कों से पहुँचा जा सकता था, बल्कि वहाँ कुछ गलियाँ भी थीं। वह एक लंबी गली से गुज़री, जो इतनी संकरी थी कि वह अपनी बाहें फैलाकर दोनों तरफ की दीवारों को छू सकती थी। रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली ट्रेनों और विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक परिवहन की आवाज़ दीवार के एक तरफ से दूसरी तरफ गूँज रही थी और चलती ट्रेन की रोशनी पान और सुपारी के छींटों से सजी धूसर, गंदी दीवारों पर पड़ रही थी। चारों ओर अँधेरा था, लेकिन घोर अँधेरा नहीं था। दो लैंप पोस्ट की छाया से कुछ रोशनी आ रही थी। गली में कूड़े और पेशाब की बदबू आ रही थी।

इन गलियों का इस्तेमाल रोज़ाना आने-जाने वाले लोग शॉर्टकट के तौर पर करते थे। वे वहाँ बैठे भिखारियों या नशाखोरों पर सिक्के फेंकते थे। नशे ने उनके दिमाग पर कब्ज़ा कर लिया था, जिससे उनका शरीर अनैतिक कृत्यों की ओर धकेल दिया गया था, और वे अगली खुराक पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। वे लगभग अंधेरे में विलीन होते जा रहे थे और चलते-फिरते मुर्दों की तरह खड़े थे।

मुख्य सड़कों की तुलना में यहाँ एकांत था, जहाँ नशेड़ियों और राक्षसों दोनों के लिए छिपना मुश्किल होता। रूबी ने साधारण कपड़े पहने थे, लेकिन उसकी सुंदरता और कामुकता छिपी नहीं रह सकी। नशे में धुत लोग इतने मदहोश थे कि उन्हें इसका एहसास ही नहीं हुआ; उन्होंने हर यात्री के सामने की तरह हाथ फैलाए। रूबी ने उन्हें भी सिक्के दिए। वह रेलवे स्टेशन की ओर चली और दस मिनट बाद वापस आई। जयंत और उदय भी भिखारियों की तरह कपड़े पहने वहीं बैठे थे। अचानक जयंत ने रूबी को आँखों से इशारा किया। रूबी ने उस दिशा में देखा। एक लंबा, सांवला और पतला आदमी अभी-अभी गली में दाखिल हुआ था। वह धीरे-धीरे भिखारियों की ओर बढ़ा और लापरवाही से उन पर पैसे लुटाने लगा। नशे में धुत लोग स्पष्ट रूप से नशे में चूर थे, लेकिन उनमें थोड़ी सी चेतना बची थी कि पैसा उन्हें फिर से मोक्ष दिला देगा। उस आदमी ने सावधानी से चारों ओर देखा। आज के ज़माने में तो एक राक्षस भी इतना सावधान नहीं रह सकता। पकड़े जाने पर, उन्मादी भीड़ उन्हें भी तुरंत मार सकती थी या कम से कम बुरी तरह पीट सकती थी। उसकी नजरें रूबी से मिलीं और रूबी ने उसे देखकर प्यारी सी मुस्कान दी।

महान ऋषि भी अप्सराओं के प्रति आकर्षित हुए बिना नहीं रह सके, तो यह नीच राक्षस कौन था जिसका जीवन वासना और मादक पदार्थों के वश में था? एक पल के लिए वह भूल गया कि वह यहाँ क्यों था। वह सीधा खड़ा हुआ और रूबी को घूरने लगा। उसकी आँखों में देखते ही उसे एहसास हुआ कि ब्रह्मांड की सारी सुंदरता भी उसके सामने खिले इस सुंदर फूल के आगे फीकी पड़ जाती है। वासना ने उसकी आँखों को लाल अग्नि के गोले में बदल दिया था और उनमें उसने मित्रता और वासना का भाव देखा।

उदय और जयंत खंभों के पीछे छिपे हुए थे, रूबी को ज़रा भी नुकसान पहुँचते ही हमला करने के लिए तैयार थे। उदय की आँखें काली हो गई थीं, जो इस बात का संकेत था कि वह जान से मारने को तैयार है। जयंत ने उसे शांत रहने का इशारा किया। रूबी खतरे में नहीं थी। राक्षस उसके जाल में फँसने लगा था। रूबी राक्षस के पास से गुज़री और पास ही एक स्टूल पर बैठ गई। राक्षस को उसकी खुशबू का हल्का सा एहसास हुआ और वह तुरंत मदहोश हो गया। खोए हुए पिल्ले की तरह उसके पीछे-पीछे चलते हुए, वह उसके पास पड़े एक टूटे हुए ढोल पर बैठ गया। रूबी ने अपने थैले से कुछ निकाला और राक्षस को दिखाया। यह खून से भरी एक गंदी बोतल थी। उसने ढक्कन खोला। गांजे की तेज़ गंध उसकी नाक में घुस गई। राक्षस आग बबूला हो गया और निस्संदेह सातवें आसमान पर था। एक खूबसूरत औरत उस पर खुशबू बिखेर रही थी और गांजे से सना खून उसके हाथों में था। उसने नशेड़ियों को देखा, फिर रूबी को देखा, उसकी आँखों में एक सवाल था। उसने बोतल ऊपर उठाई और सिर हिलाया।

'जब मेरे पास खून मौजूद है, तो पकड़े जाने के डर से इन नशेड़ियों से खून क्यों निकालूँ?' रूबी ने नशेड़ियों पर घृणा से थूका। उसने नशे से सने खून का एक लंबा घूंट पिया और उसे दानव को दे दिया। उत्सुकता से कांपते हुए दानव ने लगभग रूबी के हाथ से बोतल छीन ली और बोतल से लंबे-लंबे घूंट पी लिए, फिर बड़ी अनिच्छा से बोतल रूबी को वापस दे दी। वह उसके करीब सरक गया।

'तुम्हारा नाम क्या है?' रूबी ने राक्षसी गंध उसकी ओर फेंकते हुए पूछा और बोतल उसे फिर से थमा दी। 'सोमासुर,' उसने धीमी फुसफुसाहट में कहा। गांजे और रूबी के प्रभाव के नशे में वह किसी भी तरह की आवाज़ या हरकत करने में असमर्थ था। रूबी कुछ देर उसके साथ बैठी रही, फिर खून की बोतल खाली होते ही जाने लगी। उसने

बड़ी चालाकी से खून का एक बड़ा घूंट पिया और राक्षस को पता चले बिना ही उसे तुरंत बोतल में वापस डाल दिया। उसने इसका कई बार अभ्यास किया था। फिर भी, वह जानती थी कि राक्षस के संदेह को दूर करने के लिए उसे उस सड़े हुए मिश्रण का कुछ हिस्सा पीना ही पड़ेगा।

'मैं कल फिर इसी समय आऊँगी,' उसने फुसफुसाते हुए उसे दिलासा दिया जब उसने विरोध किया। रूबी चली गई। उदय और जयंत अपने छिपने की जगह से बाहर निकले और रूबी के पीछे गए। उदय की आँखें अभी भी काली थीं, क्रोध और घृणा से भरी हुई थीं। राक्षस सोमसुर अब विरोध करने की स्थिति में नहीं था। गांजे की तेज़ खुराक का असर उस पर लगभग चौदह घंटे तक रहेगा, जिसके बाद उसे पिछली रात की घटनाएँ याद आने लगेंगी। नशे से सने खून की उसकी लालसा और खूबसूरत रूबी के लिए उसकी तड़प उस पर फिर हावी हो जाएगी और वह फिर से रेलवे स्टेशन की गली की ओर दौड़ पड़ेगा।

अगले दिन, उसके साथ एक और राक्षस था। रूबी को इसका पहले से ही अंदाज़ा था और वह मादक पदार्थ से सना हुआ खून की दो बोतलें लेकर आई थी। वह पिछली बार से भी ज़्यादा खूबसूरत लग रही थी। अगले दो दिन भी यही सिलसिला चलता रहा। राक्षस पूरी तरह से उसके वश में आ चुके थे और उसके जादू में फँस गए थे। चौथा दिन सबसे अहम दिन था। उदय ने उसे दो बोतलें दीं, एक में खून और गांजा था और दूसरी में खून, गांजा और ज़हर। उन्हें बहुत सावधान रहने को कहा गया था क्योंकि यह दुनिया के सबसे शक्तिशाली ज़हरों में से एक था, उतना ही शक्तिशाली जितना पोलोनियम, जो धरती पर सबसे घातक ज़हर है। रूबी शांत और संयमित थी। उसने पहले भी इससे ज़्यादा खतरनाक हालातों का सामना किया था और वह इस चुनौती का डटकर सामना करने के लिए तैयार थी।

हमेशा की तरह, दानव सोमसुर रूबी का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। उसने जल्दी से भिखारियों पर सिक्के फेंके, वरना वे हंगामा खड़ा कर देते। फिर वह रूबी के पास जाकर बैठ गया और उसकी खास खुशबू सूंघने लगा। रूबी ने खून की दो बोतलें निकालीं और एक सोमसुर को और दूसरी दूसरे दानव को दे दी। उसके शरीर से कस्तूरी और गुलाब की खुशबू आ रही थी। दानवों को शक करने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि वह हमेशा उनके साथ ही खून पीती थी। उदय और जयंत घबरा गए। मुस्कुराते हुए, भोले-भाले सोमसुर और उसके दोस्त ने खून का एक-एक घूंट लिया

और जल्दी से आधी बोतल पी गए। रूबी तैयार थी। उसने बोतल को ज़मीन पर गिरने से पहले ही उनके हाथों से छीन लिया और तुरंत बंद कर दिया। उदय और जयंत पलक झपकते ही वहाँ पहुँच गए। उन्होंने ज़मीन पर गिरे दानवों को देखा, जो अपना गला पकड़े हुए थे, कराह रहे थे और तरह-तरह के दर्द से तड़प रहे थे। अब उन्होंने अपने दिल भी थाम लिए थे, उनकी पसलियां टहनियों की तरह चटकने की आवाज आ रही थी। उनकी आंखों से खून निकल रहा था और वे जी भर कर उल्टी कर रहे थे। नशे में धुत ये इंसान अभी तक कुछ भी महसूस नहीं कर पा रहे थे। यहां उल्टी करना आम बात थी। कुछ ही मिनटों में राक्षसों की ऐंठन रुक गई और वे शांत हो गए। उदय ने अपने साथियों को इकट्ठा किया और वे तुरंत वहां से चले गए। किसी को कुछ पता नहीं चला। वैसे भी उनमें से ज्यादातर नशेड़ी थे। रेलवे स्टेशन से गली में आए एक-दो अन्य लोगों ने कुछ भी असामान्य नहीं देखा। उन्होंने बस कुछ यात्रियों को रेलवे स्टेशन की ओर जाते देखा और कुछ नशेड़ियों को जमीन पर नशे की हालत में लेटे देखा। 'आधीश, तुम एक इंसान हो। इंसानों में किसी भी दिव्य हथियार का इस्तेमाल करने की शारीरिक या मानसिक शक्ति नहीं होती। लेकिन चूंकि देवी-देवता पृथ्वी छोड़कर चले गए हैं, इसलिए कई दुष्ट और खतरनाक राक्षस अलौकिक शक्तियों के साथ पीछे रह गए हैं। राक्षसों से लड़ना और पृथ्वी को बचाना इंसानों का कर्तव्य है।' यहां सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आत्मसंतुष्टि के जाल में न फँसें। हर नए राक्षस का सामना नए नजरिए से और उसे नष्ट करने के नए तरीके से करना होगा। आपने यह जान लिया है कि तारकक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष के वंशजों को केवल भगवान शिव के धनुष-बाण से ही मारा जा सकता है, वह भी एक निश्चित समय पर।' ऐशानी और अधीश अपनी बहुप्रतीक्षित छुट्टी से लौट आए थे। वे कहीं जाना नहीं चाहते थे। गुरुकुल में रहकर उन्हें सबसे ज्यादा शांति और सुख मिलता था। लेकिन गुरुजी अपनी बात पर अड़े रहे, इसलिए वे पास के एक रिसॉर्ट में चले गए। गुरुजी हमेशा की तरह सही थे। अपने सभी कष्टों और तनावों से दूर, वे एक-दूसरे के साथ सुकून पा सके। हालांकि, हालात पहले जैसे नहीं थे। वे साथ तो थे, लेकिन अधीश ऐनार के शरीर में था और ऐशानी को उसे इस रूप में स्वीकार करना मुश्किल लग रहा था। उन्होंने आराम किया, लेकिन कुछ दिनों बाद वे वापस लौट आए। वे अब पहले की तरह एक-दूसरे के साथ सहज नहीं थे।

गुरुजी ने उनका स्वागत किया और उन्हें सीधे वरिष्ठों के पुस्तकालय में भेज दिया

ताकि वे राक्षस तारकासुर की संतानों पर शोध कर सकें। सौभाग्य से, मृत राक्षस और उसकी संतानों पर प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध थी। 'गुरुजी!' ऐशानी अपनी उत्तेजना को रोक नहीं पाई। अधिश भी गुरुजी को इस महान रहस्योद्घाटन के बारे में बताना चाहता था, लेकिन उसने ऐशानी को मुख्य भूमिका निभाने दी। गुरुजी ने प्रश्नवाचक दृष्टि से ऐशानी की ओर देखा। वह लगभग बोल ही पड़ी, 'गुरुजी, ये तीनों संरचनाएँ तभी नष्ट हो सकती हैं जब पुष्य नक्षत्र चंद्रमा के साथ संरेखित हो और वे एक सीधी रेखा में आ जाएँ। अब हम जानते हैं कि ऐसा लगभग 1000 वर्षों में होता है, वह भी एक पल के लिए। यह संरेखण अब से एक महीने में होगा।' वह रोमांचित और उत्तेजित दोनों थी। 'अधीश का भाग्य इन राक्षसों और उनके गढ़ों को नष्ट करना ही था!' उसने गर्व से घोषणा की। जी हां, बेटा और अधीश पिछले तीन महीनों से लगातार प्रार्थना और शिव मंत्रों का जाप कर रहे हैं। भगवान शिव भोलेनाथ के नाम से भी जाने जाते हैं, यानी वे आसानी से प्रसन्न हो जाते हैं और वरदान देते हैं, वरना जन्म-जन्म तक भी भगवान शिव के ज्ञान के निम्नतम स्तर तक पहुंचना संभव नहीं है। आप अधीश के साथ प्रार्थना कर रहे हैं ताकि उसकी शक्ति बढ़े। आपके द्वारा अधीश को अपनी शक्ति दिए बिना इन राक्षसों का वध संभव नहीं होगा।

'जी गुरुजी,' ऐशानी ने अपना सिर नीचे झुकाए रखा। हालाँकि उनकी महाशक्तियाँ स्पष्ट रूप से अलग-अलग थीं, लेकिन ऐशानी के लिए उनमें कोई अंतर नहीं था। वह जानती थी कि अधीश के लिए भी यही बात लागू होती है।

'उनके मंझले भाई, वास्तुकार वीरेंद्र ने ही तीन अलग-अलग स्थानों पर इन तीन महलों या यों कहें कि किलों की कल्पना और निर्माण किया है। ये महल एक विशाल आधारशिला पर इस प्रकार निर्मित हैं कि वे चौबीसों घंटे अपनी धुरी पर धीरे-धीरे घूमते रहते हैं। ये अत्याधुनिक परिसरों से कहीं अधिक हैं। ये 360 डिग्री घूमते हैं और साथ ही साथ बाएँ से दाएँ और दाएँ से बाएँ झूलते रहते हैं। हमारी खुफिया रिपोर्ट कहती है कि इन परिसरों में विशाल प्रयोगशालाएँ और गुप्त कक्ष हो सकते हैं, हालाँकि इसकी पूरी तरह पुष्टि नहीं हुई है। ये किले मुख्य शहरों से इतनी दूर हैं कि स्थानीय लोगों को इन महलों के बारे में जानकारी नहीं है।' अधीश ने गुरुजी और ऐशानी को इस घटना के बारे में बताया। पूजा-अर्चना के बाद अधीश को जो भी थोड़ा समय मिलता, वह आश्रम के खुफिया विशेषज्ञों के साथ इन सभी रिपोर्टों को इकट्ठा करने और उनकी छानबीन करने में व्यतीत करता। बेशक, पूजा में जरा सा भी विराम नहीं लिया जा

सकता था। जब भी अधीश विशेषज्ञों के साथ शोध में व्यस्त होते थे, ऐशानी उनकी ओर से ध्यान और मंत्रों का जाप करके उनकी कमी पूरी करती थीं। इससे उन्हें और भी अधिक आशीर्वाद प्राप्त होता था। और जब दोनों को थोड़े समय के लिए बाहर जाना पड़ता था, तो एक वरिष्ठ पंडित अनुष्ठान संपन्न कराने के लिए मौजूद रहते थे। इस वरिष्ठ पंडित को इस कार्य की विशालता का कोई अंदाजा नहीं था। उनके लिए, यह अधीश की ओर से महादेव या भगवान शिव से की जाने वाली एक नियमित प्रार्थना मात्र थी, जो गुरुकुल में समय-समय पर की जाती थी। 'ये परिसर कहाँ हैं, अधीश?' ऐशानी ने पूछा। 'यह भी एक रोचक तथ्य है,' अधीश ने कहा, 'इन तीनों भाइयों के देश के विभिन्न हिस्सों में अपने-अपने राज्य हैं। यह तथ्य अपने आप में कोई उल्लेखनीय बात नहीं है। उल्लेखनीय बात यह है कि भले ही वे अलग-अलग राज्यों में हों, ये किले एक सीधी रेखा में स्थित हैं। वे देश के तीन राज्यों में हैं।' सबसे निचला स्थान तमिलनाडु में है, मध्य वाला मध्य प्रदेश में है और सबसे ऊँचा स्थान कश्मीर के पहाड़ों के बीच में है।' यह चर्चा गुरुजी की कुटिया में हो रही थी। समय कम होता जा रहा था। अधीश ने जल्दी से सभी छोटी-छोटी बातों और उनके निष्कर्षों का संक्षिप्त विवरण दिया। अब चर्चा के लिए कुछ खास बचा नहीं था, सिवाय उस ज्वलंत प्रश्न के। तारकक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष नामक राक्षसों के ये तीनों वंशज आज तक अपने पूर्वजों के वरदानों को अपने रक्त में लिए हुए थे। अपने कमज़ोर आनुवंशिक कोड के बावजूद, उनमें पृथ्वी से भी अधिक विनाश करने की शक्ति थी। वे गुरुजी द्वारा अपनी रणनीति विस्तार से बताने का इंतजार कर रहे थे।

कुछ मिनटों तक विचार करने के बाद गुरुजी ने घोषणा की, 'इन राक्षसों के पूर्वजों का नाश भगवान शिव के शक्तिशाली पिनाकी धनुष से हुआ था। तो क्या इस बार भी ऐसा ही होगा?' वे स्तब्ध रह गए और आश्चर्य और विस्मय से गुरुजी को देखते रहे। उन्होंने भगवान शिव के दिव्य धनुष के बारे में सब कुछ पढ़ा था और वे यह भी जानते थे कि यह अब पृथ्वी पर मौजूद नहीं है क्योंकि भगवान राम ने सीता से विवाह से पहले इसे उठाकर तोड़ दिया था। धनुष का नाम पिनाकी था और यह इतना भारी था कि कोई मनुष्य इसे उठा नहीं सकता था। कुछ कथाओं के अनुसार इसका वजन 21,000 किलोग्राम था। इसे दिव्य वास्तुकार विश्वकर्मा ने ब्रह्मांड के सबसे सघन पदार्थ, न्यूट्रॉन तारे से बनाया था। 'गुरुजी, यदि भगवान शिव एक बार इसके उपयोग की अनुमति भी दें, तो भी यह संभव नहीं है क्योंकि धनुष पहले ही भगवान राम द्वारा

तोड़ा जा चुका है।' अधीश ने चिंता से कहा, 'इसके बावजूद, अगर महान पिनाकी पृथ्वी पर भी होते, तो हम अपनी सारी अलौकिक शक्ति से भी उन्हें उठा नहीं पाते, उनका उपयोग करने की तो बात ही छोड़ दीजिए। कोई और तरीका तो जरूर होगा।'

'यह एक बहुत बड़ी गलतफहमी है कि भगवान राम ने पिनाकी तोड़ी थी। यह महादेव का त्रिशूल है जिसे वे हर समय इस्तेमाल करते थे। यह अविनाशी है। सीता के पिता राजा जनक को दिया गया धनुष पिनाकी नहीं था, बल्कि शिव धनुष था, जो ब्रह्मांड के सबसे शक्तिशाली धनुषों और बाणों में से एक था।'

हालांकि वे इस खुलासे से काफी हैरान थे, लेकिन उन्हें झटका नहीं लगा। स्पष्टीकरण तर्कसंगत था। अगले कुछ दिनों तक, गुरुजी ने अधिश को कठिन परिश्रम कराया, जिसे अधिश ने स्वेच्छा से सहा। उसके द्वारा जपे जापों से अब उसके शरीर में शारीरिक और प्रत्यक्ष परिवर्तन हो रहे थे। पिछले एक महीने में अधिश का रंग गहरा हो गया था और वह काफी लंबा और अधिक मांसल हो गया था। उसके बाल और नाखून बहुत तेजी से बढ़ गए थे। ऐशानी उन्हें प्रतिदिन काटती थी। गुरुजी ने अधिश पर एक अदृश्य आवरण डाल दिया था ताकि कोई उसे देख न सके। यहां तक कि गुरुकुल में भी, जहां सभी लोग नियमित रूप से होने वाली अलौकिक घटनाओं को देखते और आत्मसात करते थे, लोग अधिश के रूप में आए परिवर्तनों को देखकर चौंक जाते। निर्दोष लोग बातें करते और यह कहानी राक्षसों तक पहुंच सकती थी। उन्हें तीन दिन पहले तमिलनाडु के इस हिस्से में टेलीपोर्ट किया गया था। गुरुजी भी उनके साथ थे। उन तीनों को उस स्थान से परिचित होना था और गुरुजी ने वह सटीक स्थान निर्धारित कर दिया था जहां से अधिश विनाशक बाण चलाएगा। यह पिनाकी तो नहीं था, लेकिन यह इस दुनिया का कोई साधारण धनुष-बाण भी नहीं था। यह विशाल था, पर इतना भी विशाल नहीं कि लोगों का ध्यान आकर्षित करे। यह किसी अज्ञात और अपरिचित धातु से बना था। इस पर तांबे जैसी हल्की चमक थी। इस पर कोई खास अलंकरण नहीं थे। देखने में यह किसी नाट्य मंडली द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले आम धनुष-बाण जैसा ही था। एक आम आदमी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि अगले कुछ घंटों में यह कितना कहर बरपाने वाला है। लेकिन गुरुजी, अधीश और ऐशानी को सब पता था।

ऐशानी ने अधीश को चिंता और गर्व दोनों भावों से देखा। गर्व इसलिए कि सदियों में वही एकमात्र योद्धा था जिसे महान पिनाकी की तरह शिव धनुष चलाने का सौभाग्य

प्राप्त हुआ था, और चिंता इसलिए कि इस वरदान और उसके मानव रूप से परे, एक उच्चतर आत्मा में परिवर्तित होने की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। ऐशानी जानती थी कि उसे अपने मानव रूप में वापस आने में महीनों लग जाएंगे। वह अधीश के लिए अत्यंत कष्टदायक समय होगा। वह अपने पूर्व अनुभव से यह भी जानती थी कि वे दोनों इसे किसी और तरह से नहीं चाहते थे। उनका मिशन पृथ्वी से राक्षसों का सफाया करना था, और वे इसे बार-बार करने के लिए सहर्ष तैयार थे।

वे अधीश के पीछे खड़े थे। वे झाड़ियों और छोटे पेड़ों से ढकी एक छोटी पहाड़ी पर थे। उनके लिए यह अच्छा था, क्योंकि वे किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते थे। उनके पक्ष में एक और बात यह थी कि लगभग आधी रात हो चुकी थी और आसपास कोई नहीं था। अधीश को उनके अस्तित्व का पता नहीं था। वह बिल्कुल भी मनुष्य जैसे नहीं दिखते थे। न ही वे भगवान जैसे दिखते थे। वे कहीं बीच में थे और इस समय पूरी तरह से अपने सामने के काम पर ध्यान केंद्रित किए हुए थे। कुछ ही मिनटों में, पुष्य नक्षत्र कुछ सेकंड के लिए चंद्रमा के साथ संरेखित होने वाला था। इस समय, ये नक्षत्र एक सीधी रेखा में आ जाएँगे। अधीश के पास महादेव द्वारा आशीर्वादित धनुष और बाण थे। जो मनुष्य योद्धा अधीश के लिए पर्याप्त से अधिक थे।

ऐशानी और अधीश दोनों ने इस मुकाम तक पहुँचने के लिए बहुत मेहनत की थी, हालाँकि इस बार अधीश और उसका धनुष ही अंतिम विनाश का कारण बनने वाले थे। गुरुजी के निर्देश पर उन्होंने साथ मिलकर प्रार्थना की थी और ऐशानी की कई शक्तियाँ अस्थायी रूप से अधीश में स्थानांतरित हो गई थीं। युगों-युगों से राक्षसों की शक्तियाँ भी काफी हद तक क्षीण हो गई थीं। इसलिए शक्तियों के लिहाज से यह लगभग बराबरी का मुकाबला था। गुरुकुल के खुफिया विशेषज्ञ पहले से ही मध्य प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में अपने उपकरणों के साथ इन जटिल संरचनाओं के विध्वंस की निगरानी के लिए तैनात थे। अब बस धनुष से तीर खींचना बाकी था।

अब बस कुछ ही पल बचे थे। अधीश पूरी एकाग्रता और धैर्य के साथ प्रतीक्षा कर रहा था। उसके चेहरे पर घबराहट या तनाव का कोई निशान नहीं था। पुष्य नक्षत्र के चंद्रमा के साथ संरेखित होने से कुछ ही सेकंड पहले, गुरुजी ने अधीश को संकेत दिया। ऐशानी एक बहुत मजबूत महिला थी, लेकिन फिर भी उसकी धड़कनें तेज थीं।

अधीश ने बड़ी शांति से विशाल धनुष उठाया, उस पर तीर चढ़ाया और खींचा। कुछ ही पलों में आग की ऐसी गर्जना हुई जो मीलों दूर तक सुनाई दी। जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से

उन्हें तबाही और विनाश की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। उन्हें पता था कि आस-पास के कुछ लोगों ने विस्फोट की आवाज़ सुनी या देखी होगी। लेकिन जब तक वे सदमे से उबर पाते, पूरी इमारत गायब हो चुकी थी, और वे सोचते रह गए कि क्या यह उनका भ्रम था या सिर्फ एक रोंगटे खड़े कर देने वाला भयानक सपना था। अब उनके पास बाकी दो इमारतों के बारे में खबर का इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

वे गुरुजी की ओर मुड़े, जो एक वृक्ष के नीचे गहरी ध्यान मुद्रा में थे। वे जानते थे कि गुरुजी अन्य दो राज्यों के बुद्धिमान लोगों से संपर्क में थे। गुरुजी ने काफी देर तक न तो आंखें खोलीं और न ही कुछ बोले। वे प्रतीक्षा करते रहे, हालांकि उनके अनुमान के अनुसार उन्हें प्रलय की खबर तुरंत मिल जानी चाहिए थी। ऐशानी अब अधीश के लिए चिंतित हो रही थी। मनुष्य रूप में वापस लौटने की प्रक्रिया बहुत कष्टदायी होगी, यह बात दोनों जानते थे। उन्हें जितनी जल्दी हो सके गुरुकुल पहुंचना था। उन्हें इस घटना की स्मृति उनके मन से मिटने से पहले धनुष-बाण की शक्तियां वापस लौटानी थीं। अधीश को अपनी चेतना में ही शक्तियां वापस लौटानी थीं।

अंततः गुरुजी ने अपनी आँखें खोलीं, उनकी ओर देखा और सिर हिलाया। राहत की साँस लेते हुए वे वापस जाने की तैयारी करने लगे।

ब्राह्मण राक्षस

ए

धीश अभी भी पिनाकी वाली घटना से उबर रहा था। उसका शरीर धीरे-धीरे सामान्य हो रहा था। अब जब वह फिर से इंसान बन चुका था, तो वह घटना उसके दिमाग से पूरी तरह मिट चुकी थी, लेकिन उसके शरीर को अपना विशाल आकार और उसमें बह रहे एड्रेनालाईन की भारी मात्रा याद थी। अचानक वह खोखला, किसी खोल जैसा लगने लगा। एड्रेनालाईन का कोई प्रवाह नहीं था, उसका शरीर तेजी से सिकुड़ रहा था और दर्द असहनीय था। ऐशानी उसकी परछाई बन चुकी थी; वास्तव में, वह वैद्यशाला में उसके कमरे का एक अभिन्न अंग बन गई थी। गुरुजी और ऐशानी ही वे दो लोग थे जो जानते थे कि धीश ने क्या हासिल किया था और वह किस दौर से गुजर रहा था। लेकिन राक्षस और समय किसी का इंतजार नहीं करते। कुछ गंभीर मुद्दे फिर से उभरने लगे थे, लेकिन ऐशानी को धीश के पास से हटाना असंभव था।

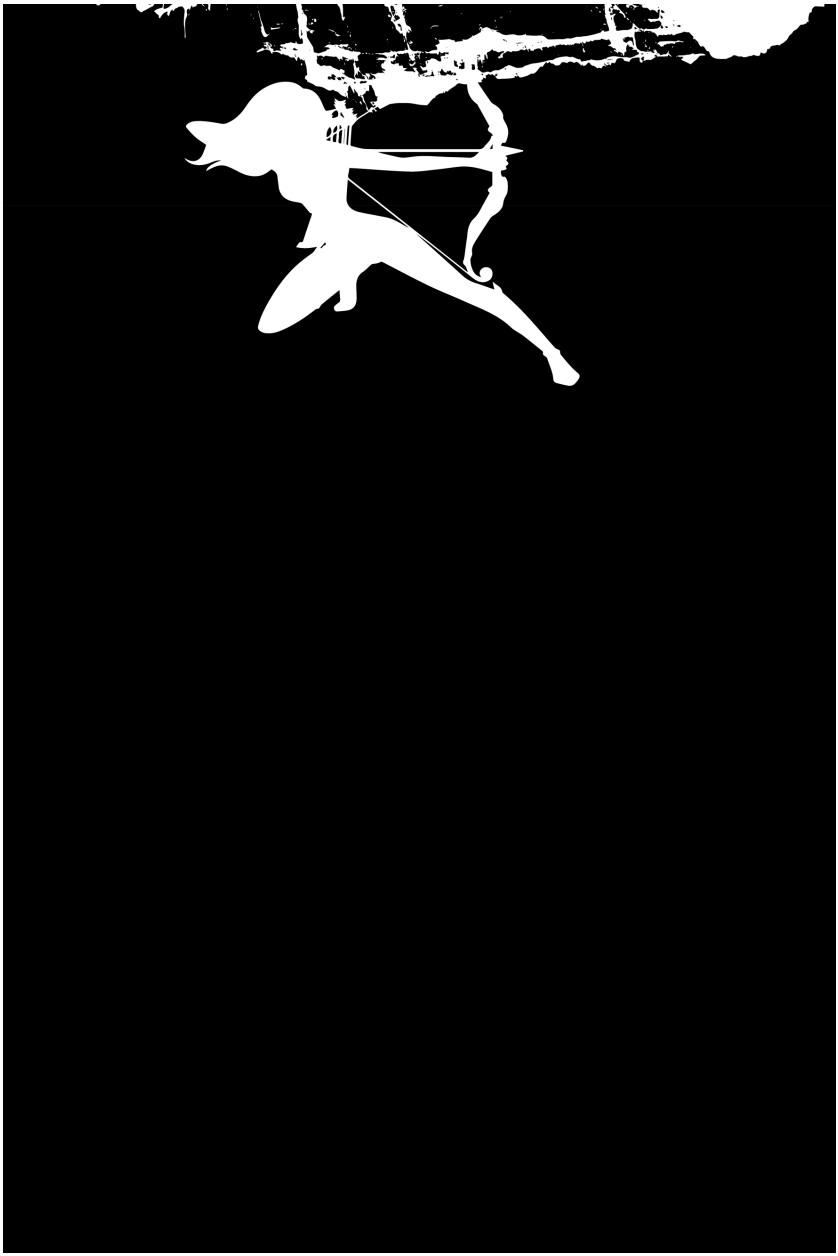

गुरुजी ने आह भरी। अविवाहित और गृहस्थ न होने के कारण वे दो व्यक्तियों के बीच के इस प्रेम और जुड़ाव को पूरी तरह नहीं समझ पाते थे, लेकिन इस जोड़े के मामले में

वे हमेशा उनकी बात मान लेते थे। इस बार जब वे वैद्यशाला में अधीश से मिलने गए, तो वरिष्ठ पुस्तकालय से कुछ पुस्तकें लेकर आए और ऐशानी को दे दीं। ऐशानी इस भाव से आश्चर्यचकित और भावुक हो गईं।

गुरुजी ने कहा, 'तुम दोनों जब चाहो ये किताबें पढ़ सकते हो।' 'जी गुरुजी,' ऐशानी ने कृतज्ञतापूर्वक उत्तर दिया। कई बार जब अधीश आराम कर रहा होता या सो रहा होता, तो उसे थोड़ा अकेलापन महसूस होता था। अधीश को ज्यादा बोलने की इजाजत नहीं थी।

'मैं अधिश को पढ़कर सुनाती हूँ, शायद उसका मूड थोड़ा ठीक हो जाए,' उसने धीरे से कहा। दोनों जानती थीं कि इस समय उसका दिमाग इतनी उत्तेजना सहन नहीं कर सकता। उसका दिमाग इस समय बहुत उलझन में था। 'ये किताबें खास तौर पर तुम्हारे लिए हैं, बेटा,' गुरुजी ने शांत स्वर में कहा। 'नकारात्मक शक्तियाँ फिर से बढ़ने लगी हैं। अधिश अभी पूरी तरह से होश में नहीं है, इसलिए मुझे उदय को पुष्कर भेजना पड़ा।'

'ठीक है गुरुजी, लेकिन उदय वहां क्यों गया है?'

'शुरू में अधीश को पुष्कर जाना था, लेकिन अब यह मुमकिन नहीं है। इसलिए मुझे दूसरे सबसे काबिल योद्धा को भेजना पड़ा। समय बहुत अहम था। हमारे योद्धा को कार्तिक पूर्णिमा पर वहाँ पहुँचना ही था।' 'बेटा, ये किताबें पढ़ो, सब समझ जाओगी,' गुरुजी ने हिदायत दी, फिर बाद में उन्होंने कहा, 'अदीश को इसमें शामिल होने की ज़रूरत नहीं है, तुम यह काम खुद कर लोगी।' ऐशानी उत्सुक थी, लेकिन उसने गुरुजी से कोई सवाल नहीं पूछा। अगर उन्हें कुछ और बताना होता, तो वे पहले ही बता देते। वह अधीश के पलंग के पास वाली कुर्सी पर बैठ गई। देवनाथ ने उसे यथासंभव आराम देने की कोशिश की थी। उन तीनों के अलावा, सिर्फ़ देवनाथ को ही अधीश के कष्टों और तकलीफों का थोड़ा-बहुत अंदाज़ा था। वैद्यशाला के इस हिस्से में उन्हें आने की अनुमति नहीं थी, लेकिन उन्होंने ऐशानी को इतना परेशान किया कि उसने गुरुजी से देवनाथ के लिए सिफारिश की। गुरुजी ने वैद्यों से बात की और बड़ी अनिच्छा से देवनाथ को हर दूसरे दिन आधे घंटे के लिए अधीश से मिलने की अनुमति दे दी। ऐशानी ने आह भरी। प्यारे देवनाथ, चूंकि उन्हें अधीश के लिए कुछ भी करने की मनाही थी, इसलिए उन्होंने वहां थोड़े समय के लिए रहकर ऐशानी की देखभाल करके खुद को उपयोगी बनाने की कोशिश की। उन्होंने अधीश के बिस्तर के पास ऐशानी के

लिए एक आरामदायक सिंगल-सीटर सोफा और एक छोटी मेज पर एक दीपक रखा। उन्होंने ऐशानी के लिए हर्बल चाय का भी इंतजाम किया। शुक्र है कि वहां बिजली का कनेक्शन था, जिसका इस्तेमाल केवल बहुत जरूरी था।

वह सोफे पर बैठ गई और बेमन से उन किताबों के पन्ने पलटने लगी जो गुरुजी उसके लिए लाए थे। अधीश सो रहा था। वह दिन में बाईस घंटे से भी ज़्यादा सोता था, सिर्फ़ दवा लेने, खाना खाने या स्नान करने के लिए ही उठता था। ये किताबें कुछ ऐसे राक्षसों के बारे में थीं जिन्हें बच्चों और कमज़ोर लोगों का दिमाग खाना, फिर उनकी खोपड़ियों से खून पीना और आखिर में उनकी आंतें गले में पहनकर भयानक नृत्य करना पसंद था। वह सिहर उठी। अनगिनत राक्षसों को मारने के वर्षों बाद भी वह राक्षसों की इन घिनौनी और भयानक आदतों से बेखबर नहीं थी।

उसने देवनाथ द्वारा नियमित रूप से लाए जाने वाले अखबारों में से एक उठाया। उसने बेमन से उसे पढ़ा। अखबारों में भी देश और दुनिया की भयावह खबरें ही छपती थीं। हाल ही में, वह पूर्वी भारत के एक राज्य में फैली एक महामारी की कहानी पढ़ रही थी। बच्चे बीमार पड़ने लगे थे। डॉक्टर दिन-रात काम कर रहे थे, लेकिन बच्चों को ठीक नहीं कर पा रहे थे। शुरुआत में तो चिंता की कोई बात नहीं थी, लेकिन धीरे-धीरे बेचैनी बढ़ने लगी क्योंकि बच्चों की मौत होने लगी और संख्या बढ़ती चली गई। पूरा देश आक्रोश में था। पूर्वी राज्य के एक गरीब गांव में नवजात शिशु और बच्चे मरने लगे थे। शुरुआत में तो चिंता की कोई बात नहीं थी, क्योंकि कभी-कभी छोटे बच्चे भी कई बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। लेकिन मृत्यु दर खतरनाक गति से बढ़ी और कुछ ही हफ्तों में स्थिति पूरी तरह से बेकाबू हो गई। सरकार चिंतित थी। विपक्ष सरकार को जिम्मेदार ठहराने और उसे बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा था। इतनी ज़्यादा मौतें हो रही थीं कि इकलौता अस्पताल इतने भयानक नरसंहारों और देखने में अप्राकृतिक लगने वाली मौतों का सामना नहीं कर पा रहा था। डॉक्टर बता रहे थे कि बच्चे और शिशु सिर्फ़ दिमागी बुखार से मर रहे थे। मृत बच्चों के दुखी और व्याकुल माता-पिता और रिश्तेदार सदमे में थे और अस्पताल की ओर उमड़ पड़े। प्रशासन जानता था कि बहुत जल्द यह शोक गुस्से में बदल जाएगा और फिर बदले की कार्रवाई शुरू हो जाएगी। गाँव में अफरा-तफरी मच जाएगी। अस्पताल और उसके कर्मचारी इसके शिकार बन जाएँगे। अपने व्यथा को व्यक्त करने का तरीका न जानते हुए, शोकग्रस्त ग्रामीणों ने अस्पताल के कर्मचारियों पर हमला करने की योजना बना

ली थी। इसे भाँपते हुए, दो डॉक्टर गायब हो गए। बेशक, सरकार ने तुरंत नए डॉक्टर भेजे, लेकिन स्थिति भयावह रूप ले चुकी थी।

ऐशानी को अचानक एक अहसास हुआ और वह चौंक गई। निस्संदेह, गुरुजी उसे किसी भी विषय पर कोई भी किताब यूं ही नहीं दे देते। गुरुजी के साथ कभी कोई संयोग नहीं होता था। अब उसे सारी बातें समझ में आ गईं। तो, ये बच्चे इसलिए मर रहे थे क्योंकि ब्रह्मराक्षस नामक राक्षस उन्हें मार कर खा रहे थे। उसने अनुमान लगाया कि वे सबसे पहले उनका दिमाग खाते होंगे और यह सोचकर वह कांप उठी। भगवान जाने उसके बाद वे शरीरों के साथ क्या-क्या करते होंगे। प्राचीन ग्रंथों में जो लिखा है, वह सब वे नहीं कर सकते थे क्योंकि वर्तमान समय और परिस्थितियों में यह संभव नहीं था। लेकिन बहुत नुकसान हो चुका था। अब एक बात निश्चित थी, ये राक्षस बच्चों के दिमाग को खा रहे थे, भले ही बाकी शरीर को न खा रहे हों।

गुरुजी ने उसे यह ज़िम्मेदारी सौंपी थी और उसे तुरंत ही इन घृणित और भयानक गतिविधियों को रोकना था। उसने अपना सिर किताबों के पन्नों में गाड़ दिया, इस बार पूरी एकाग्रता के साथ। उसने सीखा कि ब्रह्मराक्षसों को भगाने के मंत्र होते हैं। ये मंत्र ऐशानी के लिए अपरिचित नहीं थे। उसने अन्य दुष्ट प्राणियों को भगाने के लिए भी ऐसे ही मंत्र सीखे थे। लेकिन यहाँ कुछ पेचीदगियाँ थीं। ब्रह्मराक्षस अत्यंत बुद्धिमान और सचेत प्राणी थे। प्राचीन काल में ब्रह्मराक्षस बनने से पहले, वे विद्वान ब्राह्मण थे जो लालची हो गए और निम्नतम वर्गों का भी अमानवीय तरीके से शोषण करने लगे। उन्हें सर्वत्र शाप मिला और परिणामस्वरूप वे ब्रह्मराक्षस बन गए (ब्राह्मण जो राक्षस बन गए)। इस प्रकार, वे और भी कपटी और दुष्ट हो गए। लेकिन उनमें एक गुण बना रहा: उनका विद्वतापूर्ण मस्तिष्क और किसी भी ग्रंथ या मंत्र को कुछ ही सेकंड में समझने की तीव्र क्षमता। वे किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा बोले गए किसी भी मंत्र या श्लोक को आत्मसात कर सकते थे और याद कर सकते थे। इसलिए ब्रह्मराक्षसों को भगाने वाले किसी भी मंत्र का कोई महत्व नहीं रह गया, क्योंकि इन मंत्रों को सुनने के बाद वे उन्हें इतने ज्ञानपूर्ण लेकिन अस्पष्ट ढंग से जोर-जोर से जपते थे कि जपने वाला स्वयं भ्रमित हो जाता और अपने ही श्लोक भूल जाता। ऐशानी पूरी रात ब्रह्मराक्षसों पर लिखे प्राचीन ग्रंथ को पढ़ती रही। उसने अगले दो दिन उन पुस्तकों को पढ़ने और ब्रह्मराक्षसों के मंत्रों को याद करने में बिताए। उदय तीसरे दिन पुष्कर से लौटा। अधीश की देखभाल करने और ब्रह्मराक्षसों का नाश करने के बीच दुविधा में फंसी ऐशानी ने

अधीश को गुरुजी और देवनाथ की देखरेख में छोड़ दिया। अधीश को छोड़कर जाने पर उसकी व्याकुलता देखकर देवनाथ ने उसे पुकारा, 'भाभी, आप जानती हैं कि मैं अपनी जान देकर भी उसकी देखभाल और रक्षा करूंगा। भैया को कोई नुकसान नहीं होगा। यहां के वैद्य श्रेष्ठ हैं और गुरुजी भी यहीं हैं।' वह धीरे-धीरे और निश्चित रूप से ठीक हो जाएगा।' ऐशानी को अपराधबोध हुआ, उसने देवनाथ को तब काम करते देखा था जब उनका गुरुकुल नष्ट हो गया था और फिर कैलाश की देखभाल में उनकी अथक मेहनत देखी थी। कई मायनों में वह उससे बेहतर नर्स हो सकता था, सिवाय अधीश और ऐशानी के बीच स्वाभाविक आकर्षण के। उसने आह भरी, 'मैं जानती हूँ देवनाथ, बस मैं उसे छोड़ना नहीं चाहती। मैंने उन कामों की एक सूची बनाई है जो आपको अधीश की देखभाल करते समय करने हैं। कृपया उसका अक्षरशः पालन करें।'

जी भाभी, देवनाथ भी उतनी ही गंभीरता से बोले। अधीश की देखभाल में छोटी से छोटी बात को भी वे अटल आदेश की तरह मानते थे। बाकी सब काम वैद्यों और गुरुजी पर निर्भर था।

ऐशानी और उदय सबसे पहले गुरुजी की कुटिया में उनका आशीर्वाद लेने और कुछ और जानकारी प्राप्त करने गए। वे ट्रेन से यात्रा करके अगली सुबह उस गाँव पहुँचे। उदय ने अपने हथियार एक मजबूत कंधे के थैले में रखे हुए थे, बाकी उनका सामान हल्का-फुल्का ही था। उन्हें देखकर कोई भी उन हथियारों की अपार शक्ति का अंदाजा नहीं लगा सकता था। बल्कि, उन्होंने बस एक साधारण से दिखने वाले पुरुष और महिला को देखा, पुरुष के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी और महिला अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए बेचैन थी। वैसे भी, गाँव वालों को किसी के आने-जाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, वे अपने दुख और दुर्भाग्य से इतने व्याकुल थे। गाँव के इकलौते लॉज में जगह नहीं थी, वह उन लोगों के रिश्तेदारों से भरा हुआ था जिन्होंने अपने बच्चों को खो दिया था। निडर होकर, ऐशानी और उदय गाँव में घूमे और फिर एक पेड़ की छाँव में बैठ गए। यह एक प्रेतवाधित गाँव जैसा था। उन्होंने प्रेतवाधित घरों के बारे में सुना था, लेकिन यह सचमुच एक प्रेतवाधित गाँव था। गाँव के लगभग हर दूसरे घर से रोने-धोने की आवाजें आ रही थीं। उन्होंने कुछ ग्रामीणों से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन कोई भी उन्हें यह बताने के अलावा कुछ नहीं बता सका कि बच्चों की मृत्यु हल्के बुखार के बाद या तो घर पर या अस्पताल में हुई थी। कुछ समय बाद वे अस्पताल गए। वहाँ से भी उन्हें कोई जानकारी नहीं मिली और न ही ब्रह्मराक्षसों के

ठिकाने का कोई सुराग मिला। बच्चों की मृत्यु या तो उनके घरों के अंदर हुई थी, या गाँव की घुमावदार गलियों में खेलते समय, या फिर उस अकेले अस्पताल में। वे अस्पताल से निकलकर एक पेड़ के नीचे बैठ गए। 'उदय, तुम पुष्कर क्यों गए थे?' ऐशानी ने पूछा। गुरुजी ने उसे बताया था कि उदय को वहाँ एक विशेष कारण से भेजा गया था। 'ये ब्रह्मराक्षस इतने बुद्धिमान और इतने असाधारण रूप से शक्तिशाली हैं कि मंत्रों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे अपने पिछले जन्मों में अत्यंत ज्ञानी ब्राह्मण थे। इसलिए उन्हें संसार के सभी मंत्रों का पूर्ण ज्ञान है और उन्हें अपवित्र करने या शक्तिहीन करने का तरीका भी पता है। जब तुम उन्हें पहचान कर मंत्रों का जाप शुरू करोगे, तो वे उन्हें निरर्थक बनाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे।' उस स्थिति में हम उन्हें नष्ट नहीं कर पाएंगे। यहाँ तरकीब यह है कि आप अपने मंत्रों का इस प्रकार जाप करें कि वे आपका अनुकरण न कर सकें और आपके मंत्र उन्हें कमजोर कर दें। इसके बाद मैं आता हूँ। मैं तुरंत अपने विशेष हथियारों से उन्हें नष्ट कर देता हूँ,' उदय ने उसे बताया।

'उदय, ये कौन से हथियार हैं? मुझे इन्हें देखने का मौका नहीं मिला। अगर ये ब्रह्मराक्षसों को मार सकते हैं, तो ये ज़रूर बहुत खास होंगे। क्या ये दैवीय हथियार हैं?' ऐशानी उत्सुक थी।

नहीं ऐश, ये किसी भी तरह से दिव्य शस्त्र नहीं हैं। मुझे दिव्य शस्त्रों का उपयोग करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है, कम से कम इस जन्म में तो नहीं। ये युद्ध के पारंपरिक शस्त्र हैं, लेकिन इनमें विशेष शक्तियां समाहित हैं। गुरुजी ने मुझे इसी उद्देश्य से पुष्कर भेजा था। यदि आपको याद हो, तो कार्तिक पूर्णिमा कुछ ही दिन पहले थी। कार्तिक पूर्णिमा की रात को कुछ विशेष मंत्रों के साथ इन शस्त्रों को पुष्कर झील के जल में डुबोकर रात भर के लिए वहीं छोड़ दिया जाता है। अगली सुबह तक इनकी शक्तियां इतनी बढ़ जाती हैं कि कोई भी राक्षस इनका सामना नहीं कर सकता।

'तो, इसमें पेचीदगी क्या है, उदय?' ऐशानी दोनों में अधिक अनुभवी थी।

उदय अपनी मुस्कान नहीं रोक सका, 'जी हाँ, ऐश, इसमें एक पेंच है: एक बार किसी खास तरह के हथियार का इस्तेमाल शुरू कर दो, तो उसे लगातार इस्तेमाल करते रहना होगा। जैसे ही तुम रुकोगे, उसकी शक्ति कम हो जाएगी और वह हथियार साधारण हथियार बन जाएगा, इसलिए ब्रह्मराक्षसों के खिलाफ बेअसर हो जाएगा। हथियार फिर से शक्तिशाली हो जाता है, लेकिन कुछ समय तक उसकी पूजा करनी

पड़ती है। यह किसी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण को चार्ज करने जैसा है। लेकिन जब तक हथियार चार्ज होगा, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी और खेल खत्म हो जाएगा।' ऐशानी ने सिर हिलाया, 'इसीलिए तुम्हारे पास कई हथियार हैं। अगर किसी हथियार को आराम देना पड़े, तो तुम दूसरे पूरी तरह चार्ज किए हुए हथियार का इस्तेमाल कर सकते हो,' उदय ने सिर हिलाकर सहमति जताई। 'पहले हमें उन जगहों को खोजना होगा जहाँ इन ब्रह्मराक्षसों ने अपना अड्डा बनाया है। किताबों में लिखा है कि मनुष्य से ब्रह्मराक्षस बनने के बाद वे कहीं भी सामान्य तरीके से आराम नहीं कर सकते।' इसलिए, उन्होंने अपने खूनी हंगामे के बाद आराम करने और विश्राम करने का एक तरीका खुद ही निकाल लिया। वे गांवों और कस्बों के बाहरी इलाकों में पेड़ों पर शरण लेने लगे। चूंकि वे पेड़ों के नीचे लेट नहीं सकते थे, इसलिए वे पेड़ों की शाखाओं से चमगादड़ों की तरह उल्टा लटकने लगे। 'उनकी नाक भी नहीं है। हम अपनी खोज वहीं से शुरू करेंगे और हमें यह बहुत जल्दी करनी होगी,' ऐशानी ने जोर देकर कहा। 'क्या नाक न होने का कोई मतलब है, ऐशानी?' उदय ने पूछा।

'मुझे नहीं पता उदय, मुझे लगता है कि ब्रह्मराक्षस अपनी नाक से मंत्रोच्चार नहीं कर सकते क्योंकि उनकी नाक होती ही नहीं है।'

उदय इस जवाब से थोड़ा हैरान हुआ, लेकिन उसने इस पर और विचार न करने का फैसला किया, 'वैसे भी, मुझे नहीं लगता कि खाने के लिए और बच्चे बचे हैं, शायद बस कुछ ही बचे हों। ब्रह्मराक्षस बेहतर जगहों की तलाश में इस गाँव को छोड़ सकते हैं। हमें अपनी खोज तेज़ करनी होगी।' वे गाँव के बाहरी इलाके की ओर चलने लगे। यह धूल से भरा गाँव उपेक्षा और उदासीनता के कारण और भी गंदा हो गया था। यह दिमागी बीमारी, जिसे सब लोग ब्रह्मराक्षस कहने लगे थे, किसी जाति या धर्म को नहीं छोड़ती थी। और अक्सर, निचले तबके के बच्चे ही इसके शिकार होते थे, क्योंकि माता-पिता दोनों काम पर चले जाते थे और बच्चों को घर पर अकेला या अपने से थोड़े बड़े भाई-बहन की देखरेख में छोड़ देते थे। देखभाल करने के लिए कोई वयस्क न होने के कारण, ये बच्चे अपने घरों से बाहर निकलकर गाँव की गलियों में खेलने लगते थे। ब्रह्मराक्षसों के कई शिकार अकेले रहने वाले बच्चे थे। अब उनके माता-पिता शोक से पागल हो चुके थे और या तो अस्पताल में भीड़ लगाए बैठे थे या फिर यूं ही बेसुध पड़े थे। सफाईकर्मियों के काम बंद करने से पूरा गांव गंदा हो गया था, खासकर गांव के बाहरी इलाके जहां सबसे ज्यादा कूड़ा फेंका जाता था। ऐसा लग रहा था मानो पूरा

गांव खुले कूड़े के गड्ढे से घिरा हो, इतनी बदबू आ रही थी। उदय ने घृणा से अपनी नाक ढक ली, 'राक्षस के लिए बिल्कुल सही जगह है। वे गंदगी से बने होते हैं और गंदगी में ही रहना पसंद करते हैं।'

'नहीं उदय, याद रखो कि वे अपने पिछले जन्मों में विद्वान और ब्राह्मण थे। भले ही वे अपने लोभ और लालच के कारण ब्रह्मराक्षस बन गए हों, फिर भी वे सुबह का स्नान पूर्ण स्वच्छता से करते हैं। वे हमें इन कूड़े के ढेरों में नहीं मिलेंगे।'

तो क्या हम वापस गांव के अंदर जाकर उनकी तलाश करें?

'नहीं उदय, वे हमें यहीं कहीं मिल जाएँगे। वे ज़मीन पर नहीं सो सकते। वे सोने के लिए बड़ी-बड़ी शाखाओं वाले पेड़ ढूँढ़ेंगे। उन्हें चमगादड़ों की तरह उल्टा सोने का श्राप मिला है। मुझे भी ठीक से नहीं पता कि उन्हें कहाँ ढूँढ़ना है। शायद गाँव के बाहरी इलाके में जाने पर हमें बड़े पेड़ मिल जाएँ।'

उदय ने सिर हिलाया। जासूसी और खोजबीन करना उसकी खासियत नहीं थी। उसका काम तो बस बुराई को नष्ट करना और अपनी नेता ऐशानी की रक्षा करना था। वाकई, गाँव से लगभग एक मील दूर कई बड़े-बड़े पेड़ थे जो बरगद के पेड़ों जितने ऊँचे हो गए थे। उनके सामने एक विशालकाय पेड़ खड़ा था। वे उसकी प्रजाति को पहचान नहीं पाए। उसकी बड़ी-बड़ी शाखाओं पर हरी, चिपचिपी, काई लगी लताएँ लटक रही थीं। उसका विशाल तना टेढ़ा-मेढ़ा और मुड़ा हुआ था। ऐसे और भी कई पेड़ थे, लेकिन यह पेड़ सबसे अलग और डरावना लग रहा था, उसकी लताएँ उन्हें अपनी ओर बुला रही थीं। 'हाँ,' ऐशानी ने फुसफुसाते हुए कहा। 'मुझे यकीन है कि वे यहीं हैं, मैं उनकी मौजूदगी महसूस कर सकती हूँ, हालाँकि हम उन्हें अभी देख नहीं पा रहे हैं और न ही मैं यह बता पा रही हूँ कि इन पेड़ों में कितने हैं।'

'ठीक है,' उदय ने फुसफुसाते हुए जवाब दिया। 'तुम अपने मंत्र जाप शुरू करो, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।' अगर ऐशानी को अधीश की याद आ रही थी, तो उसने अपनी भावनाएँ ज़ाहिर नहीं कीं, पर उदय जानता था और एक पल के लिए उदासी ने उसे घेर लिया। उसने हमेशा ऐशानी से प्यार किया था, हालाँकि ऐशानी को उस मायने में उसके अस्तित्व का एहसास भी नहीं था— उसकी दुनिया अधीश से शुरू और खत्म होती थी। उदय यह बात अच्छी तरह जानता था और उसने कभी इस सीमा को पार नहीं किया, न ही उसने कभी ऐशानी को अपने प्यार का इज़हार किया। इस एकतरफा प्यार के बारे में सिर्फ़ दो लोग जानते थे: एक गुरुजी और दूसरी उसकी बहन रूबी।

अगले ही पल उदय पूरी तरह से अपने काम में जुट गया और राक्षसों की तलाश में पेड़ों को स्कैन करने लगा। ऐशानी ने अपनी कुश घास की चटाई बिछाई और उस पर बैठ गई। उसने अपने चारों ओर गंगाजल छिड़का और पवित्र जल अपने ऊपर भी डाला। आराम से बैठकर उसने नरसिंह मंत्र का जाप शुरू किया। नरसिंह मंत्र विशेष रूप से महान ऋषियों द्वारा ब्रह्मराक्षसों और दुष्ट यक्षों से मुक्ति पाने के लिए बनाया गया था। जब उसने मंत्र का जाप शुरू किया, तो उसकी आवाज फुसफुसाहट जैसी थी और फिर धीरे-धीरे तेज होती गई। इतनी तेज कि देखते ही देखते उसके चारों ओर का क्षेत्र उसकी निर्मल आवाज से भर गया। उदय ब्रह्मराक्षसों की तलाश और ऐशानी की रक्षा करने में पूरी तरह से लीन था, इसलिए उसे यह आवाज मुश्किल से सुनाई दे रही थी। लेकिन कुछ समय बाद, उसने ऐशानी के मंत्र उच्चारण में एक सूक्ष्म परिवर्तन देखा। उसने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह जानता था कि ऐशानी श्रेष्ठ है और उसे पता है कि वह क्या कर रही है। लेकिन धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि ऐशानी को जाप करने में कुछ कठिनाई हो रही है। उसने चिंता से उसकी ओर देखा। मंत्र अस्पष्ट और अस्पष्ट प्रतीत हो रहे थे। मंत्रों के अपने ज्ञान से उदय समझ गया कि वह जो जप रही थी वह शुद्ध मंत्र नहीं था। मंत्र किसी प्रकार विकृत हो रहे थे। अब स्पष्ट रूप से विचलित होकर, ऐशानी ने अपनी आँखें खोलीं। उदय को अब पक्का यकीन हो गया था कि ब्रह्मराक्षस यहीं या आसपास मौजूद हैं। उसकी नज़रें ऐशानी से मिलीं। उसने उसे चुप रहने और अपनी रखवाली जारी रखने का इशारा किया।

उदय जानता था कि ब्रह्मराक्षस नरसिंह मंत्र से परिचित थे। यदि वे ऐशानी को सफलतापूर्वक मंत्र का जाप करने देते, तो वे अपनी शक्तियों से वंचित हो जाते और जल्द ही भूख से मर जाते। इसलिए, वे ऐशानी के जाप की नकल करके और उसे अस्पष्ट रूप से जोर-जोर से दोहराकर उसे परेशान कर रहे थे। यद्यपि मंत्र एक ही थे, लेकिन उच्चारण और स्वर में थोड़ी सी गड़बड़ी से मंत्र का अर्थ और प्रभाव पूरी तरह से विकृत हो रहा था। वह चिंतित और परेशान हो रहा था। कुछ ही देर में ऐशानी की आवाज पूरी तरह बदल गई। वह अपने मंत्रों का जाप एक लयबद्ध तरीके से कर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो मंत्र उसके मुंह से नहीं निकल रहे हों। चिंतित होकर उसने पीछे मुड़कर उसे देखा। उसका मुंह बंद था, लेकिन वह स्पष्ट रूप से मंत्रों का जाप कर रही थी। वह कुछ पल के लिए भ्रमित हुआ, लेकिन फिर उसे अचानक समझ आ गया। ऐशानी नाक से जाप कर रही थी।

आवाजें सचमुच साफ और शुद्ध थीं, सिवाय इसके कि उनमें एक नाक से निकलने वाली हल्की सी कर्कश ध्वनि थी। वह प्रशंसा से मुस्कुराया। नाक से बोलना कोई साधारण बात नहीं थी। नाक से बोलने के लिए वर्षों के कठिन अभ्यास की आवश्यकता होती है, लेकिन यह ऐशानी थी जो ठान लेने पर कुछ भी कर सकती थी। वह गर्व से फूला नहीं समाया। अब मंत्रोच्चार की आवाजें स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थीं क्योंकि ब्रह्मराक्षस अब उसकी नकल नहीं कर सकते थे। यह इतना आसान था कि उसे मुस्कुराना ही पड़ा। ब्रह्मराक्षसों की नाक नहीं होती थी। यह उनका अभिशाप था और उन्होंने अन्य स्थानों और अन्य युगों में भी इसका दंड भुगता था।

अचानक, उसे एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी, मानो कोई शरीर ज़मीन पर गिर गया हो। देखते ही देखते, और भी शरीर ज़मीन पर गिर पड़े। उदय तेज़ी से घूमा। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। विशालकाय, भयानक और भयंकर दिखने वाले राक्षस अपनी कमज़ोरी के कारण ज़मीन पर गिर पड़े थे। नरसिंह मंत्र ने उन्हें बहुत कमज़ोर कर दिया था; फिर भी, वे मनुष्यों को मारने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली थे। उन्हें वरदान प्राप्त था कि वे साधारण हथियारों से नहीं मारे जा सकते थे। उन्हें केवल कार्तिक पूर्णिमा पर पुष्कर झील के पवित्र जल में डुबोए गए हथियारों से ही मारा जा सकता था। लेकिन वे ऐशानी के पास जाने की हिम्मत नहीं कर रहे थे। अगर वह अपनी नाक से बोल सकती थी, तो भगवान ही जाने वह और क्या कर सकती थी। उदय से ज़्यादा निर्मम हत्यारा कोई नहीं था। पवित्र और शक्ति से परिपूर्ण हथियार उसके दोनों हाथों में थे। एक पल भी इंतज़ार किए बिना, उदय ने हर तरफ वार करना शुरू कर दिया। हालाँकि ब्रह्मराक्षसों की शक्ति काफी कम हो गई थी, फिर भी वे एक अच्छी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार थे। लेकिन अपनी कमजोर अवस्था में वे उदय और उसके रहस्यमयी हथियारों का मुकाबला नहीं कर सकते थे। कुछ ही मिनटों में, पेड़ के नीचे का पूरा इलाका खून से लथपथ अंगों, मांस, रक्त और हड्डियों के ढेर में तब्दील हो गया। ब्रह्मराक्षसों में कोई भय नहीं था, वे लड़ना चाहते थे, लेकिन अपनी कमजोर अवस्था में वे उदय पर केवल लड़खड़ाते और कमजोर प्रहार करते और मारे जाते। अगर एक पल का भी विराम होता, तो हथियार अपनी शक्ति खो देता। उदय पुराने हथियार को छोड़कर बिजली की गति से उसे नए हथियार से बदल लेता और नरसंहार जारी रखता। अचानक सन्नाटा छा गया। पेड़ों से और कोई शव नहीं गिरा। उस पेड़ में रहने वाले ब्रह्मराक्षसों की संख्या इतनी अधिक थी कि उन्हें उंगलियों पर गिना नहीं जा

सकता था। लेकिन उदय अपने हाथों में हथियारों का एक और जप लेकर तैयार था और ऐशानी भी मंत्रोच्चार करती रही। जब उन्हें पूरी तरह से यकीन हो गया कि कोई भी ब्रह्मराक्षस जीवित नहीं बचा है, तभी उदय ने हथियार अपने थैले में रखे और ऐशानी ने मंत्रोच्चार बंद कर दिया। उन्होंने अपना सामान उठाया और रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़े। ऐशानी एक बार फिर चिंतित और परेशान पत्नी बन गई थी। वह जल्द से जल्द गुरुकुल पहुँचकर अधीश के पास रहना चाहती थी। उसे इस बात की चिंता सता रही थी कि उन्हें ट्रेन के लिए एक घंटा इंतज़ार करना पड़ेगा। उदय ने सब कुछ देख लिया। भावहीन चेहरे के साथ वह ट्रेन में उसके बगल में बैठा और फिर उसे गुरुकुल तक छोड़ दिया।

दो दिनों के भीतर ही अखबारों में यह खबर छपने लगी कि डॉक्टरों और सरकार ने इस घातक बीमारी को नियंत्रित करने और पूरी तरह से खत्म करने में सफलता प्राप्त कर ली है। ऐशानी और उदय ने पूरी कार्रवाई को चुपचाप अंजाम दिया और देश को इसकी भनक तक नहीं लगी।

जी उठने

ए

ऐशानी कई महीनों से अधीश के शरीर के स्वस्थ होने का इंतज़ार कर रही थी। आखिरकार वह दिन आ ही गया जब गुरुजी ने ऐशानी को अपनी कुटिया में बुलाया। दिल की धड़कन तेज़ होते हुए वह गुरुजी के सामने बैठ गई। सभी जानते थे कि गुरुजी एक तपस्वी थे और मानवीय भावनाओं से बेपरवाह थे। लेकिन कभी-कभी परिस्थितियाँ इतनी विकट हो जाती थीं कि गुरुजी जैसे शांत स्वभाव वाले व्यक्ति भी भावुक हो जाते थे। वह गुरुजी के कुछ कहने का इंतज़ार कर रही थी। वह जानती थी कि यह अधीश और ऐनार के शरीरों के बीच आत्मा के आदान-प्रदान के बारे में होगा। 'हे माता,' उसने मन ही मन माँ दुर्गा से प्रार्थना की, 'कृपया इस स्थानांतरण को सफल बनाइए।'

पहली बार उसे लगा कि गुरुजी के पास कहने के लिए शब्द नहीं हैं, लेकिन उसने इस विचार को मन से निकाल दिया। अंत में, गुरुजी बोले, 'हमने अधीश के शरीर के लिए वह सब कुछ किया जो हम कर सकते थे और हम सफल भी हुए हैं।'

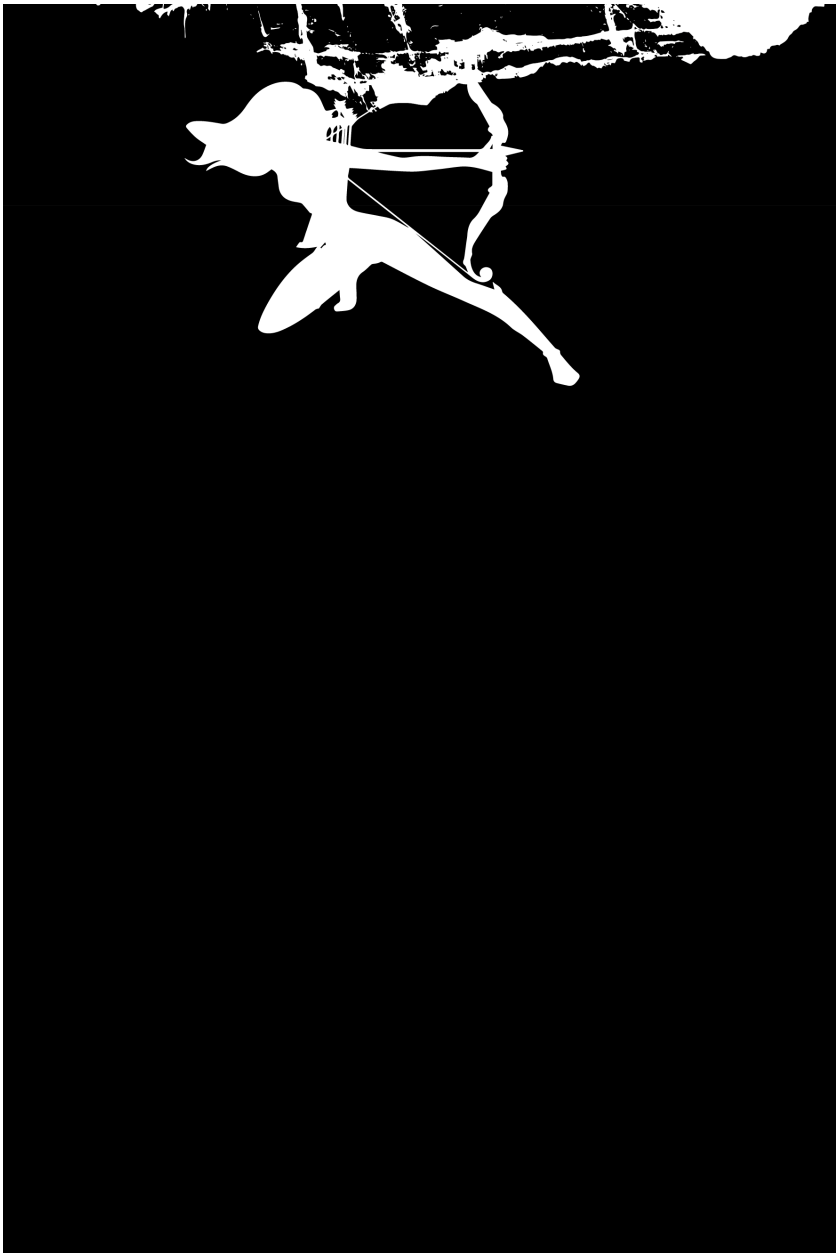

शरीर की देखभाल करने वाली आत्मा न होने के बावजूद उसका शरीर बहुत अच्छी तरह से ठीक हो गया है। असली परीक्षा तो परसों होगी जब आत्माओं का स्थानांतरण

होगा।

उसका दिल एक बार फिर धड़कना भूल गया। 'कैसी परीक्षा? वह गुरुजी थे। गुरुजी कोई गलती नहीं कर सकते!' उसने नज़रें नीचे कर लीं, कहीं गुरुजी उसकी आँखों में व्याप्त भय और उथल-पुथल को न देख लें।

'क्या उसे पता है?' उसने बिना सोचे-समझे अचानक पूछ लिया।

'कौन? अधिश?' गुरुजी ने पूछा, मानो उन्हें ऐशानी का सवाल पसंद न आया हो। ऐशानी चुप नहीं रह सकी। वह अच्छी तरह जानती थी कि अधिश की आत्मा ऐनार के शरीर में है, और उसे आत्माओं को पहचानने का प्रशिक्षण भी दिया गया था, लेकिन उसके दिमाग का एक हिस्सा हमेशा से ही ऐनार के शरीर में अधिश की मौजूदगी को स्वीकार नहीं कर रहा था। वह चुप रही। 'जी बेटा, उसे पता है,' गुरुजी ने धीरे से कहा। 'उसे पता होना ही चाहिए, इस पूरी प्रक्रिया में सिर्फ वही शामिल है। उसने शायद तुमसे इसलिए नहीं कहा क्योंकि अब तुम उसे पहले जैसी नजरों से नहीं देखती। खैर, अब तुम्हारी चिंता और घबराहट दूर हो जाएगी। तुम्हें तुम्हारा साथी वापस मिल जाएगा, लेकिन तुम एक बेहद अच्छे दोस्त को फिर से खो दोगी।'

उसकी आँखों में आँसू थे, 'जी गुरुजी,' उसने भारी स्वर में कहा, 'ऐनार की जगह कोई नहीं ले सकता। उससे अधिक समर्पित योद्धा हमें कभी नहीं मिला। ऐसा लगता है कि वह विशेष रूप से अधीश के लिए अपना प्राण बलिदान करने यहाँ आया था।' गुरुजी ने सिर हिलाया, 'ऐसा ही हो, यह सब प्रभु की माया है; मनुष्य इसे समझ नहीं सकते।'

ऐशानी को आभास हो गया था कि गुरुजी जितना बता रहे हैं उससे कहीं अधिक जानते हैं, पर यही गुरुजी का तरीका था। सही समय आने पर वे उसे सब कुछ बता देंगे। अगले दिन, वह गुरुकुल के आश्रम में पहुँची, जो करीने से सजाए गए लॉन के चारों ओर बनी लंबी और नीची इमारतों की एक श्रृंखला थी। गुरुकुल में बहुत कम लोगों को इसके अस्तित्व की जानकारी थी क्योंकि यह एक अदृश्य दीवार से घिरा हुआ था। यहीं पर यज्ञों के उच्चतम स्तर संपन्न होते थे और कई अन्य तांत्रिक और वैदिक अनुष्ठान भी किए जाते थे। आत्मा का स्थानांतरण भी यहीं होता था। आश्रम गुरुकुल नदी के किनारे स्थित था—वे इसे अपनी नदी कहते थे क्योंकि यह केवल गुरुकुल के अंदर ही दिखाई देती थी। कोई नहीं जानता था कि यह कहाँ से आती है और कहाँ जाती है। शुरू में, कुछ लोगों ने जिज्ञासा दिखाई, लेकिन प्रश्न पूछने को

प्रोत्साहित नहीं किया जाता था, इसलिए उन्होंने बात वहीं खत्म कर दी। वैसे भी, नदी पूरे गुरुकुल के जादू का हिस्सा थी। यहाँ की हरियाली की देखभाल कुशल माली और जीवविज्ञानी करते थे। इसे अपने आप बढ़ने नहीं दिया जाता था। यह एक आश्रम था, हर चीज़ एकदम साफ-सुथरी होनी चाहिए थी, यहाँ की हवा भी गुरुकुल के बाकी हिस्सों की तुलना में अधिक स्वच्छ और मीठी लग रही थी। वहाँ शांति और सन्नाटा छाया हुआ था।

कमरे में कुछ ही लोग मौजूद थे: गुरुजी, ऐशानी और कुछ उच्च कोटि के वैद्य एवं पंडित। अधिश का शरीर एक पलंग पर पड़ा था और अब ऐनार बगल वाले पलंग पर लेटी थी। केवल बेहद करीबी लोगों को ही पता था कि क्या होने वाला है। ऐशानी के मन में मिली-जुली भावनाएँ थीं। महीनों तक दवाइयों और उपचारों के साथ-साथ गुरुजी के तांत्रिक अनुष्ठानों और यज्ञों के बाद अधिश का शरीर आखिरकार ठीक हो गया था, इस बात की उसे अत्यधिक खुशी थी। यह गुरुजी के लिए भी एक बहुत बड़ा काम था। अधिश की आत्मा उसके शरीर में नहीं थी, उपचारों को शरीर में बनाए रखने के लिए कुछ भी नहीं था, शरीर स्वयं दवाइयों पर प्रतिक्रिया नहीं दे सकता था या फिर वह बेताल नामक एक ज़ोंबी जैसे प्राणी में बदल जाता। लेकिन उद्देश्य यह नहीं था। उद्देश्य था उसके शरीर को पूरी तरह से स्वस्थ और परिपूर्ण बनाना, दूसरे शब्दों में, उसे फिर से रहने योग्य बनाना। और आज आत्मा का पुन: प्रवेश होने वाला था। अधिश और ऐशानी दोनों स्वाभाविक रूप से व्याकुल और दुखी थे। वे इस बात से प्रसन्न थे कि अधीश को अब उसका शरीर वापस मिल जाएगा, लेकिन साथ ही इस बात से दुखी भी थे कि उनका प्रिय मित्र ऐनार हमेशा के लिए चला गया। यह सच था कि ऐनार की मृत्यु तब हुई जब मंटिकोर ने उस पर इतनी क्रूरता से हमला किया था। उसकी आत्मा तो निकल गई थी, लेकिन कम से कम उसका शरीर उनके साथ था, पूरी तरह से कार्यशील। कैसी दुविधा थी! अधीश की आत्मा के शरीर छोड़ने के बाद, शरीर केवल एक निष्क्रिय खोल बनकर रह जाएगा और उसे जलाना पड़ेगा। वे ऐसा नहीं चाहते थे, लेकिन वे ऐसा चाहते भी थे। इन विरोधाभासी विचारों के साथ, ऐशानी कमरे के एक कोने में बैठी रही, यथासंभव चुपचाप रहने की कोशिश कर रही थी। गुरुजी ने हवन से अपना अनुष्ठान शुरू किया। यह एक अलग तरह का हवन था जिसमें विशेष आहुति दी गई थी। घी या मक्खन के बजाय, विभिन्न तेलों का मिश्रण इस्तेमाल किया गया था, और मंत्र भी अलग थे। अन्य दो पंडित गुरुजी के साथ

मंत्रोच्चार कर रहे थे। मंत्रोच्चार एक धीमी गुनगुनाहट से शुरू हुआ और धीरे-धीरे तीव्र होता गया। ऐनार के शरीर में विद्येश की आत्मा सब कुछ स्पष्ट रूप से सुन सकती थी। यही उद्देश्य भी था। धीरे-धीरे उनकी आँखें बंद होने लगीं और उनका शरीर भारी हो गया। जल्द ही उनकी आत्मा ने चेतना खो दी और वे कोमा जैसी अवस्था में चले गए। कमरे के एक कोने में तनावग्रस्त बैठी ऐशानी को केवल तीन लोगों - गुरुजी और दो पंडितों - के ऊँचे स्वर में मंत्रोच्चार की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उन्हें अधीश और ऐनार दोनों के व्यवहार में कोई बदलाव नहीं दिखाई दिया। ऐसा नहीं था कि उन्हें किसी बड़े बदलाव की उम्मीद थी, लेकिन अगर कुछ हुआ भी था, तो उन्हें दिखाई नहीं दिया। कुछ समय बाद एक वैद्य उठे और अधीश के पास गए। उन्होंने अधीश के शरीर से औषधीय पट्टियाँ हटाना शुरू कर दिया। ऐशानी का दिल धड़क रहा था। वह जानती थी कि पट्टियाँ हटाने के दो कारण थे। पहला यह कि अधीश का शरीर इतना ठीक हो चुका था कि अब किसी तीव्र दवा की आवश्यकता नहीं थी। दूसरा कारण, जैसा कि उसने अनुमान लगाया, यह था कि अपने शरीर में सहज और निर्बाध प्रवेश के लिए सभी अवरोधों को दूर किया जा रहा था ताकि आत्मा बिना किसी बाधा के अपने शरीर पर आराम से विराजमान हो सके। वैद्यजी ने ऐनार के सभी कपड़े उतार दिए थे और उन्हें एक पतले कपड़े से ढक दिया था। गुरुजी और अन्य पुजारी अपना मंत्रोच्चार और हवन जारी रखे हुए थे। ऐशानी को हल्का-सा आभास था कि वे तीनों अलग-अलग प्रकार के मंत्रों का जाप कर रहे थे। जब एक पुजारी अपना मंत्र लगभग पूरा करने वाला होता, तो दूसरा उसे वहीं से आगे बढ़ाकर एक अलग मंत्र का जाप शुरू कर देता। इस मंत्र के पूरा होने के बाद, गुरुजी वहीं से आगे बढ़कर एक और अनोखा मंत्र उत्पन्न करते। ये सभी बातें उसके मन में चल रही थीं, वो इनके बारे में सचेत नहीं थी। लेकिन कुछ यादें बन रही थीं और शायद वो बाद में उनके बारे में सोचेगी, अगर कभी सोचेगी भी तो। फिलहाल उसकी यादों में सिर्फ उनके द्वारा साझा किए गए अच्छे पल ही थे। उनके जीवन में शांति और संतोष उनके प्रेम से उपजा था, जिसने उन्हें हमेशा जोड़े रखा था। हालांकि उसकी आत्मा आइनार के शरीर में थी, इस अस्पताल में आने से पहले उसने उसका हाथ थामकर फुसफुसाया था, 'तुम मेरे दिल को एक अनमोल रत्न की तरह थामे हो। तुम ही मेरी एकमात्र डॉक्टर हो। याद रखना कि हालांकि मैं यहां आत्मा और शरीर के आदान-प्रदान के लिए आया हूं, लेकिन तुम ही हो जो मुझे जीवित रखती हो और तुम ही हो जो मुझे मजबूत बनाती हो।'

ऐशानी ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, ताकि उसके आँसू न बहें। उसने मंत्रों के जाप पर ध्यान देने की कोशिश की, लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद वह अपने डर और बेचैनी को दूर नहीं कर पाई। यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। ऐशानी का ध्यान फिर भटक गया। उसके विचार उस समय की ओर चले गए जब उसे पहली बार अधीश के बारे में पता चला था। अनायास ही वह उस याद को याद करके मुस्कुरा उठी। गुरुकुल में अपने पहले वर्ष के दौरान, जब वह अन्य छात्रों के साथ हवन कर रही थी, उसकी कोहनी अधीश के हाथ से छू गई और मानो चिंगारी सी दौड़ गई। उसकी यादें एक इंद्रधनुष की तरह थीं, कुछ दुख भरी और कुछ बेहद खुशी भरी। उसके जीवन का हर पहलू इतना आकर्षक और विचारोत्तेजक था। वह घोर निराशा में डूबी थी और परमानंद की ऊँचाइयों तक पहुँची थी। वह इसे दुनिया की किसी भी चीज़ के लिए नहीं बदलना चाहती थी। लेकिन इस समय वह निराशा में भी थी और आशा में भी, दोनों एक साथ। वह बेहद खुश थी क्योंकि आखिरकार वह अधीश को उसके असली शरीर में देखने वाली थी, और साथ ही निराश भी थी क्योंकि आखिरकार वे ऐनार को खोने वाले थे। वे पहले ही अपने प्यारे दोस्त को खो चुके थे, लेकिन अब उन्हें उसके शरीर को भी अलविदा कहना पड़ेगा।

धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि मंत्रोच्चार मंद पड़ गया है और गुरुजी तथा अन्य पुजारी अपने अनुष्ठान के अंतिम चरण में हैं। उसने अपना सिर हिलाया और तुरंत वर्तमान में लौट आई। क्या हुआ? क्या यह सब समाप्त हो गया? उसने आशंका से अधीश की ओर देखा। उसके हावभाव में कोई बदलाव नहीं था और न ही कोई हलचल थी। उसने ऐनार की ओर देखा, वह भी हिल नहीं रही थी। उलझन में उसने गुरुजी की ओर देखा। गुरुजी ने सहमति में सिर हिलाया। ऐशानी ने राहत की सांस ली। उसकी आँखों में आंसू आ गए, लेकिन उसने उन्हें रोक लिया। उसने उन्हें बहने नहीं दिया।

'उनके शरीर को उनकी आत्मा के साथ तालमेल बिठाने और सामंजस्य स्थापित करने में कुछ समय लगेगा। उसके बाद भी उनके शरीर और आत्मा को एक-दूसरे के अनुकूल होने में कुछ समय लगेगा। आपको उनके साथ बहुत धैर्य रखना होगा और उनके पूरी तरह स्वस्थ होने तक उन्हें प्यार और देखभाल प्रदान करनी होगी।' अगर कोई और समय होता तो ऐशानी गुरुजी के प्यार और देखभाल के इस उदाहरण पर मुस्कुरा देती, लेकिन अब वह भावनाओं से भरी हुई थी।

उसने गुरुजी की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

जी बेटा, तुम उसके पास जा सकती हो, लेकिन वह कुछ समय तक इसी हालत में रहेगा, तुम्हें धैर्य रखना होगा। हमारे सबसे अच्छे डॉक्टर उसकी देखभाल के लिए यहाँ मौजूद हैं।' उसने सिर हिलाया और हिचकिचाते हुए अधीश की ओर बढ़ी। उसे छूने की हिम्मत न करते हुए, वह बस उसे देखती रही। वह इतना शांत था, शायद उसके गालों पर थोड़ी रौनक थी, वह बता नहीं सकती थी। उसने ऐनार की ओर देखा। वह भी शांत था। उसकी आँखों में आँसू आ गए। 'प्यारे ऐनार, तुम कौन हो, यहाँ क्यों आए? मुझे लगता है कि तुम विशेष रूप से अधीश को जीवन देने आए थे। इस जन्म में तुमने कोई पुराना कर्ज चुकाया होगा। अब तुम चले गए, और हम अपने अपराधबोध और पीड़ा को कभी दूर नहीं कर पाएंगे।'

अधीश और उसकी आत्मा के शरीर में पुनः प्रवेश करने की चिंता और अनिश्चितता समाप्त होते ही, ऐशानी ऐनार के शोक में डूब गई। ऐनार ने न केवल अधीश की जान बचाई थी, बल्कि अपना शरीर भी अधीश को समर्पित कर दिया था। ऐसा लग रहा था मानो ऐनार को विशेष रूप से उनकी सहायता और उपचार के लिए भेजा गया हो। वे हमेशा के लिए ऐनार के ऋणी थे और उन्हें नहीं पता था कि वे कब और कैसे उनका ऋण चुकाएँगे। गुरुजी ने गंभीर स्वर में कहा, 'ऐशानी, अधीश को पूरी तरह से ठीक होने और होश में आने में कुछ समय लगेगा। इस समय सबसे ज़रूरी ऐनार का अंतिम संस्कार है।' ऐशानी ने सिर हिलाया।

'क्या हम उसके परिवार को सूचित करें, गुरुजी? ऐनार के कुछ रिश्तेदार तो होंगे ही,' ऐनार के शरीर को देखते हुए उनकी आँखें नम हो गईं, जो अब बस एक खोखला ढाँचा था। उसमें दो आत्माएँ निवास कर चुकी थीं और अब इस जीवन में दो आत्माओं से वंचित हो गई थीं। वह कितना सामान्य और सजीव लग रहा था, मानो अभी-अभी जागा हो। गुरुजी ने सिर हिलाया, 'उसके माता-पिता की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई जब वह बहुत छोटा था। कुछ रिश्तेदारों ने उसे कुछ समय तक अपने पास रखा, लेकिन जब वे कभी-कभी उसकी शक्तियों को देखते थे तो वे बहुत असहज हो जाते थे। अंततः, उसे एक अनाथालय से दूसरे अनाथालय में भेजा जाता रहा, जहाँ फिर से लोग उससे सावधान रहते थे। इन अनुभवों ने उसे एकाकी होना सिखाया। संक्षेप में, हिमालय में बिताए वर्षों ने उसके कौशल को निखारा और उसे वह बनाया जो वह था। उसमें एक नॉर्दिक योद्धा के सभी गुण थे और बाद में एक भारतीय योद्धा के गुण भी। वह जानता था कि वह राक्षसों से लड़ते हुए इसी तरह मरेगा।' गुरुजी ने बताया, 'एक

बार जब वह मुझसे अपनी हिमालयी यात्रा के बारे में बात कर रहे थे, तो उन्होंने मुझे अपनी दाह संस्कार की इच्छा के बारे में बताया था। उनकी अंतिम इच्छा हर हाल में पूरी होनी चाहिए।'

ऐशानी ने पूर्ण सहमति में सिर हिलाया। एक प्रिय मित्र होने के अलावा, ऐनार ने उसे जीवन और जीने का मकसद दिया था, जो कि अधीश था। वह ऐनार की सदा ऋणी रहेगी। और इस ऋण को चुकाने का उसके पास कोई तरीका नहीं था।

कुछ दिनों बाद, वे ऐनार के अंतिम संस्कार के लिए वाराणसी के पवित्र गंगा नदी के किनारे स्थित मणिकर्णिका घाट गए। गुरुकुल के कुछ चुने हुए शिक्षक उदय और तेजस के साथ उनके साथ गए थे। अधीश यात्रा नहीं कर सका क्योंकि वह आत्मा-आदान-प्रदान के प्रभाव से अभी भी उबर नहीं पाया था। मणिकर्णिका घाट पर महिलाओं का प्रवेश वर्जित है, लेकिन गुरुजी के एक शब्द ने सभी आपत्तियों को दूर कर दिया और ऐशानी की उपस्थिति संभव हो गई। गुरुजी और गुरुकुल के पुजारियों ने अंतिम संस्कार की सभी रस्में स्वयं संपन्न कीं, स्थानीय पंडितों को अंतिम संस्कार के लिए नियुक्त नहीं किया गया।

वाराणसी या बनारस को हिंदुओं का सबसे पवित्र शहर माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि वाराणसी भगवान शिव का सबसे प्रिय शहर है और जो भी यहाँ जन्म लेकर अंतिम संस्कार करवाता है, उसे तुरंत मोक्ष प्राप्त हो जाता है, उसके सभी पिछले जन्मों के पाप धुल जाते हैं। यह विश्वास इतना प्रबल है कि दुनिया भर से हिंदू भक्त यहाँ अंतिम संस्कार के लिए आते हैं। इसलिए, अपने प्रियजनों का अंतिम संस्कार करवाने और उनके पार्थिव शरीर को पंचभूतों यानी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश में विलीन करवाने के लिए हमेशा लोगों की लंबी कतार लगी रहती है। परिणामस्वरूप, मणिकर्णिका घाट पर हमेशा भीड़ रहती है। अंतिम संस्कार करने वाले पुजारियों की संख्या कम है, और देखभाल करने वाले और सफाईकर्मी भी कम हैं। नतीजतन, घाट पर अव्यवस्था फैली हुई थी और वह गंदा दिख रहा था। फिर भी, यह अत्यंत पवित्र स्थान है। ऐनार की आत्मा पहले ही शरीर छोड़ चुकी थी। इस तरह कम से कम यह सांत्वना थी कि उनकी आत्मा को मोक्ष प्राप्त होगा। सभी ने ऐनार को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की और भारी मन से, यादों से भरे हुए, वापस लौट गए। ऐनार ने अपना हथियार ग्राम उदय को दिया था ताकि वह इसे अधीश को दे दे, क्योंकि अधीश स्वयं इस पूजनीय हथियार को ग्रहण करने के लिए उपलब्ध नहीं था।

‘मेरी प्यारी दादी माँ अब आप दोनों की होंगी। मुझे अब यह जानकर शांति मिली है कि यह अच्छे और ईमानदार हाथों में रहेगी और इसका उपयोग केवल राक्षसों और धरती के नीच लोगों को नष्ट करने के लिए किया जाएगा।’

उदय ने सहमति में सिर हिलाया, फिर पूछा। यह तब की बात है जब उनका सामना मैन्टिकोर से नहीं हुआ था, 'क्यों, क्या आप कहीं जा रहे हैं?'

‘मुझे ऐसा लगता है,’ आइनार ने जवाब दिया था।

वाराणसी से लौटने के बाद वे गहरे शोक में डूबे हुए थे। गुरुकुल के अधिकांश लोग दुखी थे, लेकिन उन्होंने लगभग यह स्वीकार कर लिया था कि ऐनार अब उनके साथ नहीं हैं। गुरुकुल में योद्धाओं का जाना एक सर्वमान्य तथ्य था। यह योद्धाओं का प्रशिक्षण केंद्र था, जहाँ उन्हें राक्षसों, काले जादू और अनगिनत अकल्पनीय नकारात्मक शक्तियों और भयावहताओं से लड़ना पड़ता था। यह अपरिहार्य था कि कुछ योद्धा मर जाएँगे या अपनी चोटों के कारण दम तोड़ देंगे। गुरुकुल के निवासियों ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया था। लेकिन अधीश और ऐशानी की मुख्य टीम का दिल टूट गया था। वे इस बात को स्वीकार ही नहीं कर पा रहे थे कि ऐनार अब उनके साथ नहीं हैं। वह अधीश के सबसे अच्छे दोस्त थे। अधीश और उदय टीम के वरिष्ठ सदस्य थे और वे एक पहिये के दो सुचारू रूप से चलने वाले पुर्जों की तरह मिलकर काम करते थे। वे एक-दूसरे को सहज रूप से समझते थे, लेकिन अधीश और ऐनार के बीच एक विशेष आत्मीयता विकसित हो गई थी। बात इतनी बढ़ गई कि ऐनार ने अधीश के लिए अपनी जान दे दी और फिर उसकी आत्मा को अपने शरीर में समाहित कर लिया।

‘काश, अंतिम संस्कार से पहले उनसे मिल पाता,’ अधीश लगभग विलाप करते हुए बोला। वे गुरुकुल के पीछे अपने पसंदीदा बरगद के पेड़ के नीचे बैठे थे। शाम ढल रही थी। सूरज लगभग डूब चुका था, रात अभी दूर थी, हालाँकि ऐसा लग रहा था कि पेड़ के नीचे बैठे दोनों लोगों के दिलों में रात पहले ही डूब चुकी है। वे उनके ऋणी थे, और कितना! अब उनके चले जाने से वे उनका एहसान नहीं चुका पाएंगे। ऐशानी ने उन्हें सांत्वना देने की कोशिश की, ‘अदी, तुम उनसे मिले थे, वास्तव में कई महीनों तक तुम ही उनके समान थे,’ उसके भाव बिखर रहे थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए काम करते हुए बिताया था और अब किसी ने उनके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया था। वे जीवनदाता थे और ऐनार ने उन्हें अपना जीवन दे दिया। सबसे बुरी बात

यह थी कि धन्यवाद कहने या कृतज्ञता व्यक्त करने का कोई तरीका नहीं था। वे निराशा में बैठे थे, हर कोई अपने-अपने उदास विचारों में डूबा हुआ था। उन्होंने कदमों की आहट सुनी। वे चौंक गए, लेकिन उदय को देखकर सहज हो गए। वह एक लंबे थैले में कुछ पकड़े हुए था। वह आकर उनके सामने खड़ा हो गया। दोनों ने एक-दूसरे को गंभीर भाव से देखा। 'आओ उदय, बैठो,' ऐशानी ने उसे बैठने के लिए कहा, लेकिन उदय खड़ा ही रहा। धुंधलके में भी वे देख सकते थे कि उसकी पुतलियाँ काली पड़ गई थीं। वे जानते थे कि ऐसा केवल तभी होता है जब उदय बहुत तनाव में होता है, और इस समय वह तनाव में था।

'मैं तुम दोनों के लिए कुछ लाया हूँ,' उसने रूखे स्वर में कहा। आश्चर्यचकित होकर वे उसकी ओर देखने लगे। उपहार देने का यह समय नहीं था। उदय ऐसा तो कभी नहीं करेगा। वे आशा भरी निगाहों से उसकी ओर देखने लगे। उदय ने धीरे से थैला खोला और उसमें से एक लंबी सी वस्तु निकाली। वे चौंक गए। यह ऐनार की जादुई और शक्तिशाली तलवार, ग्राम थी। वे जानते थे कि यह अपनी तरह की अनोखी तलवार है और दुनिया की सबसे शक्तिशाली तलवारों में से एक है। वे हाल ही में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने ऐनार के सामान पर ध्यान ही नहीं दिया था। तलवार ही ऐनार की एकमात्र संपत्ति थी। वे उदय को अचंभित होकर देखने लगे। यह उन तीनों के लिए एक भावुक क्षण था।

'तुम्हें यह कैसे मिला?' अधीश ने उससे पूछा। 'ऐनार ने मुझे इसके बारे में बताया था और मुझे निर्देश दिया था कि इसे लेकर उचित समय पर तुम्हें दे दूं।'

अधीश के पास कहने के लिए शब्द नहीं थे, 'लेकिन... उसके साथ क्या हुआ था... जब वह मैन्टिकोर से लड़ रहा था?'

'यह बातचीत उससे पहले हुई थी। मैंने उस समय ज्यादा ध्यान नहीं दिया था क्योंकि उसने मुझे अपनी मृत्यु के बाद ग्राम ले जाने के लिए कहा था। मुझे लगा कि वह बहुत बाद की बात कर रहा है, लेकिन वह वर्तमान की बात कर रहा था। आइनार शायद जानता था कि वह मैन्टिकोर के साथ झड़प में मारा जाएगा।'

"हां उदय, मुझे हमेशा से पता था कि ऐनार को बहुत कुछ पता है। जब मैं उनसे पहली बार मानसरोवर झील पर मिला, तो वे मेरा इंतज़ार कर रहे थे। वे झील के रक्षकों में से एक थे। वे कैलाश में भी हमारे साथ थे। उन्हीं की मदद से हम गुरुकुल जल्दी लौट सके।" उदय चुप रहे। उन्हें अपने जीवन की उस घटना के बारे में कुछ भी पता नहीं

था। उन्होंने पूछा नहीं, गुरुकुल के योद्धाओं का यही रिवाज था। अगर उन्हें बताने की ज़रूरत महसूस होती, तो वे बता देते; कोई जल्दी नहीं थी।
वे तीनों अंधेरी रात में काफी देर तक चुपचाप एक साथ बैठे रहे, अपने प्रिय मित्र को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

तीन सिक्के

टी
अब राक्षसों को पता चल गया था कि वे हार चुके हैं और अगर वे भाग नहीं गए तो मारे जाएँगे। अधीश और उसके साथियों के कुछ करने से पहले ही राक्षस उनकी आँखों के सामने से गायब हो गए। उन्हें अपने अनुभव से पता था कि राक्षस वहीं हो सकते हैं, बस अदृश्य हो गए थे। इसलिए ऐशानी और उदय लगातार हवा में वार करते रहे, इस उम्मीद में कि शायद उनका वार राक्षसों पर लग जाए। लेकिन नहीं। राक्षस गायब हो चुके थे। अब उन्हें पकड़ने का कोई रास्ता नहीं था।
निराश होकर वे अधीश की ओर मुड़े, जिसने तिजोरी को उड़ा दिया था और उसमें रखे दो सिक्के अपनी जेब में रख लिए थे; एक सिक्का पहले से ही उनके पास था। तिजोरी में कुछ और राक्षसी कलाकृतियाँ भी थीं। अधीश ने उनमें से जितना हो सके उतना अपने थैले में भरने की कोशिश की, कौन जाने ये कितनी अलौकिक और बुरी वस्तुएँ थीं।

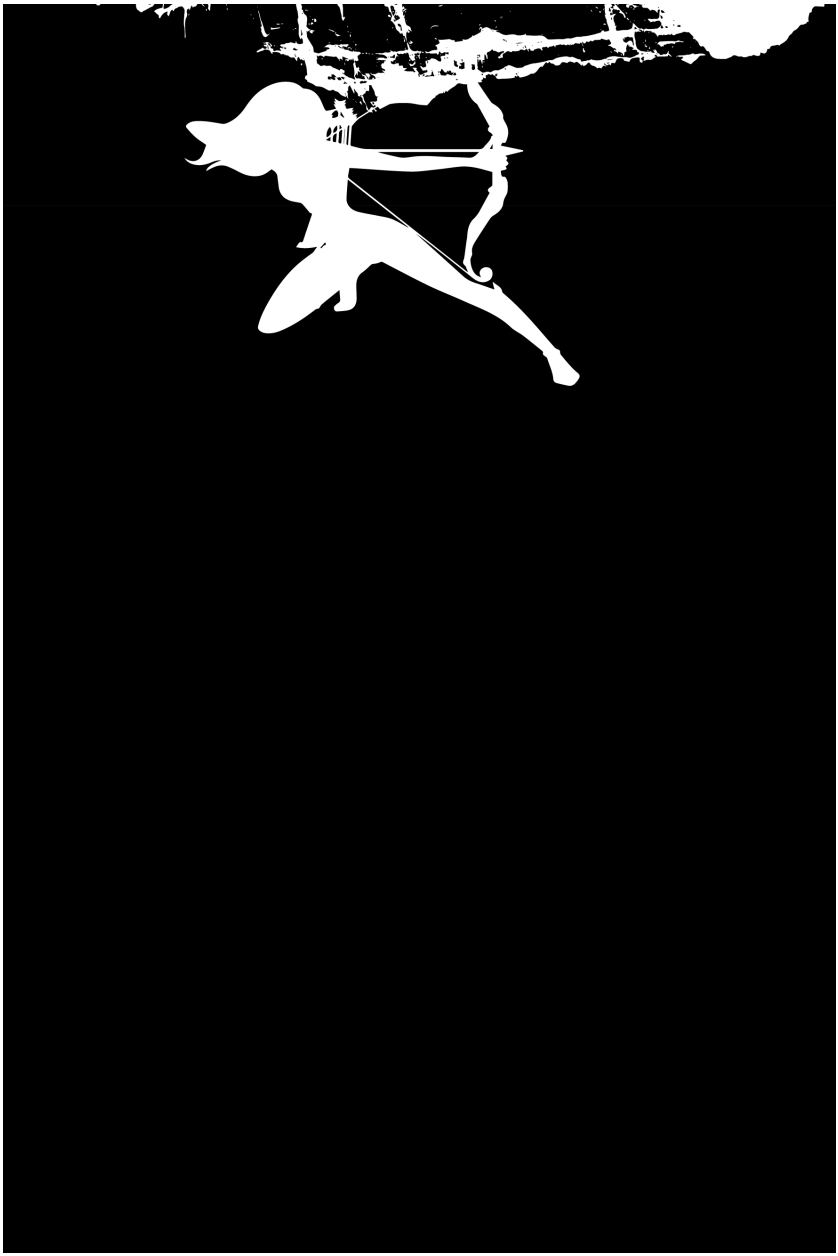

राक्षसों के पास ये चीजें जितनी कम हों, मानवता के लिए उतना ही अच्छा है। वे तीनों एक साथ आए और उस जगह की ओर दौड़े जहाँ रूबी और तेजस स्वामी मुक्तानंद

उर्फ टीटो के साथ उनका इंतजार कर रहे थे। टीटो ने उनके लिए गाड़ी और प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था की थी। वह देख सकता था कि वे घायल थे। उनके शरीर पर संघर्ष के निशान थे, किस तरह का संघर्ष था, इसकी टीटो कल्पना भी नहीं कर सकता था।

'हम उनमें से दो को पकड़ नहीं पाए,' ऐशानी ने उन्हें बताया।

टिटो ने उदास भाव से सिर हिलाया, 'वे अब मेरे लिए आएंगे, वे अपने मुखबिर को नहीं छोड़ेंगे।'

बाकी सबने एक-दूसरे को देखा। यह सच था। टीटो की किसी भी समय दर्दनाक मौत हो सकती थी। अधीश ने मन ही मन ठान लिया, 'टीटो, हमारे साथ आश्रम चलो। तुमने हमारी बहुत मदद की है। तुम्हारी मदद के बिना हमें सिक्के कभी नहीं मिलते। हमारे गुरुजी से मिलो, वही तय करेंगे कि अब से तुम कैसे सुरक्षित जीवन जी सकते हो।'

टिटो ने सिर हिलाया। कोई और चारा नहीं था। वे चले गए। अधीश जल्द से जल्द सिक्के, राक्षसी ताबीज़ और कलाकृतियाँ गुरुजी को सौंपना चाहता था। वह जानता था कि अब उन्हें गुरुकुल के संग्रहालय में ताला लगाकर, कड़ी सुरक्षा में रखा जाएगा। बाकी लोग अपने-अपने विचारों में खोए हुए थे। वे यहाँ के सभी राक्षसों को नष्ट करने में असफल रहे थे। यह बात उन्हें लंबे समय तक खटकती रहेगी।

यह अभियान लगभग एक महीने पहले शुरू हुआ था। वे हवन के एक हॉल में बैठे थे। ऐसी खबरें हैं कि एक धर्मगुरु और उपदेशक ने अभूतपूर्व संख्या में अनुयायी जुटा लिए हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हालांकि, जो बात चौंकाने वाली है, वह है उनके अनुयायियों का समूह। उनके अनुयायी एक पंथ बन गए हैं। उनके प्रति उनकी श्रद्धा की कोई सीमा नहीं है। थोड़ी छानबीन करने पर पता चला है कि उन्होंने यह सब कुछ महज कुछ वर्षों में हासिल कर लिया है।

'यह कोई नई बात नहीं है। हमारे देश में धर्मगुरु मशरूम की तरह उगते रहते हैं। वे चमकते सितारों की तरह उभरते हैं, कुछ समय तक टिके रहते हैं, पकड़े जाते हैं और क्षितिज से गायब हो जाते हैं। ये धोखेबाज इतने आम हो गए हैं कि मैंने उन पर ध्यान देना ही बंद कर दिया है।'

'हम्म, लेकिन यह धर्मगुरु अलग है और बहुत खतरनाक है।'

'How so, Bhaiya?'

"खैर, हम सब जानते हैं कि इन नकली धर्मगुरुओं के अनुयायी बड़ी संख्या में हैं और

वे अपने गुरु या तथाकथित भगवान की हर इच्छा का पालन करते हैं। वे अपने आध्यात्मिक गुरु की कमियों को नज़रअंदाज़ करते हैं। पर्दे के पीछे इन गुरुओं के गुर्गों की आपराधिक गतिविधियाँ चल रही हैं। धर्म और आध्यात्मिकता के नाम पर हर तरह के अपराध किए जाते हैं, चाहे वह मादक पदार्थों की तस्करी हो, मानव तस्करी हो या अंगों का निर्यात, आप किसी भी अत्याचार का नाम लीजिए, वह सब यहाँ मौजूद है। हमारी मुख्य चिंता यह नहीं है। सरकारी एजेंसियां हमेशा ऐसे लोगों पर नज़र रखती हैं। हमारा ध्यान हमेशा राक्षसों पर रहेगा।"

'क्या आपका मतलब यह है कि यह गुरु या उसके साथी राक्षस हैं?'

अधीश ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, 'मुझे डर है कि ऐसा ही है। उनमें से कई हैं, वे मानव संस्कृति में इस कदर घुलमिल गए हैं कि अब वे हमारे देश के लोगों की मानसिकता को पूरी तरह से समझते हैं। कभी-कभी वे इंसानों से भी ज्यादा इंसान जैसे दिखते और व्यवहार करते हैं।'

तेजस और जयंत अब पूरी तरह से ध्यान दे रहे थे, हालांकि तेजस कमरे में दो खंभों के बीच लगी छड़ से उल्टा लटका हुआ था। वे सभी तेजस की हरकतों के आदी हो चुके थे, इसलिए वे उसकी इन हरकतों पर शायद ही ध्यान देते थे। वे जानते थे कि तेजस को अपने शरीर की अतिरिक्त ऊर्जा को कम करने के लिए ये कलाबाजियां करनी पड़ती हैं। तेजस का दिमाग उन सभी की तरह तेज था, बस इन्हीं हरकतों के कारण वह वर्तमान क्षण में मौजूद नहीं लगता था। 'वह खुद को स्वामी मुक्तानंद कहता है। वहां अभी भी चार और कनिष्ठ स्वामी हैं, सभी राक्षस हैं। उनका एक विशाल, अत्याधुनिक आश्रम है जहां भक्तों को सभी भौतिक सुख-सुविधाएं दी जाती हैं। जब कोई भक्त प्रवेश लेता है, तो उसे किसी चीज की कमी नहीं होती, उसे अपने प्रिय देवताओं की पूजा करने का अवसर मिलता है, अद्भुत उपदेश सुनने को मिलते हैं, उत्कृष्ट भोजन मिलता है - हालांकि वह शाकाहारी होता है और उसकी सभी जरूरतों को कुशलतापूर्वक पूरा किया जाता है। इस रिसॉर्ट जैसे आश्रम में भक्तों के लिए बने प्रार्थना कक्षों और कमरों के पीछे प्रयोगशालाएं हैं जिन्हें चिकित्सालय कहा जाता है।' यहीं पर शैतान मौज-मस्ती करते हैं। यहां मादक पदार्थों की तस्करी, मानव तस्करी और अंग निकालने की इकाई भी है।

उदय की आँखें और भी गहरी होती जा रही थीं। अगर उसे अपने हाल पर छोड़ दिया जाता, तो वह सीधे स्वामी मुक्तानंद के आश्रम में घुसकर अपने पाश से उन्हें मार

डालता और बाकी राक्षसों को भी मार डालता। अधीश और जयंत ने एक-दूसरे को देखा। अधीश ने हाथ उठाते हुए कहा, 'रुको, असली बात तो अभी बाकी है। आम तौर पर ये नकली गुरु या तो खुद ही गायब हो जाते हैं या सरकार उन्हें किसी न किसी तरह पकड़ लेती है। लेकिन ये गिरोह बिल्कुल अलग है। पहली बात तो ये बहुत बुद्धिमान हैं, एक आम इंसान से कहीं ज्यादा बुद्धिमान। ये चार कदम आगे की सोचकर अपने सारे सबूत मिटा देते हैं। अब तक इनके खिलाफ कोई घोटाला सामने नहीं आया है, यहाँ तक कि सरकारी एजेंसियां भी इनके प्रति नरम रुख अपना रही हैं।'

'तो हमें उनके बारे में कैसे पता चलता है?' जयंत ने पूछा। 'क्योंकि हमारा शोध बिल्कुल अलग दृष्टिकोण से किया जाता है। हम मानव अपराधियों की खोज नहीं कर रहे हैं, वह एक अलग क्षेत्र है जिससे हमारा कोई संबंध नहीं है। हमारा शोध सबसे नीच गुणों वाले प्राणियों की खोज पर आधारित है। बेशक इस युग में मनुष्य लगभग राक्षसों के बराबर हो गए हैं, लेकिन फिर भी कई ऐसे नीच गुण हैं जो मनुष्य को राक्षसों से अलग करते हैं। हमारे जासूसों ने इस आश्रम पर नज़र रखी है जिसमें ये चार मुख्य पुजारी या मुख्य राक्षस हैं। दिन में वे उपदेश देते हैं और बाद में पर्दे के पीछे राक्षसी अय्याशी करते हैं। मनुष्यों का अपहरण किया जाता है, उन्हें यातना दी जाती है और सबसे क्रूर तरीके से मार डाला जाता है, उनका खून पिया जाता है, मांस खाया जाता है। कुछ आंतरिक अंगों को अस्पतालों और चिकित्सा केंद्रों में निर्यात करने के लिए बचा लिया जाता है। कभी-कभी लोगों को जिंदा भी खा लिया जाता है।' तेजस कांप उठा, 'भैया, क्या किसी भक्त को कभी कुछ पता नहीं चलता?'

"नहीं तेजस, बिलकुल नहीं। पहली बात तो ये है कि उनमें ऐसी अंधभक्ति और आस्था है, जो निस्संदेह किसी सम्मोहन या सम्मोहन के प्रभाव से पैदा हुई है और उन्हें अपने वश में रखती है, और वे आश्रम में चल रही किसी भी बुरी गतिविधि से बेखबर हैं। वैसे भी, स्वामी मुक्तानंद और उनके साथी इतने धूर्त और चालाक हैं कि वे कोई भी संदिग्ध निशान नहीं छोड़ेंगे। हमें इस अभियान को बहुत सावधानी से अंजाम देना होगा, क्योंकि अगर उनके भक्तों को हमारी इस कार्रवाई की भनक लग गई, तो हमें उनके हमले का भी सामना करना पड़ेगा। मुक्तानंद उनके भगवान हैं और जो कोई भी उनके भगवान के खिलाफ है, वो उनका दुश्मन है।"

अधीश ने आगे कहा, "कहानी में इससे कहीं ज़्यादा कुछ है। ज़ाहिर है, स्वामी मुक्तानंद नाम का यह शख्स अपना जीवन एक छोटे-मोटे अपराधी के रूप में शुरू

किया था, जो इधर-उधर से जो कुछ भी चुरा सकता था, चुराता था। उसे यह भी नहीं पता था कि उसके माता-पिता ने उसका क्या नाम रखा था। उसका जीवन एक अनाथालय में शुरू हुआ, जहाँ उसे टीटो कहा जाता था। अनाथालय में गुज़ारा करने के लिए उसने हर तरह की बुराइयाँ अपना लीं। अनाथालय छोड़ने के बाद उसकी महत्वाकांक्षाएँ बहुत बढ़ गईं और उसकी मुलाकात असली अपराधियों और हत्यारों से हुई, ऐसे लोगों से जो हवस के लिए हत्या करते थे, हत्या करने में आनंद लेते थे। हालाँकि उनका तरीका बेहद क्रूर और घिनौना था, लेकिन इन कृत्यों का फल भी बहुत बड़ा था। बिना किसी नैतिक दिशा-निर्देश और बिना किसी शिक्षा के टीटो सोचता था कि यही जीवन है। लोग उसे उसके प्यारे से मुस्कुराते चेहरे और घुंघराले बालों की वजह से पसंद करते थे, जो हमेशा सबकी बात मानने और फिर उनका पैसा चुराकर भाग जाने के लिए तैयार रहता था। इसी तरह उसने अनाथालय में गुज़ारा किया था। जब उसकी मुलाकात इन हत्यारों से हुई, तो टीटो को लगा कि उसकी ज़िंदगी बन गई है।" उसका काम बस इतना था कि बेचारे शिकार को हत्यारों के पास ले जाना, जो उसे उसका हिस्सा दे देते थे। बस इतना ही। हालांकि टीटो को पीड़ितों के साथ क्या हुआ, इसका कुछ-कुछ अंदाजा था। जब भी वह उन भयानक हत्याओं को देखता, उसकी आंतरिक मानवता हमेशा जाग उठती थी। लेकिन वह खुद को सबसे अलग रखता था, पहला तो इसलिए कि उसे अच्छा पैसा मिल रहा था और दूसरा, वह अपने साथियों से डरता था। ये ऐसे शैतान थे जो टीटो को जरा सी भी आवाज उठाने पर उसे अपना भोजन बनाने में जरा भी संकोच नहीं करते।

लेकिन धीरे-धीरे पीड़ितों की संख्या कम होती गई। यहां तक कि राक्षसों को भी समझ आ गया था कि टीटो अब उनके लिए और शिकार जुटाने की हद तक पहुंच चुका है। वे इतने चालाक और बुद्धिमान थे कि उन्होंने टीटो को अपना भोजन नहीं बनाया। इसके बजाय, उन्होंने अपने तीन प्राचीन जादुई सिक्कों में से एक टीटो को दे दिया। इस बात ने सबका ध्यान खींचा। यहां तक कि तेजस भी छत से नीचे उतरकर जयंत और उदय के साथ बैठ गया। उदय ने सोचा, 'क्या ये वही सिक्के हैं जिनका जिक्र गुरुजी समय-समय पर करते हैं, राक्षसों का अमृत?' अधीश ने जवाब दिया, 'बिल्कुल, हालांकि राक्षस अपने विशिष्ट गुणों से राक्षस ही होते हैं, लेकिन ये सिक्के उनके बर्बर गुणों को कई गुना बढ़ा देते हैं।'

'कैसे भैया?' तेजस ने उत्सुकता से पूछा। वह अब पूरी तरह ध्यान से सुन रहा था। 'हर

सिक्के की अपनी एक भूमिका होती है। ये इंसान को बेहद आत्मविश्वासी बना देते हैं, पल भर में लाखों लोगों की दीवानी हो जाती है और लोग इतना अंधाधुंध प्रेम जताते हैं कि खुशी-खुशी अपनी जान भी दे देते हैं। इन सिक्कों से अपार धन भी आकर्षित होता था। इन सिक्कों को पाने के लिए मनुष्य और राक्षसों के बीच हमेशा से ही होड़ लगी रहती थी। सदियों पहले ये सिक्के कुछ मनुष्यों के पास थे, जो बाद में इतने अहंकार और आत्मविश्वास से भर गए कि लापरवाह हो गए। वे सोचने लगे कि वे अपनी मेहनत से ही इतने सफल और समृद्ध हुए हैं और सिक्कों को श्रेय देना बंद कर दिया। यही राक्षसों के लिए सुनहरा अवसर था, जिन्होंने तुरंत इन लापरवाह और मूर्ख मनुष्यों से प्राचीन सिक्के चुरा लिए। तब से लेकर आज तक राक्षस ऐसे उत्पात मचा रहे हैं जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।'

'टीटो को कौन सा सिक्का दिया गया था? रुकिए, मुझे अनुमान लगाने दीजिए,' जयंत ने कहा, 'यह वही सिक्का था जिसने लोगों को टीटो की पूजा करने के लिए मोहित कर दिया था।'

'इसलिए टीटो के अनुयायियों द्वारा दिए गए दान से एक आश्रम का निर्माण किया गया, जिनमें गरीब से लेकर अति-अमीर तक शामिल थे। दोनों ही आवश्यक थे क्योंकि एक करोड़पति के गायब होने से कई लोगों के मन में संदेह और सवाल उठते,' उदय ने गंभीर स्वर में कहा।

हाँ, बाकी के दो सिक्के टीटो को इसलिए नहीं दिए गए क्योंकि राक्षस टीटो को अपने वश में रखना चाहते थे। रातोंरात टीटो स्वामी मुक्तानंद बन गए। जब टीटो को अपने प्रशंसकों का एहसास हुआ, तो उनका अहंकार बढ़ गया और खुद को और साबित करने के लिए उन्होंने प्रवचन देने का अभ्यास शुरू कर दिया। उनकी प्रशंसा इतनी अधिक थी कि उनके प्रशंसक उन्हें गीत गाते हुए भी पसंद करते। यह राक्षसों और टीटो दोनों के लिए फायदे का सौदा था। मामला इतना बिगड़ गया कि लगभग हर दिन एक हत्या होने लगी। टीटो या स्वामी मुक्तानंद का एकमात्र काम भोले-भाले अनुयायियों को सत्संग हॉल में लाना था, बस इतना ही। बाकी का काम शिकारी राक्षस बिना किसी को पता चले करते रहते थे। लेकिन नैतिक मूल्यों के अभाव के बावजूद, टीटो या स्वामी मुक्तानंद फिर भी एक इंसान थे। कहीं न कहीं इस आश्रम में हो रही इन खूनी घटनाओं से उनका नैतिक स्तर डगमगाने लगा था। अब जब उनकी बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो चुकी थीं, तो उनका मन जीवन की अन्य चीजों की ओर

भटकने लगा। अपने स्वामियों के नरभक्षण और सत्ता एवं यातना के लालच से वह धीरे-धीरे घृणा करने लगा। धीरे-धीरे उसने यह निष्कर्ष निकाला कि वह अब ऐसा जीवन नहीं जीना चाहता। उसे यह गलतफहमी भी थी कि उसकी लोकप्रियता उसकी पढ़ाई और मेहनत का परिणाम है। समय बीतने के साथ-साथ वह सिक्के की शक्तियों के बारे में लगभग भूल चुका था, लेकिन राक्षसों के भय से वह उसे लॉकेट की तरह पहनता था।

'हम्म, लगता है पहले हमें उनके आश्रम में घुसना होगा, भक्तों के रूप में घुलमिल जाना होगा, सबका विश्वास जीतना होगा, चारों राक्षसों को एक साथ लाना होगा और उन्हें रंगे हाथों पकड़कर मार डालना होगा। काफी मुश्किल काम है, है ना अधीश?' उदय ने कहा। अधीश ने उदय की पीठ थपथपाई, 'जी उदय, हम दो दिन का समय लेंगे, याद रखना, इससे ज्यादा नहीं, पता नहीं इन दो दिनों में कितने लोग मारे जाएंगे, प्रताड़ित किए जाएंगे और खाए जाएंगे।' उदय ने सिर हिलाया और तेजस के साथ चला गया। जयंत कुछ देर और वहीं रुका रहा। अधीश ने उसे सवालिया निगाहों से देखा। 'जीजाजी,' जयंत ने अधीश को इस तरह से संबोधित किया, केवल अकेले में, वह भी तब जब वह बहुत परेशान था, 'जीजाजी, हमें दीदी और रूबी की भी मदद लेनी होगी। हम एक-एक राक्षस से निपटेंगे। रूबी और तेजस आश्रम में प्रवेश करेंगे और हम अगले सप्ताह धीरे-धीरे उनके पीछे जाएंगे। हमें एक-दूसरे को नहीं जानना है;' हमें आपस में बात करते हुए बिल्कुल भी नहीं दिखना चाहिए।

'जीजाजी, मैं ऐशानी दीदी का ख्याल रखूंगी। आप बाकी बच्चों पर भी नजर रखिएगा और उन्हें भी मार्गदर्शन दीजिएगा। मेरे आसपास रहने से ऐशानी ठीक रहेगी।'

'मैं जयंत को जानता हूँ। हम शाम को गुरुजी से मिलेंगे। तुम रूबी को संक्षेप में बता दो और मैं ऐश को सारी बातें बता दूँगा।'

अगले दिन उन्होंने अपनी योजना बनाई और गुरुजी के पास गए। उन्होंने कुछ बिंदुओं में थोड़ा-बहुत बदलाव किया और फिर उन्हें आगे बढ़ने की अनुमति दे दी। गुरुजी के भरोसेमंद सहयोगी ऐशानी और अधीश समूह का नेतृत्व करने के लिए वहाँ मौजूद थे। गुरुजी जानते थे कि वे इतने परिपक्व हैं कि इस मुख्य समिति के बाकी सदस्यों को भावनात्मक रूप से उलझने और किसी भी तरह की अनुचित या अनुचित कार्रवाई करने से रोक सकते हैं। जाने से पहले गुरुजी ने ऐशानी और अधीश को एक-एक छोटी पुस्तिका दी, 'इसमें आपकी सभी आकस्मिक योजनाएँ और हथियार होंगे। ये

आपके हथियार हैं, और जब आप इन्हें बुलाएँगे तो ये आपके पास आ जाएँगे। इन्हें देखें और इनसे परिचित हो जाएँ। इस पुस्तिका को हमेशा अपने पास रखें।'

उन्होंने सिर हिलाया और गुरुजी के चरण छुए। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और वे अपने पसंदीदा पेड़ की ओर चल पड़े, जिसके नीचे उन्होंने पुस्तिकाएँ खोलीं। पुस्तिकाओं में आगे और पीछे के कवर सहित छह-छह पृष्ठ थे। प्रत्येक पृष्ठ पर साधारण सी दिखने वाली तस्वीरें थीं जिनका कोई अर्थ नहीं था। उन्होंने तस्वीरों को देखा और फिर एक-दूसरे को हैरानी से देखा। गुरुजी का क्या मतलब था? जब वे संभावित विकल्पों पर विचार कर रहे थे, तभी उन्होंने तस्वीरों में एक सूक्ष्म परिवर्तन देखा। उन्होंने ध्यान से देखा। सचमुच, अब तस्वीरें हथियारों की तस्वीरों में बदल गई थीं। आश्चर्यचकित होकर उन्होंने हथियारों की तस्वीरों को देखा। ये सभी उन हथियारों की तस्वीरें थीं जिनका उपयोग समय-समय पर राक्षसों के विरुद्ध किया गया था। कुछ हथियारों की तस्वीरें भी थीं जिनका उन्होंने अभी तक उपयोग नहीं किया था, लेकिन वे उन्हें आसानी से उपयोग कर सकते थे। अब वे गुरुजी के संकेत को समझ गए थे। ये केवल चित्र नहीं थे; ये वास्तविक हथियार थे जिन्हें वे अपने-अपने मंत्रों का जाप करके सक्रिय कर सकते थे। ऐसा लग रहा था जैसे इन तस्वीरों में नैनो चिप्स जड़े हुए हों। जैसे ही उन्हें यह बात समझ में आई, तस्वीरें फिर से सुंदर फूलों और पहाड़ियों में बदल गईं। केवल ऐशानी और अधीश ही लगभग अपनी इच्छाशक्ति से इन हथियारों का आह्वान कर सकते थे। गुरुजी हर बात का ध्यान रखते हैं, इस पर भरोसा रखें। वे एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए और अगले दो घंटे तक अपने मंत्रों का अभ्यास करते रहे। स्वामी मुक्तानंद के आश्रम पहुँचने में उन्हें एक दिन लगा। जयंत ने एक दिन पहले आश्रम को पत्र लिखा था और उन्हें तुरंत सकारात्मक जवाब मिल गया था। आश्रम तक उन्हें ले जाने के लिए रेलवे स्टेशन पर एक वाहन इंतज़ार कर रहा था। वहाँ पहुँचते ही स्वागत कक्ष में भगवा कुर्ते और सफेद पजामे पहने कर्मचारियों ने उनका स्वागत किया। सब कुछ एकदम साफ-सुथरा था। उनके नाम तुरंत दर्ज किए गए और अगले एक सप्ताह का कार्यक्रम दिया गया। फिर उन्हें उनके कमरों तक ले जाया गया। बाकी का दिन उनके लिए खाली था। हालांकि आश्रम प्रबंधन को पता था कि अधीश और ऐशानी विवाहित हैं, फिर भी प्रत्येक के लिए अलग-अलग कमरे थे। कमरे सादे थे, लेकिन उनमें सभी आधुनिक सुविधाएं मौजूद थीं। यह समय उन सभी के लिए महत्वपूर्ण था। उनके पास अपने अभियान को पूरा करने के लिए एक सप्ताह का

समय था: राक्षसों को नष्ट करना और उन तीन प्राचीन सिक्कों को इकट्ठा करना जिनका राक्षस अपनी इच्छानुसार दुरुपयोग कर रहे थे।

रूबी को योजना के अनुसार पहल करनी थी। जब वह अपने कमरे से बाहर निकली, तब तक शाम हो चुकी थी। लोग सुखद वातावरण में घूम रहे थे। चारों ओर हरियाली थी, हरे-भरे लॉन, पेड़, सुंदर फूलों और झाड़ियों की सलीके से बनी क्यारियां, तरह-तरह के चहचहाते पक्षी। लगभग स्वर्ग जैसा, उसने सोचा। धीरे-धीरे उसने लोगों के दो समूहों को एक ही रास्ते पर विपरीत दिशाओं में चलते देखा। उसके सामने अलग-अलग इमारतें थीं। एक समूह एक इमारत में गया और दूसरा समूह अगली इमारत में। एक योग कक्ष था और दूसरे कमरे में प्रवचन हो रहा था। रूबी अंदर गई। उसने स्वामी मुक्तानंद को उनकी तस्वीरों से पहचान लिया। कितनी मधुर और सुरीली आवाज! रूबी पीछे की एक कुर्सी पर बैठ गई। उसका काम था सबसे पहले इस व्यक्ति से बात करना। अंधेरा हो रहा था। जल्द ही प्रवचन समाप्त हो गया और लोग धीरे-धीरे बाहर निकलने लगे। हमेशा की तरह कुछ लोग स्वामी मुक्तानंद के आसपास जमा हो गए। जब लोग बहुत परेशान होते हैं, तो वे उस व्यक्ति के पास इकट्ठा होते हैं जो उनकी मदद करेगा। रूबी धैर्यपूर्वक यह सब सुनती रही। जब सब चले गए, तो स्वामी मुक्तानंद भी जाने की तैयारी करने लगे। रूबी के पास से गुज़रते ही उनके भीतर एक झनझनाहट सी दौड़ गई। वे वहीं पत्थर की तरह स्थिर और स्तब्ध खड़े रह गए। समय कम था, इसलिए रूबी उन्हें लुभाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रही थी। स्वामी मुक्तानंद कौन थे, एक साधारण मनुष्य जो स्वयं को धर्मगुरु बता रहा था? वे उनके सामने कुछ भी नहीं थे। रूबी अप्सराओं की सीधी वंशज थी। वे उसके बगल में बैठ गए। रूबी ने उनके हाथ अपने हाथों में ले लिए। किसी बातचीत की कोई ज़रूरत नहीं थी। वे बिना किसी शर्त के उसके हो गए। वे उसे अपनी बाहों में थामना चाहते थे, वे अपनी आँखें बंद करके उसकी गोद में लेटना चाहते थे, वे उसके साथ नृत्य करना चाहते थे, वे उसके साथ कभी न खत्म होने वाली बातचीत शुरू करना चाहते थे और वे इस जीवन में और उसके बाद भी हमेशा उसके साथ रहना चाहते थे। 'चलो कहीं अकेले में चलते हैं, हमें बहुत कुछ बात करनी है,' रूबी ने फुसफुसाते हुए कहा। स्वामी मुक्तानंद या टिटो ने बस सिर हिलाया; वह प्रेम से इतना अभिभूत था कि उसके लिए वहीं मर भी सकता था। 'हम कहाँ चलें?' रूबी ने उससे धीरे से पूछा। टीटो ने उसे समझ नहीं पाया, फिर उसे समझ आया। वह उसे किसी एकांत, गुप्त स्थान पर ले

जाना चाहती थी जहाँ वे एक-दूसरे से प्रेम कर सकें और हमेशा के लिए बातें कर सकें। वह जल्दी से उसे एक शांत जगह पर ले गया, और वे वहाँ बहुत देर तक बैठे रहे। टीटो ने सपने में भी नहीं सोचा था कि इतनी खूबसूरत स्त्री उससे प्रेम कर सकती है! बिना कुछ कहे ही वह उसकी दुर्दशा समझ गई, हालाँकि उसने उससे कुछ प्रश्न पूछे, जिनका उसने सहर्ष और प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। ऐसा लग रहा था मानो उसके हृदय से एक भारी बोझ उतर गया हो क्योंकि उसे अपना जीवन साथी मिल गया था। वह अप्सरा रूबी के सामने कुछ भी नहीं था। उसने अपना दिल, जीवन और आत्मा उसके सामने खोल दी, रोया और हँसा भी। इस बीच, बाकी लोग सुरागों की तलाश में अलग-अलग दिशाओं में चले गए थे। तेजस सबसे तेज़ था, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर फुदक रहा था, दो पेड़ों के बीच की दूरी होने पर वह मोटी रस्सी की तरह खिंच जाता था। उसने छलावरण वाले कपड़े पहने थे ताकि अगर किसी को शक भी हो जाए, तो भी उसे पहचान न सके। जब तक वे उसे दोबारा देखने की सोचते, तेजस बहुत दूर जा चुका होता और उन्हें लगता कि यह सिर्फ़ आँखों का भ्रम था। जयंत के पास सजीव और निर्जीव वस्तुओं के आर-पार देखने की क्षमता थी। उसने आश्रम की हर इमारत, संरचना और पेड़ के आर-पार देखना शुरू किया। उदय बस इधर-उधर घूम रहा था। किसी और को लगता कि कोई मेहमान आश्रम और उसके आसपास के माहौल से परिचित होने के लिए यूँ ही समय बिता रहा है। उदय अपने पाश के साथ पूरी तरह तैयार था, जो छिपा हुआ और अदृश्य था, लेकिन फिर भी उसके शरीर का अभिन्न अंग था। ऐशानी और अधीश अपने हथियारों के साथ हमेशा तैयार रहते हुए परिसर का भ्रमण कर रहे थे। रिसेप्शन पर चेक-इन सुरक्षा काफ़ी कड़ी थी, लेकिन वे इस विविध समूह का मुकाबला नहीं कर सकते थे। वे अपनी कला में माहिर थे और कई युगों से ऐसा ही थे। अगर गुरुजी चाहते तो आश्रम को वहीं ध्वस्त कर सकते थे, लेकिन यह वहाँ रहने वाली अन्य निर्दोष आत्माओं के साथ अन्याय होता, भले ही वे राक्षसों की करतूतों में जानबूझकर या अनजाने में शामिल रही हों। कुछ अन्य नए सदस्य भी आश्रम का माहौल जानने के लिए इधर-उधर घूम रहे थे। सब कुछ बहुत सुंदर, शांत और अनुशासित था, हालाँकि हरियाली कृत्रिम थी।

'ओह अधी, यह सब कितना मनमोहक और शांत है, मैं तो पूरी जिंदगी यहीं रह सकती हूँ,' ऐशानी ने उदास स्वर में आह भरते हुए उसका हाथ पकड़ लिया।

'ऐश, खुद को संभालो, खुद को संभालो, हम यहाँ एक काम के लिए आए हैं और

दुर्भाग्य से यहाँ खून बहाने और मारने वाले हम ही होंगे। तब यह जगह इतनी आकर्षक नहीं रहेगी। मानसिक रूप से खुद को तैयार कर लो, चीजें बहुत जल्द शुरू होने वाली हैं,' अधीश ने सहानुभूति से उसका हाथ दबाया। वह शांतिपूर्ण जीवन की उसकी इच्छा को समझता था। वह यह भी जानता था कि अगर विकल्प दिया जाए तो ऐशानी पृथ्वी से सभी राक्षसों को खत्म करने के लिए अपना वर्तमान जीवन चुनने में कभी संकोच नहीं करेगी। कोई दूसरा विकल्प था ही नहीं। यही उनका जीवन था और ऐसा ही होना था। ऐशानी ने अपना रुमाल नाक पर रखा और वे एक बगीचे की ओर चल पड़े, अधीश ने भी ऐसा ही किया। उन्होंने एक-दूसरे को देखा। सुंदर, मीठी खुशबू वाले फूलों के बगीचे से एक सुगंध आ रही थी। होश में आकर वे रुके और सूंघा, अब कोई दुर्गंध नहीं थी, केवल गुलाब, चमेली और पेटूनिया की मीठी खुशबू थी। लेकिन उनकी नाक ने उन्हें धोखा नहीं दिया था। वे जानते थे कि यहाँ कुछ तो गड़बड़ है। उन्होंने अपने हथियार तैयार रखे थे, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। वे यह भी जानते थे कि अगले कुछ दिनों में उनकी कार्यशैली राक्षसों को ढूंढना होगी, जिसके बाद राक्षस उनकी गतिविधियों पर संदेह करने लगेंगे। कल से आश्रम में उनका विश्राम शुरू हो जाएगा और उनके पास भोजन की तलाश के लिए समय नहीं होगा। बाद में वे बड़े भोजन कक्ष में मिले। भोजन पूरी तरह से जैविक और शाकाहारी था। भारतीय, महाद्वीपीय और चीनी व्यंजनों का भव्य आयोजन किया गया था। उन्होंने भोजन किया और फिर एक छोटी सी गुप्त चर्चा के लिए लॉबी में बैठ गए। वहाँ अन्य लोग भी मौजूद थे। उन्हें यकीन था कि सुरक्षाकर्मी आसपास होंगे, हालाँकि किसी ने ऐसा आभास नहीं दिया।

उदय ने कहना शुरू किया, 'मुझे कुछ नहीं मिला, हालाँकि कुछ ऐसे संकेत ज़रूर मिले हैं जिनसे पता चलता है कि हालात उतने अच्छे नहीं हैं जितना दिखाया जा रहा है। हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है। कल से हमारा कार्यक्रम बहुत व्यस्त रहेगा। हमें राक्षसों और उनके असली ठिकाने का पता लगाने के लिए ज़्यादा समय नहीं मिलेगा।' बाकी सब भी इसी बात से सहमत थे। ऐशानी ने दुर्गंध के अपने अनुभव के बारे में बताया। केवल रूबी चुप थी। सब उसकी तरफ देखने लगे। वह उदास लग रही थी, लेकिन उसके चेहरे पर जीत का भाव भी था। 'मैं स्वामी मुक्तानंद से कुछ महत्वपूर्ण जानकारी निकालने में कामयाब रही हूँ। राक्षसों का अड्डा प्रवचन कक्ष के पीछे है, जो उनके लिए बहुत सुविधाजनक है। प्रवचनों के दौरान वे आगंतुकों की पृष्ठभूमि का

अध्ययन करने के बाद सबसे कमज़ोर व्यक्ति को बाहर बुलाते हैं, उस पर काबू पाते हैं और उसे अपने अड्डे पर ले जाते हैं। वे आम तौर पर ऐसे व्यक्ति को चुनते हैं जिसका कोई परिवार न हो या जो ज़्यादातर अकेला रहता हो या बहुत ही एकांतप्रिय व्यक्ति हो। इस तरह वह व्यक्ति लापता लोगों की सूची में काफी देर से आता है।' किसी लापता आत्मा को छुपाने के लिए कई अन्य तरीके भी अपनाए जाते हैं।

तेजस ने विरोध करते हुए कहा, "लेकिन दीदी, हमने हर जगह तलाशा, प्रवचन कक्ष के पीछे भी, हमें कोई संदिग्ध आवाज या गतिविधि दिखाई या सुनाई नहीं दी!" ऐशानी ने अधीश की ओर मुड़कर कहा, "रुको, हमें एक अजीब सी चीज जरूर महसूस हुई, एक गंध—एक जानी-पहचानी लेकिन दुर्गंधयुक्त बदबू। जब हमने ध्यान से साँस ली, तो बदबू गायब हो गई, या यूँ कहें कि उसकी जगह मीठे फूलों की खुशबू फैल गई।"

जयंत थोड़ा शर्मिंदा सा लग रहा था। उसने झिझकते हुए कहा, 'मैंने उन्हें हर जगह ढूंढा, मेरे दिमाग में यह ख्याल ही नहीं आया कि उनका अड्डा इतना पास होगा। मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है।'

'बिल्कुल सही,' रूबी ने सहमति जताते हुए कहा, 'कई बार हम खुद अपने गुरुकुल में ऐसे ही वातावरण में रह चुके हैं, लेकिन हमारे मन में यह ख्याल भी नहीं आया कि ये राक्षस भी खुद को और अपने असली कार्यस्थल को छिपाने के लिए इसी तरीके का इस्तेमाल कर रहे होंगे। उन्होंने अपने मुख्यालय को अदृश्य दीवारों से ढक रखा है। कितना सरल और कारगर तरीका है!'

'जो हमें आखिरकार पता चल ही जाता,' अधीश ने कहा। 'रूबी, तुमने सराहनीय काम किया है,' रूबी ने हल्की मुस्कान और सिर हिलाते हुए कहा। ऐशानी ने उसे गौर से देखा, लेकिन रूबी ने उसकी आँखों में नहीं देखा। अधीश अपनी टीम के बाकी सदस्यों की ओर मुड़ा, 'हम दोपहर में काम पर जाते हैं। उस समय राक्षस उठते हैं और अपने मांद में भोजन की तलाश करते हैं। उन्हें रंगे हाथों पकड़ने की कोई ज़रूरत नहीं है, हालाँकि अगर हम ऐसा कर लें तो बेहतर होगा। हममें से हर कोई प्रक्रिया जानता है। राक्षसों का नाश करने के बाद, उदय और मेरे अलावा बाकी सब चले जाते हैं। सभी खामियों को दूर करने के बाद हम आपके पीछे आएंगे। रूबी, तुम्हारा काम हो गया है। तुम और तेजस औषधीय मालिश के लिए जाओ। उसके बाद रिसेप्शन पर हमारा इंतज़ार करना। बाकी लोग भी वहीं तुमसे मिलेंगे।'

'रुको, अधीश,' रूबी ने तुरंत बीच में टोकते हुए कहा। सभी उसकी ओर मुड़े और

इंतजार करने लगे।

‘स्वामी मुक्तानंद उर्फ टीटो तो बस एक मामूली चोर हैं, वो असल में अपराधी नहीं हैं। उन्हें राक्षसों से बहुत डर लगता है और वो आज भी उस दिन को कोसते हैं जब उनका उनसे सामना हुआ था। वो एक अच्छे इंसान हैं और उनका दिल सीधा-सादा है। वो सचमुच एक बेहतर, ईमानदार और ईश्वर से डरने वाले इंसान बनना चाहते हैं, जिसके लिए उन्हें अपने जीवन में कभी मौका नहीं मिला। उन्होंने ये सिक्का मुझे अपनी नेक नियत साबित करने के लिए दिया है,’ रूबी ने तीन प्राचीन सिक्कों में से एक को गर्व से ऊपर उठाया और फिर उसे अधीश को देने की कोशिश की।

अधिश ने मना करते हुए कहा, 'नहीं रूबी, तुम इसे अभी अपने पास रखो। मैं नहीं चाहता कि हम पर जरा सा भी नकारात्मक प्रभाव पड़े, भले ही गुरुजी ने हमें ऐसे प्रभावों से सुरक्षित कर दिया है। हमारा ऑपरेशन कुछ ही मिनटों में पूरा हो जाएगा, हालांकि सिक्कों को निकालना काफी जोखिम भरा हो सकता है। इस अफरा-तफरी में हमारे पास सिक्कों को खोजने के लिए ज्यादा समय नहीं होगा।'

‘अधीश,’ रूबी ने हिचकिचाते हुए कहा, ‘मैं कुछ घंटों बाद मुक्तानंद या टिटो से फिर मिल रही हूँ। मैं उनसे जानकारी निकालने की कोशिश करूँगी— मतलब, अगर उन्हें पता हो कि सिक्के कहाँ छिपे हैं।’

‘शुक्रिया रूबी, तुम सच में अनमोल हो, और जैसा तुमने कहा, हम टीटो को भी राक्षसों के चंगुल से मुक्त करा लेंगे,’ रूबी मुस्कुराई। ऐशानी को लगा कि रूबी की आँखों में उदासी झलक रही है। उसने मन ही मन वादा किया कि गुरुकुल लौटने पर वह रूबी से इस बारे में पूछेगी।

सुबह-सुबह ऐशानी ने दरवाजे पर हल्की सी दस्तक सुनी। वह जानती थी कि रूबी है। उसने उन्हें एक छोटा सा मुड़ा हुआ कागज का टुकड़ा दिया जिस पर सिर्फ चार रेखाओं वाला एक साधारण सा नक्शा बना हुआ था।

‘इस अलमारी के पीछे एक छोटी सी, मामूली लेकिन अचूक तिजोरी है। बाकी दो सिक्के वहीं हैं जिन्हें कभी-कभी वरिष्ठ राक्षस निकाल लेता है। बाकी राक्षस उससे इतना डरते हैं कि सिक्के निकालने की हिम्मत नहीं करते।’ ऐशानी और रूबी ने एक-दूसरे को गले लगाया। रूबी तुरंत चली गई और भोर की धुंधली रोशनी में गायब हो गई।

उनकी शुरुआती कक्षाएं आश्रम में सुबह-सुबह योग से शुरू हुईं। उसके बाद पौष्टिक

नाश्ता, थोड़ा आराम, फिर स्वामी मुक्तानंद के प्रवचन के लिए प्रवचन कक्ष में जाना होता था। दोपहर में उन्हें स्वास्थ्य मालिश का विकल्प चुनना होता था। यही वह समय था जब वे चुपके से निकलकर राक्षसों के अड्डे पर पहुँच जाते थे। रूबी और तेजस वहाँ मौजूद रहते थे ताकि किसी को शक न हो। समय आने पर वे तेज़ी से जयंत के पीछे-पीछे चले, जिसे अब ठीक-ठीक पता था कि कहाँ जाना है। वे एक विशाल दरवाजे से अंदर गए जिसे वे देख नहीं पा रहे थे, लेकिन जयंत अपनी विशेष दृष्टि के कारण देख सकता था। वे एक ऐसे हॉल में प्रवेश कर चुके थे जो पूरी तरह संगमरमर और चमकदार क्रोम से बना था। हॉल के पार कमरे थे। ऐशानी और अधीश को फिर से खून और सड़ते हुए खून की गंध आई, लेकिन बाकी लोगों ने ध्यान नहीं दिया। गंध आते ही गायब हो गई। एक पल के लिए जयंत उस जगह को देखकर विस्मय में डूब गया। यह सचमुच एक आश्रम के बीचोंबीच एक महल जैसा था! उदय ने उसे धीरे से धक्का दिया। जयंत कांप उठा और फिर उस दिशा में दौड़ पड़ा जहाँ उसकी दृष्टि उसे ले जा रही थी। बाकी तीनों अपने हथियारों के साथ तैयार थे। ऐशानी के हाथ में कोरा था, जो एक तरह की तलवार थी। अंत में नुकीला होने के बजाय, यह चौड़ा होता गया। यह बहुत भारी और बहुत तेज़ था, सामान्य मनुष्यों के लिए नहीं बना था। यह ऐशानी के पसंदीदा हथियारों में से एक था। इस घातक हथियार और ऐशानी की तीव्र भावनाओं ने कई क्रूर राक्षसों का नाश किया था। उदय के पास उसका पाश था, उसकी आँखें शिकार की उम्मीद में काली पड़ रही थीं। अधिश के पास उसकी वफादार खुखरी और कुछ अलौकिक विस्फोटक थे। उसे तिजोरी को इस तरह उड़ाना था कि बाकी दो सिक्के नष्ट न हों। वह जानता था कि ऐशानी और उदय उस समय भोजन कर रहे चार राक्षसों को नष्ट करने के लिए काफी थे। जयंत भी वहाँ था, लेकिन इस अदृश्य भूलभुलैया में उनका मार्गदर्शन करने के अलावा उन्हें उसकी शायद ही ज़रूरत पड़ती। जयंत उन्हें सीधे उस कमरे में ले गया जहाँ चारों राक्षस दावत कर रहे थे।

वे अपनी जगह पर ही रुक गए। घृणा से उनके रोंगटे खड़े हो गए। चाहे उन्होंने कितनी ही बार राक्षसों का असली रूप देखा हो, शुरुआत में वे हमेशा चौंक जाते थे। यह सचमुच मांसाहार का एक भयानक मंजर था। कुछ पीड़ित अभी भी अधमरे थे। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें जानबूझकर जीवित रखा गया हो ताकि राक्षस उन्हें यातना देकर मार सकें। कराहें सुनाई दे रही थीं और कुछ मामलों में चीखें भी। मांस को कुतरने, फाड़ने और खाने की कर्कश आवाज़ों के साथ मिलकर एक भयावह दृश्य और

घिनौनी आवाज़ों का शोरगुल पैदा हो गया था। एक पल के लिए वे अपनी जगह पर जड़वत खड़े रह गए। राक्षस उनसे पूरी तरह बेखबर थे। शायद वे अपनी अदृश्य और छिपी हुई सुरक्षा को लेकर बहुत आश्वस्त थे। उदय अब पूरी तरह बेकाबू हो गया था। उसने अपना पश उठाया और अपने सबसे नज़दीकी राक्षस पर पूरी ताकत से प्रहार किया। अचानक हुए इस हमले से राक्षस ज़मीन पर गिर पड़ा। लेकिन वह एक राक्षस था और वह भी शक्तिशाली। वह शायद थोड़ा अचंभित रह गया था, लेकिन झट से उठ खड़ा हुआ और अपने अप्रत्याशित दुश्मन का सामना किया। इस घटना से बाकी तीन राक्षस भी सतर्क हो गए थे। इसके बाद ऐशानी, उदय और चारों राक्षसों के बीच जमकर लड़ाई हुई। राक्षसों से लड़ने के अलावा, उदय और ऐशानी को उन्हें उस दीवार से दूर ले जाना था जहाँ सिक्कों से भरा अदृश्य तिजोरी रखा था। उन्होंने एकाग्रता से राक्षसों पर हमला किया। राक्षस भी कम नहीं थे, हालाँकि हर चीज़ आसानी से मिलने के कारण वे थोड़े सुस्त और आलसी हो गए थे।

अधीश के हाथ में बस एक छोटा सा कागज़ का टुकड़ा था जिस पर जल्दी से एक नक्शा बना हुआ था, ताकि वह उस दीवार तक पहुँच सके जहाँ तिजोरी हो सकती थी। दीवार बहुत बड़ी थी, तिजोरी उसमें कहीं भी हो सकती थी। वह बेचैनी से सोच रहा था। उसके पास ज़्यादा समय नहीं था और न ही उसके पास इतने विस्फोटक उपकरण थे कि वह पूरी दीवार को उड़ा सके, जो कोई भी नहीं चाहता था। दोनों पक्ष नहीं चाहते थे कि कोई भी आगंतुक फटी हुई दीवार और उसके अंदर के खौफनाक मंजर देखे। सिक्कों के टूटने के डर से वह भारी-भरकम विस्फोटक का इस्तेमाल नहीं कर सकता था। कौन जानता था कि टूटे हुए सिक्कों के टुकड़ों का उन लोगों पर क्या असर होगा जो उन्हें गलती से देख लेंगे? इसलिए विस्फोट छोटे और सटीक जगह पर ही होने थे। उसने दीवार पर थपथपाया। आवाज़ और स्पर्श किसी ईंट-पत्थर की दीवार जैसा ही था। उसने फिर से पूरी दीवार पर तेज़ी से थपथपाया। वह इतना तेज़ था, लगभग बवंडर की तरह, कि किसी के लिए भी ध्यान देना संभव नहीं था। आह! उसे एक ऐसी जगह मिली जहाँ आवाज़ तेज़ थी। अधीश लगभग आश्वस्त था कि तिजोरी यहीं है। उन्होंने अपनी प्रक्रिया शुरू की।

दूसरी ओर, ऐशानी और उदय राक्षसों से युद्ध में डटे हुए थे। राक्षस भी अपने हथियारों से लैस थे, हालांकि ऐशानी और उदय को शुरुआती बढ़त प्राप्त थी। उदय जमीन पर उनसे लड़ रहा था, जबकि ऐशानी हर जगह सक्रिय थी, कभी अपने कोरा से तो कभी

अपने धनुष-बाण से, कभी हवा में तो कभी जमीन पर। अचानक, एक राक्षस ने ऊपर की ओर छलांग लगाई और ऐशानी पर सीधा हमला कर दिया। यह सब पलक झपकते ही हो गया। लड़ाई में ऐशानी गिर पड़ी और दूसरे राक्षस ने हमला कर दिया। ऐशानी उनसे कहीं अधिक तेज और भयंकर थी, फिर भी उनमें से एक ने उसकी बांह पर हल्का सा घाव कर दिया और थोड़ा सा खून निकल आया। उदय, जो अन्य दो राक्षसों से लड़ रहा था, ऐशानी और अधीश दोनों पर नजर रखे हुए था। उसने ऐशानी की बांह पर लगा घाव नहीं देखा, उसने केवल उसका खून देखा। तुरंत ही उदय एकदम शांत हो गया। वह तुरंत ही भयंकर क्रोध में आ गया। उसने राक्षसों पर खूनी हमला कर दिया, जो उसकी अतिरिक्त ऊर्जा और बल से चकित थे। किसी भी सूरत में, उन्हें बेहद मुश्किल हो रही थी

उदय से मुकाबला किया, और अब ये! वो घूमते हुए फकीर की तरह अपने पाश से राक्षसों पर प्रहार कर रहा था। उसने दो राक्षसों को नष्ट किया और फिर तेज़ी से बाकी दो की ओर मुड़ा। उसकी आँखों के सामने ही बाकी दो राक्षस गायब हो गए।

और इसीलिए, जब वे आश्रम छोड़कर गए, तो उन्होंने टीटो को अपने साथ ले लिया ताकि लापता राक्षसों से उसे कोई नुकसान न पहुंचे। आश्रम का कार्यभार निःसंदेह उसके सहायकों द्वारा संभाला जाएगा और सफलतापूर्वक चलाया जाएगा।

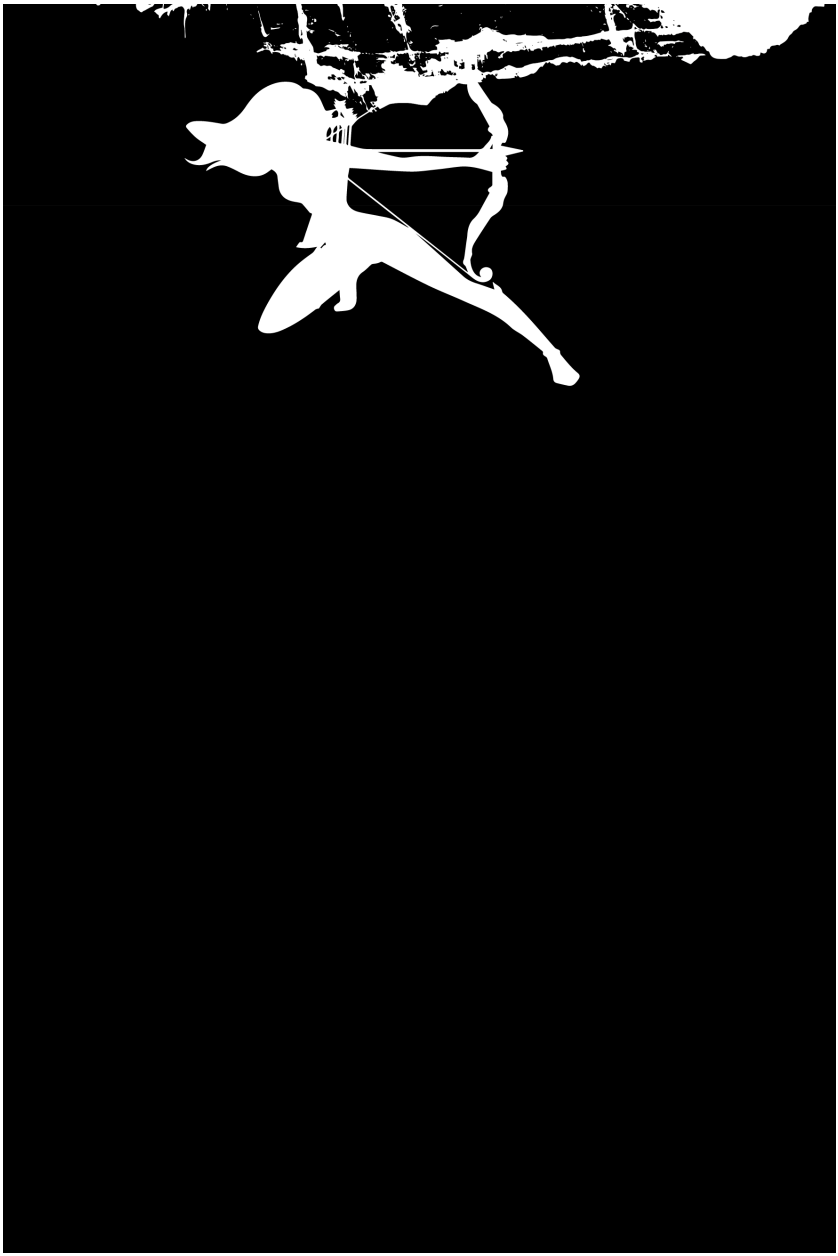

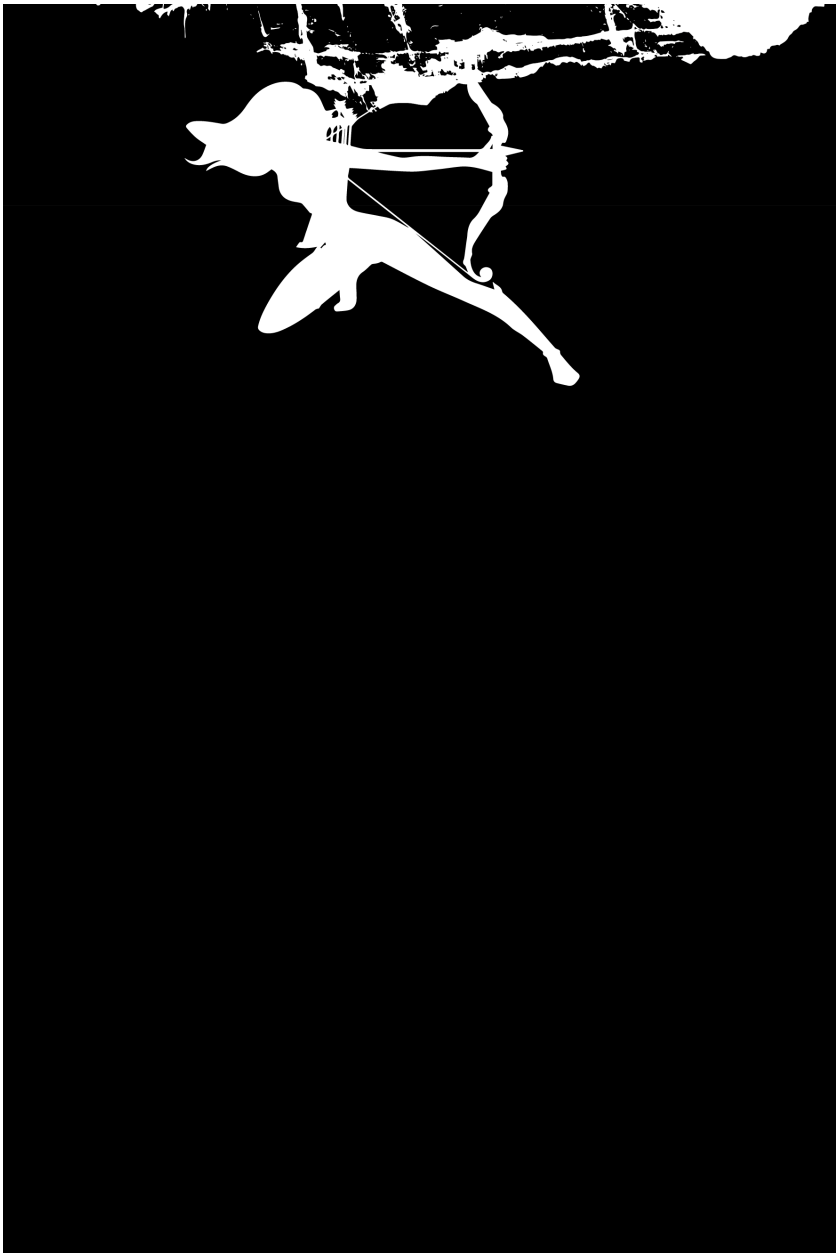

लेकिन

'ए
एमएमए!
'ऐश!' मां और बेटी ने एक-दूसरे को गले लगा लिया। वे एक-दूसरे की बाहों में मुस्कुराईं और हंसीं। 'देखो मेरी प्यारी, मेरी बच्ची कितनी खूबसूरत लग रही है। शादी तुम पर खूब जंच रही है, ऐश,' मधु ने कहा।
'जी अम्मा, अधिश सबसे अच्छा है। आप और बाबा मेरे लिए इससे बेहतर पति नहीं चुन सकते थे,' उसने कांपती हुई मुस्कान के साथ कहा, उसकी आँखों में हल्की नमी झलक रही थी। मधु ने यह देखा लेकिन कुछ नहीं कहा।
आओ बेटा, बैठते हैं और बातें करते हैं। आंगन में बैठते हैं।
मैं आपकी पसंदीदा चाय बना दूंगी।'
'नहीं अम्मा, आप बैठिए, मैं हमारी खास चाय बनाती हूँ,' इस तरह ज़िद करते हुए उसने अपनी माँ को रसोई में बिठा लिया। इतनी सारी बातें करनी थीं कि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ से शुरू करें।
उसने देखा कि अम्मा ने उसके लिए खास बादाम के बिस्कुट बनाए थे और पकौड़े गरमागरम और कुरकुरे थे। ऐश ने झटपट अदरक और दालचीनी की चाय बनाई और फिर अपनी माँ के साथ रसोई की मेज पर बैठ गई।
'ओह अम्मा, आपके साथ यहाँ वापस आकर कितना अच्छा लग रहा है, बिल्कुल पुराने दिनों की तरह।' गुरुकुल के विनाश के बाद यह पहली बार था जब वह अपने घर आई थीं। गुरुजी ने उन्हें बताया था कि उनके लोग सुरक्षित हैं और सूक्ष्म राक्षसों के प्रकोप के कारण वे हरिद्वार में किसी स्थान पर चले गए हैं। कुछ समय बाद मधु उनसे मिलने गुरुकुल गईं और गुरुकुल में जयंत से नियमित रूप से मिलने लगीं।
मधु ने स्नेह से मुस्कुराया। नौकरों का न होना अच्छा था, नौकरानी दीपा कुछ दिनों के लिए अपने गाँव गई थी और दूसरी नौकरानी छेदी रात के लिए चली गई थी। दोनों ऐशानी की वजह से रुकना चाहती थीं, लेकिन मधु कुछ समय के लिए अपनी बेटी को किसी के साथ साझा नहीं करना चाहती थी। घर की बात ही अलग थी। अगर घर का कोई मानवीय रूप होता, तो वह ऐशानी को गले लगा लेता और कभी नहीं छोड़ता। वह उसे अपनी सारी परेशानियाँ और मुसीबतें बार-बार सुनाता। ऐशानी यह सब जानती थी। पिछले कुछ महीने इतने व्यस्त और अजीबोगरीब रहे थे कि उसे अपनी माँ और नए बने घर के साथ समय बिताने का समय ही नहीं मिला था। बहुत कुछ बीत

चुका था। उसे अम्मा को बहुत कुछ बताना था। बदले में अम्मा को भी उसे बहुत कुछ बताना था। ऐशानी को यकीन नहीं था कि अम्मा उसकी सारी कहानियाँ सुनना पसंद करेंगी, वह बहुत चिंतित हो जाएँगी और शायद उसे काम जारी रखने से भी हतोत्साहित कर देंगी—लेकिन नहीं, उसकी अम्मा ऐसा कभी नहीं करेंगी।

जयंत की कमी उन्हें खल नहीं रही थी क्योंकि वह कई बार उनके साथ रह चुके थे। ऐशानी ने घरवालों को आश्वस्त किया कि वह काफी देर तक उनके साथ बैठी रहेंगी, लेकिन पहले वह अपनी अम्मा से बात करेंगी। घरवालों ने सहमति जताते हुए कहा, 'ठीक है,' लेकिन इससे उन्हें उनकी बातचीत छुपकर सुनने से नहीं रोका।

माँ और बेटी देर शाम तक बातें करती रहीं। छेदी ने जाने से पहले विशेष भोजन बनाने पर ज़ोर दिया था, जिसका अधिकांश भाग फ्रिज में रख दिया गया क्योंकि दोनों को भूख नहीं थी। फिर भी, मधु समझ गई थी कि ऐशानी उसे सब कुछ नहीं बता रही है। मधु को कोई आपत्ति नहीं थी। वह जानती थी कि उनके काम में, बहुत सी बातें न करना ही बेहतर होता है क्योंकि इससे केवल दुख ही होता और वह बहुत तनावग्रस्त और चिंतित हो जाती। लेकिन उसे अपना कुछ दुख बाँटना ही था। उसने उसे गुरुकुल के पूर्ण विनाश के बारे में बताया, और यह भी कि गुरुजी को भी राक्षसों ने मार डाला था। यह सुनकर अम्मा ने गहरी साँस ली। फिर ऐशानी ने उसे बताया कि कैसे गरुड़ देवता उन्हें लगभग मरणासन्न चालीस लोगों के साथ कैलाश पर्वत पर अतीत में ले गए थे और कैसे ऐनार उनके साथ आ गए।

मधु की आँखों में हैरानी का भाव देखकर वह रुक गई। मधु ने धीमी आवाज़ में पूछा, 'गुरुजी?'

‘गुरुजी वापस आ गए, अम्मा। मैं देवनाथ और ऐनार के साथ कैलाश में थी। अधिश औषधियों की तलाश में और आप सबके बारे में जानने के लिए नीचे आए थे। उन्होंने क्षतिग्रस्त गुरुकुल का भी दौरा किया। मुझे विशेष रूप से दृढ़ विश्वास है कि अधिश ने अपनी प्रबल और प्रभावशाली प्रार्थनाओं और ध्यान से गुरुजी को पृथ्वी पर लौटने के लिए विवश कर दिया।’

‘जी हाँ, वो भी,’ मधु ने सहमति जताते हुए कहा, ‘लेकिन गुरुजी का काम यहाँ अधूरा था। वे महाबली हनुमान के प्रतिनिधि हैं। आप सभी का मार्गदर्शन करने के लिए उनका यहाँ होना आवश्यक है। हम जानते हैं कि उनका कोई विकल्प नहीं है। गुरुजी भी यह जानते हैं।’

‘जी अम्मा,’ उसने सहमति जताते हुए कहा, ‘लेकिन अब मुझे अपने और बाकी सबके बारे में विस्तार से बताइए। आप सबने सूक्ष्म राक्षसों से अपना बचाव कैसे किया?’
‘एक मिनट में, बीटा, आपको पहले अपनी कहानी पूरी करनी होगी। पहले मुख्य बिंदु बताइए। बाकी बातें हम बाद में कर लेंगे। गुरुकुल का पुनर्निर्माण इतनी जल्दी कैसे हुआ और आपने नैनो राक्षसों से कैसे छुटकारा पाया?’
'ओह अम्मा, मैं पहले प्रश्न का उत्तर आसानी से दे सकता हूँ। सभी ने अथक परिश्रम किया और गुरुजी समय-समय पर अपने चमत्कारी अंश बिखेरते रहे।'
‘और सूक्ष्म राक्षस?’ मधु ने पूछा, मानो उसे पहले से ही जवाब का अंदाजा हो।
‘अम्मा, बेहतर होगा कि आप मुझसे यह न पूछें। यह आपके लिए कष्टदायक होगा। मैं बस यही चाहती हूँ कि हम साथ में खुश रहें। निश्चिंत रहें, वे राक्षस पूरी तरह से नष्ट हो चुके हैं।’
मधु ने उदास होकर सिर हिलाया। वह जानती थी कि ऐशानी उसे और अधिक दुख और सदमे से बचा रही थी।
‘ओह अम्मा! मैंने आपको इतनी डरावनी और खौफनाक कहानियाँ सुनाकर बोर कर दिया। यही हमारा जीवन है, जैसा कि आपने मुझे गुरुकुल में शामिल होने से पहले बताया था। अब मैं इस जीवन के अलावा किसी और जीवन के बारे में सोच भी नहीं सकती।’
'जी बेटा, हमारा भाग्य ब्रह्मा और हनुमान जी ने लिखा है और हम उनके आशीर्वाद से धन्य हैं।'
ऐशानी ने अपना सिर ऐसे हिलाया जैसे अपने दिमाग से उलझनें दूर कर रही हो। उसने धीरे से कहा, 'अम्मा, आप क्या कर रही थीं? आपका दिन कैसे बीतता है? मैं तो बस बड़बड़ाती ही रही। जयंत तो ज्यादातर समय हमारे साथ ही रहता है। आपने क्या किया, अम्मा? मुझे हल्का-सा आभास है कि राक्षस यहाँ भी आ गए थे। आपने उनसे कैसे निपटा?'
‘बेटा, तुम्हारे पिता ने मुझे ऐसी आपात स्थितियों के लिए प्रशिक्षित किया था। तहखाने में बहुत ज्वलनशील पदार्थ थे। ऊपर से उदय, जयंत और तेजस भी यहाँ थे। उदय ने सब कुछ संभाला, राक्षसों को मार डाला, लेकिन इस प्रक्रिया में, घर का अधिकांश हिस्सा नष्ट हो गया।’ घर ने तिरस्कार से दो खिड़कियाँ फड़फड़ाईं, मानो किसी में इसे नष्ट करने की हिम्मत न हो। वह इस प्रश्न का उत्तर देना चाहता था। अलमारी के ऊपर

से कुछ चीजें गिरीं। ‘हम हरिद्वार जाकर शरण ली।’
‘ओह, कम से कम वहां कोई राक्षस तो नहीं हैं।’
मधु चुप रही। ऐशानी ने संदेह से पूछा, 'अम्मा, क्या उस पवित्र नगर में भी राक्षस थे?' मधुजी ने सिर हिलाया और लड़खड़ाती आवाज़ में उन्हें उस खूबसूरत राक्षसी प्रिशा के बारे में बताया जिससे उदय को प्रेम हो गया था। और बाद में कैसे वे देवनाथ के साथ वापस लौटे।
‘देवनाथ? वह यहाँ क्या कर रहा था?’
घर अब सचमुच बहुत उत्साहित था। यही उसकी कहानी थी, जिसे कोई नहीं बता सकता था क्योंकि कोई नहीं जानता था, केवल देवनाथ और घर। वह तरह-तरह की बेचैन आवाजें निकाल रहा था जिन्हें केवल ऐशानी और मधु ही समझ पा रही थीं। 'चुप रहो!' ऐशानी ने घर को चुप रहने का इशारा किया। वह पीछे हट गया। ऐशानी को लगा कि वह उसे कुछ बताने की कोशिश कर रहा है जो मधु शायद बताए या न बताए। हो सकता है अम्मा को इसके बारे में पता भी न हो। 'अम्मा, बस एक मिनट रुकिए। मैं घर से एक मिनट बात करती हूँ।'
‘हाँ, ऐसा ही करो। मैं थोड़ी और चाय बना देती हूँ। तुम्हारे आस-पास होने से यह बहुत खुश है। इसने मुझे आधी बातें भी नहीं बताईं जो यह तुम्हें बताने की कोशिश कर रहा है।’ मधु रसोई में चली गई और ऐशानी घर की ओर मुड़ी। पहले तो यह बस बड़बड़ाता रहा और ऐशानी को भी कुछ समझ नहीं आया। उसने इसे कई बार कहानी दोहराने को कहा और आखिरकार उसे पूरी घटना की भयावहता का एहसास हुआ। घर जलकर राख हो गया था। फिर सबको उसे छोड़कर भागना पड़ा। केवल उदय ने ही सूझबूझ दिखाई और अपना नया पता घर के अंदर छिपा लिया। घर ने पता बहुत ही सुरक्षित तरीके से अपने अंदर रखा था और देवनाथ को तभी दिया जब उसे यकीन हो गया कि देवनाथ को अधीश ने भेजा है। ऐशानी इन खुलासों से दंग रह गई। वह इन सब बातों से अनजान थी, क्योंकि वह अधीश और गुरुजी को नन्हे राक्षसों से छुटकारा दिलाने में इतनी मग्न थी।
लेकिन अधिश ने सब कुछ संभाल लिया था। उसने देवनाथ को सबको ढूंढकर वापस लाने के लिए भेजा था। उसका दिल खुशी से भर गया और झूम उठा। उसका सबसे प्यारा, उसका लाडला, उसका पति और उसका प्रेमी, जो उसकी पीठ पीछे भी उसका ख्याल रखता था। ओह! वह कितनी भाग्यशाली थी! और देवनाथ! अधिश का सबसे

अच्छा रक्षक और पहरेदार, जो हमेशा अपने ज्ञान और जादू का सर्वोत्तम उपयोग करता था। मन ही मन उसने घर के प्रति सहानुभूति जताई और उसकी प्रशंसा की। घर शांत था, अब जब ऐशानी ने उसकी आत्मा को सुकून देने वाला मरहम लगा दिया था। उसके मन में एक और विचार आया। घर अकेला था! कुछ तो गड़बड़ थी। उसे अम्मा के बताने का इंतज़ार करना होगा या वह बाद में घर से बात करेगी।

मधु एक ताजा हर्बल चाय का बर्तन लेकर लौटी। 'घर की मरम्मत के बाद आप क्या कर रही थीं, अम्मा?'

'ऐश, कुछ खास नहीं, बस इधर-उधर घूम रहा हूँ। करने को कुछ खास नहीं है,' घर ने ज़ोर से खिड़की पटकी। मधु ने आह भरी और घर की ओर इशारा किया। घर थोड़ी देर के लिए पीछे हट गया। 'ऐश, अगर मैं तुम्हें नहीं बताऊँगी, तो यह छोटी सी झोपड़ी तुम्हें बता देगी,' मधु ने प्यार से मज़ाक किया। घर ने धीरे से खिड़की खोलकर जवाब दिया। ऐश इंतज़ार करता रहा।

'तुम्हारे पिता जानते थे कि वो हमारे साथ ज़्यादा समय नहीं बिता पाएंगे। हम ये भी जानते थे कि हमारे दोनों बच्चे उस नेक काम को आगे बढ़ाएंगे जिसके लिए भगवान ने तुम्हें इस दुनिया में भेजा है। तुम दोनों के चले जाने और तुम्हारे बाबा के न रहने से, अगर अजिता और बद्री भैया न होते तो मेरी ज़िंदगी वाकई बहुत अकेली हो जाती।' मधु रूबी के माता-पिता का ज़िक्र कर रही थी, 'उनके बच्चे भी बड़े हो गए थे और तुम्हारी रक्षा के लिए उन्हें तुम्हारे आस-पास रहना पड़ता था।' ऐशानी विरोध करना चाहती थी लेकिन मधु ने अपना हाथ उठा दिया।

'हम असमंजस में थे। हमारे पास बहुत समय था, काम बहुत कम। हममें से हर कोई योद्धा था, बल्कि योद्धा था, और यहाँ समय हमारे हाथों में एक भारी पत्थर की तरह पड़ा था। तभी मुझे याद आया कि तुम्हारे पिता ने मुझे राक्षसों की एक सूची सौंपी थी और उसे संभाल कर रखने को कहा था। उन्होंने यह भी कहा था कि समय आने पर मैं उसे स्वयं खोल लूँगी। शायद उनका यही मतलब था। मुझे वह सूची याद थी, लेकिन मैं उस तक पहुँच नहीं पाई क्योंकि घर, हमारा घर, तबाह हो गया था,' घर उस याद से काँप उठा। मधु ने आगे कहा, 'जब हम लौटे और आप सब मिलकर घर की मरम्मत कर रहे थे, तब मुझे यह सूची मिली। हमारे प्यारे घर ने इसे अपने किसी गुप्त स्थान पर छुपा रखा था, भगवान भला करे,' घर मुस्कुराया और लगभग झुककर प्रणाम किया, जिसे केवल ऐशानी और मधु जी ही समझ पाईं।

‘तो आपने क्या किया, अम्मा? कहीं आपने राक्षसों को तो नहीं मार डाला?’ मधु चुप रही।

‘अम्मा! आपने कर दिखाया! बिना किसी अनुभव के! अगर आपको कुछ हो जाता तो क्या होता? मैं आपके बिना कैसे जी सकती हूँ? बाबा भी तो यहाँ नहीं हैं!’ ऐशानी स्तब्ध रह गई।

मधु ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, 'मैं एक योद्धा हूँ और योद्धाओं की माँ हूँ। क्या कोई इंसान साँस लेना बंद कर सकता है? क्या कोई योद्धा अपने कौशल को भूल सकती है? वे भले ही जंग खा जाएँ, लेकिन फिर भी मौजूद रहते हैं। अजिता और बद्री भैया के साथ भी यही बात है। हम तीनों के पास भरपूर अनुभव है।'

‘अम्मा, आपने क्या किया? मुझे पता है कि आप राक्षसों को पहचान सकती हैं, लेकिन मुझे बताइए, आपने यह सब कैसे किया और आपने कितने राक्षसों को मारा है?’

‘अभी तक तो सिर्फ एक ही है, ऐश,’ ऐशानी के अविश्वास भरे चेहरे को देखकर वह हंस पड़ी, ‘हम यहीं नहीं रुकने वाले। तुम्हारे पिता ने उन राक्षसों की सूची बनाई है जो अभी तक इतने भयंकर नहीं हुए हैं, लेकिन समय के साथ वे पारंपरिक राक्षसों से भी अधिक खतरनाक हो सकते हैं। एक तरह से, हम तुम्हारे और तुम्हारे समूह के लिए रास्ता बना रहे हैं, उसे थोड़ा आसान बना रहे हैं।’

ऐशानी अवाक रह गई। उसे पता था कि उसकी माँ एक योद्धा थी, हालाँकि निष्क्रिय योद्धा। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उसकी माँ एक सक्रिय योद्धा होगी। खैर, ज़िंदगी आश्चर्यों से भरी होती है।

‘अम्मा, मुझे उस राक्षस के बारे में सब कुछ बताइए जिसे आप सबने मार डाला,’ उसने मांग की।

“आप सभी लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं, चाहे किसी काम से जा रहे हों या गुरुकुल में, इसलिए मैंने, अजिथा, बद्री भैया और ऋषिकेश के पास कहीं घूमने जाने का फैसला किया। वह बहुत ही खूबसूरत जगह है। हम आपके बाबा के साथ वहां कई बार जा चुके हैं।”

‘हां, अम्मा, मुझे याद है,’ उसने भावुक होकर कहा। ‘घूमते-घूमते हमारी कई लोगों से दोस्ती हो गई। उनसे बातचीत के दौरान हमें एक ऐसी जगह के बारे में पता चला जहां बहुत से लोग दर्शन करने और वहां की सजीव देवी की पूजा करने जाते थे। कहा जाता

था कि देवी असाधारण रूप से सुंदर और अमर थीं। जो भी उनके पास जाता, उन्हें वह स्वास्थ्य और चिरस्थायी सुंदरता का आशीर्वाद देती थीं। हम भी जिज्ञासावश ही उनके पास जाते थे। वह सचमुच बहुत आकर्षक, मोहक और उत्कृष्ट थीं। वह मुख्य शहर से थोड़ी दूर, पहाड़ों की सीमा के पास रहती थीं। उनके निवास तक जाने वाला रास्ता इतना हरा-भरा और मनमोहक था कि हम वहां टहलने जाने लगे। बस एक ही बात खटकती थी, वह थी पक्षियों की अनुपस्थिति। इतनी सुंदर हरी-भरी जगह पर तो पेड़-पौधे और जीव-जंतु होने ही चाहिए थे, लेकिन ऐसा नहीं था। वहां की खामोशी और सन्नाटा भी एक कारण था कि हम वहां टहलने जाते थे। जीवित प्राणियों की अनुपस्थिति हमें सचेत कर देनी चाहिए थी, लेकिन हमने इस पर ध्यान नहीं दिया।' हम अन्य भक्तों के साथ मीना देवी के निवास पर जाते, कुछ देर वहाँ बैठते और वापस आ जाते। मीना देवी जीवन और उसमें सामंजस्य बिठाने और उसे बेहतर बनाने के बारे में बातें करतीं, कुछ खास नहीं; यही तो दूसरे जीवनशैली गुरु सिखाते हैं, लेकिन उनकी आवाज़ में एक सम्मोहक और आश्वस्त करने वाला गुण था।' मधु ने आगे बताया, 'चौथे दिन बद्री भैया की तबीयत ठीक नहीं थी, लेकिन उन्होंने मीना देवी के निवास पर हमारे साथ चलने की ज़िद की। उन्हें हल्का बुखार भी था, मुझे लगता है अजिथा ने उन्हें बुखार कम करने के लिए क्रोसिन दी थी। हमने उनसे कहा कि दवा असर करने के लिए थोड़ी देर लेटकर सो जाएँ। बद्री भैया सो गए और हम उनसे थोड़ी दूर बैठ गए ताकि उन्हें परेशान किए बिना बातें कर सकें। तब तक शाम हो चुकी थी। सभी भक्त जा चुके थे। बद्री भैया के जागने के बाद हम भी जाने की योजना बना रहे थे। हम पेड़ों के एक छोटे से झुरमुट के पीछे बैठे यूँ ही बातें कर रहे थे। अचानक, हमने मीना देवी को अपने घर से बाहर आते देखा। हम अभी उसका अभिवादन करने के लिए उठे ही थे कि उसने चुपके से चारों ओर देखा और फिर झट से अपने घर के पीछे चली गई। वहाँ एकदम सन्नाटा था, न कोई पक्षी, न कोई कीड़ा। तभी हमारे रोंगटे खड़े हो गए। हम निश्चित रूप से समझ गए कि कुछ गड़बड़ है। हमने बद्री भैया को सोते हुए छोड़ दिया और चुपचाप मीना देवी के पीछे चल दिए। आप जानते हैं, हम बिना हथियार और कुछ ज़रूरी सामान के कहीं नहीं जाते, कहीं भी किसी राक्षस या इस मामले में किसी दानव से सामना न हो जाए।

ऐशानी जिज्ञासा और उत्साह से भरी हुई थी, जिसे देखकर मधु को हंसी आ रही थी क्योंकि ऐशानी ने इतने सारे क्रूर, निर्दयी और खून के प्यासे राक्षसों का संहार किया

था। सूची तो अंतहीन थी—और यहाँ वह इतनी मासूम जिज्ञासा दिखा रही थी। उसने ऐशानी के गाल पर थपथपाया। 'हम उसके घर के पीछे तक उसके पीछे गए। वह तेज़ी से चल रही थी लेकिन लड़खड़ाने लगी, मानो उसे चलने में कोई तकलीफ़ या दर्द हो रहा हो। वह लगभग एक मील तक दौड़ती रही। हम जितना हो सके चुपके से उसके पीछे गए। सौभाग्य से, पिछले दिन बारिश हुई थी इसलिए वनस्पति अभी भी गीली थी और उसके पीछे जाते समय हमने ज़्यादा आवाज़ नहीं की। कुछ देर बाद, हमें सड़े हुए मांस की दुर्गंध आने लगी। हम घबरा गए। यहाँ कुछ बहुत बुरा हुआ था। हम कुछ पेड़ों के पीछे छिप गए और वहाँ से झाँका। मीना देवी सड़ी हुई घास पर बैठी एक मरे हुए मानव शिशु को खा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसने अभी-अभी बच्चे को मारा हो और अब उसे जंगली जानवर की तरह खा रही हो। अजिता और मैं समझ गए कि अब या कभी नहीं।' हमारे पास पतली लेकिन बेहद मजबूत प्लास्टिक की रस्सियाँ और चाकू थे। जोर-जोर से चिल्लाते हुए हम उसकी ओर दौड़े और उसे अचानक पकड़ लिया। वह इतनी भूखी थी और खाने में इतनी मग्न थी कि उसने हमें बिल्कुल भी नहीं देखा। इससे पहले कि वह कुछ प्रतिक्रिया कर पाती, अजिता ने रस्सी को फंदे की तरह उसके चारों ओर फेंक दिया और इससे पहले कि वह कुछ कर पाती, हमने उसे रस्सी से बांध दिया।

मधु ने अपने विचारों को समेटने के लिए एक मिनट का विराम लिया और फिर बोली, "उसका भोजन पूरी तरह से तृप्त नहीं हुआ था, क्योंकि हमने उसे परेशान कर दिया था। जब हमने उसे देखा तो हम दंग रह गए। उसके चेहरे का आधा हिस्सा पहले की तरह ही सुंदर था, लेकिन दूसरा आधा हिस्सा किसी बूढ़ी औरत के चेहरे की तरह झुर्रियों से भरा हुआ था और उसके बाल भी सफेद हो गए थे। लेकिन उसके हाथ में अभी भी उस बच्चे का एक अंग था जिसे वह खाने की बेताब कोशिश कर रही थी। जब हमने उसे ऐसा करने से मना किया, तो वह हमसे गिड़गिड़ाने लगी कि उसे खाने दें।"

हमने उससे कहा कि हम उसे किसी भी कीमत पर मानव मांस नहीं खाने देंगे। वह हताशा में बड़बड़ाने लगी और हमें एक अजीब कहानी सुनाने लगी। उसने बताया कि उसकी उम्र 500 साल है। जवानी में वह बहुत घमंडी और अपनी सुंदरता पर बहुत अभिमानी थी। उसके पिता एक राक्षस थे और कुछ गांवों के जमींदार भी थे। वे किसी भी राक्षस की तरह अच्छे और न्यायप्रिय थे। वे अभी भी मानव मांस खाते थे, लेकिन

कम मात्रा में। वे इसे अनाज, फल और सब्जियों के साथ मिलाकर खाते थे। उस समय के रूढ़िवादी युग में, जब कोई ग्रामीण लापता हो जाता था, तो ज्यादा लोग ध्यान नहीं देते थे; सीधे-सादे ग्रामीण सपने में भी नहीं सोच सकते थे कि मीना और उसका परिवार इन लापता होने की घटनाओं में शामिल हो सकता है। जब मीना किशोरी हुई, तब तक वह इतनी अभिमानी और लापरवाह हो चुकी थी कि वह रात में बाहर निकल जाती, बेतरतीब ढंग से शिकार करती, जितना खा सकती थी उतना खाती (जो कि बहुत कम होता था) और लाश को वहीं छोड़ देती थी। उसके परिवार के ज्यादातर लोग अपनी छोटी राजकुमारी से डरते थे। उसके पिता ने एक राक्षस को हर जगह उसका पीछा करने और तथाकथित सबूतों को छिपाने या नष्ट करने का काम सौंपा था। उसकी चापलूसी और खुशामद इस हद तक बढ़ गई कि उसके साथियों, यानी निचले स्तर के राक्षसों ने उसे यकीन दिला दिया कि अपनी अलौकिक सुंदरता बनाए रखने के लिए उसे छोटे मानव बच्चों को खाना होगा। इस तरह वे उसके पिता को बता सकते थे कि सबूत छिपाने के लिए उन्हें मनुष्यों को खाना पड़ा। बात इतनी बढ़ गई कि घमंडी सुंदरी सिर्फ अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए हत्या करने लगी। निचले स्तर पर सब कुछ ठीक चल रहा था। उसके पिता को अपनी लाडली बेटी और उसके शातिर दोस्तों की हरकतों का पता नहीं था। मीना ऊबने लगी। हत्या का रोमांच कम होने लगा। उसके चमचे अब मुश्किल में थे। अपनी राजकुमारी की हत्या में रुचि न देखकर, वे खुद ही मनुष्यों को मारने लगे और उन्हें अपनी राजकुमारी को भेंट करने लगे। वह थोड़ा खाती और बाकी अपने दोस्तों को दे देती।

एक बार राक्षसी राजकुमारी अपने चापलूसों के साथ बाजार का चक्कर लगा रही थी, हंसते-हंसते और मौज-मस्ती के लिए हंगामा मचा रही थी। एक छोटा बच्चा वहां खेल रहा था। राजकुमारी को भूख नहीं थी। उसने बच्चे पर मुश्किल से ही नजर डाली, लेकिन उसके रक्षक लालची और अतृप्त थे। उस गोल-मटोल और सुंदर बच्चे को देखकर उनके मुंह में पानी आ गया। 'मीना, यह कितना सुंदर बच्चा है, अगर तुम इसे खाओगी तो और भी खूबसूरत हो जाओगी।' मीना इस लालच का विरोध नहीं कर सकी। उसने बच्चे को एक गुड़िया की तरह उठाया और बाजार के बीचोंबीच, भयभीत लोगों के सामने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। बच्चे की मां पास ही कुछ खरीद रही थी। उसने पीछे मुड़कर देखा कि यह सब शोर किस बात का है। जो उसने देखा उससे वह स्तब्ध रह गई। वह मीना की ओर दौड़ी और अपने क्षत-विक्षत बच्चे को उठाकर रोने

लगी और उसे लोरी सुनाने लगी। चारों ओर सन्नाटा छा गया। मीना के गिड़गिड़ाते रक्षक भाग गए। धीरे-धीरे मां ने खुद को संभाला और खड़ी हो गई। अपने बच्चे को गोद में लिए हुए उसने मीना को श्राप देते हुए कहा, 'अपनी सुंदरता बनाए रखने के लिए तुम सिर्फ छोटे बच्चों को खाओगी, यहाँ तक कि अपने बच्चों को भी, विशेषकर अपने बच्चों को।' वहाँ जमा हुए दर्शकों ने सामूहिक रूप से स्तब्धता व्यक्त की। मीना के पीछे हटने पर, कई लोग उस युवा माँ के साथ रहकर उसकी मदद और सांत्वना देने लगे।

मीना ने उस स्त्री के श्राप पर ज्यादा विश्वास नहीं किया, लेकिन उसकी बातों में कुछ ऐसा था जो उसके अवचेतन मन में बस गया। जल्द ही वह उस घटना को भूल गई। लेकिन श्राप तब सच हुआ जब उसकी शादी हुई और वह गर्भवती हुई। उसका पति भी एक राक्षस था, जो अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता था और उसकी सुंदरता पर गर्व करता था। उसकी गर्भावस्था से सभी बहुत खुश थे। जब बच्चा पैदा हुआ, तो मीना का प्यार उमड़ पड़ा। उसने प्यार से उसकी देखभाल की, उसे खाना खिलाया और उसकी देखभाल में उसे बहुत आनंद आया। लगभग एक हफ्ते बाद, वह अपने बच्चे को गोद में लेकर लोरी गा रही थी, तभी अचानक उस पर कुछ हावी हो गया और वह फिर से वही पुरानी मीना बन गई जो बच्चों को खा जाती थी। उसकी दोहरी पर्सनैलिटी हो गई; एक तरफ वह अपने बच्चे से प्यार करना और उसकी रक्षा करना चाहती थी और दूसरी तरफ उसे मारना और खाना चाहती थी। दो घंटे तक चले संघर्ष के बाद, राक्षसी रूप जीत गया। उसने बच्चे को अपनी बाहों में फाड़ डाला और उसका एक हिस्सा खा लिया। बच्चा तुरंत मर गया। जब मीना को होश आया, तो उसका बच्चा, उसकी जिंदगी, दोनों जा चुके थे। उसने अपने पति से कहा कि जब वह सो रही थी, तब कोई जानवर उनके बच्चे को ले गया। उन्होंने बच्चे को हर जगह ढूंढा, लेकिन व्यर्थ। दूसरी बार, वह जुड़वां बच्चों को जन्म देने वाली थी। उसने उन्हें एक-एक करके तब खा लिया जब वे एक और दो महीने के थे। इस बार उसके पति को शक हुआ। तीसरी बार उसने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया और घर से निकाल दिया। उसके पिता ने उसकी दोबारा शादी करवा दी, और फिर वही हुआ। इस बार उसके पिता ने उसे अपने राज्य के बाहरी इलाके में भेज दिया। हालांकि वे राक्षस थे, वे दूसरों को खाते थे, अपने लोगों को नहीं। अपने पिता के राज्य के बाहर, वह किसी तरह जीवित रही और एक अनिश्चित जीवन व्यतीत किया। पुरुष और राक्षस दोनों ही उसकी असाधारण सुंदरता

से आकर्षित थे और उनमें से कई ने उससे विवाह कर लिया, जिसके विनाशकारी परिणाम हुए। उसे हर घर से निकाल दिया गया। उसे कई बार अपना ठिकाना बदलना पड़ा क्योंकि लोग अंततः उसकी गतिविधियों पर संदेह करने लगे थे। अंत में, वह ऋषिकेश के किनारे पर आ आई। कभी-कभार, वह किसी बच्चे को पकड़कर खा लेती थी। इसी से उसका और उसकी सुंदरता का जीवन चलता था। वह अकेली रहती थी और अपने आप में सिमटी रहती थी। महिलाओं में यह अफवाह फैल गई कि वह एक देवी हैं और जो भी उनके पास जाकर प्रार्थना करता है, उसे सौंदर्य और आकर्षण का आशीर्वाद प्राप्त होता है। उन्हें साध्वी मीना के नाम से जाना जाने लगा। "वह बहुत चतुर और धूर्त थीं। जब वह अपनी दुखभरी कहानी सुना रही थीं, तभी उन्होंने वह डोरी तोड़ दी जिससे हमने उन्हें बांध रखा था। हम दोनों अचानक से हैरान रह गए। हमने चाकू लेकर उन पर हमला कर दिया और उन्हें कई बार वार किया। इतनी कमजोर होने के बावजूद वह असाधारण रूप से मजबूत थीं, शायद इसलिए क्योंकि वह एक राक्षसी थीं। लेकिन, आप जानते हैं, हमारे पास भी विशेष चाकू थे, जो विशेष रूप से राक्षसों को मारने के लिए बनाए गए थे। वह हमारी आंखों के सामने बूढ़ी होने लगीं और धीरे-धीरे हमारे पैरों की धूल में मिल गईं। हम स्तब्ध थे, लेकिन हमें अच्छा भी लगा क्योंकि हमने मानवता के लिए एक अच्छा काम किया था।" ऐशानी मंत्रमुग्ध होकर सुन रही थीं। उन्हें कहानी खत्म होने में दो मिनट लगे।

उसने अपनी माँ को गले लगाया और बोली, 'अम्मा, मुझे आप पर बहुत गर्व है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप किसी को थप्पड़ मार सकती हैं, चाकू चलाना तो दूर की बात है।' माँ और बेटी ने थोड़ी देर और बातें कीं और फिर सोने चली गईं। ऐशानी अपनी माँ के कमरे में सो गई। कौन जानता था कि उसे अम्मा के साथ दोबारा कब मिलने का मौका मिलेगा?

तिजास और जारा

'डब्ल्यू

गुरुजी ने उनसे कहा, 'हमें खबरें मिल रही हैं कि बिहार और झारखंड के जंगलों में काफी संख्या में राक्षस प्रकट हुए हैं। ये पुरुष और महिला दोनों तरह के राक्षस हैं। सरकार का फिलहाल यही मानना है कि लोगों का गायब होना और कुछ भयानक

हत्याएं आदिवासी समूहों के आपस में लड़ने का नतीजा हैं। जांच के आदेश दे दिए गए हैं, लेकिन जब से दो पुलिसकर्मियों को पकड़ा गया और उनके आधे खाए हुए शरीर के टुकड़े जंगलों में बिखरे मिले हैं, तब से पुलिस भी डरी हुई है। अब हत्यारे या हत्यारों के समूह की तलाश में सिर्फ आधे-अधूरे मन से प्रयास किए जा रहे हैं। अंधविश्वासी ग्रामीणों को यकीन है कि एक प्राते आत्मा ही ये सारी हत्याएं कर रही है। शायद इस बार वे सही हैं।'

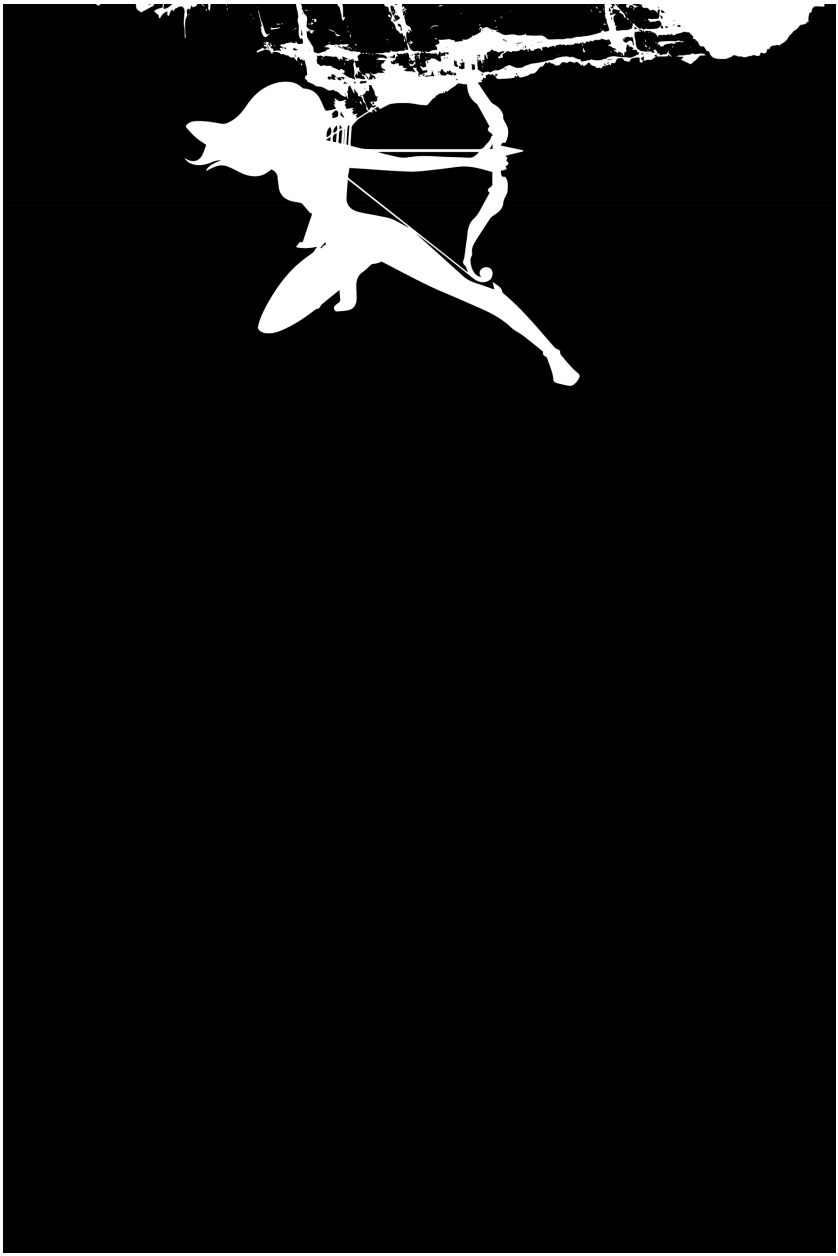

‘हम सब बिहार जाएंगे। हम पश्चिम चंपारण से शुरू करेंगे, वहां के राक्षसों का सफाया करेंगे और फिर अपने काम को जारी रखने के लिए आसपास के अन्य क्षेत्रों में

जाएंगे,' गुरुजी ने अपने ध्यानमग्न योद्धाओं की ओर देखते हुए कहा। 'चंपारण एक समय आध्यात्मिकता का केंद्र था। वास्तव में, आप में से कुछ लोग शायद जानते होंगे कि महान ऋषि वाल्मीकि ने यहीं रामायण की रचना की थी, भगवान विष्णु के अवतार श्री राम के जन्म से बहुत पहले। चंपारण का नाम चंपा और आरण्य को मिलाकर पड़ा। चंपा सुगंधित बेर का फूल है और आरण्य का अर्थ वन है। यह स्थान चंपा के पेड़ों से भरा हुआ था।'

उन्होंने आदरपूर्वक सिर हिलाया, लेकिन साथ ही आश्चर्यचकित भी थे। गुरुजी उनके अभ्यासों में कभी उनका साथ नहीं देते थे, केवल अत्यंत आपात स्थिति में ही देते थे। इसलिए, यह एक खतरनाक ऑपरेशन था! वे स्वतः ही सीधे खड़े हो गए।

'ऐसी कई बातें हैं जिन्हें मुझे भी देखना और सीखना है। शायद यह भी उन्हीं में से एक मौका होगा। हमारे मन में यह धारणा बैठी हुई है कि सभी राक्षस बुरे होते हैं और सभी देवता अच्छे होते हैं। हम मनुष्य अच्छे और बुरे का मिश्रण हैं। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता। नियम के अपवाद भी होते हैं, हालांकि बहुत कम। कभी-कभी मूल धारणा के विपरीत भी कुछ देखने को मिल सकता है। कोई देवता दुष्ट बन सकता है या किसी राक्षस में अच्छे गुण हो सकते हैं।'

'गुरुजी, क्या हमें वहाँ अच्छे राक्षस मिलेंगे?' ऐशानी ने पूछा। 'हमें नहीं पता, ऐशानी। मिल भी सकते हैं और नहीं भी,' गुरुजी ने रहस्यमय ढंग से उत्तर दिया। 'मैं चाहता हूँ कि मेरी मुख्य टीम वहाँ रहे ताकि तुम अच्छे और बुरे में फर्क करना सीख सको। हालाँकि यह दुर्लभ है, लेकिन बुरे प्राणियों में भी दयालुता होती है और नेक लोगों में भी दुष्टता होती है।'

गुरुजी ने अपना कर्तव्य निभा लिया था। उन्हें उसी से संतुष्ट रहना था। अगले दिन वे ट्रेन से बेतिया के लिए रवाना हुए। वहाँ से उन्होंने टैक्सी लेकर चंपारण का सफर तय किया। गुरुजी उनके साथ नहीं गए। वे जानते थे कि आवश्यकता पड़ने पर गुरुजी वहाँ प्रकट हो जाएँगे। यह माघ माह का ग्यारहवाँ पवित्र महीना था, जो ग्रेगोरियन पंचांग के अनुसार जनवरी-फरवरी के आसपास पड़ता है। चंपारण के ऐतिहासिक जिले में वल्लभ समुदाय के महान धर्मोपदेशक महाप्रभु वल्लभाचार्य के जन्म की याद में एक विशाल मेला लगा हुआ था। मौसम ठंडा, हरा-भरा और बेहद खूबसूरत था। मेले में काफी चहल-पहल थी और चारों ओर खुशी के चेहरे दिखाई दे रहे थे। यह मेला इस शांत कस्बे में हर साल होने वाला एक बहुप्रतीक्षित आयोजन था।

उन्होंने एक होटल में चेक-इन किया और आसपास के वातावरण से परिचित होने के लिए एक दिन बिताया। उन्होंने पाया कि चंपारण में कई मंदिर हैं। शहर के बाहरी हिस्से में मुख्य रूप से विशाल साल के पेड़ों के पतझड़ी जंगल थे, जिनके पत्ते काफी बड़े होते थे। इन पत्तों को इकट्ठा करके थालियाँ और कटोरे बनाए जाते थे। इसकी शाखाओं और पत्तों का उपयोग रसोई में ईंधन के रूप में भी किया जाता था। उन्होंने जंगल में और भी भोजन की तलाश की। तेजस खुद को रोक नहीं पा रहा था। दो दिनों से वह तंग जगह में था, पहले ट्रेन में, फिर बस में और फिर होटल में। अब यह जगह उसे पसंद आ गई थी। साफ-सुथरा वातावरण, ऊँचे पेड़ और पास के जंगलों में घनी हरियाली। मेला भी उसे अच्छा लगा। तेजस को जीवन की छोटी-छोटी चीजों में भी आनंद मिलता था। हालाँकि वह एक योद्धा था, फिर भी वह मासूमियत की मूर्ति था, छोटी-छोटी बातों पर भी हँसता और खिलखिलाता था। कोई भी उसकी मासूम शरारतों का विरोध नहीं कर सकता था। वह एक बच्चे जैसा था और हमेशा ऐसा ही रहेगा। तेजस अपने बड़े भाई और बहन को चोरी-छिपे और बेसब्री से देखता रहा, एक पैर से दूसरे पैर पर उछलता रहा, उनकी अनुमति का इंतजार करता रहा। उसने पास के एक विक्रेता से एक फल चुरा लिया, जिसने उसे प्यार से मुस्कुराकर देखा, भला मीठे तेजस को कौन मना कर सकता था। एक मिठाई की दुकान वाली महिला ने उसे मिठाई दी। तेजस हंसते हुए उसके पास मिठाई लेने गया। उसने भी उसे देखकर मुस्कुराया, उसे एक लड्डू दिया और फिर उसका हाथ थामे रही। तेजस थोड़ा शर्मिंदा होकर शरमा गया। उसे लोगों के उसे छूने और गले लगाने की आदत थी। लेकिन इस महिला ने उसका हाथ एक मिनट से भी ज्यादा देर तक थामे रखा। वह उसे प्यार भरी निगाहों से देख रही थी। धीरे-धीरे उसने उसका हाथ छोड़ा, लेकिन उससे पहले उसे एक चुंबन दिया। 'कू,' उसने कहा और फिर उसे एक टेढ़ी मुस्कान दी। राहत की सांस लेते हुए तेजस तेजी से भाग गया। उसके साथी उसे प्यार से देखते रहे। वे मजे ले रहे थे। तेजस के बहुत सारे प्रशंसक थे क्योंकि वह सभी महिलाओं में मातृत्व की भावना जगा देता था। ऐसा लग रहा था कि इस मिठाई की दुकान वाली महिला में यह भावना कुछ ज्यादा ही थी। शायद तेजस उसके बिछड़े हुए बच्चे या पोते जैसा दिखता था। इसके विपरीत, जयंत उस बूढ़ी औरत के इस खुलेआम भाव प्रदर्शन को लेकर थोड़ा चिंतित लग रहा था। जैसे ही उसने उसे पहली बार देखा, उसके मन में खतरे की घंटी बज उठी।

ग्राहक, विशेषकर बच्चे, उस बुढ़िया से मिठाई खरीदने आ रहे थे। जाहिर है, वह जो कुछ भी बेच रही थी, वह इतना स्वादिष्ट था कि ग्राहक उसकी दुकान पर उमड़ पड़ते थे। वह अपने ग्राहकों को बड़ी उत्सुकता से मिठाई और नमकीन बेचती थी, हमेशा मुस्कुराती रहती थी लेकिन कुछ बोलती नहीं थी। सामान देते समय उसके मुंह से बस एक ही आवाज निकलती थी, खुशी से भरी 'कू कू'।

जयंत की दृष्टि असाधारण थी। वह सभी सजीव वस्तुओं के आर-पार देख सकता था, लेकिन वह मन की बात नहीं पढ़ सकता था। तो फिर उस स्त्री को देखते ही वह इतना तनावग्रस्त क्यों हो गया? उसने इस विचार को मन से निकाल दिया और दूसरों के साथ चल पड़ा। वे दो समूहों में बँट गए और साल के जंगलों की ओर चल पड़े। सरकार की वृक्ष कटाई पर सख्त नीतियों और कड़ी निगरानी के कारण जंगल घने पेड़ों से ढके हुए थे, जिनमें मुख्य रूप से साल के पेड़ थे और कुछ अन्य पेड़ भी थे जैसे खैर, सिमल आदि। वे और अंदर चले गए मानो उन्हें वहाँ के पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं में रुचि हो, जो वास्तव में थी भी। लेकिन मुख्य रूप से वे अधिक खतरनाक जीव-जंतुओं की तलाश में थे: राक्षसों की। उन्हें इस बात में कोई संदेह नहीं था कि इन जंगलों में राक्षस हैं। वे अनुभवी योद्धा थे और उनकी सहज प्रवृत्ति राक्षसों को सूंघने में माहिर थी, भले ही गुरुजी ने उन्हें न बताया हो। वे पूरी तरह सतर्क थे।

इस बार गुरुजी के निर्देश थोड़े अस्पष्ट थे, बस इतना कहा गया था कि इस दुनिया में अच्छे राक्षस भी होते हैं। उन्होंने इंतजार करने और देखने का फैसला किया।

उन सभी ने एक बात गौर की कि मिठाई की दुकान वाली बूढ़ी औरत तेजस का पीछा कर रही थी। हालांकि, ऐसा पहले भी कई बार हो चुका था। दरअसल, तेजस को बूढ़ी महिलाओं द्वारा उसका पीछा करने और उसे माँ की तरह दुलार करने की आदत हो चुकी थी।

चंपारण के छोटे से कस्बे में दो दिन रहने के दौरान उन्होंने बाज़ार में कुछ दोस्त बना लिए। एहतियात के तौर पर, रूबी ने वहाँ की कुछ महिला विक्रेताओं से दोस्ती कर ली और उनसे बातचीत शुरू कर दी। रूबी ने चतुराई से बातचीत का रुख उस बूढ़ी औरत की ओर मोड़ दिया, जिसे तेजस पसंद आ गया था।

‘ओह, ये तो बूढ़ी कोयल है। हम उसे कोयल इसलिए कहते हैं क्योंकि वो सिर्फ कोयल की आवाज निकालती है। उसका असली नाम शारा है। वो सबकी दादी हैं,’ उदय पर नजर रखे एक हंसमुख लड़की ने हांफते हुए रूबी से कहा। ‘बताओ रूबी,

चाय की दुकान के पास खड़ा वो आदमी कौन है?' उसने उदय की ओर इशारा करते हुए पूछा।

'ओह, वो? वो तो मेरा भाई है,' रूबी के दोस्ताना लहजे से संकेत मिला कि और भी जानकारी साझा की जा सकती है।

रूबी ने लड़की से पूछा, 'मुझे इस मेले के बारे में और बताओ। क्या शारा नियमित रूप से मेले में आती है? क्या वह अपने बच्चों के साथ यहीं रहती है?' लड़की थोड़ी हैरान थी। 'नहीं, वह गाँव के आखिरी छोर पर, जंगल की ओर अकेले रहती है।'

'अरे, बेचारी महिला! उसके पति और बच्चों का क्या होगा?'

'पता नहीं। जब से मुझे याद है, मैंने उसे इसी हालत में देखा है। वह बहरी और गूंगी भी है,' लड़की ने उसे महत्वपूर्ण भाव से बताया।

'ओह, तो वह अकेले ही खाना खा रही होगी,' रूबी ने सीधे मुद्दे पर आते हुए कहा, हालांकि लड़की को इस बात का पता नहीं था।

'हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है, हालाँकि मैंने उसे कभी खाते हुए नहीं देखा। वह दूसरे बच्चों को खाना खिलाती रहती है, लेकिन ईंधन के लिए सखुआ के पेड़ों की टहनियाँ और पत्तियाँ इकट्ठा करने जंगल जाती है,' लड़की उदय को फिर से देख रही थी। रूबी ने आह भरी। शारा में राक्षसी होने के सारे लक्षण थे। वह तेजस के आस-पास अजीबोगरीब जगहों पर देखी जाती थी। तेजस पेड़ों पर कूदते हुए भी शारा की झलक पा लेता था। शायद उसकी चंचलता उसे और भी आकर्षित करती थी। वह जानता था कि वह उसका पीछा कर रही है क्योंकि वह बीच-बीच में 'कू' की आवाज़ निकालती थी। इन बातों पर सोचते हुए रूबी जाकर ऐशानी के पास बैठ गई, जिसने कुछ और ग्रामीणों से दोस्ती कर ली थी।

'वह दानव हो भी सकती है और नहीं भी, रूबी, हमें बहुत सावधान रहना होगा,' ऐशानी ने सोचा। 'हमें दानवों को खोजने के स्थान और तरीके के बारे में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं मिले हैं। फिर भी हम उन्हें ढूंढते रहेंगे।'

'आश, गुरुजी कब आ रहे हैं? अगर गुरुजी ने खुद आने का फैसला किया है, तो वह राक्षस जरूर सबसे खतरनाक किस्म का होगा।'

'चलो इंतजार करते हैं और देखते हैं, रूबी। चलो यहाँ होने वाले नाटक का इंतजार करते हैं,' ऐशानी ने आह भरी।

अगली सुबह, वे शहर के बाहरी इलाके में साल और सखुआ के जंगलों की ओर जल्दी

निकल पड़े। उन्हें पता था कि गूंगी शारा उनका पीछा कर रही है। जब तक वह कोई परेशानी नहीं खड़ी करती, वे उसे नज़रअंदाज़ करते रहे। उन्होंने चारों ओर देखा। पेड़ों की हरियाली उन्हें अभी भी आश्चर्यचकित कर रही थी। उन्हें इस बात की राहत थी कि सरकार ने वनों की कटाई रोकने के लिए इतने कड़े कदम उठाए थे। वे इन सब बातों पर चर्चा कर ही रहे थे कि अचानक उन्हें ज़मीन का एक बड़ा खाली टुकड़ा दिखाई दिया। यह विशाल पेड़ों से घिरे एक द्वीप जैसा था। वहाँ दो पेड़ काटने वाली मशीनी आरी और एक बड़ा जनरेटर खड़ा था। वे सामने के दृश्य को देखकर अचंभित रह गए। लगभग पचास लट्ठे करीने से उस खाली जगह के किनारे पर रखे हुए थे, जो अपने गंतव्य तक ले जाने के लिए तैयार थे। तो, वास्तव में अवैध शिकार चल रहा था। यह इलाका इतना अंदर था कि स्थानीय लोगों ने कुछ भी गड़बड़ सुनी या देखी नहीं होगी। वे पेड़ों के कटे हुए ठूंठों पर बैठ गए। यह वाकई बहुत दुखद था कि इतने बड़े पैमाने पर वनों की कटाई हो रही थी। स्थानीय पुलिस की मिलीभगत के बिना यह सारा अभियान संभव ही नहीं था।

'यह बेहद घिनौना है!' जयंत गुस्से से भड़क उठा। 'हमें इसके बारे में कुछ करना होगा। हम स्थानीय प्रशासन के पास जाएंगे और उनसे इन चोरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने को कहेंगे।'

'जयंत, सावधान रहो,' अधीश ने उसे चेतावनी दी। 'हम यहाँ तस्करों को पकड़ने नहीं आए हैं; हम यहाँ राक्षसों को पकड़ने और उनका नाश करने आए हैं, हालाँकि इन चोरों को पकड़ना भी गलत नहीं होगा। लेकिन हमें राक्षसों को ढूंढने पर पूरा ध्यान देना होगा। हम इन सांसारिक गतिविधियों में अपना ध्यान नहीं भटका सकते,' उसने अपने शब्दों पर मुस्कुराते हुए कहा। अवचेतन स्तर पर, वे शारा की रुक-रुक कर आने वाली गुनगुनाहट सुन सकते थे। तेजस कहीं आसपास ही होगा, ऐशानी ने सोचा। सूरज अब आसमान में आ चुका था और दिन का उजाला हो गया था। उदय ने सुझाव दिया कि वे कुछ पेड़ों के पीछे चले जाएं ताकि अगर कोई शिकारी आ जाए तो उन्हें आसानी से देखा न जा सके। यह घना जंगल था; खुद को छिपाना ज्यादा मुश्किल नहीं था। वाकई, फटेहाल लोगों का एक समूह खुले मैदान में आने लगा। वे बहुत आत्मविश्वास से अपना काम कर रहे थे, ज्यादा छुप-छुपकर नहीं। एक व्यक्ति कामगारों पर नजर रख रहा था, वह किसी तरह का पर्यवेक्षक लग रहा था। थोड़ी दूरी से शारा की जानी-पहचानी 'कू कू' की आवाज़ आई। सुपरवाइज़र मुस्कुराया और मज़दूर अपना काम

जारी रखने लगे। वे शारा के साथ दोस्ताना व्यवहार कर रहे थे, जिसे वे एक भोली-भाली बुज़ुर्ग महिला समझ रहे होंगे। लेकिन ऐशानी के समूह का स्वभाव हर किसी पर शक करना था। जयंत को पहले से ही उस पर संदेह था। थोड़ी ही देर में, शारा उस खुले मैदान में आ गई जहाँ शिकारी अपनी बड़ी-बड़ी बिजली की आरी से पेड़ काट रहे थे। आरी के बाहरी किनारों पर हैंडल लगे हुए थे। दो लोग आरी को उस जगह तक ले जाते थे जहाँ से पेड़ काटना होता था, फिर बिजली चालू कर देते थे। एक पेड़ काटने में उन्हें लगभग आधा घंटा लगता था और फिर उसकी शाखाएँ और पत्तियाँ काटने में दो घंटे लग जाते थे।

'हो सकता है कि वे असल मायने में राक्षस न हों, लेकिन वे बिना किसी डर के शैतानी काम कर रहे हैं। पेड़ों की कटाई से पारिस्थितिकी और किसी जगह के पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। प्रशासन इन लोगों के साथ मिलीभगत कर रहा होगा। अपने तात्कालिक लाभ के लिए, ऐसे लोग धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से हमारी खूबसूरत धरती को नष्ट कर रहे हैं,' ऐशानी ने उदास होकर कहा। शारा ने सहमति जताते हुए हल्की सी आवाज़ निकाली, हालाँकि वह थोड़ी दूर बैठी थी। वे दोनों वहाँ दुखी होकर बैठी रहीं और पूरे मामले पर विचार करती रहीं। गर्मी बढ़ रही थी और मजदूरों ने आराम करने का फैसला किया। उन्होंने अपनी आरी को दो पेड़ों के तनों के बीच इस तरह रखा कि काटने वाला धारदार किनारा ऊपर की ओर रहे। वे जानते थे कि आरी को नीचे की ओर नहीं रखा जा सकता, क्योंकि इससे उनकी धार कुंद हो सकती थी।

दो से ज़्यादा विशाल पेड़ काटे जा चुके थे। तेजस अभी भी पास के पेड़ों की चोटियों पर फुदक रहा था। मज़दूर एक समूह में बैठकर दोपहर का भोजन कर रहे थे। एक छोटा लड़का उठा, शायद पानी पीने के लिए। उसका हाथ गलती से एक बिजली की आरी के स्विच से छू गया। आरी के हैंडल को पकड़ने वाला कोई नहीं था, इसलिए वह उन दो पेड़ों के तनों पर बेकाबू होकर घूमने लगी, जिनके सहारे उसे लगभग सीधा खड़ा किया गया था। तेजस भी उन्हीं पेड़ों पर कूद रहा था। उसका संतुलन बिगड़ गया, वह आरी के ऊपर गिर गया और उसके दो टुकड़े हो गए।

वे सब भयभीत होकर देखते रहे। एक पल पहले तेजस उछल-कूद कर रहा था, अगले ही पल उसकी मौत हो गई, उसका शरीर दो टुकड़ों में कट गया था। जोर-जोर से रोते हुए वे उसकी ओर दौड़े। यहाँ तक कि मजदूर भी दुर्घटनास्थल की ओर दौड़े, लेकिन

तेजस वहाँ नहीं था, वह मर चुका था। रूबी सबसे पहले उसके पास पहुँची। वह डर के मारे चीख पड़ी। तेजस का शरीर बीच से लंबवत कट गया था। रूबी ने उसे अपनी बाहों में उठाने की कोशिश की। उसे यह देखकर बहुत डर लगा कि उसका आधा शरीर ही उसकी बाहों में आ पाया, दूसरा आधा ज़मीन पर ही पड़ा रहा जहाँ वह आरी पर गिर गया था। उसने उदय और ऐशानी को दया भरी निगाहों से देखा। पहली बार उदय सदमे में था, उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह तेजस के बगल में ज़मीन पर भारी मन से बैठ गया। तब तक मजदूर भी उनके पास पहुँच चुके थे।

अपने ही औजार से इतना भयानक हादसा देखकर वे घबरा गए। डरपोक होने के कारण उन्होंने झटपट अपने औजार समेटे और भाग गए। अधीश और ऐशानी को जल्द ही होश आया। उनका प्यारा तेजस, जो उनके समूह की जान था, अब इस दुनिया में नहीं था! एक भयानक हादसे में उसकी मौत हो गई! अधीश ने उसे तौलिए से ढक दिया। घटनाक्रम के इस अप्रत्याशित मोड़ से स्तब्ध होकर वे बैठ गए और रोने लगे। इसी बीच शारा भी उनके पास आ गई थी। वह भी दुख से कराहने लगी और सिसकियाँ लेने लगी।

उनका सूरज, जो रात में भी हमेशा चमकता था, जो जहाँ भी जाता खुशियाँ और हँसी बिखेरता था, जिसे हमेशा पेड़ों की चोटियों पर रहना चाहिए था, अब ज़मीन पर दो टुकड़ों में कटा हुआ पड़ा था। वे उसे छूने से डर रहे थे, कहीं उसकी और हड्डियाँ न टूट जाएँ। सदमे से इतने बेहाल कि कुछ बोल या कर नहीं पा रहे थे, वे बस उसके पास बेसुध बैठे रहे, समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। थोड़ी देर बाद ऐशानी स्तब्ध होकर उठी और एक पेड़ के नीचे लड़खड़ा गई। एक पल भी इंतज़ार किए बिना, वह तुरंत समाधि में चली गई और ध्यान करने लगी। वह गुरुजी से संपर्क करने की कोशिश कर रही थी। वह जानती थी कि गुरुजी तक अपने विचार पहुँचाने के लिए उसे पूरी तरह शांत और स्थिर रहना होगा। उसका शरीर काँप रहा था, वह सोच नहीं पा रही थी, न ही कोई और। वर्षों का अभ्यास फिर से जागृत हो गया और सभी आवाज़ें और विचार मिट गए। उसने गुरुजी को विचारों की तरंगें भेजना शुरू कर दिया।

गुरुजी कुछ ही मिनटों में आ गए। वे अब भी तेजस के शव के चारों ओर बैठे थे। बूढ़ी औरत शारा अब ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। अपने सदमे और दुख में डूबे होने के कारण उन्होंने उसे पूरी तरह से अनसुना कर दिया। उसकी उपस्थिति उनके लिए एक उदास पृष्ठभूमि जैसी थी। जैसे ही वे गुरुजी के तेजस के पास जाने के लिए एक तरफ हटे,

उन्होंने पल भर में स्थिति को भांप लिया। रूबी असहाय होकर उनकी ओर देख रही थी, उसकी आँखों में आँसू थे। गुरुजी तेजस के शव के पास बैठ गए, उसे देखा और फिर चारों ओर देखा। उन्होंने शारा को देखा जो उनसे थोड़ी दूर खड़ी सिसक रही थी। गुरुजी गंभीर स्वर में उनकी ओर मुड़े। 'तेजस हमें छोड़कर चला गया है, हम उसे इस हालत में वापस नहीं ला सकते। यह कितना भी कड़वा क्यों न लगे, हमें उसका अंतिम संस्कार यहीं चंपारण में करना होगा। उसके शरीर पर इतनी गंभीर चोट लगी है कि उसे कहीं और ले जाया नहीं जा सकता।' चारों ओर सन्नाटा छा गया। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था! तेजस, उनका सबसे छोटा, इतनी भयानक दुर्घटना में मरने वाला पहला व्यक्ति था! रूबी सिसक रही थी, वे सब रो रहे थे। दर्द के इस धुंधलेपन में भी, अधीश के मन में कहीं न कहीं एक उलझन थी। वह जानता था कि गुरुजी सभी मानवीय भावनाओं से परे हैं। तेजस का शव देखकर गुरुजी ने कोई भावना नहीं दिखाई, लेकिन मानो उन्हें इसकी उम्मीद थी। अधीश इसे स्वयं को समझा नहीं पा रहा था। गुरुजी ने फिर कहा, 'हमें उसे राम रेखा नदी के किनारे स्थित श्मशान घाट ले जाना होगा। हमें उसे ले जाने के लिए एक अस्थायी स्ट्रेचर बनाना होगा।' गुरुजी ने दूसरों की ओर देखा। उदय और रूबी पत्थर की तरह स्थिर हो गए थे। गुरुजी की बातें अनसुनी रह गईं। अंत में, जयंत और अधीश तेजस को ले जाने के लिए एक अस्थायी पलंग बनाने के लिए कुछ लकड़ियाँ इकट्ठा करने लगे।

जब तक वे श्मशान घाट पहुँचे, शाम हो चुकी थी। आसमान में बादल छाए हुए थे और हल्की-हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी, ज़्यादा नहीं, लेकिन इतनी कि अंतिम संस्कार को कुछ देर के लिए टालना पड़ा। शरा नाम की बूढ़ी औरत उनके पीछे-पीछे श्मशान घाट तक आई। ऐसा लग रहा था कि वह कुछ कहना चाहती है, लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और न ही कोई उसकी सांकेतिक भाषा समझ पाया। गुरुजी ने उसे ध्यान से देखा और फिर उसे अपने साथ आने दिया। श्मशान घाट के एक कर्मचारी ने पास ही बने एक शेड की ओर इशारा किया और कहा कि तेजस के शव को वहाँ रखकर बूंदा-बांदी रुकने का इंतज़ार करें। चूंकि शव को खुले में जलाना था, इसलिए उन्हें इंतज़ार करना पड़ा। अधीश, उदय और जयंत ने शेड के अंदर तेजस के शव को ज़मीन पर सावधानी से रखा, बाहर आए और वहाँ बिखरे हुए कुछ लकड़ी के ठूंठों पर बैठ गए। वे अभी भी सदमे में थे, लेकिन अब उन पर शोक हावी होने लगा था।

अंधेरा छा रहा था। उनके पास इंतज़ार करने के सिवा कोई काम नहीं था। उन्हें अंतिम संस्कार से डर लग रहा था। दूसरी ओर, वे चाहते भी थे कि यह जल्द से जल्द खत्म हो जाए। खट्टी-मीठी यादें उनके मन में उमड़ रही थीं। गुरुजी भी उनके साथ बैठे थे। उन्हें बारिश की हल्की आवाज़ सुनाई दे रही थी, मानो आसमान भी उनके साथ लगातार रो रहा हो। शारा का रोना-धोना बंद हो गया था। गुरुजी ने तिरछी नज़र से देखा कि वह धीरे-धीरे झोपड़ी की ओर बढ़ रही है। एक बार उदय झोपड़ी की ओर जाने लगा, लेकिन गुरुजी ने उसका ध्यान नदी की ओर मोड़कर उसे रोक दिया। नदी अब कम और गंदी नाली ज़्यादा लग रही थी।

उनका ध्यान भटकाने के लिए गुरुजी ने उन्हें राम रेखा नदी की कथा सुनाई। "जब भगवान राम देवी सीता के साथ लंका से लौट रहे थे, तो वे कुछ देर विश्राम करने के लिए यहाँ बैठ गए। सीता जी को बहुत प्यास लगी थी, इसलिए भगवान राम ने अपने धनुष-बाण से धरती पर एक सीधी रेखा खींची और शुद्ध जल जमीन से निकला। वह एक नदी बन गई और तब से राम रेखा नदी के नाम से जानी जाने लगी। दुख की बात है कि हमने इसकी देखभाल नहीं की और अब यह एक नाले से ज्यादा कुछ नहीं रह गई है।"

किसी को नहीं पता था कि वे गुरुजी की बात सुन रहे थे या नहीं। लेकिन गुरुजी संतुष्ट थे। वे उनका ध्यान श्मशान घाट से हटाने में कामयाब हो गए थे। बारिश रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। वे बहुत थके हुए थे। रात हो चुकी थी। रात करीब 10 बजे श्मशान घाट का प्रभारी यह कहकर चला गया कि वह अगली सुबह जल्दी आएगा। उसने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर कहा, 'गुरुजी, आज रात अंतिम संस्कार नहीं हो सकता, मेरा सुझाव है कि आप सभी श्मशान घाट के अंदर जाकर प्रतीक्षा करें। सुबह तक बारिश जरूर रुक जाएगी।' उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। किसी ने कुछ खाया भी नहीं था। कोई श्मशान घाट के अंदर भी नहीं गया। बेजान तेजस के पास बैठना बहुत कष्टदायक होता। इसलिए वे बाहर ही इंतजार करते रहे, कभी सोते, कभी जागते, तेजस के साथ बिताए पलों को याद करते हुए। करीब 2 बजे सब सो गए। केवल गुरुजी ही जाग रहे थे, क्षितिज को निहारते हुए अपने दुखी साथियों को देख रहे थे। वे सब भीग चुके थे, लेकिन बारिश आखिरकार रुक गई थी। सुबह 3 बजे गुरुजी ने श्मशान घाट के अंदर से एक हल्की सी आवाज सुनी। वह फुर्ती से उठ गया। गुरुजी इसी संकेत का इंतज़ार कर रहे थे। उसे फिर वही आवाज़ सुनाई दी, इतनी धीमी कि

बाकी लोग उसे सुन ही नहीं पाए; दिनभर की लंबी और थका देने वाली थकान के बाद सब गहरी नींद में सो रहे थे। गुरुजी संभलकर उठे और झोपड़ी के अंदर गए। तेजस के बगल में ज़मीन पर एक मिट्टी का दीपक जल रहा था और शारा उसके पास बैठी थी। वह गुरुजी की ओर मुड़ी और धीरे से गुनगुनाई। गुरुजी ने तेजस को देखा और फिर शारा को। उन्होंने उसके सामने हाथ जोड़कर सम्मान जताया। अगर बाकी लोग जाग रहे होते, तो गुरुजी को किसी के सामने सिर झुकाते देखकर चौंक जाते। उन्होंने गुरुजी से ऊँचा पद वाला कोई व्यक्ति कभी नहीं देखा था। इसलिए, सब लोग गुरुजी को प्रणाम करते थे, न कि गुरुजी को।

शारा ने गुरुजी के जुड़े हाथों की ओर देखा तक नहीं; वह किसी और बात को लेकर बहुत उत्साहित थी। उसकी गुटरगू की आवाज़ अब कुछ और तेज़ हो गई थी। गुरुजी ने ध्यान से उसकी आँखों की दिशा का अनुसरण किया। वे जानते थे कि वे क्या देखने वाले हैं; फिर भी गुरुजी का दिल भी एक धड़कन चूक गया। तेजस अस्थायी पलंग पर लेटा हुआ था, मानो सो रहा हो। उसके शरीर पर किसी चोट का कोई निशान नहीं था। उसके शरीर के दोनों हिस्से जुड़कर ठीक हो गए थे और शारा एक गर्वित मुर्गी की तरह उसके चारों ओर गुटरगू कर रही थी। तेजस गहरी नींद में लग रहा था। शारा की उत्साहित गुटरगू से उसे कोई परेशानी नहीं हुई।

योद्धाओं का समूह आश्रम लौट आया था और पुस्तकालय के पीछे बैठा था। गुरुजी ने उन्हें वहाँ इकट्ठा होने को कहा था। रूबी और उदय तेजस पर पैनी नज़र रखे हुए थे, जो पिछले कुछ दिनों से कुछ कम बेचैन था, हालाँकि उसे ठीक से पता नहीं था कि उसके साथ क्या हुआ है। उसे पता था कि ज़रूर कोई बड़ी बात हुई होगी क्योंकि वे उसे कुछ नहीं बता रहे थे। इसके अलावा, सभी यह सुनिश्चित कर रहे थे कि वह उनसे एक हाथ की दूरी पर रहे। तेजस ने सोचा कि उसने ज़रूर कुछ बहुत बुरा किया होगा, लेकिन लाख कोशिश करने पर भी उसे याद नहीं आ रहा था कि उसने क्या किया था। उसे बस इतना याद था कि वह एक श्मशान घाट में जागा और बाकी टीम उसके चारों ओर थी। रूबी और ऐशानी उसे धीरे से पकड़े हुए रो रही थीं और लड़के भी सिसक रहे थे। बूढ़ी औरत शारा उछल-कूद कर रही थी और गुरुजी ने उस औरत के सामने हाथ जोड़कर प्रणाम किया था। कितना अजीब नज़ारा था! शायद आज गुरुजी उसे सबके सामने सज़ा देने वाले थे। इस विचार ने उसके उत्साह और चंचलता दोनों को फीका कर दिया।

जीवन में पहली बार तेजस तनाव में था। जब गुरुजी कुछ देर तक नहीं आए, तो वह खुद को रोक नहीं पाया। उसने रूबी की ओर रुख किया, वही अकेली थी जो शायद उसे जवाब देती। बाकी सब अभी भी बहुत तनाव में थे और उसे ऐसे देख रहे थे मानो वह दुनिया की सबसे नाजुक चीज हो। 'रूबी दीदी, कृपया मुझे बताइए मैंने क्या किया,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'मुझे कुछ याद नहीं आ रहा, क्या यह समारोह मेरा शुद्धिकरण समारोह होने वाला है? मैंने जरूर कुछ ऐसा बुरा किया होगा कि मुझे कुछ याद नहीं आ रहा।' तेजस डरा हुआ था, सच्चाई जानने के लिए बेचैन था।

'शश...तेजस, तुमने कुछ भी बुरा नहीं किया है। बल्कि, तुमने ही तो इस खोज का अग्रदूत बनकर दिखाया है कि बुरे में भी कुछ अच्छाई होती है,' उन्होंने स्नेह से मुस्कुराते हुए तेजस से कहा। 'पर तुमने हमें डरा तो दिया था।' तेजस अब और भी उलझन में पड़ गया। उसने कुछ और सवाल पूछने के लिए मुंह खोला, तभी उसने देखा कि लगभग चापलूसी भरे लहजे में वशिष्ठ जी गुरुजी को उनकी मेज की ओर ला रहे हैं। गुरुजी ने उसकी ओर देखा और वह जल्दी से पीछे हट गया। गुरुजी सीधे मुद्दे पर आए। 'जब मैंने तुम्हें ऐतिहासिक चंपारण में कुछ राक्षसों को ढूंढने भेजा था, तो मेरा यही उद्देश्य था। हम जानते हैं कि राक्षस स्वभाव से दुष्ट और अनैतिक होते हैं। लेकिन कभी-कभी, हालांकि बहुत कम, उनमें से कुछ अच्छे भी होते हैं। चूंकि वे पहले से ही इतने शक्तिशाली होते हैं, जब वे अच्छे होते हैं, तो वे और भी शक्तिशाली हो जाते हैं। प्राचीन काल में, चंपारण धर्म और आध्यात्मिकता का केंद्र था जहाँ महान ऋषि ध्यान करते थे और हवन करते थे। और जहाँ ऋषि होते हैं, वहाँ राक्षस भी होते हैं। बुराई और अच्छाई साथ-साथ चलती हैं।' मगध के महान राजा बृहद्रथ की एक कथा प्रचलित है, जिनकी दो पत्नियाँ थीं। वे दोनों से समान प्रेम करते थे और उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि वे सदा उनसे समान प्रेम करेंगे। राजा के पास संतान को छोड़कर सब कुछ था। वर्ष बीतते गए, राजा वृद्ध और उदास हो गए। उनकी कोई इच्छा शेष नहीं रही। उन्होंने अपने लक्ष्य प्राप्त कर लिए थे, लेकिन उनकी सबसे बड़ी इच्छा अधूरी रह गई थी। इसलिए उन्होंने अपने राज्य की बागडोर अपने विश्वसनीय मंत्रियों को सौंप दी और अपनी दोनों पत्नियों के साथ शेष जीवन व्यतीत करने के लिए वनों में चले गए।

जंगल में राजा की मुलाकात चंदकौशिका ऋषि से हुई और उन्होंने उन्हें अपनी सबसे बड़ी इच्छा पूरी न होने के बारे में बताया। ऋषि राजा से प्रसन्न हुए और उन्हें अपनी

रानियों को देने के लिए एक आम दिया। राजा अपनी पत्नियों के प्रति बहुत न्यायप्रिय थे। उन्होंने आम को बराबर दो हिस्सों में काटा और प्रत्येक हिस्सा अपनी पत्नियों को दे दिया। जल्द ही रानियों ने शिशुओं को जन्म दिया। राजा ने व्याकुलता से देखा कि प्रत्येक रानी ने केवल आधा शिशु ही जन्म दिया। ये केवल मांस का ढेर थे; उनमें केवल एक हाथ, एक पैर, एक आंख थी और कोई जीवन नहीं था। स्तब्ध और दुखी राजा ने मांस के इन दोनों हिस्सों को फेंकने का आदेश दिया। जंगल में जरा नाम की एक राक्षसी, जिसे वन दुर्गा और बरमाता भी कहा जाता था, घूम रही थी जब उसे शिशु के मांस के ये दो हिस्से मिले। वह प्रसन्न हुई कि उसे बिना लड़ाई के भोजन मिल गया। उसने मांस के दोनों छोटे टुकड़े अपने हाथों में लिए और खुशी-खुशी घर चली गई। घर पहुँचकर उसने खेल-खेल में दोनों हिस्सों को जोड़ दिया। जरा को घोर आश्चर्य और विस्मय हुआ जब दोनों आधे हिस्से आपस में जुड़कर एक पूर्ण शिशु में परिवर्तित हो गए। जरा की मातृत्व भावना जागृत हुई। वह शिशु को मार या खा नहीं सकी। इसके बजाय, उसने शिशु को लौटाने का निर्णय लिया। राजा बृहद्रथ राक्षसी जरा के प्रति इतने प्रसन्न और कृतज्ञ हुए कि उन्होंने अपने पुत्र का नाम जरासंध रखा, जिसका अर्थ है 'जरा द्वारा मिला हुआ शिशु'। गुरुजी ने अपने श्रोताओं के चेहरों की ओर देखा जो उन्हें ध्यानपूर्वक सुन रहे थे, 'यह वृद्धा शरा, जिनसे आप चंपारण में मिले थे और जो तेजस से मिली थीं, उसी जरा की वंशज हैं जो जरासंध से मिली थीं, जो बाद में एक महान राजा बने। मुझे कुछ आभास था कि जरा की कोई वंशज आसपास है, इसलिए मैंने आप सभी को उसे खोजने के लिए वहाँ भेजा था। अच्छे राक्षस भी होते हैं, हालांकि वे दुर्लभ हैं।'

तेजस ने हांफते हुए कहा, 'मुझे दो हिस्सों में बांटकर फिर जोड़ दिया गया? यह कैसे हुआ?'

‘मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी,’ रूबी ने उसे आश्वस्त किया।

‘गुरुजी, हम उसे यहाँ क्यों नहीं लाते?’ जयंत ने पूछा। ‘हम उससे मदद की गुहार लगा सकते हैं। भगवान ही जानता है कि हमारे पास ऐसे कितने ही कटे-फटे शव आते हैं जो अपने इस अंजाम के हकदार नहीं होते।’

बाकी लोग भी चौकन्ने हो गए। गुरुजी ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अधीश की ओर देखा, जिसने गला साफ किया और उठ बैठा। ‘ऐसा नहीं हो सकता, जयंत।’ हालांकि उन्होंने जयंत को संबोधित किया, लेकिन उनका आकलन और विचार उन

सभी के लिए थे। 'शारा सबसे पहले एक राक्षसी है। वह कुछ बच्चों के लिए मातृत्व भाव विकसित कर सकती है, लेकिन सभी के लिए नहीं। हम उसमें सहानुभूति नहीं जगा सकते। उसके साथ संबंध रखना हमारे लिए विनाशकारी होगा। उसने इस स्थिति में हमारी मदद की, लेकिन हम दूसरों को भी पुनर्जीवित करने के लिए उस पर निर्भर नहीं रह सकते। साथ ही, हमारे साथ उसके संबंध के बारे में पता चलने पर, अन्य राक्षस भी उसके पीछे यहां आ सकते हैं। हम जानते हैं कि यह एक आपदा होगी। वह अपने गांव में खुश है। हालांकि वह तेजस में शामिल हो गई है, लेकिन गांव वाले उसकी शक्तियों से अनजान हैं। वे उससे प्यार करते हैं और अपने तरीके से उसकी देखभाल भी करते हैं। हम उसके प्रति सदा आभारी रहेंगे और समय-समय पर उससे मिलने जाएंगे और देखेंगे कि वह आराम से है। फिलहाल, हमें इसे यहीं छोड़ना होगा।' गुरुजी ने उन्हें बताया, 'हत्याएं रुक गई हैं, हमें कारण नहीं पता, लेकिन केवल शारा के वहां रहने से हम राक्षसों की मौजूदगी की संभावना से इनकार नहीं कर सकते। अगर हमें और रिपोर्ट मिलती हैं तो आपको वहां दोबारा जाना पड़ सकता है।'

मैंटिस

'डब्ल्यू
देश के पूर्वी क्षेत्रों में कुछ अजीबोगरीब हत्याओं की खबरें आ रही हैं। कहा जा रहा है कि ये हत्याएं बेहद दुबली-पतली, लगभग निर्धन महिलाओं द्वारा की जा रही हैं। वे अपने पतियों या साथियों का सिर खा जाती हैं।' वे एक-दूसरे को हैरानी से देखने लगे और अगर यह इतना भयावह न होता तो हंस पड़ते। गुरुजी ने उनकी ओर गंभीरता से देखा, मानो उन्होंने उनके मन की बात जान ली हो, 'ठीक है, इसे गंभीरता से लो। अपनी-अपनी लाइब्रेरी में जाओ और इन महिलाओं और उनके जैसी अन्य महिलाओं के बारे में और जानकारी जुटाओ।' 'जी गुरुजी,' उन्होंने आज्ञाकारी भाव से, थोड़ा संकोच के साथ कहा। वे जानते थे कि गुरुजी ने उनके विचार को स्वीकार नहीं किया था। हत्या तो हत्या ही होती है; किसी व्यक्ति की मृत्यु गलत तरीके से हुई होती है। उन्होंने गुरुजी के चरण छुए और लाइब्रेरी की ओर चल पड़े।

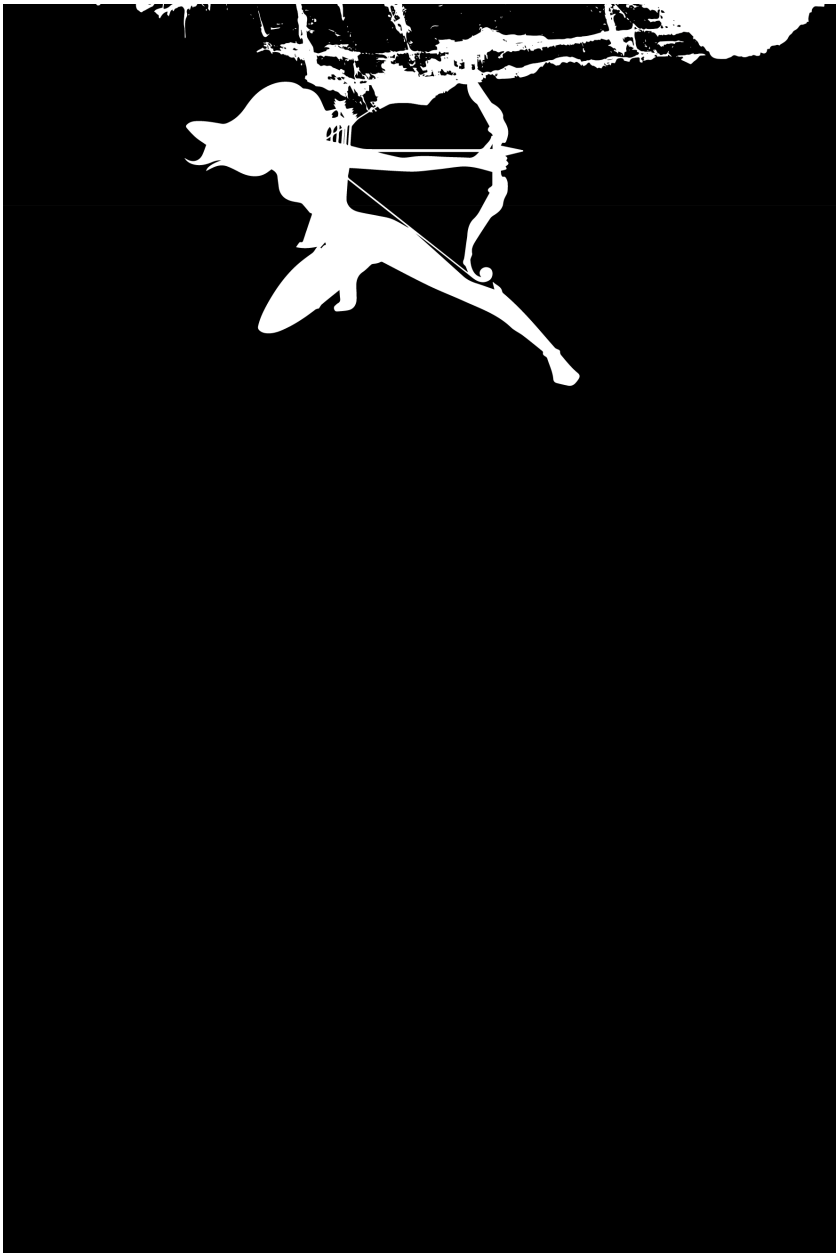

हमेशा की तरह, तेजस पेड़ों पर झूलते हुए सबसे पहले पहुंचा। अधिश, ऐशानी और उदय सीनियर लाइब्रेरी गए, जबकि रूबी, जयंत और तेजस जनरल लाइब्रेरी गए।

उन्होंने पाया कि यह कोई बहुत मुश्किल या दुर्लभ जीव नहीं था। यह दानव वास्तव में एक बड़ा कीड़ा था, लगभग एक छोटे इंसान जैसा, ज्यादातर मादा। इसमें प्रेइंग मैंटिस के सभी लक्षण थे, जो एक टिड्डे जैसा कीड़ा होता है जिसकी लंबी भुजाएँ इस तरह मुड़ी होती हैं मानो वह प्रार्थना कर रही हो। इस प्रकार की मादा दानवियाँ हमेशा कमजोर और इतनी पतली होती हैं कि वे लकड़ी की छड़ियों जैसी दिखती हैं; वे हमेशा भूखी और पोषण से वंचित रहती हैं। वे घातक स्त्री होती हैं जो भोले-भाले पुरुषों को अपने तथाकथित शयनकक्षों में फंसाती हैं और जब पुरुष पूरी तरह से उनमें मग्न हो जाता है, तो वे सबसे पहले उनका सिर खाना शुरू करती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उसमें सबसे ज्यादा पोषण होता है और फिर शरीर के अन्य हिस्सों को खाती हैं। बाकी समय वे इंसानों की तरह व्यवहार करती हैं। एक मानव सिर और कुछ अन्य हिस्से लगभग तीन से चार महीने तक उनके लिए पर्याप्त होते हैं, इस दौरान वे धीरे-धीरे शरीर के बाकी हिस्सों को खा जाती हैं। वे आमतौर पर किसी पुरुष के साथ पहली मुलाकात में ही गर्भवती हो जाती हैं। सामान्य तरीके से मानव शिशु को जन्म देने के बजाय, वे देश के उष्णकटिबंधीय जंगलों में अनगिनत छोटे अंडे देती हैं। पुस्तकालय की किताबों में इस बारे में ज़्यादा कुछ नहीं लिखा था कि अंडे से बच्चे निकलने के बाद उनका पालन-पोषण कैसे किया जाता है। कई अंडे प्रकृति की कठिनाइयों के कारण खराब हो जाते हैं, कई जंगल के जानवरों द्वारा खा लिए जाते हैं और कुछ को माताएँ स्वयं पोषण के लिए खा जाती हैं।

इस जानकारी और अपने लिखे हुए नोट्स के साथ, अधीश गुरुजी के पास गया। उन्होंने बाकी सभी को कुछ और शोध करने का निर्देश दिया, ताकि वे कुछ और तथ्य खोज सकें। गुरुजी साधना में लीन थे। अधीश इंतजार करता रहा और इस समय का सदुपयोग करते हुए सोचने लगा कि इस कीट राक्षस को कैसे मारा जाए। उन्हें देश के उत्तर-पूर्वी भाग में जाना होगा, जहाँ उष्णकटिबंधीय वन गर्म और आर्द्र होते हैं, जो कीटों के प्रजनन के लिए आदर्श हैं। उन्हें यह पता लगाना होगा कि क्या कोई पुरुष लापता है—यदि हाँ, तो कहाँ से।

गुरुजी की साधना अब पूर्ण हो चुकी थी और उन्होंने अपनी आँखें खोलीं। अधिश ने गुरुजी के चरणों को स्पर्श किया और फिर प्राचीन ग्रंथों से सीखी हुई सभी बातें सुनाईं।

गुरुजी ने अधीश को समझाया, "जीवित रहने की प्रवृत्ति सभी प्राणियों में इतनी प्रबल

होती है कि वे इस संसार में बने रहने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। लेकिन कीड़े-मकोड़े और जानवर मनुष्यों और राक्षसों से कहीं बेहतर स्थिति में हैं। जानवर केवल जीवित रहने के लिए मारते और खाते हैं, जबकि मनुष्य और राक्षस अनावश्यक रूप से, केवल अपने आनंद के लिए मारते हैं, राक्षस तो और भी अधिक। यह प्रेइंग मैंटिस, जो मनुष्य का रूप धारण करके अपने साथियों को मारती और खाती है, एक राक्षस बन गई है, लेकिन फिर भी यह मनुष्य या राक्षस की तुलना में एक कीड़े से कहीं अधिक मिलती-जुलती है, क्योंकि यह केवल अपने अस्तित्व के लिए मारती और खाती है, किसी अन्य स्वार्थ के लिए नहीं।"

'जी गुरुजी, यह बहुत ही दुखद विडंबना है कि इनमें से कुछ कीड़े विकास की सीढ़ी चढ़कर मनुष्य बन गए हैं, लेकिन वे अपनी इस घातक प्रवृत्ति पर काबू नहीं पा सके हैं।'

'अधीश, जब किसी अज्ञात कारण से विकास की गति अचानक बढ़ जाती है, तो यही होता है। शरीर में ये बदलाव बहुत बड़ा परिवर्तन है। जब विकास धीरे-धीरे नहीं होता, तो किसी जीव के कई लक्षण वैसे ही रह जाते हैं, इस मामले में कीड़ा मैंटिस आधा इंसान बन गया है। इसकी जीवित रहने की प्रवृत्ति अभी भी एक कमजोर कीड़े जैसी है, इसीलिए यह अपने साथियों को मारता और खाता है,' गुरुजी ने ऊपर देखा। 'प्रभु की अपनी योजनाएँ हैं, शायद ये विकास की गति को अचानक न बढ़ाने की सीख देने के लिए हो, शायद कोई और कारण हो। शायद ये प्रकृति का एक विचित्र उदाहरण हो, कौन जाने।'

अधीश ने सिर हिलाया। 'जाहिर है ऐसे प्राणियों को नष्ट करना ही होगा। गुरुजी, हमें शुरुआत कहाँ से करनी चाहिए?'

'तुम्हें उत्तर-पूर्व जाना होगा, जहाँ से लोगों के मारे जाने की खबरें आई हैं। उनके सिर धड़ से अलग कर दिए गए हैं। पहले ऐसी घटनाएं बहुत कम होती थीं, कभी-कभार ही होती थीं, लेकिन हाल ही में इनमें काफी वृद्धि हुई है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि इन जीवों ने अपने जैसे और जीव पैदा कर लिए हैं, जो आगे और पैदा करेंगे। तुम्हें तेजी से काम करना होगा, जितनी हो सके उतनी जानकारी जुटानी होगी और उनका सफाया करना होगा। आशुतोष और दिव्यांश भी तुम्हारे और तुम्हारी टीम के साथ जाएंगे। ये कीड़े-मकोड़े जैसे राक्षस तेजी से बढ़ रहे हैं। इन्हें नष्ट करने के लिए तुम्हें और योद्धाओं की आवश्यकता होगी। और अधिश, मच्छर भगाने वाली दवाइयाँ और ले

जाना।' अधिश हैरान था, गुरुजी उसे मच्छर भगाने वाली दवाइयाँ ले जाने का निर्देश दे रहे थे! खैर, कोई बात नहीं, गुरुजी के निर्देशों को कोई भी हल्के में नहीं लेता था; वह उनका अक्षरशः पालन करता था।

'जी जी,' अधीश ने गुरुजी के चरण छुए और चला गया। आशुतोष और दिव्यांश ने गुरुकुल में अपना पाठ्यक्रम पूरा कर लिया था। वे गंभीर और एकाग्रचित्त छात्र थे और अपने बैच के शीर्ष पाँच छात्रों में शामिल थे। अधीश का उनसे ज़्यादा मेलजोल नहीं था, मुख्य कारण यह था कि वह व्यस्त रहता था और दूसरा, वह एकांतप्रिय था और केवल कुछ खास लोगों से ही मिलता-जुलता था। उन्होंने गुरुकुल में अपने प्रशिक्षण में बहुत अच्छा प्रतिसाद दिया था, लेकिन क्या उनमें कोई विशेष क्षमता थी या वे ईश्वर की कृपा से धन्य थे, यह केवल गुरुजी ही जानते थे। दिव्यांश थोड़ा अधिक बहिर्मुखी था, ऐसा तेजस का कहना था।

लगभग एक महीने पहले की बात है। वे पहले गुवाहाटी गए, जहाँ वे एक दिन रुके क्योंकि गुरुजी ने उन्हें माता कामाख्या मंदिर जाकर उनका आशीर्वाद लेने के लिए कहा था। परंपरा के अनुसार, उन्होंने कामाख्या मंदिर के कुंड में स्नान किया और फिर गर्भगृह में जाकर माता कामाख्या को प्रणाम किया। पौराणिक कथा के अनुसार, जब भगवान शिव की पत्नी सती का निधन हुआ, तो वे शोक में उनके शरीर को अपने साथ हर जगह ले गए। इससे संसार का संतुलन बिगड़ने लगा। भगवान विष्णु को माता सती के शरीर को अपने सुदर्शन चक्र से काटना पड़ा। माता सती के शरीर का मध्य भाग गुवाहाटी में गिरा और यह कामाख्या के नाम से प्रसिद्ध हुआ और एक शक्तिपीठ बन गया। अगली सुबह, वे एक बस में सवार हुए और भारत की सबसे बड़ी पुरुष नदी मानी जाने वाली विशाल ब्रह्मपुत्र नदी को पार किया। यह नदी इतनी विशाल थी कि एक छोर से दूसरे छोर तक दिखाई नहीं देता था। यह उग्र रूप से बहती हुई गर्जना करती हुई आगे बढ़ी। उनकी बस डर के मारे कांपती और सहमी हुई सी लग रही थी, लेकिन फिर भी मजबूत पुल पर सरपट दौड़ती चली गई। गुवाहाटी से आगे का भूभाग बदलने लगा था। चारों ओर हरी-भरी हरियाली थी और हवा नम थी, लेकिन उमस भरी नहीं। वे तेजपुर में उतरे और एक मध्यम दर्जे के होटल में ठहरे। तेजपुर को कभी 'खून का शहर' कहा जाता था।

'यह नाम बिल्कुल उपयुक्त है,' ऐशानी ने अधीश से कहा। अधीश मुस्कुराया, 'इसे प्रेम का शहर भी कहा जाता था।'

‘दोनों नाम बिल्कुल सटीक हैं, प्यार करते हो और फिर मार डालते हो। इस जगह को ये नाम मिलने के लिए यहाँ कई घटनाएँ घटी होंगी।’ लंबी और थका देने वाली यात्रा के बाद वे थक चुके थे। रात के खाने के बाद वे अपने-अपने कमरों में चले गए। तीन कमरे बुक किए गए थे: एक अधीश और ऐशानी के लिए, एक उदय और तेजस के लिए और तीसरा जयंत, आशुतोष और दिव्यांश के लिए। रूबी की ज़रूरत नहीं थी, इसलिए उसने कमरा बुक नहीं कराया। इस बार भी ऐशानी को लगा कि रूबी कुछ छुपा रही है और जानबूझकर यहाँ रुकी है।

'इस मिशन से लौटने के बाद मुझे रूबी से तुरंत बात करनी होगी,' उसने मन ही मन सोच लिया।

ऐसा लग रहा था मानो वे अभी सोए ही थे कि चिड़ियों ने चहचहाना शुरू कर दिया। इतनी जल्दी! तेजस ने एक आँख खोली और अपनी घड़ी देखी। सुबह के 2:45 बज रहे थे। ठीक है, तो उसने चिड़ियों की चहचाहट का सपना देखा होगा। उसने कंबल ओढ़ा, करवट बदली और फिर से सोने चला गया। फिर वही आवाज़ आई, इस बार तेज़, मानो और भी चिड़ियाएँ चहचहा रही हों। उसने आँखें सिकोड़ीं और पतले पर्दे से झाँका। बाहर उजाला हो चुका था, भोर हो गई थी। इसका मतलब था कि उसकी घड़ी बंद हो गई थी। उसने उदय की ओर देखा, जो अब पूरी तरह जाग चुका था। 'यह पूरब है, तेजस, जितना पूरब जाओगे, दिन उतना ही जल्दी शुरू होगा। याद रखना, इसीलिए जापान को उगते सूरज का देश कहा जाता है।' तेजस कराह उठा। उसके अंदर अभी भी बहुत नींद बाकी थी। 'चलो अब,' उदय ने आदेश दिया, 'जाओ नहा लो, हमारे सामने एक लंबा दिन है।'

दोनों भाई तरोताज़ा होकर नीचे गए। बाकी चार लोग पहले से ही वहाँ मौजूद थे, तरोताज़ा दिख रहे थे और अपनी सुगंधित असम चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे। हल्का नाश्ता करने के बाद वे अपने बैग लेकर होटल से निकल पड़े। किसी और को तो वे कैमरे, ट्राइपॉड, फोन और पानी की बोतलों जैसे सामान के साथ पर्यटक ही लग रहे थे। ये सब चीज़ें उनके पास थीं और साथ ही उनके हथियार भी।

गुरुकुल के खुफिया विशेषज्ञों ने शहर के बाहरी इलाके के एक गाँव में हुई एक घटना की सूचना दी थी। वे फिर से बस में सवार हुए, आधे रास्ते में उतरे और बाकी का रास्ता पैदल तय किया। चारों ओर हरी-भरी हरियाली थी, जो बारिश की बूंदों से चमक रही थी। चारों ओर विशाल लीची के पेड़ थे, जो फलों के भार से झुके हुए थे। यह एक

बेहद खूबसूरत नजारा था: मीलों तक फैले हरे-भरे लीची के पेड़, जिन पर रसीले लाल फल लगे थे। कोई सोच सकता था कि ऐसा नजारा देखकर तेजस खुशी से झूम उठेगा, लेकिन वहाँ दो अन्य योद्धा आशुतोष और दिव्यांश हँसते हुए एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर लीची तोड़कर खाने के लिए दौड़ पड़े। तेजस तो बस एक लीची के पेड़ से दूसरे लीची के पेड़ पर उड़ता हुआ जा रहा था। उसके साथ बंदरों का एक झुंड था, जो अपने नेता को पहचान लेते थे। वे चहचहाते हुए, शांत भाव से तेजस के पीछे-पीछे चल रहे थे।

'सावधान!' उदय ने सबको चेतावनी दी। 'ये जंगली लीची हैं, इनमें संक्रमण हो सकता है। इन्हें मुंह में डालने से पहले छीलकर अच्छी तरह देख लेना।' जयंत ने चुटकी लेते हुए कहा, 'मैं इन्हें देखकर बता दूंगा कि कौन सी लीची खानी है।' सब हंस पड़े और जयंत ने ठीक वैसा ही किया, जिससे उनकी काफी परेशानी बच गई, वरना वे आधी लीची थूक देते। रास्ता थोड़ा नम था। जैसे-जैसे वे गांव की ओर बढ़ते गए, मच्छर उनके ऊपर मंडराने लगे और उन्हें काटने लगे। अधीश को अब याद आया कि गुरुजी ने उसे अतिरिक्त मच्छर भगाने वाली दवा ले जाने को कहा था। यहां के मच्छर बहुत बड़े थे, लगभग छोटे-छोटे पक्षियों जैसे। वे समूह के ऊपर मंडराते रहे और लगातार काटते रहे। मच्छर इतने बड़े थे कि उनके रंग और बनावट, उनकी आंखें और उनकी लंबी पतली सूंड साफ दिखाई दे रही थी, जिसे वे खून पीने के लिए मांस में घुसाते थे। जल्द ही टीम के सदस्यों को पूरे शरीर में खुजली होने लगी। उनकी प्रगति काफी धीमी हो गई थी।

अधिश ने उन सभी को रुकने का इशारा किया, "लो, इन्हें अपने शरीर के खुले हिस्सों पर लगाओ, इससे मच्छर दूर भागेंगे और खुजली भी कम होगी।" उसने क्रीम की ट्यूबें उन सभी को दे दीं। "अधीश," ऐशानी ने हैरानी से कहा, "इतनी सारी ट्यूबें! तुमने तो बहुत सारी भर दी हैं; बढ़िया।"

अधिश ने उसे मुस्कुराकर देखा। बाद में वह उसे गुरुजी के निर्देशों के बारे में बताएगा। बहुत जल्द अंधेरा हो जाएगा। वे जानते थे कि उत्तर-पूर्व में रातें शाम को लगभग 4:30 या 5 बजे शुरू हो जाती हैं। शोध करने और इस जगह के लोगों को जानने के लिए ज़्यादा समय नहीं होगा। सौभाग्य से, गुरुकुल का एक पूर्व छात्र यहीं रहता था। उसका नाम गौरांगा था। वह गुरुकुल में अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सका क्योंकि उसके पिता की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी और वह अपनी माँ और भाई-बहनों की

देखभाल के लिए वापस आ गया था। वह एक बहुत ही मेहनती छात्र था और अपने कुछ शिक्षकों और गुरुजी के साथ भी संपर्क में था। अधीश और ऐशानी जानते थे कि गौरांगा को इन गांवों में हो रही भयानक हत्याओं के बारे में कुछ जानकारी थी। वे गांव पहुंचे। गौरांगा गांव के बाहरी इलाके में ही उनका इंतजार कर रहा था। उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया और वह उन्हें पास की एक चाय की दुकान पर ले गया। वह दुबला-पतला, गोरा और थोड़ा पीला चेहरा लिए हुए, पतली आँखों वाला एक छोटा कद का आदमी था, जैसा कि अधिकांश असमिया लोगों की होती हैं।

गौरांगा ने सीधे मुद्दे पर बात की। 'ऐसी एक नहीं बल्कि कई मादाएं घूम रही हैं जो शिकार करने के लिए तैयार हैं। हालांकि उनमें से ज्यादातर ने अभी तक हमला नहीं किया है, लेकिन वे बहुत जल्द करेंगी। अभी तक वे ज्यादा भूखी नहीं हैं, लेकिन बहुत जल्द, शायद एक-दो दिन में, वे उस अवस्था में पहुंच जाएंगी।'

'तुम्हें क्या लगता है कि कितने होंगे?' ऐशानी ने पूछा। 'देखो, शुरुआत में सिर्फ़ एक विशालकाय कीड़ा था जो प्रेइंग मैंटिस जैसा दिखता था। उसमें स्त्री का रूप बदलने की शक्ति थी। उसने एक पुरुष को बहला-फुसलाकर अपने वश में कर लिया और गर्भवती हो गई, फिर उसका सिर खाकर तुरंत पोषण प्राप्त किया। उसने शरीर को छिपा दिया और उसके कुछ हिस्सों को नियमित रूप से खाती रही। ग्रामीणों ने सोचा कि वह पुरुष भाग गया है या गाँव छोड़कर चला गया है। उन्होंने इस घटना को ज़्यादा महत्व नहीं दिया; ऐसी घटनाएँ पहले भी हो चुकी थीं। इसी बीच, वह स्त्री अपने असली रूप में लौट आई और उसने अंडे दिए। उसके बच्चों में भी मानव स्त्री में बदलने की वही शक्ति थी। नर किसी तरह जीवित नहीं रह पाए या उनके द्वारा मारे गए। मुझे लगता है कि अब तक कम से कम दस तो होंगे ही,' गौरांगा ने अपनी कहानी समाप्त की। 'हम उन्हें कैसे पहचानें, मेरा मतलब है कि हम उन्हें कैसे पहचानें?' उदय ने पूछा। 'ठीक है, उत्तर से आने के कारण तुम्हें उन्हें पहचानना मुश्किल हो सकता है। तुम आखिरकार उन्हें पहचान लोगे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।' मैंने उनमें से कुछ को पहचान लिया है। आप अगले दो दिनों में उनसे छुटकारा पा सकते हैं। उसके बाद आपको समझ आ जाएगा,' गौरांगा ने उन्हें आश्वस्त किया। 'अभी घूरना बंद करो,' उन्होंने अचानक फुसफुसाते हुए कहा। 'उनमें से एक वास्तव में उस टूटी हुई मेज के पास यहीं बैठी है। उसने भूरे रंग की स्कर्ट और हरे रंग का टॉप पहना है। उनमें से किसी एक को पकड़ने का यह अच्छा मौका हो सकता है,' गौरांगा ने उन्हें

प्रश्नवाचक और फिर प्रशंसा भरी निगाहों से देखा। वे सदियों पुराने योद्धा थे, उनके व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया था, लेकिन गुरुकुल के अपने अनुभवों से वे जानते थे कि वे पूरी तरह सतर्क थे और उनमें से प्रत्येक ने उस महिला की अच्छी तरह से जांच-पड़ताल की थी।

वह दुबली-पतली, कमजोर महिला थी, मानो गिरने ही वाली हो, उसके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। उसके हाथ में आधी चाय थी, जिसे वह न जाने क्यों पी नहीं रही थी। उसने उनकी तरफ मुड़कर देखा; उसके चेहरे पर एक मुस्कान खिल उठी जिसने सब कुछ बदल दिया। उसने अपने सामने बैठे कुछ युवकों को देखा। मानो वह पल भर में खूबसूरत हो उठी। कुछ मिनटों बाद, ऐसा लगा जैसे उसने कोई फैसला कर लिया हो। उसकी निगाहें आशुतोष पर टिक गई थीं। सभी ने यह बात नोटिस की। गौरांगा ने उन्हें जाने का इशारा किया। सभी उठकर जाने लगे जबकि आशुतोष वहीं रुक गया। जैसे ही बाकी लोग नजरों से ओझल हुए, वह आशुतोष के पास गई। उसका दुबलापन और आंखों के नीचे के काले घेरे गायब हो गए थे। उनकी जगह एक चंचल, सहज कामुकता ने ले ली थी। उसका पूरा शरीर दमक रहा था। उसकी खुशबू ऐसी थी जैसे किसी लंबे सूखे दिन के बाद बारिश धरती को धो रही हो। वह पूरी तरह से मोहक थी। उन्होंने उसे आशुतोष से बात करते देखा, जिस पर आशुतोष ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। उन्होंने थोड़ी देर और बात की और फिर चाय की दुकान छोड़कर किसी बेहतर जगह जाने का फैसला किया जहाँ उन्हें ज़्यादा एकांत मिल सके। वे वहाँ से गुज़रे जहाँ बाकी लोग बेफिक्र होकर आसपास के पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की तस्वीरें खींच रहे थे। अधीश ने उदय की तरफ देखा, जिसने हल्के से सिर हिलाया। उसके बैग में उसका पश भी था। उनकी निगाहें आशुतोष और उस लड़की पर टिकी हुई थीं। अचानक वे नज़रों से ओझल हो गए। हैरान होकर उन्होंने चारों तरफ देखा लेकिन उन्हें ढूंढ नहीं पाए।

वे जानते थे कि वह लड़की या प्राणी अदृश्य हो गया था। अगर वह ऐसा कर सकती थी, तो वह आशुतोष को भी सम्मोहित कर सकती थी। सबने जयंत की ओर देखा, जो चुपचाप चाय की दुकान के पीछे विपरीत दिशा में चल रहा था। जयंत अपनी तेज नज़रों से आशुतोष और उस लड़की का पीछा कर रहा था और बाकी लोग कुछ दूरी पर उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। वह लड़की या मैंटिस उसे घनी झाड़ियों के अंदर ले जा रही थी। झाड़ियों के अंदर पत्तों और सुगंधित फूलों से बना एक सुंदर कमरा था।

झाड़ियों की एक दीवार से लगा हुआ एक पलंग था। यहीं पर वह आशुतोष को ले गई। उदय का हाथ उसके पाश पर कस गया। अधिश ने उसे रुकने का इशारा किया। आशुतोष पलंग पर लेट गया, ऐसा लग रहा था जैसे वह उस प्राणी के जादू में आ गया हो। वह आशुतोष के ऊपर लेट गई, उसका चेहरा अपने हाथों में लिया और उसे चूमने लगी। आशुतोष एक आज्ञाकारी साथी बन गया। अचानक वह प्राणी उनकी आँखों के सामने बदलने लगा। वह पहले से ही दुबला-पतला था, और भी दुबला हो गया। उसका सिर विशाल हो गया और शरीर एक बड़े टिड्डे जैसा दिखने लगा। आशुतोष की आँखें बंद थीं; उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि ये खुशी के कारण था या वो राक्षस को अपने पास बुला रहा था। अचानक राक्षस या प्रेइंग मैंटिस ने अपना मुँह इतना बड़ा खोल दिया कि एक ही झटके में आशुतोष का सिर काट सकता था। लेकिन आशुतोष उससे तेज़ था। उसने कुल्हाड़ी के एक ही वार से उस जीव का सिर धड़ से अलग कर दिया। राक्षस का सिर दाँत दिखाते हुए पीछे हट गया। लेकिन उसका सिर उसके कमज़ोर, कंकालनुमा शरीर से जुड़ा रहा। कटे हुए गले के साथ भी वह तेज़ी से उठा और आशुतोष पर झपटा ताकि उसका सिर काट सके, लेकिन उसकी गति काफी कम हो गई थी। आशुतोष पलंग से उछला और फिर से उस जीव के गले पर वार किया। इस बार उस जीव का सिर उसके शरीर से पूरी तरह अलग हो गया। विशाल सिर पलंग के पास गिर पड़ा। उस जीव के दुबले-पतले अंग कुछ देर तक फड़फड़ाते रहे और फिर धीरे-धीरे गायब होने लगे। यहाँ तक कि उसका सिर भी चूर्ण बन गया। अंत में, उस प्राणी का बस एक नन्हा सा बारीक चूरा ही बचा था, जो बाकी लोगों के अंदर आने पर हवा में घुलमिल गया। 'शाबाश, आशुतोष,' अधीश ने उसकी पीठ थपथपाई। आशुतोष थोड़ा झिझकते हुए मुस्कुराया। उसने यह बात बाकी लोगों को नहीं बताई, लेकिन उसे इस बात का थोड़ा अफसोस था कि उसने पहले ही वार में राक्षस को क्यों नहीं मार डाला। बाकी लोग उसकी खूब तारीफ कर रहे थे। उन्हें इस बात की राहत थी कि अब उन्हें शव को ठिकाने नहीं लगाना पड़ेगा, इसलिए ग्रामीणों को कोई स्पष्टीकरण देने की जरूरत नहीं होगी।

अब उनके होटल लौटने का समय हो गया था। बस स्टैंड की ओर चलते हुए अधीश ने गौरांगा से पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है यहाँ ऐसे कितने जीव होंगे?'

‘यह उनका प्रजनन काल है। इस मौसम में प्रेइंग मैंटिस (कीड़े) बेकाबू हो जाते हैं और प्रजनन के लिए साथी की तलाश करते हैं। इन राक्षसों को शिकार करने के लिए

इंसान ढूंढने में बहुत मुश्किल होती है। कभी-कभी तो वे इंसानी शिकार न मिलने के कारण भूख से मर जाते हैं। इसलिए यह उनके लिए बहुत ही मुश्किल समय है। साल के इस समय वे आम तौर पर बाज़ारों में साथी की तलाश में पाए जाते हैं। मेरा अनुमान है कि लगभग दस मादा प्रेइंग मैंटिस हैं जो इंसानी रूप धारण कर सकती हैं। मुझे लगता है कि आपको यहीं आकर रहना होगा।'

उन्होंने सिर हिलाया। उनकी बस एक घंटे बाद आएगी। अधीश, ऐशानी और बाकी लोग बस स्टैंड पर बेंचों पर बैठ गए और अगले दिन की रणनीति पर चर्चा करने लगे।

अगले दिन वे सुबह जल्दी लौट आए। इस बार वे किसी भी आपात स्थिति का सामना करने के लिए बेहतर तैयारी के साथ आए थे। गौरांगा उन्हें सीधे बाजार ले गया, जो उस समय दिन की तैयारियों में जुटा हुआ था। ज्यादा लोग नहीं थे। यह एक छोटा सा गाँव था, लेकिन दूसरे गाँवों के लोग भी इस बाजार में आते थे क्योंकि यहाँ अधिक प्रकार का सामान और बेहतर गुणवत्ता का सामान मिलता था। ग्राहक धीरे-धीरे आने लगे। कई पुरुष चाय की दुकानों पर जाकर बैठ गए, जबकि कुछ महिलाएं कपड़ों और सौंदर्य प्रसाधनों के लिए मोलभाव करने लगीं, वहीं कुछ ने किराने का सामान और सब्जियां खरीदीं। अचानक गौरांगा चौंक गया: उसने एक स्त्री को देखा। उसकी नजर का पीछा करते हुए, बाकी सबने भी उसे देख लिया। वह एक दुबली-पतली, पीली रंग की स्त्री थी जो पान और पान की दुकान के पास खड़ी होकर भीड़ को गौर से देख रही थी। जल्द ही एक और भूखी महिला उसके पास आ गई। अधिश ने उदय और दिव्यांश को इशारा किया। ये दोनों योद्धा दुकान की ओर बढ़े और पान मांगा। उन्होंने उन महिलाओं को सरसरी नजर से देखा जो उन्हें लालच भरी निगाहों से देख रही थीं।

'क्या आप पान खाना चाहेंगी?' दिव्यांश ने उनमें से एक से पूछा। उसने सिर हिलाकर सहमति दी। थोड़ी ही देर में उदय और दिव्यांश उन दोनों महिलाओं के साथ चले गए। गौरांगा ने दो और महिलाओं की ओर इशारा किया। इस बार जयंत और आशुतोष उनके साथ गए।

'इनमें से चार जीवों का ध्यान रखा जा चुका है। अब छह बचे हैं। तेजस और मैं अगले दो के साथ जाएंगे। मुझे उम्मीद है कि वे जल्दी आ जाएंगे ताकि हम वापस आकर बाकी बचे जीवों का ध्यान रख सकें।' 'जल्दी मत करो, अधीश,' ऐशानी ने दबी आवाज़ में कहा ताकि बाकी लोग न सुन सकें। 'तुम्हें तेजस का भी ध्यान रखना होगा, उसे अभी तक कोई सक्रिय काम नहीं दिया गया है। गौरंगा मेरे साथ है। हम बाकी

जीवों का ध्यान रख लेंगे।'

अधिश ने सिर हिलाया। ऐशानी की क्षमताओं पर किसी ने कभी संदेह नहीं किया था। वह दस योद्धाओं से भी कहीं अधिक कुशल थी। उसकी चतुराई पर भी उसे कभी संदेह नहीं हुआ। जब गौरांगा ने अगले दो प्राणियों की ओर इशारा किया, तो उसने बिना किसी झिझक के तेजस को चुना।

अब केवल ऐशानी और गौरांगा ही बचे थे और चार और जीव थे। उनके पास इन राक्षसों के अन्य पुरुषों को लुभाने का इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। गौरांगा एक कुशल योद्धा तो नहीं था, लेकिन उसने उन्हें ज़रूरी जानकारी देने और प्रेइंग मैंटिस राक्षसों की ओर इशारा करने में बहुत मदद की थी। वे खुद भी पता लगा सकते थे, लेकिन इससे उनका बहुत समय और मेहनत बच गई। उन्होंने अंतिम चार जीवों के प्रकट होने का लंबे समय तक इंतज़ार किया, लेकिन वे नहीं आए। ऐशानी और गौरांगा बाज़ार में घूम-घूम कर सामान देख रहे थे और ऐशानी ने कुछ चीज़ें खरीद लीं। गौरांगा ने कुछ ग्रामीणों को बताया था कि ये मुंबई से आए लोगों का एक समूह है जो असम के गांवों पर एक वृत्तचित्र बना रहा है।

'अभी मत देखो, खरीदते रहो, आखिरी चार आ चुकी हैं और दो आदमियों के साथ बंधी हुई हैं। शायद अब और इंतज़ार नहीं कर सकतीं, इसलिए चारों इन्हीं दो आदमियों का इस्तेमाल करेंगी', गौरांगा ने कहा। ऐशानी धीरे से मुड़ी। उन महिलाओं ने अपना सारा आकर्षण बिखेर रखा था। वे बेहद खूबसूरत लग रही थीं। उन्होंने आधुनिक कपड़े पहने थे, हालांकि उनके मुंह सुपारी से भरे हुए थे। यही उनकी पहचान थी। जब वे इंसानी रूप धारण करती थीं, तो किसी पुरुष के मिलने तक भूख मिटाने के लिए सुपारी चबाती थीं। ऐशानी और गौरांगा ने तिरछी नज़रों से उनका पीछा किया। दोनों आदमी इन महिलाओं की सुंदरता और साहस से मंत्रमुग्ध हो गए थे। साथ ही, उनकी मादक खुशबू ने उन्हें पूरी तरह से मोहित कर लिया था। वे बाज़ार से बाहर निकलने लगे।

ऐशानी और गौरंगा कुछ दूरी पर उनका पीछा करते रहे। दोनों पुरुषों और उन जीवों ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। वे सभी अपने-अपने कामों में मग्न थे। आखिरकार वे मिट्टी और घास से बनी दो कमरों की झोपड़ी तक पहुँचे, अंदर गए और दरवाजा बंद कर लिया। वहाँ कोई खिड़की नहीं थी जिससे ऐशानी और गौरंगा झाँक सकें, लेकिन गौरंगा को एक दीवार में एक दरार दिखी। अँधेरे में उनकी आँखों को अभ्यस्त होने में

एक मिनट लगा। 'दीदी, जल्दी!' वह झट से बोला, 'उन्होंने प्रक्रिया शुरू कर दी है!' ऐशानी बेसब्री से इस संकेत का इंतजार कर रही थी। वह अपने कोरा लेकर अंदर दौड़ी। दो स्त्रियाँ उन पुरुषों के ऊपर बैठी थीं जो उनके नीचे पूरी तरह निष्क्रिय थे। दोनों स्त्रियाँ अपने असली रूप में आ गई थीं, यानी उन्होंने अपना कीट रूप धारण कर लिया था—विशाल कीट जिनके मुँह इतने बड़े थे कि एक ही बार में किसी पुरुष का सिर नोच सकते थे। एक तीखी चीख के साथ, ऐशानी उछली और एक ही झटके में उनके गले काट दिए। दोनों राक्षस उन दोनों पुरुषों पर गिर पड़े। वहाँ नाममात्र का खून था। उनके नीचे दबे हुए आदमियों की आँखें बंद थीं और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। गौरांगा के पास एक चाकू था। उसने अपने पास खड़ी औरत पर चाकू से वार किया, लेकिन वह उससे तेज़ थी, उसने गौरांगा के हाथों से चाकू छीन लिया और उसके कंधे पर ज़ोर से काट लिया, जिससे उसकी मांसपेशियों का एक हिस्सा उखड़ गया। गौरांगा लड़खड़ा गया, दूसरी औरत भी पहली औरत के साथ मिल गई और दोनों ने मिलकर उसके सिर को उसके शरीर से अलग करने के लिए अपना मुँह चौड़ा खोल दिया। गौरांगा उनका मुकाबला नहीं कर सका। लेकिन ऐशानी बिजली की तरह उनकी ओर मुड़ी और उनके शरीरों पर वार करने लगी। वह साफ कट नहीं लगा पाई क्योंकि गौरांगा उनसे उलझा हुआ था। ऐशानी एक माहिर हत्यारी थी। उसकी चालें एकदम सटीक थीं और वह ठीक वहीं वार करती थी जहाँ वह वार करना चाहती थी। बाकी दोनों जीवों को अपने असली रूप में बदलने का समय ही नहीं मिला। जल्द ही वे चारों बारीक धूल में बदल गए और उसका कुछ हिस्सा खुले दरवाजे से बाहर निकल गया। ऐशानी ने गौरांगा को उठने में मदद की और उसे बाज़ार के बाहरी इलाके में ले गई। उसने गौरंगा को एक पेड़ के ठूंठ पर बिठाया और अपनी जेब से कुछ रुई और एंटीबायोटिक दवा निकाली। वे सभी मिशन पर जाते समय अपने साथ प्राथमिक चिकित्सा के छोटे पैकेट रखते थे। उसने गौरंगा को दर्द निवारक गोली दी। तेजस, अधीश और बाकी लोग भी लौट आए थे और तेजस ने पेड़ की चोटी से ऐशानी को देख लिया था। वे उनकी ओर दौड़े और दिव्यांश ने गौरंगा को प्राथमिक उपचार देना शुरू कर दिया। गौरंगा का काफी खून बह गया था, लेकिन यह मांसपेशियों का घाव था और उचित देखभाल से जल्दी ठीक हो जाएगा। वह दर्द में था लेकिन लगभग साफ-साफ बोल पा रहा था, 'हमने यहां सभी प्रेइंग मैंटिस को नष्ट कर दिया है, कम से कम इस मौसम के लिए। मुझे नहीं पता कि इस मौसम में उनमें से

कोई अंडे दे पाएगी या नहीं। वे किसी भी आदमी को बहला-फुसलाकर खा नहीं पाईं। लेकिन फिलहाल, गांव इस जीव से मुक्त हो गया है।' अधीश ने सिर हिलाया, 'ठीक है गौरंगा, हम यहां दो दिन और रुकेंगे और किसी और प्रेइंग मैंटिस का इंतजार करेंगे और तुम्हारा भी ख्याल रखेंगे। उसके बाद हम चले जाएंगे।'

महेश

'एच

उनका नाम महेश है और वे एक जादूगर हैं, विश्व के महानतम जादूगरों में से एक। इस सदी में अभी तक कोई भी जादूगर उन्हें पीछे नहीं छोड़ पाया है। उनके शो इतने लोकप्रिय और मांग में हैं कि उन्हें विज्ञापन की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। उनके प्रशंसक उन्हें दिल से पसंद करते हैं। इतनी बड़ी फैन फॉलोइंग होने के अलावा, वे वास्तव में बहुत कुशल हैं। उनका सबसे प्रसिद्ध करतब है कि वे बिना किसी उपकरण के कई जीवों में रूप बदल सकते हैं। वे मंच पर अकेले खड़े होते हैं—ध्यान रहे, एक विशाल मंच पर—वहाँ कुछ भी नहीं होता और कोई भी नहीं होता, और अचानक! वे हाथी में बदल जाते हैं। फिर वे एक विशाल पक्षी में बदल जाते हैं, जबकि दर्शक अभी भी अचंभित होते हैं। जैसे ही उनकी निगाहें पक्षी की उड़ान का पीछा करती हैं, वे एक विशाल बैल में बदल जाते हैं और दर्शकों पर हमला कर देते हैं।

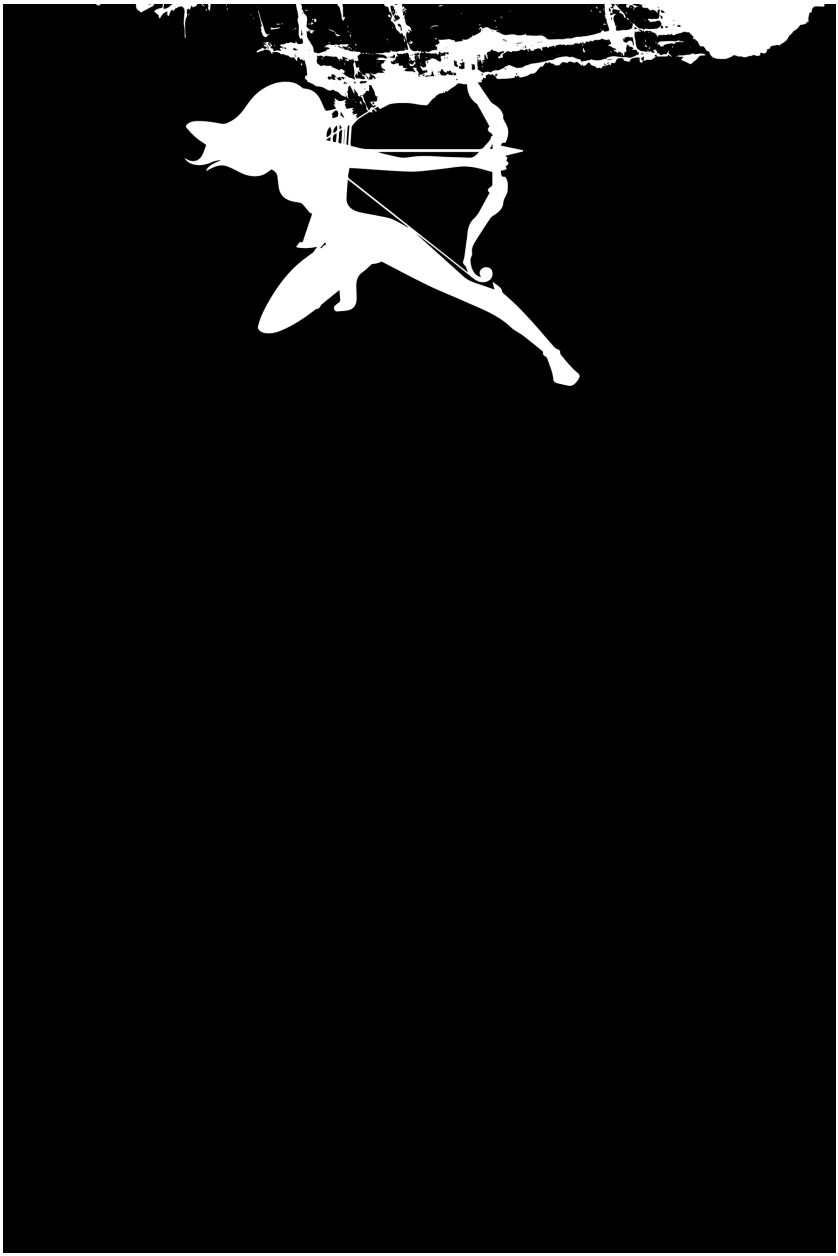

इससे पहले कि तबाही वास्तव में शुरू हो, वह फिर से अपने मूल मानव रूप में परिवर्तित हो जाता है। वह यह सब दर्शकों के बीच रहते हुए करता है।

उसने अपने आस-पास बैठे उन लोगों पर नज़र डाली जो उसकी बात ध्यान से नहीं सुन रहे थे। उदय खिड़की से बाहर देख रहा था, तेजस कसरत में मग्न था, रूबी अपने नाखून संवार रही थी और ऐशानी ने अभी-अभी जम्हाई रोकी थी। केवल देवनाथ, जो दरवाजे के पास बैठा था, पूरी एकाग्रता से सुन रहा था। लेकिन देवनाथ से यही उम्मीद थी।

अरे! होश में आओ! हम यहाँ एक राक्षस के बारे में बात कर रहे हैं!

'क्या सच में, भैया?' तेजस धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। 'मुझे लगा आप किसी जादूगर और उसके शो की बात कर रहे हैं।' रूबी बीच में बोली, 'तेजस, अधिश कभी भी किसी बात को हल्के में नहीं लेता।' उनके सामने बैठी ऐशानी ने नम आँखों से उन्हें देखकर मुस्कुराया। वह और रूबी जयंत के साथ जंगल गए थे, जहाँ जयंत ने अपनी एक्स-रे जैसी दृष्टि से उन्हें इतने अजूबे दिखाए थे कि वे दंग रह गए थे। उन्होंने आधी रात से ज़्यादा इन अजूबों को निहारने और देखने में बिताई थी। उनके लिए वह रात का पिकनिक जैसा था। जयंत अभी भी सो रहा था, लेकिन रूबी तरोताज़ा थी और ऐशानी गद्दीदार कुर्सी पर आराम से बैठी थी। 'हाल ही में, उसने अपने निजी कारणों से ये स्टेज शो करना बंद कर दिया है। वह अपने चुने हुए क्रू सदस्यों को अपने शो में परफॉर्म करने की इजाज़त देता है। फिर भी, सबसे ज़्यादा तालियाँ और तारीफ़ तब मिलती हैं जब वह खुद परफॉर्म करता है।'

'तो भैया, वो राक्षस कैसे है?' फिर से तेजस ने कहा। 'अरे, जहाँ भी उसका दल जाता है, वो अपने पीछे हत्याओं और रहस्यमय मौतों का सिलसिला छोड़ जाता है—कई सारी। कभी-कभी इन हत्याओं में सीधे तौर पर उसकी ओर इशारा किया गया है, लेकिन खुफिया रिपोर्टों के अनुसार वो इतना अमीर है कि वो अधिकारियों को रिश्वत देकर अपना काम चला लेता है।'

'तो फिर ये सब करते ही क्यों? ऐसे किसी भी शो का मकसद पैसा कमाना और आराम से जीना होता है। अगर उसने इतना पैसा कमा लिया है कि वो आसानी से लोगों को रिश्वत दे सकता है, तो उसे ये काम छोड़ देना चाहिए और अपनी मंडली भंग कर देनी चाहिए,' ऐशानी ने टिप्पणी की। अधीश चुप रहा। साफ था कि वे सही मूड में नहीं थे। उसने सोचा, 'कभी और समय', फिर तुरंत खुद को सुधारा: उनके काम में कोई और समय हो ही नहीं सकता। अगर किसी की जान बचानी है तो अभी ही करना होगा। लेकिन हां, उन्हें अपने सूत्रों से और जानकारी का इंतजार करना होगा। उदय ने

बीच में कहा, ‘हम सब ये सब क्यों करते हैं? क्या हम पैसे के लिए करते हैं? क्या हम दूसरों से तारीफ पाने के लिए करते हैं? नहीं, हम बस इसलिए करते हैं क्योंकि यही हमारा जन्म है, यही हमारा भाग्य है। इसी संदर्भ में, महेश शायद कुछ ऐसा कर रहा हो जो उसके जीन में लिखा हो।’ बाकी सब चौंक गए। उदय के मुंह से ये काफी लंबा भाषण था। उदय आमतौर पर इतना कम बोलने वाला था कि उन्होंने उसके विचार सुनने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। वे जानते थे कि उसके विचार बहुत दृढ़ थे, बस वह उन्हें कभी व्यक्त नहीं करता था। अधीश के विचारों को बार-बार दोहराने से वे सतर्क हो गए। वे जानते थे कि अधीश और उदय ज्यादातर समय एक ही सोच रखते थे और यह भी अपवाद नहीं था। वे यह भी जानते थे कि अगर उन्हें डांटने की बात आती तो उदय शब्दों को घुमा-फिराकर नहीं बोलता। हल्के-फुल्के पलों में वे अधीश के साथ तो ठीक थे, लेकिन उदय के साथ कभी नहीं।

ऐशानी ने कहना शुरू किया, 'चलो कुछ और जानकारी जुटाते हैं, एक योजना बनाते हैं और फिर गुरुजी के पास चलते हैं।'

‘बस, ऐश, गुरुजी हमें अभी बुला रहे हैं,’ अधीश ने उन्हें बताया। ‘अच्छा, चलो चलते हैं,’ वे सब उत्साहित होकर बाहर निकलने लगे। रूबी और तेजस पिछली रात की मस्ती के बाद साफ़ तौर पर असहज थे। ऐशानी भी ठीक नहीं थी, लेकिन बाकी सबसे थोड़ी बेहतर हालत में थी। तेजस और देवनाथ गुरुजी की कुटिया के बाहर ही रुके रहे —तेज इसलिए क्योंकि वह एक जगह बैठ नहीं सकता था और दूसरों का ध्यान भटका सकता था, और देवनाथ इसलिए क्योंकि उसे कभी भी दूसरों के साथ बैठना अच्छा नहीं लगता था।

अगर गुरुजी ने जयंत की अनुपस्थिति पर ध्यान दिया भी तो उन्होंने इसका कोई संकेत नहीं दिया। उन्हें हमेशा से यह आशंका सताती रहती थी कि गुरुजी जयंत को थोड़ा ज्यादा ही पसंद करते हैं, हालांकि इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं था। ऐशानी और अधीश ने भी इस बारे में चर्चा की थी लेकिन उन्हें इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं मिला था।

‘हो सकता है कि वे पिछले जन्म से संबंधित हों, हालांकि गुरुजी किसी से संबंधित नहीं हो सकते,’ अधीश ने कंधे उचकाते हुए कहा। ‘जो भी हो, अच्छा ही है; गुरुजी हमेशा उस पर कड़ी नज़र रखेंगे, वह अक्सर मुसीबतों में फंस जाता है और थोड़ा लापरवाह भी है।’

ऐशानी ने सिर हिलाया, वह भी यही राय रखती थी। गुरुजी सीधे मुद्दे पर आए, “राक्षस महेश का इतिहास बहुत पुराना है। आप पुस्तकालय जाकर उसके पूर्वजों के बारे में पता लगा सकते हैं। एक समय उसका पूर्वज ब्रह्मांड का राजा था, जिसने मनुष्यों और देवताओं को भी लूटा और तबाह किया। तब तक ब्रह्मांड उथल-पुथल में था, जब तक कि माँ दुर्गा ने उसका संहार नहीं किया। अब जिस जादूगर महेश की चर्चा हो रही है, माना जाता है कि वह राक्षस महिषासुर का दूर का रिश्तेदार है। उसकी शक्तियाँ बहुत कम हो गई हैं, लेकिन वह अब भी रूप बदल सकता है और उसकी सारी भयानक राक्षसी वासनाएँ वैसी ही हैं। पहले उसे और उसके साथियों को पकड़ना मुश्किल था, क्योंकि वे एक विशाल सेना की तरह थे। सर्कस मनोरंजन का एक बड़ा साधन था और लोग उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ते थे। अब मनोरंजन के इतने सारे साधन हैं कि लोग सर्कस में जाना ही बंद कर देते हैं। इसलिए, यह तथाकथित जादूगर महेश मुश्किल में है।” पहले, दर्शकों में से किसी एक व्यक्ति की हत्या करना या अपने ही सर्कस के किसी कर्मचारी की हत्या करना किसी के लिए भी चिंता का विषय नहीं होता था। पुलिस को रिश्वत देना भी काफी मददगार साबित होता था। अब ऐसा संभव नहीं है। उसे अपना सर्कस बंद करना पड़ा है। इससे वह हताश तो हो गया है, लेकिन साथ ही साथ लाचार और कमजोर भी। अब हत्याएं पहले से कहीं ज्यादा होने लगी हैं। चूंकि दर्शक सीमित हैं और कलाकार भी कम हैं, इसलिए पुलिस की नजर इन हत्याओं पर पड़ी है, लेकिन भारी रिश्वत देने के बावजूद भी वे मामले को दबाने में कामयाब नहीं हो पाए हैं। हमारी खुफिया एजेंसी को इसकी भनक लग गई और उन्होंने इस राक्षस और उसकी सेना का पता लगा लिया। उसके पास अब भी कई रूप बदलने की शक्ति है, और हर रूप उतना ही शक्तिशाली है। नवरात्रि के दौरान उसकी शक्तियां और भी बढ़ जाती हैं, और इसी दौरान मां दुर्गा उसका वध करती हैं। गुरुजी ने कहा और खिड़की से बाहर देखते हुए अनमने ढंग से बोले, 'सब जानते थे कि वह किसके बारे में बात कर रहे हैं, यहां तक कि ऐशानी भी। सबने सहमति में सिर हिलाया।

‘जी गुरुजी, हम पुस्तकालय जाकर इस राक्षस के बारे में और जानकारी जुटाएंगे,’ अधीश ने सहमति जताई। गुरुजी ने सिर हिलाया। वे ऐशानी और अधीश की ओर मुड़े और उन्हें रुकने का इशारा किया। बाकी लोग चले गए। गुरुजी ने एक शेल्फ से तरल पदार्थ की एक बोतल निकाली, ‘यह मधु नामक एक अमृत है जिसे माँ दुर्गा राक्षसों

का संहार करते समय पीती थीं।' गुरुजी ने ऐशानी से कहा कि वह एक मिनट के लिए बोतल पर हाथ रखे, इस दौरान उन्होंने कुछ मंत्रों का जाप किया। फिर उन्होंने बोतल को वापस शेल्फ पर रख दिया। 'जब तक तुम लोग जाओगे, मैं मधु को सक्रिय करता रहूंगा।' अधीश की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, 'जब वह महेश और उसकी सेना का सामना करेंगी, तब तुम्हें उन्हें आधा कटोरी यह तरल पदार्थ देना होगा। इससे उन्हें राक्षसों का वध करने की अतिरिक्त शक्ति मिलेगी।' उन्होंने सिर हिलाया, फिर उनके पैर छुए और बाहर चले गए।

तेजस ने अपने सवालों और जिज्ञासा से उन्हें घेर लिया। जब उन्होंने शर्मिंदा जयंत को अपनी ओर आते देखा तो उन्होंने राहत की सांस ली। उदय ने लगभग डांटते हुए कहा, 'चलो पुस्तकालय चलते हैं। मैं तुम दोनों को वहाँ समझा दूँगा।' अधीश और ऐशानी की ओर मुड़कर उसने कहा, 'तुम दोनों जाओ, मैं इन लोगों को व्यवस्थित करने के बाद वरिष्ठ पुस्तकालय में आता हूँ।' इन दिनों देवनाथ को भी पुस्तकालय का उपयोग करने की अनुमति थी, हालाँकि वह अब भी अपनी अंतरात्मा पर अधिक भरोसा करता था।

वरिष्ठ पुस्तकालय पहुँचते ही ऐशानी ने चुटकी लेते हुए कहा, 'अधी, गुरुजी ने हमें बताया था कि यह राक्षस महेश नवरात्रि के दौरान अत्यंत शक्तिशाली हो जाता है और नवरात्रि में ही उसका वध होता है। त्यौहार बस पंद्रह दिन दूर है। हमें इन पंद्रह दिनों में उसे नष्ट करने की तैयारी करनी होगी।'

'हां, ऐश, हम तुम्हारे लिए रास्ता बना देंगे, लेकिन उसे वास्तव में मारने की शक्ति केवल तुम्हारे पास है,' उसने दोहराया।

उसने आह भरी, 'मैं माँ से प्रार्थना करती हूँ कि मुझे उसे मारने की शक्ति दें।' अधीश ने पुस्तकालय में प्रवेश करते समय उसका हाथ दबाया। कुछ दिनों बाद, वे उत्तर प्रदेश के पास एक धूल भरे कस्बे में थे। गुरुजी ने आशुतोष और दिव्यांश को साथ भेजा था, क्योंकि महेश के राक्षसों का मुकाबला करने के लिए और योद्धाओं की आवश्यकता थी। यहाँ सर्कस लगा हुआ था। यह एक भव्य आयोजन था। अफवाह थी कि सर्कस का व्यवसाय अच्छा नहीं चल रहा था, इसलिए इसके मालिक जादूगर महेश ने इसे बंद करने का फैसला किया था। आने वाला सप्ताह एक शानदार आयोजन होने वाला था, जिसके बाद सर्कस दुखद रूप से बंद हो जाएगा। कुछ दल के सदस्य बेहतर अवसरों की तलाश में पहले ही जा चुके थे। फिर भी, सर्कस मंडली के सौ से अधिक सदस्य जानवरों के साथ बचे हुए थे। पूरा दृश्य सर्कस से ज़्यादा मेले जैसा लग रहा था। चारों

ओर रंग-बिरंगी झालरें और गुब्बारे थे, तरह-तरह के खेल थे, कपड़े और गहनों की दुकानें थीं, खाने-पीने के स्टॉल थे, झूले थे और मनोरंजन के कई अन्य साधन थे। चारों ओर इतना आनंद का माहौल था कि ऐशानी और उसकी टीम भी उस उमंग भरे उल्लास में शामिल हो गई। लेकिन अधीश और उदय गंभीर और सतर्क रहे। उन्हें मेले के उस पार सर्कस का तंबू दिखाई दे रहा था। उनका तात्कालिक लक्ष्य पर्दे के अंदर जाना था। तेजस को पहले ही सारी जानकारी दे दी गई थी और अधीश जानता था कि वह अपने काम को बहुत गंभीरता से लेगा। अधीश और उसकी पूरी टीम मेले में मौज-मस्ती करने आए गरीब ग्रामीणों के वेश में थे। अधीश और तेजस सर्कस के पीछे गए और तंबू में घुसने की कोशिश की। उन्हें तुरंत एक खूंखार दिखने वाले गार्ड ने रोक दिया। अधीश समझ गया कि यह व्यक्ति कोई राक्षस है।

गार्ड को संबोधित करते हुए अधीश ने हाथ जोड़कर कहा, “महोदय, मैं एक गरीब आदमी हूँ, और यह मेरा छोटा भाई ढिंचा है। यह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कलाबाज है। महोदय, इसकी परीक्षा लीजिए और इसे एक मौका दीजिए।” गार्ड ने तेजस के छोटे कद को देखकर तिरछी नज़र से देखा और मुस्कुराते हुए कहा, “यह नन्हा-सा? कलाबाजी कोई मज़ाक नहीं है। सिर्फ इसलिए कि यह ढिंचा उछल-कूद कर सकता है, इसका मतलब यह नहीं कि वह जाल पर करतब दिखा सकता है। चले जाओ! भागो!” गार्ड ने अपनी छड़ी उठाई, लेकिन अधीश ने विनती की, “कृपया महोदय, कृपया मेरे भाई को एक छोटा सा मौका दीजिए!” अधीश जानता था कि कई कलाबाज सर्कस छोड़कर जा चुके थे और उन्हें कुछ नए कलाकारों की सख्त ज़रूरत थी। गार्ड एक मिनट के लिए हिचकिचाया, फिर उन्हें प्रबंधक के पास ले गया। तेजस को अपने कुछ करतब दिखाने को कहा गया। तेजस छत पर चढ़ा, मेज के नीचे रेंगकर गया, और फिर रुक गया। अधीश ने उसे अपनी पूरी क्षमता न दिखाने के लिए कहा था, कहीं राक्षस को शक न हो जाए।

प्रबंधक ने ढिंचा को काम पर रख लिया। कई कलाबाज जा चुके थे, और उन्हें किसी तरह एक शो करना ही था। इस लड़के ढिंचा में कुछ हुनर तो था, लेकिन वह उस स्तर का नहीं था। प्रबंधक को अफसोस था कि बच्चे को निखारने की जरूरत थी और इसके लिए समय चाहिए था। समय उनके पास नहीं था। उसका मालिक और स्वामी, जादूगर महेश, घोर निराशा में डूबा हुआ था। सर्कस के बंद होने का उस पर कई तरह से असर पड़ रहा था। सर्कस तो बस उसकी दूसरी कुटिल गतिविधियों और धंधों का

एक मुखौटा था। महेश एक उत्कृष्ट जादूगर था, वह हमेशा एक सितारा रहेगा, लेकिन सर्कस में उसकी सेना का क्या होगा? सर्कस बंद होने के बाद वह उन्हें कैसे बचा पाएगा? साथ ही, यह साल का वह समय था जब वह सबसे शक्तिशाली होता था, पूरी दुनिया में तबाही और अराजकता मचाता था। लोगों को मारना-पीटना, उनकी शक्तियों, धन और महिलाओं को छीनना, इससे ज्यादा खुशी और संतुष्टि उसे किसी और चीज से नहीं मिलती थी।

प्रबंधक, जो स्वयं एक राक्षस था, जानता था कि महेश से बड़ा राक्षस संसार में कोई नहीं है। फिर भी प्रबंधक यह भी जानता था कि इस समय में महेश सबसे कमजोर हो जाता है, मानो वह मर चुका हो। प्रबंधक, जिसका नाम चवार था, अपने स्वामी के चक्रों के बारे में, वर्ष के इस समय के बारे में सब कुछ जानता था, क्योंकि अपने स्वामी के साथ-साथ वह भी इस घटना से बुरी तरह प्रभावित होता था। तेजस के काम पर रखे जाने पर अधीश ने राहत की सांस ली। प्रबंधक चवार ने तुरंत तेजस को काम पर लगा दिया, जो बहुत अच्छा था क्योंकि इससे तेजस को चारों ओर घूमकर यह देखने का मौका मिलेगा कि मंच के पीछे क्या हो रहा है। अधीश ने प्रबंधक से तेजस के लिए अधिक वेतन तय करने की विनती की, जिसे तुरंत अस्वीकार कर दिया गया - अधीश ने केवल दिखावे के लिए मोलभाव किया था। मेले में प्रकाश और ध्वनि शो का विज्ञापन किया गया था और लोग इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। उसने तेजस को सर्कस के पिछवाड़े में छोड़ दिया और आधी रात के बाद लौटने का वादा किया। जहाँ तक वह देख सकता था, बाकी लोग अच्छा समय बिता रहे थे। उन्हें उम्मीद थी कि उनमें से हर कोई किसी भी तरह की परेशानी के लिए पूरी तरह सतर्क होगा। ऐशानी और रूबी एक कॉस्मेटिक और ज्वेलरी की दुकान के सामने खड़ी थीं, जबकि उदय, आशुतोष और दिव्यांश किसी खेल में हिस्सा ले रहे थे। जयंत का कहीं कोई अता-पता नहीं था। अधीश जानता था कि जयंत अपनी विशेष दृष्टि से राक्षसों के छिपे हुए ठिकानों और कमजोरियों का पता लगाने गया है। अगर जयंत सही रिपोर्ट लेकर लौटता है तो आज रात ही काम बन जाएगा, वरना कल रात। जब जयंत लौटा तो काफी देर हो चुकी थी और भीड़ धीरे-धीरे जाने लगी थी। अभी तक किसी अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली थी। आधी रात के आसपास, अधीश तेजस से मिलने गया।

वे यहाँ अप्रिय घटनाओं को देखने या अपराधियों को पकड़ने नहीं आए थे। वे योद्धा थे

और उनका आदेश स्पष्ट था: 'मारो और नष्ट करो।' कोई दया नहीं दिखाई जाएगी, बस उन राक्षसों का नाश होगा जो सदियों से छिपे रहे थे और अपना खूनी नरसंहार करते आ रहे थे। ऐशानी विनाशकारी रूप में आ गई थी। बाकी लोगों ने छोटे राक्षसों को मारकर उसके लिए रास्ता पहले ही बना दिया था। उसने अधिश द्वारा दिया गया अमृत पिया, वही पेय जो गुरुजी ने दिया था। उसके शरीर को भयंकर राक्षसों का सामना करने के लिए पूरी ऊर्जा और शक्ति की आवश्यकता थी। संघर्ष अगली रात शुरू हुआ। एक युवक लापता हो गया। किसी ने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह मेले में अकेला आया था, आसान शिकार। अधिश और उसकी टीम इसी तरह की खबर का इंतजार कर रही थी। तेजस ने सर्कस में रहते हुए उन्हें कुछ जानकारी भी दी थी: कुछ तंबू ऐसे थे जिनमें किसी को भी प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। इन तंबुओं की कड़ी सुरक्षा की जाती थी। जब सर्कस प्रबंधक चावर ने तेजस को तंबुओं के पास मंडराते देखा, तो उसने न केवल उस पर चिल्लाया बल्कि उसे एक जोरदार थप्पड़ भी मारा। तेजस को जल्दी से अपने अभ्यास में वापस जाना पड़ा।

इसके अलावा, तेजस ने कहा कि शिविर में भय और दहशत का माहौल था। यहाँ तक कि जानवर भी भयभीत प्रतीत हो रहे थे। यह डांट-फटकार या मार-पीट का भय नहीं था, बल्कि मृत्यु और यातना का घोर भय था, इतना प्रबल कि उसे चारों ओर भय की गंध आ रही थी।

योद्धा सर्कस के पिछले दरवाज़े से अंदर घुस आए, लेकिन उन्हें इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि इतने सारे राक्षस अचानक कहीं से आकर उनका सामना करेंगे। सर्कस के तंबुओं के पीछे एक खूनी लड़ाई छिड़ गई। बाहर इतना शोर था कि अगर किसी ने अंदर के शोर को सुना भी तो किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। जादूगर या राक्षस महेश अखाड़े में अलग-अलग प्राणियों का रूप बदलकर दर्शकों का मनोरंजन कर रहा था। उसने पहले सूअर का रूप धारण किया, फिर हाथी का। दर्शक और बच्चे खूब प्रभावित हुए और ज़ोरदार तालियाँ बजीं। जब वह विशाल पंखों वाला एक बड़ा पक्षी बना और विशाल तंबू की छत पर फड़फड़ा रहा था, तभी उसकी नज़र तंबुओं के पीछे हो रहे खून-खराबे पर पड़ी। चौंककर वह अखाड़े में ही गिर पड़ा। महेश ने झट से अपना मानव रूप धारण किया, प्रणाम किया और तेज़ी से अंदर भाग गया। कुछ कलाबाज़ों ने जोकरों और जानवरों के साथ उसकी जगह ले ली। दर्शक इसे सर्कस के कार्यक्रम का हिस्सा समझकर खुशी-खुशी देख रहे थे। महेश क्रोध से बेकाबू होकर

अखाड़े से बाहर भागा। उसने अपने हाथ हवा में उठा दिए। पल भर में उसके हाथों में कुछ विशाल हथियार प्रकट हो गए। उसने मुड़कर देखा कि किसने उसके भरोसेमंद और वीर सेनापतियों की सेना में इतना कहर बरपाया है। उसने देखा कि उसके सामने हथियारों से लैस एक स्त्री खड़ी है। उसे धुंधला सा एहसास हुआ कि उस स्त्री की पीठ पीछे उसके लोगों का नरसंहार हो रहा है। उसने उस स्त्री को देखा। वह सुंदर थी और ऐसा लग रहा था जैसे उसके दो से अधिक हाथ हों और वह उसे क्रोधित निगाहों से देख रही हो। जब उसने गौर से देखा, तो उसे केवल दो हाथ दिखाई दिए जिनमें दो हथियार थे। वह किसी प्रकार की शराब पी रही थी जिससे उसके गाल लाल हो रहे थे और उसकी आँखें चमक रही थीं। यद्यपि महेश राक्षस महिषासुर का प्रत्यक्ष वंशज था, फिर भी युगों के साथ उसकी शक्तियाँ भी क्षीण हो गई थीं। विभिन्न रूपों में रूप बदलने की उसकी शक्ति लगभग बरकरार थी, और हत्या की लालसा भी। यहाँ उसके सामने एक स्त्री खड़ी थी, जो सभी जीवित प्राणियों में सबसे कमजोर थी, उसे चुनौती दे रही थी। अगर उसने उसके पीछे अपने सैनिकों के शव न देखे होते तो वह हँस पड़ता। महेश ने अपनी तलवार से उस पर हमला किया, जिसे ऐशानी ने तुरंत उसके अन्य हथियारों के साथ दो टुकड़ों में काट दिया। स्तब्ध होकर उसने अपने हाथों को देखा, फिर अविश्वास भरी निगाहों से उस स्त्री को देखा। एक पल भी प्रतीक्षा किए बिना, वह अपने हथियारों से उस पर टूट पड़ी। अब जब वह उसके करीब थी, तो महेश को उसके चेहरे पर क्रोध स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

उनके पीछे, अधीश के योद्धाओं और महेश के राक्षसों के बीच भयंकर युद्ध चल रहा था। महेश को ब्रह्मा से प्राप्त अपने पूर्वजों के वरदान का ज्ञान था। वरदान यह था कि महान राक्षस महिषासुर को कोई नहीं मार सकता था, केवल एक स्त्री ही उसे मार सकती थी। महिषासुर ने स्त्रियों से सुरक्षा का कोई वरदान नहीं मांगा था, क्योंकि वह स्त्रियों को दुर्बल और कमजोर समझता था, इसलिए उनके लिए उसके जैसे महान राक्षस का मुकाबला करना तो दूर, उसे मारना भी असंभव था। यद्यपि उसे स्वयं यह वरदान प्राप्त नहीं था, फिर भी वह जानता था कि वह किसी भी स्त्री का सामना कर सकता है, विशेषकर वर्तमान युग में जब युद्ध के मैदान में स्त्रियों की शक्ति अपने चरम पर थी।

शुरुआत में, जब ऐशानी ने उस पर हमला किया, तो महेश डरा नहीं बल्कि हैरान रह गया। जब उसके पास हथियार नहीं थे, तो उसके लिए रूप बदलना आसान था। वह

एक जादूगर के रूप में प्रसिद्ध हो गया था क्योंकि वह अपनी इच्छा अनुसार किसी भी प्राणी में रूप बदल सकता था। आम लोग सोचते थे कि यह उसका जादू है, वे सोचते थे कि वह उन्हें सम्मोहित करके यह भ्रम पैदा कर सकता है कि उसने अपना रूप बदल लिया है। लेकिन वास्तव में महेश रूप बदलने में सक्षम था क्योंकि वह राक्षस महिषासुर का वंशज था और उसे यह वरदान प्राप्त था। वह तुरंत एक भयंकर भैंस में रूपांतरित हो गया और सर्कस के पीछे जंगल में दौड़ने लगा, गुस्से में दौड़ते हुए विशाल पेड़ों को कुचलता और गिराता चला गया। उसने ऐशानी जैसी प्रतिद्वंद्वी का सामना करने की कल्पना भी नहीं की थी। वह एक उत्कृष्ट योद्धा थी जिसे स्वयं माँ दुर्गा का आशीर्वाद प्राप्त था। भैंस अपनी विनाशकारी गर्जना करते हुए दौड़ती रही। फिर वह सर्कस के अखाड़े में प्रवेश कर गई। दर्शक उसके पुनः प्रकट होने का इंतजार कर रहे थे, क्योंकि जादूगर के अचानक अखाड़े से चले जाने पर वे काफी निराश हुए थे। उन्होंने इसे एक तमाशे के रूप में खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। यह मेला नवरात्रि के दौरान आयोजित किया गया था, और उन्होंने अनुमान लगाया कि सर्कस में मां दुर्गा द्वारा महिषासुर के वध का नाट्य रूपांतरण किया जा रहा है।

ऐशानी के पास मौजूद कई हथियारों में से एक था पाश, एक मोटी रस्सी जो किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति को बांधने की क्षमता रखती थी। तभी महेश ने अपना रूप बदलकर शेर बना लिया और क्रोध में दहाड़ने लगा। दर्शक भयभीत होकर तालियाँ बजाने लगे। लेकिन जैसे ही ऐशानी अपनी शक्तिशाली तलवार लेकर शेर की ओर दौड़ी, शेर अपने असली रूप में लौट आया, जो जादूगर महेश का रूप था। उसके पास कई हथियार थे, जिनमें एक विशाल ढाल भी शामिल थी। दर्शक रोमांचित हो गए। दर्शकों में से कई लोग माँ दुर्गा द्वारा राक्षस महिषासुर के वध की कहानी से परिचित थे। ऐशानी अब अपने पूरे जोश में थी। उसने तेज़ी से उसके हथियारों पर वार किया और उसकी ढाल को दो टुकड़ों में तोड़ दिया। अब राक्षस और जादूगर महेश को पता चल गया था कि इस स्त्री में उसे एक दुर्जेय शत्रु मिल गया है। लेकिन इस तथ्य से बेपरवाह होकर, उसने तुरंत अपना रूप बदलकर हाथी बना लिया। दर्शक रोमांचित हो गए।

पीछे से अधीश लड़ाई पर नज़र रख रहा था। उसने जल्दी से अमृत को एक प्याले में डाला और रूबी को दे दिया, जबकि वह हमलावर राक्षसों से लड़ रहा था। रूबी ऐशानी के पास दौड़ी और उसे पीने के लिए अमृत दिया। मधु का असर दिखने लगा और

ऐशानी को तुरंत अतिरिक्त शक्ति और ऊर्जा मिल गई। वह भूल गई कि वह कौन है। वह गुस्से में दहाड़ी और हाथी की सूंड काट दी। महेश तुरंत फिर से भैंस बन गया और ज़मीन पर पैर पटकने, गुर्राने और दहाड़ने लगा, फिर दर्शकों की ओर मुड़ा। दर्शक एक साथ चीखने लगे। वे रोमांच, भय और उत्सुकता से बेकाबू हो गए थे। यह न जानते हुए कि यह असली लड़ाई है, वे ज्यादातर बैठे रहे और जयकारे लगाते रहे, हालांकि कुछ लोग जल्दी से पीछे हट गए।

अचानक, अधीश और उदय बीच में कूद पड़े। दोनों ने मिलकर उस विशाल बैल को उसके पिछले पैरों से पकड़ लिया ताकि ऐशानी उसकी गर्दन पर साफ निशाना लगा सके। दर्शक कहानी के इस हिस्से से ज़्यादा परिचित नहीं थे, फिर भी वे पूरी घटना को सांस रोककर देखते रहे। सर्कस का मैदान खून से लथपथ था। चूंकि अधीश और उदय ने उसके पैरों को शिकंजे में जकड़ रखा था, इसलिए राक्षस अपना रूप नहीं बदल सका। दर्शक मानो सम्मोहित होकर देख रहे थे। उन्हें पता था कि क्या होने वाला है, उन्होंने नवरात्रि के दौरान इस तरह के कई दृश्य देखे थे, हालांकि वे इस तरह के वास्तविक दृश्य को देखने के लिए तैयार नहीं थे।

जब महिषासुर तुरंत अपना रूप नहीं बदल सका, तब भी उसने अपना असली रूप, एक राक्षस का रूप धारण कर लिया और भैंस के विशाल मुँह से बाहर आने लगा। ऐशानी उसका इंतज़ार कर रही थी। उसने अपनी तलवार के एक ही वार से उसका सिर काट दिया। एक ही झटके में सिर धड़ से अलग हो गया। वह सर्कस के अखाड़े की खून से लथपथ ज़मीन पर धड़ाम से गिरा। ऐशानी उसके शरीर के पास खड़ी रही, उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी और वह ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रही थी। कुछ देर तक सब लोग उसी मुद्रा में जमे रहे। फिर दर्शक खड़े हो गए। किसी ने ताली नहीं बजाई। सर्कस में सन्नाटा छा गया। यह सब इतना वास्तविक लग रहा था, मानो स्वयं माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध किया हो। फिर कुछ मिनटों बाद, पूरा सर्कस ज़ोरदार तालियों और जयकारों से गूंज उठा। आवाज़ इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो रहे थे। अधीश सबसे पहले होश में आया। उसने हिम्मत जुटाकर उदय को इशारा किया, जिसने भैंस के पैर छोड़ दिए। उदय जल्दी से सर्कस के तंबू से बाहर गया, जहाँ गुरुकुल के योद्धा बैठे या लेटे हुए अपने घावों पर मरहम लगा रहे थे। उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई। ऐसा लग रहा था मानो सभी राक्षस नष्ट हो चुके हों। उसने अपने योद्धाओं को सर्कस के अखाड़े में आने का इशारा किया। वे थोड़े हैरान हुए, लेकिन

उसके पीछे-पीछे चले गए। अब तक अधीश ने ऐशानी और उसके कांपते शरीर पर कुछ हद तक काबू पा लिया था। जैसे ही सब लोग अखाड़े में आ गए, वे दर्शकों की ओर मुड़े, सिर झुकाया और हाथ जोड़कर नमस्ते किया। ऐसा लग रहा था मानो यह उनका रोज़ का काम हो। इस हावभाव से ऐसा लग रहा था मानो यह पूरा कार्यक्रम वाकई एक सफल नाटक था। दर्शक धीरे-धीरे अपनी तल्लीनता से बाहर आए। फिर ज़ोरदार तालियों की गड़गड़ाहट शुरू हुई जो रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।

उपसंहार: श्रृंखला की तीसरी पुस्तक, कुंभ षड्यंत्र में, अगली पीढ़ी सुर्खियों में आती है। ऐशानी और उसके साथी अधीश के अब जुड़वां बच्चे हैं। क्या इन जुड़वा बच्चों को अपने माता-पिता की शक्तियां मिलेंगी? क्या वे योद्धा बनेंगे या सिर्फ दिखावे के लिए हत्यारे? अन्य बच्चों का क्या होगा? क्या उन्हें भी शक्तियां मिलेंगी? ऐशानी और अन्य लोग इस और परलोक के राक्षसों से डटकर लड़ रहे हैं। एक ही वंश से होने के बावजूद इतनी कम उम्र में, कौन जाने उनका भविष्य क्या होगा; न लड़ने वालों का और न ही लड़ने की कला सीखने वालों का।